

हफ़ीज़ुल्लाहखांकाहज़ारा ॥

पहिलाभाग व दूसराभाग ॥

जिसमें

रसिकशिरोमणि [illegible]
जी महारानी के लीलाविषयक प्रत्येकभांति व नी[illegible]
२१६७ कवित्त व सवैया अत्युत्तम लहलहेरंगीले, परमचुहु-
चुहे रसीले, अत्यन्त चुटपुटे चटकीले, अपने रसिकमित्रों
व रंगीनमहाशयों व ईश्वरभक्तमहात्मासज्जनोंके चित्त
विनोदार्थ सैकड़ोंपुस्तकोंसे छांटकर लिखेगये हैं जि-
सके अवलोकनसे हरएक सुजनपुरुषों का चित्त
आनन्दप्राप्त होजाता है ॥

जिसको

सर्व्व महाशयोंके कृपाभिलाषी चरणसेवक स्वर्गवासि हफ़ीज़ुल्लाहखां
सांडीनिवासी अफ़्सर मुदर्रिस मदरसा बन्नापुर थाना
बघौली ज़िलाहरदोई मुल्के अवधने बड़े
परिश्रमसे संग्रहकर निर्मित किया ॥

दूसरीबार

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी
मार्च सन् १८९२ ई० ॥

३६ जुज़ ४ वर्क़

विज्ञापन ॥

महाशयो ?

इस चरणसेवक की बनाई हुई नीचे लिखी पुस्तकें भीछपकर तैयार हैं जिनको इच्छाहो निम्न लिखे पते से डाक द्वारा दाम भेजकर मँगा सक्के हैं ॥ या मेलों पर तलाश करैं ॥

१ नवीनसंग्रह ॥

[illegible], भजन, होली, दोहा आदि अत्युत्तम उत्तम छांटकरालिखे हैं मतबामुन्शीनवलकिशोरसाहब लखनऊ से मिलसक्ता है ॥

२ मनमोहनी ॥

जिसमें हज़ारों तरहके राग वह २ चुहचुहाते लिखे गये हैं कि देखे बिना कहे नहीं कहा जाता कोई चीज़ गानेकेलिये ऐसीनहीं जो उसमेंनहो ॥ यहभीवहीं है।

३ हफ़ीज़ुल्लाहख़ांका हज़ारा । पहिला भाग ॥

सो तो आप देखही रहे हैं ॥ कहिये कैसे कवित्त १०२२ लिखेगये हैं यहभी वहीं मिलेगा या मेलोंपर ढूंढ़िये ॥

हफ़ीज़ुल्लाहख़ांका हजारा । दूसरा भाग ॥

अपने मुँह कौन मियामिट्ठूबनै मँगाकर देखो इसमें भी मनोहर ११६२ कवित्त हैं ॥ वहीं मिलेगा ॥

सूचीपत्र हज़ारा का ॥

हज़ारा की भूमिका ॥

दो० बन्दौं राधा रमण पद कोटि काम कमनीय ।
गोप सुताके प्राणधन रसिक रासरमनीय ॥

प्रथम श्री सर्व्व शक्तिमान् कृपासिंधु दयानिधान जगदीश्वर चिदानन्द परमेश्वरको साष्टांग दण्डवत्कर अपने सर्व्वशुभो-पमायोग्य मित्रों रँगीले परमप्रिय सुजनों रसिकप्रेमी महाशयों से निवेदन करताहूं कि मुझमतिमन्द आपलोगोंके चरण सेवक का नाम हफ़ीज़ुल्लाहखांहै मैं क़ौम अफ़ग़ान का करज़ई क़सबै सांड़ी मुहल्ला ऊंचाटीला निकट दरियाय गर्रा ज़िला हरदोई मुल्क अवधका निवासी २० वर्षकी अवस्था से मदर्सा बन्नापूर डाकखाना बघौली ज़िला हरदोई का अध्यापक हूं जिसको दश बर्षके क़रीब यहां व्यतीत होगये ॥ खैर यहतो मेरा समाचार होगया अब कुछ मुख्य वार्त्ताभी सुन लीजिये अर्थात् आपलोग सब जानते हैं कि हिन्दीभाषाकाव्यकी मनहरणतरंगें ऐसीनहीं हैं कि जिनके अवलोकनहीसे मुद्दतोंकादुःख मनुष्यके हृदय से न धोजाये और इसपरमसोहावनिमृगनयनी शीलवन्त पिकबयनी नागरीभाषाके ऐसे वचन नहींहैं कि जिनके एकबार भी कानमें पड़नेसे हरएक सुजन महाशयका चित्त गद्गद न होजावे या उसकी ओर टकटकी बांधकर न रहजाये मनुष्यका जन्मलेकर जिसको इस अमृतरूपी हिन्दीकाव्यके पढने पढाने सुननेसुना-नेकी ओर जिसमें कि हमारे प्राण प्यारे भक्त भयहारी कुंजबि-हारी रसिक शिरोमणि श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द और श्रीलाडि-ली राधिकाजी महाराणी ब्रजईश्वरीके विशेष लीलाविषय का चरणोदकभी मिलाहुआ होताहै रुचि और उसको सच्चे पवित्र दिलसे ग्रहणकर पान करनेकी इच्छानहुई तोमेरे विचारमें उस

से बढ़कर कोई दुष्ट चाण्डाल महा मूर्ख संसार में न होगा हम तुम सबको उचितहै कि अपनी इसफुलवारीरूपी देहके बागीचे में अवश्य श्रीराधाकृष्णके प्रेमका वृक्षलगा उसको सुशोभितकर इन्हींके लीलाविषयक काव्यके जलसे गुणानुबादकरसींचाकरें तो महाहर्षकी बात है नहीं तो सब वृथाहै इन्हींबातोंको बिचार कर इसमतिमन्दने यह संग्रह बड़े परिश्रमसे सैकड़ोंकाव्यइकट्ठा कर उसमेंसे छांट २ दोभागोंमें निर्मितकिया जिसके प्रथमभाग में १०२२ व द्वितीयमें ११६२ चुनेहुये कवित्व व सवैयाऐसेऐसे अत्युत्तम लिखेहैं कि जिनके देखतेही श्रीराधाकृष्णलीलाके प्रेम की तरंग हृदयमें लहरा उठतीहै जिसकोनिश्चयनहो ध्यानकर के देखले कि साक्षात् वह मनमोहनी स्वरूपआकर निर्मलहृदय में बिराजमान होताहै कि नहीं परंतु मूर्ख दुष्ट पाषाण निर्दयी हृदयवालोंकी मैंनहींकहताहूं उनकीतो आदिसेही फूटीहोतीहैं॥ श्री राधाकृष्णजी के कमलरूपी चरणोंकी प्रीतिसे सबका हृदय परमेश्वर सुशोभित रक्खैं॥

प्रकटहो कि इसके बनानेमें जोकुछ हमारी सहायता हमारे शील सागर कृपानिधान यशस्वी गुणखानि परोपकारी परम-सुजान सर्व्वशुभोपमायोग्य महाशय श्री ठाकुर रघुनाथसिंह साहब गहरवार बंश नम्बरदार थावर थाना मलिहाबाद ज़िला लखनऊ और उनके पुरोहित व हमारेमित्र परमसुशील सकल गुणनागर अतिकृपालु सर्व्वोपरि बिराजमान रसिकछबीले प्रति गुणअधीले मनहरण पिकबयन सत्यवादी कटाक्षनयनमान्यवर श्री महाराज शिवप्रसादजी साहबने दीहै उसका धन्यवादछोटा मुँह बड़ी बातहै श्रीठाकुर साहब जबकभी अपनी ससुरालबन्नी पुर में आते हैं उनदिनों की चुहल हँसी दिल्लगीकी बातैं देखने योग्य होती हैं ईश्वर अच्छीतरह उनको रक्खे और विशेषकर हमारेप्राणाधिक प्रिय मदर्सेके बिद्यार्थी अर्थात् स्वस्तिश्रीभय्या महिपालसिंह व दिकपालसिंह व रेवानसिंह व गुमानसिंह गौर

केशवपूरानिवासी व बैजनाथसिंह व जगरूपसिंह व भीष्मसिंह वमकरन्दसिंहआदिने इससंग्रहकेलिखनेमें हमारा बड़ाही हाथ बटायाहै सच्चिदानन्द परमेश्वरइनसबको चिरंजीवकरेहमआशा करते हैं कि जितने हमारे सच्चे और परमप्रिय शीलसागर मित्र होंगे वे हमारे इन दोनों संग्रहों को देखकर जिसमें कि श्री महाराज कुंजविहारी व श्रीबृषभानु नन्दिनी जी महाराणी के लीला विषयकी तरंगें हरएक ईश्वर भक्त महात्मा सुजनों कोमल हृदय वालोंके चित्त को अति आनंददेकर कैसा कैसा सुख उपजारही हैं यदि हमारी प्रशंसा न करेंगे तो हमको बुरा भी न कहेंगे परन्तु जितनेमुखके चिकनेचुपड़े पेटके मैलेकेवल मनुष्य की खाल ओढ़ने वाले मूर्ख दुष्टजन होंगे वह इसको देखतेही जीतेजी ईर्षाकी पावकसे बरसाती गीले ईंधनकी तरहसे सुलग सुलगकर रहजावेंगे क्योंकि श्रीमहाभारत पुराणमें लिखाहै कि मूर्खोंको सदा यहीतलाश रहती है कि हरमनुष्य की वार्त्ता और बनाईहुई पुस्तकों में ऐबही निकालाकरैं जिसतरह से कुत्ते को चाहे जितनीचीज़ें रक्खी हों केवल मैलेहीकी ओर उनकीरुचि होगी और सुगन्धित बस्तु की तरफ़ मुख भी न उठावैंगे खैर चाहे जैसाहो अपना तो इसीपर विश्वासहै ॥

दो॰ जो तोको कांटा बवै ताहि बोय तू फूल ।
तोको फूल के फूल हैं वाको हैं तिरशूल ॥

सचहै कि सुजन सब को अच्छा और दुर्जन दुष्ट सबको बुरा ही जानते हैं ॥

दो॰ हाफ़िज़ जी संसार में ज्वारी चोर लवार ॥
जानति हैं प्रतिएक को निजस्वभाव अनुसार ॥

सब का चरणानुगामी और प्रेमाभिलाषी { स्वर्गबासी हफ़ीज़ुल्लाहखां मुदर्रिस मदर्सा बन्नापुर डाकखाना बघौली ज़िला हरदोई मुल्क अवध



हफ़ीज़ुल्लाहखांका

हज़ारा ॥

पहिलाभाग ॥

परमात्माकी बन्दनाके कवित्त व सवैया ॥

क० । सधना कसाई व्याधकेवट कबीरदास इनके समीप प्रेमरस भीजियतुहै । सेनानाऊ नामदेव नानिक अजामिलसे रैदास चमारसो गिनाईदीजियतुहै ॥ चूड़ामणि ऐसेऐसे पावत परमधाम जिनहीसों तेरोनाम नामलीजियतुहै । मेरीनहींलाजतोहिं धरमजहाज़कहा राजनीचजातिहीके काजकीजियतुहै ॥ १ ॥

तथा । पूरणपुराण परमानन्द परेशतू है पारावार हूंते परे प्रकृत प्रधानमें । घटघट तेरोबास सदा तूस्वयंप्रकाश तेरीचिदाभास सो न बनतबखानमें ॥ विधि औनिषध भावाभाव ते रहित तूहै शुद्धबुद्ध तूहै ध्याता ध्येया और ध्यानमें । तूहै निहसङ्ग तोमें गुणके प्रसङ्ग ऐसे जैसेरङ्ग देखियत फटिकपखानमें २ ॥

तथा । तौलगितूसुखी तौलौंदुखीनिधनीधनीहैंतौलौं तोहिं विषमादहरषअपारहै । तौलौंतोहिं घेरे हैं उपाधि आधि ब्याधिसबैतौलौंतोहिं लागो नातगोतपरिवारहै॥ हित अनहितछोटो बड़ो तौलौं जानत है तौलौं जीव ईशब्रह्मतीनों निरधारहै । तौलौं तोहिं पुण्य पाप लागत शरापताप जौलागितू आपनोनकरत बिचार है ३

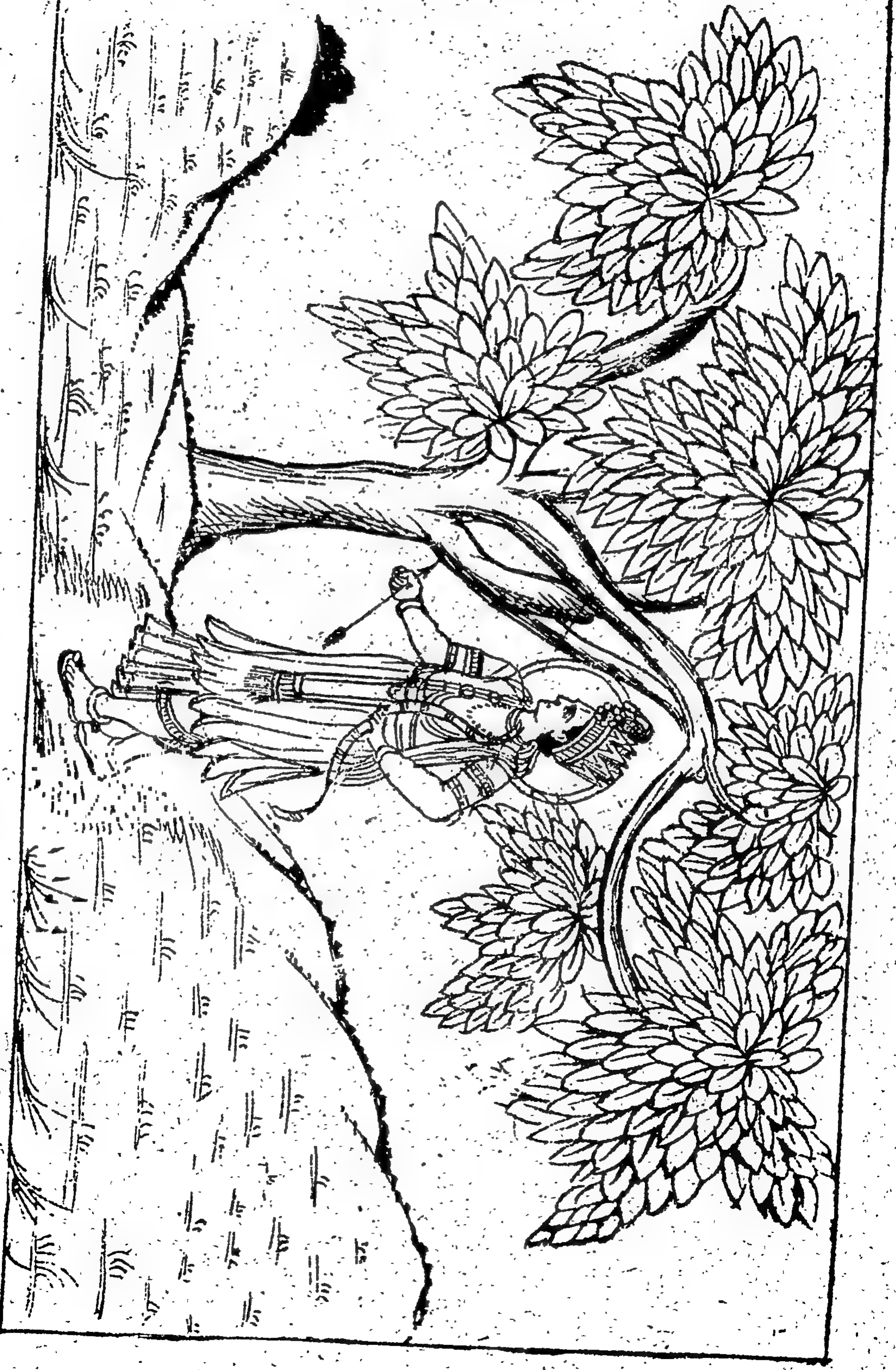
तथा । पृथ्वीनाहिंपानी नहिंपावकपवनतूहै नातूहै अकाशजिन्हैं आपकरि जान्यो है । नातू है करननातू अन्तहकरण नातू जनन मरनभेद भावमें समान्योहै॥ नातूहै शवदअसपर्श रूपरसगंधकारण न कारजनकरताबखान्यो है । साखीइनसब को तू अनन्यचैतन्य ब्रह्मकहाकहौं आपुहीते भ्रमत भुलान्योहै ॥ ४ ॥

तथा ।भूलिभूलिभरिभरिभ्रमहीतेभयो उज्ज्वलअनूपनिजरूपबिसरायोहै ।पायोपंचभौतिकशरीरकोशरण तातेआपुहीमें जीवनमरण ठहरायोहै॥ भयोदीनदूबरो मलीनसब बिद्याहीन याबिधि अबिद्यावश जीवतूकहायोहै ।नातोकछूबन्धन नबन्धनको करनिहारोआपकोतू आपबिन बन्धन बँधायोहै ॥ ५ ॥

तथा । आपकी अधीनछीन छोटीमानिलीन्ह्योकहा बड़ोजानि काकेतू करत गुणगानहै । कहाजानि सूदर दुर्यो वै दूरहीते अरु कहाजानि द्विजतू करत सनमानहै ॥ मायाके बनाये रूप राजत अनेकभांति एकबहु आत्मा तौ सब में समान है । जैसे सोन रूपलोह माटीकेघटनबीच देखितू बराबर बिराजिरह्यो भानहै ६ ॥

हज़ारा तस्वीर नं० २ मुतअल्लिके सफ़ा ९

श्रीरामचन्द्रजीकी मूर्त्ति ·



तथा । असनवसन छोड़ि आसन करो अनेक धरोत्यागि धरो जाय ध्यान निरमोही में । तीरथ अटन करोवेद्को रटनकरो जटनबढ़ाय तपोजाय गिरिखोही में ॥ तेरी यात्रतापकी तौ तपनि मिटैगी तबै जबै मन डूबैगो अमृतधार ओहीमें । कह्योंमैं पुकारिदेखि आप तूबिचारयेरे तेरीकरिव्याधि की उपायअब तोहीमें७॥

तथा । पटिगो अँध्यारहीसो फटिगो उज्यारी फैल मैल ह्वै अमैल ज्ञान गैल ते वहटिगो । हटिगोचमतकार चेतन अपारमहा उज्ज्वलअनूप निजरूपते उघटिगो ॥ घटिगो घनोसुख सिमिटिगो घनेरोदुःख आप को न जान्यो आपु याविधि उलटिगो । लटिगो मुगुद ह्वैके सटिगो विषयमें यहआत्मा उचटि माया नटीसों लपटिगो ८ ॥

तथा । पाय प्रभुताई कछु कीजियेभलाई इहांनाहीं थिरताई बैन मानिय कबिनके । यश अपयश रहि जात बीच पुहुमीके मुलुकखजाना बेनी साथ गये किनके ॥ और महिपालनकी गिनतीगिनावे कौनरावणसे ह्वै गये त्रिलोकीबश जिनके । चोपदारचाकर चमुपतिचँवरदार मन्दिर मतङ्ग ये तमाशे चारदिनके ९ ॥

स० । आलसनींदमें मातोसदा अरुउद्यमहीन दुबेरखवैया । प्यासलगैनाहिं पानी भरौं अरुपासधरोउठिकैन पिवैया ॥ ऐसे निकम्मनके शुकदेव कृपाकेधाम हौपेटभरैया । भोरते सांझ अरुसांझते भोरलौं मोसों कुपूत न तोसों दिवैया १० ॥

तथा। चाहै सुमेरुकोछार करै अरु छारको चाहै सुमेरु बनावै। चाहै तौ रंकते राव करै चहै सबकोछार-हिछार फिरावै॥ रीतियही करुणानिधि की कविदेवकहै विनती मोहिंभावै। चींटीके पायँमें बांधि गयन्दहिचा-है समुद्रके पारलगावै ११॥

तथा। स्थावरजंगम रूपजिते सबनानाभांतिनरूप धरेहैं। तामें सच्चिदानन्द महाप्रभु आतमएकप्रकाश करेहैं॥ सो विनुजानेते सिन्धुसमान औ जानेतेगोपद बिन्दु तरेहैं। बन्दिततातहि सदाशुकदेव जो ब्रह्मचरा-चर रूप परेहैं १२॥

क०। जब दांत न थे तब दूधदियो जब दांतभयेतो अनाजहि देई। जीवबसै थल औ जलमें तिनकीसुधि लेइतौ तेरिहूलेई॥ जानको देत अजानकोदेत जहान-हिं देत सो तोहुँक देई। क्योंअब शोच करै मनमूरख शोच करे कछु आज न देई १३॥

तथा। जिनहीं सरितान अरु पोखरिन जल सोंकि लीन्ह्यो तेई सरितान में फेरिजल भरिहैं। जिनहीं तरु-वरनको पत्रफल विहीन कीन्हो तईतरुवरन में फेरिपत्र फरिहैं॥ जिनहीं बलिराजजूको स्वर्गतजि पतालराखो तेई बलिराजफेरिइन्द्रपदवी करिहैं। कहैछत्रशालवीर येरेमनधरैधीर जिनहींउपराजीपीर तेईपीरहरिहैं १४॥

स०। हौं कबको रट लागिरह्यो गहि दीनस्वभाव मनवचकायक। दीनकेबन्धुकहावतहौ हरि काहेतेहोत न आनिसहायक॥ काहेसे ढीलकरी करुणामय कृष्ण

कहै प्रभु हौ सबलायक। जानिपरी तुमहूं को कछूअब ब्यारलगी जगकी जगनायक १५॥

तथा। ह्वै अति आरत मैं बिनती बहुबारकरी करुणा रसभीनी। कृष्ण कृपानिधि दीनकेबन्धु सुनीअसुनी तुमकाहेकि कीनी। रीझते रंचकही गुण सों वह बानि बिसारिमनों अबदीनी। जानिपरी तुमहूं प्रभुजी कलिकालके दानिनकी गतिलीनी १६॥

तथा। हौंउनकी गिनतीन में हौं प्रभु जे तुमतारे ते आपनी गोहीं। कृष्णकहै गिनते नबनै कछु पापिन की परमा विधि होहीं॥ होनीहै जोकुछ ह्वै है वहै गति मेरी यहचाल कुचाल नहोहीं। खेल नहै प्रभु मेरोउधारिबो भूल न कीजे वृथा हठयोहीं १७॥

क०। हाथी के दांतनके खिलौना बनैं भांति भांति बाघनकी खाल तपीशिव मनभाईहै। मृगनकीखालन को ओढ़तहैं योगी यती छेरीकी खाल थोड़ापानीभरि लाईहै॥ साबरकी खालनको बांधत सिपाहीलोगगैंडनकी खाल राजारायनसोहाईहै। कहैकविदयारामराम के भजनबिन मानुषकीखाल कछुकामनहिंआईहै १८॥

स०। जापजप्यौं नहिं मंत्रथप्यों नहिं वेद पुराण सुन्यों न बखानो। बीतिगये दिन योंहीं सबै रस मोहन मोहन के न बिकानो॥ चेरो कहावत तेरसदा पुनि औरन कोऊ मैं दूसरोजान्यो। केतो गरीबको नेहु निवाज नतो छोंडो गरीब निवाजको बानो १९॥

तथा। सेवकचूककरै बहुधा प्रभुताहिन क्रोधविरोध

विचारो। पूत कपूतीकरै कितनों पितु मातु नहीं दुख भाव निहारो॥ पालनपोषण नित्त करै मुद मोदसमेत हमेश दुलारो। बूड़तपाप समुद्र पवांर दयाकरिकैअब वेगिउवारो २०॥

क०। पतितउधारन कहतसबकोऊ सोऊ सांचभूंठ अब ठहरायगो बनायकै। कहैकवि कृष्ण जिन और के भरम भूलौहौंतौ गुरुपापी मनबचअरुकायकै॥ तास्योहै पखेरू एकगीध तामें गीधेतुमसोही यश राख्यो है जगत पगरायकै। कौन भांति राखिहो बिहारि अब देखिये जू कठिनबनीहै अबगीधेमोसों आयकै २१॥

तथा। तोसों एकतूही औरदूसरो न राजारामतेरेही रचेहैं लोक सुर नर नागरे। सोई बीतराग जिन कीने तपजपजाप सोईबड़भागजाकोतोसों अनुरागरे॥ आपतन देखिये न देखो करतूति मेरी अधम उधारिबे की तेरे शिर पागरे। मोसे अपराधीहैंन तोसेहैं सहनहार मोसे निरगुणीहैं न तोसे गुणआगरे २२॥

तथा। मैंतोहूं अनाथ नाथ तूही एकनाथ मेरो दूजो और कौन ताको राखोंकछु भावरे। धर्म अर्थकाम मोक्ष चारोंको दाता सुनि तासोंतौनित्त मोहिं चित्तबढ्यो चावरे॥ गणनके नायक बरदायक सदाके आप तेरीही आशपै एतोसब उछावरे। आधी तौ येआयु आछी बीत चुकी शरण तुव आधी और रही ताकी लाज राखुरावरे २३॥

स०। दीरघता जो गनैअपनी तो गनावोंकहांलग

केतेपहारहैं। श्वास खलांयतयों भरते अरु बोलतो मण्डुक काकहुंकारहैं॥ कूकर शूकर भोगकरैं मुखकान औ नैन मनो भुवि गारहैं। जेनभजैं यदुनन्दनको ते वृथा जग जीवत भूमिके भारहैं २४॥

तथा। याजगजानकी जीवनको यशक्यों इक आनन गाइ अघैये। त्योंपदमाकर मारगहै बहुद्वैपद पाइकितै किते जैये॥ नामअनन्त अनन्त कहैं ते कहैं न परै कहिकाहि जतैये। रामकी रूरी कथा सुनिबे को करोरन कान कहो कहांपैये २५॥

क०। आनँदकेकन्द जगज्यावन जगतबन्द दशरथ नन्दके निबाहेई निबहिये। कहै पदमाकर पवित्रपन पालिबेको चोरै चक्रपाणिके चरित्रनकोचहिये॥ अवध बिहारीके विनोदनमें बीधि बीधि गीधा गुह गीधके गुणानुवाद गाहिये। रैनि दिन आठोयाम राम राम राम राम सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २६॥

तथा। आवतहू जातखातखेलत खुलतगात छींकत छकात चुपचापहू न रहिये। कहै पदमाकर परेहूपरभातप्रेम पागत परात परमातमें न जाहिये॥ बैठतउठत जात जागत जँभात सुख सोवत हूं शापनैन औरेनाघनहिये। रैनिदिनआठोयाम रामराम राम राम सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २७॥

तथा। गोदावरी गोकरण गङ्गाहूगयाहू यह येही कोटितीरथ कियेको लाभ लहिये। कहैपदमाकर सुज्ञानयहै ध्यानयहै यही सुखस्थान सरबस्वमानिरहिये॥

येहीजप येहीतप येहीयज्ञ योगयहै येही भवरोगको उपाय एक अहिये। रैनिदिन आठोयाम राम रामराम राम सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २८॥

तथा। काहेको बघम्बरको ओढ़िकरो आडम्बरकाहेको दिगम्बर ह्वै दूब खाय रहिये। कहै पदमाकर त्यों कायके कलेशहित सीकरसभीत शीतबात तापसहिये॥ काहेको जपोयेजप काहेको तपोयेतप काहेको प्रपंचपंच पावकमें दहिये। रैनिदिन आठोयाम राम रामराम राम सीताराम सीताराम सीताराम कहिये २९॥

स०। घोसकी रातिकरै जोचहै चहिरातिहूंकोकरि घोसदिखावै। त्योंपदमाकर शील को सिन्धु पिपीलिका केवल फील फिरावै॥ यों समरत्थ तनय दशरत्थ को सोईकरै जो कछू मनभावै। चाहेसुमेरुको राईकरै रचिराईको फेरि सुमेरु बनावै ३०॥

क०। परेजड़ जीव जान राखु वेदभेद यहै सम्रत पुराण राखी यही ठहराइहै। कहै पदमाकर सुमायापरपंचन को पेख परपंच पेखने को सब भाइहै॥ तातै भज दशरथ नन्दरामचन्द्रजूको आनँदकोकन्द कौशलेश रघुराइहै। जादिना परैगोकाम यमके यसूसनिसों तादिना तिहारेकाम रामनाम आइहै ३१॥

तथा। योग जप सन्ध्यासाधु साधन सबेई तज्यो कीन्हें अपराध जे अगाध मनभावते। तेतजि औगुणअनन्तपदमाकर तोकौन गुणलैके महाराजाहिरिझावते॥ जैसेअव तैसेपैतिहारे बड़ेकामके हैं नाहींतोनयेते

बैन कबहूं सुनावते। पाउते न मोसों जोपै अधमकहूं तो राम कैसे तुम अधम उधारन कहावते ३२॥

तथा। हानि अरु लाभ ज्यान जीवन अजीवन हूं भोगहू वियोगहू संयोगहू अपारहै। कहै पदमाकर इते पै और केतोकहो तिनको लख्योन वेदहूमें निरधार है॥ जानियत याते रघुरायकी कलाको कहूं काहू पार पायो कोऊपावतनपारहै। कौनादिन कौनछिन कौनघरी कौन ठौर कौन जाने कौनको कहाधों होनिहार है ३३॥

तथा। प्रलयके पयोनिधिलों लहरें उठनलागीं लहरालग्यो त्यों होन पौन पुरवैयाको। भीरभरी भावरी विलोकि मँझधारपरी धीरना धरातपदमाकर खेवैयाको॥ कहांवार कहांपार जानी है न जात कछू दूसरो देखात ना रखैया औरनैयाको। बहन न पैहै घोरघाटहीलगैहै ऐसो अमिटभरोसो मोहिं मेरेरघुरैयाको ३४॥

तथा। जाटहू धना के सदनाके शुद्धसाथीभये हाथीहू उबारत न बारमनलाये हैं। कहै पदमाकर कहै नपरसते ते जगजेते कपिऋक्षनको बिरदबढ़ायेहैं। साधनकेहेत तन पाल्योप्रहलादहू को याद करो जायशबरी के बेर खायेहैं। राखतहैं राखेंगे रखैया रघुनाथजन आपने की बात सदा राखतेई आये हैं ३५॥

स०। पातकीपावनहो तुमरासर हैं हमपापहीमें मद माते। दीनके बंधुदयालइकेतुमहोहम दीनदशा नहिंपाते॥ पालकहो तुमविप्रनके हमहूपदमाकर विप्रसुहाते। यातेरटों नहटों प्रभुपासतेहैं तुमते हमतेबहुनाते ३६॥

तथा। वैस विसासिन जातबहीउमही छिनहीछिन गङ्गकि धारसी। त्यों पदमाकर पेखनिया अजहूं नभ-जै दशरत्थ कुमारसी॥ वारिपुके थके अंग सबै मठि मीच गरेई परी हर हारसी। देखैदशा किन आपनी तू अब हाथ के कंगनको कहा आरसी ३७॥



श्रीगणेशजीकी स्तुति आदि के कवित्व व सवैया॥

क०। वन्दौं मैं अनन्दकन्द कीरति अमन्दचन्द दरनकुफन्दइन्दघायककुमतिके। सिद्धिबुद्धिदायकविना-यक सकललोक सोहैं सर्वलायक औनायकसुमतिके॥ कोमल अमलअतिअरुण सरोज ओजलखि लज्जित मनोजदानि शुभगतिके। विघनहरणमुद मंगलकरन-वारे अशरणशरण चरण गणपतिके १॥

तथा। मंगलसदन गजबदन लसतभाल बालइ-न्दुछवि देखि मनहरषतहैं। राजतहैं दन्तएकभ्राजतहैं चारिभुजछाजतहैं तिलक सिंदूरसुसजतहैं॥ ऋद्धिसि-द्धिसम्पति विद्याविधान शिवसुत आदिदेवजाहि निग-

मागम भनतहै। कहै अमरेशकरसम्पुट विनयसुनाय कीजै पूरोकाममनमोरे जो बसतहै २॥

तथा। रामगुणगावै निजहिये हुलसावैमनभावैफल पावै रामनामके प्रतापको। पापकोशरीर मन आवत नधीरहिये ब्यापीभवपीरताते भूलिगयोआपको॥कहत दिवानोकऊकहत सयानोअति मोहिंसनमानो प्रभुमेटितिहूंतापको। विनयअमरेशकी हमेशहिगणेशपहँ रहिये दयालु भूलि मेरेसबपापको ३॥

तथा। सिद्धिके सदन गजबदन विशालतनु दरश कियेते बेगिहरत कलेशको। अरुणपरागको लिलाट मोंतिलकसोहै बुद्धिके निधान रूपतेजज्यों दिनेश को॥ मंगलकरण भवहरण शरणगये उदितप्रभाव जाको विदित महेशको। जेते शुभकाजतामें पूजिये प्रथम ताहि ऐसो जगवन्दन सो नन्दन महेशको ४॥

तथा। बारिज से नयनसोहैं एकई रदनजाके सुखमासदन सो सहायकारिसातिके। दारिद दहन सुर तरु को ग्रहण सोहै मूषकबहन बिहगन खलमतिके॥ सब सुखसागर उजागर गुणाकर हैं बुद्धिबर नागर देवैया शुभगातिके। विमलकरन ज्ञान ध्यान धरि शिवनाथ संकटहरणये चरण गणपति के ५॥

श्रीरामचन्द्रजीकीप्रशंसा व चरित्र आदि के कवित्व व सवैया॥

क०। भूपदशरथ्यको नबेलो अलबेलोरणरेलोरूप झेलोदल राकसनिकरको। मानकवि कीरति उमण्डी

देखो तसवीर नम्बर २॥

खलखण्डी चण्डीपतिसोघमण्डी कुलकण्डीदिनकर-
को॥ इन्द्रगजमंजनको भंजनप्रभंजतनै ताकोमनरंजन
निरंजन भरणको। रामगुणज्ञाता मनबांछितकोदाता
हरि दासनकोत्राता धन्यभ्रातारघुबरको १॥

तथा। ध्रुवकीधरनि जैसी जैसीकीन्हीप्रहलादतैसी
करेकौनतहां बुद्धिहूधसाईकै। तारीमुनिनारी पतिरूप
जोबिगारी शक्रगीधउपकारी तस्यो रावणैखँसाईकै॥
तारिबे गदाधर तिहारो तहां जेतेनाहीं तेतेतरे निज
पुण्यरावरीरसाईकै। मोहूं आवैभाईभाई आपुकीदसाई
देखि पुरुषदसाईतारे सदनकसाईकै २॥

तथा। हंसनकेछौनास्वच्छसोहत विछौनाबीचहोत
गतिमोतिनकीज्योति जोन्हयामिनी। सत्यकैसी ताग
सीता पूरण सुहाग भरी चलीजयमाललै मरालमन्द
गामिनी॥ जोईउरबसीसोईमूरति प्रत्यक्षलसी चिन्ता-
मणिदेखिहँसी शंकरकीस्वामिनी। मानोंशरदचन्द्र च-
न्द्रमध्य अरबिन्द अरिबिन्दमध्य बिद्रुमबिदारि कढ़ी
दामिनी ३॥

तथा। जटाकेजमाले कहा नदीनदन्हायेकहा कन्द
मूलखाये कहाबनोबासकेकिये। मूड़के मुड़ायेकहा द्वार-
काकेजायेकहा छापकेलगायेकहा तुलसीकियेगये॥ ति-
लक चढ़ायेकहा मालाके फिरायेकहा तीरथनहायेकहा
दानदत्तकेदिये। एतोसबकिये कहा कोटिनामलियेकहा
जानकीको जीवनजोपै केवल नहींकिये ४॥

तथा। तबनाविचास्योपाप गीधसों सुगतिदीनो तब

नाबिचारयोपापगणिकाउधारीहै। तब ना बिचारयोपापशेवरीकेफलखायो तबना बिचारयो पाप शाप तिय हारीहै॥ कहैंकबिमानपुनि तबना बिचार्योपाप बानर निशाचर बनाये अधिकारीहै। भईजरवारीसोभरोसो मोहिंभारीअब अवधबिहारीसुधिलीजियेहमारीहै ५॥

तथा। प्रफुलितभयेहैं सब अवधपुरीके बासी प्रफुलितसरयूकीशोभासरसाईहै। नाचैंनरनारी अतिआनँद अपारभयेघूरतनिशानमुरलीधरसुखदाईहै॥ देवता बिमाननते फूलनकीवृष्टिकरैं बन्दी सूतमागध अनेक निधिपाईहै। चलिक्योंन देखैआली रामकोजनमभयो दशरथके द्वार बाजै आनँदबधाईहै ६॥

स०॥ वृक्षनबल्लीचढ़ीकरिचोप अलीअलिनीमधुपीमदकारी। कोकिलशारिकाकीरकपोतकरैं ध्वनिमाधुरीकाननचारी॥ फूलेसबैबनबागतड़ागभरेअनुरागपियाअरुप्यारी। चैतमेंचारुबिहारुकरैं दशरत्थकुमारबिदेहकुमारी ७॥

क०। पापनते पीनअतिविषयलवलीन निशिदिवसमलीन फँसोजगतकेजालमें। निजकृतभोग किधौंसंसृतकुरोग किधौंलिख्योना बिरंचिहीं भलाईकछुभालमें॥ आनुमनधीर भजुसियरघुबीर जातेमिटै भवपीर नतोजरादुःखज्वालमें। मुनिनबिचार कीन्ह्यो वेदअनुसारकह्यो नामहीअधारअमरेश कलिकालमें ८॥

तथा। काहूको है धनबल काहूको धराणिबल काहू निजबलबलकाहै बारबारहैं। काहूकोहैगुणबलकाहूको

हैपुण्यबल्ल काहूको है कुनबल्ल सुन्दरबिचारहै ॥ काहू वल्लभूप काहूसुन्दरस्वरूप अति जानतअनूपरूपशशि करसारहै । कहैअमरेश मोहिंदेशहू बिदेशहूमें जानौं सत्यभावएकनामके अधारहै ९ ॥

तथा । नामकोप्रतापकलिदापनहिंव्याप हियछूटत हैपापतेजबढ़तहै तनको। नामजपै आनन जो गुणसुनैकाननते मानतहैंबात सुखबासवसदनको ॥ तज्यो निजधामजप्यो नाम आठौयाम ध्रुवपायोध्रुवधाम फल नामके रटनको । छोड़िझूंठो नेह कररामते सनेहताते यहैशिषदेत अमरेश निजमनको १० ॥

तथा । नामहीकेबलसहसानन धराधरत नामबल रचै चतुरानन जगतको । नामहीकेबल शिवाशिवको प्रभावसबनामही अधार एक केवलभगतको ॥ नामही के आश जनमेटैभवत्राससब नामबलहोतयो नतोरूप कोलखतको । नामकीरटन निशिदिनअमरेशकरुनाम को बिसारिकतधावत अनतको ११ ॥

तथा । नामकेप्रभाव बालमीकिकी सुधरि गई मरा मराकहे गतिपायो भलीभांतिसों । नामहीके ओटशेवरीको सब खोटगयो कीन्हों ना बिचार कछुऊंची नीची जातिसों ॥ नामलेत अघगणिकाकोसबदूरिभयो पायो शुभमुनिगति खगसमपातिसों । नामके जपतअमरेश हैअनन्दबड़ोजगसुखदुखहोतजातादिनरात्तिसों १२ ॥

स० । रकार मकार पुकारसदा श्रुतिसार बिचार अधारधराको। कालकरालके जाल बिशालते नामध-

रेफँसिजायमराको ॥ भाय कुभाय हुते हरिनाम जपे भवसिंधुन पार तराको। अमरेशकहैं जपते जपतेफल एकहि होतहै राममराको १३ ॥

क०। रामनाम जपतमहेश शेश औ गणेश नामजपि उमा आवागमन मिटावहै। रामनाम जपतअनन्त सन्तसनकादि नाम जपि ध्रुवधामअचल सो पावहै॥ रामनामजपि मुनिबालमीकि ब्रह्मभये बड़ोई प्रभाव वेदनेति कहिगावहै। कहैरघुनाथ सोई राम नाम भल मध्यताहि जो विदूषै सो तो मूढ़नको राव है १४ ॥

तथा। गजकी चलनि कहाजानै खर कूकरऔभोगी कहाजानै योगरङ्क सुख रावको। गोमलको जीव कहाजानैबास पंकजको कोलखत दासी पतिब्रता केरे भावको॥ कूपकेरे दादुरते जानैं कहा सागरको नरकी सोरङ्ग काकहंसके स्वभावको। कहै रघुनाथ ऐसे कूर नर मूढ़ जौन तौनकहाजानैं रामनामकेप्रभावको १५ ॥

स०। रामके नामकेअक्षर द्वै महिमाकहि शेषसकैं न करोरी। जासुप्रसाद सुरासुरमें हरहर्षि हलाहल पान करोरी॥ जनरघुनाथके माथसोई जो सजीवनसार सुधारसकोरी। रकारश्रीराजकुमार उदार मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी १६ ॥

तथा। सत्यरकार रहै जो सदा असुचित्त अकार सचेतन जोरी। आनंदरूप मकार मिदं हरिनाम सच्चिदानन्दकहोरी॥जनरघुनाथके माथसोई शिववाक्य

महा रामायणकोरी। रकार श्रीराजकुमार उदार मकार सो श्रीमिथिलेश किशोरी १७॥

तथा। नाम प्रभाव गुनैन सुनैफुर फेरि न देखिये तामुख ओरी। ओर विलोकतखोरिलगै इमिब्रह्मपुराण के माहिं लिखोरी॥ जनरघुनाथके माथसोई जो करै शुचिशीघ्र सुलम्पटकोरी। रकारश्रीराजकुमार उदार मकार सो श्री मिथिलेश किशोरी १८॥

तथा। जो फलना कुरुक्षेत्रमें विप्रनकञ्चनको भुव दान दियेते। जोफल योग औ यज्ञकिये नहिं जोफल धूमहू पानकियेते॥ जोफलदामहिदानदिये सबतीरथ-हू परिकर्म्म कियेते। जोफल बन्शी सो कोटि उपाय से सोफल रामको नाम लियेते १९॥

क०। जिन्हैं तूमगन तेरेतिन्हैं ताकि देखो नरनग्न कै निकारिके चढ़ायबेको जीताहै। सपनेकीसम्पदासु-लभसाथ सवही के सोई हितलाग्यो हरिनाम आनि हीताहै॥ कहै मिश्रबन्शी कवहू न आई मतिवैसीजैसी चहू छहू ठहराय गावैगीताहै। चेतनहीं परैगो पैतरी ताके चलोअब सीतारामजपिलेजनमजात बीताहै २०

श्रीमहादेवजीकी स्तुति आदिकेकवित्व व सवैया ४॥

तथा। दाहिनेचरणमें विभूतिभूतिभूष मान बायेंपग जावक जमाते कांतिसों भरी। आधे अङ्ग अम्बर बघ-म्बर विराजमान आधेअङ्गसारीजरतारी छविसोंजरी॥ आधे गरे व्याल आधे हीरनके मालहैं आधेभाल

देखोतस्वीरनम्बर ३

हज़ारा तसवीर नं॰ ३ मुतअ़ल्लिक़े सफ़ा २२

महादेव व पार्वतीजी की मूर्त्ति॰



चन्द्र आधेटीका आड़ केसरी। गिरजागिरीश यह रूप गिरिधर भनै मोंपरमहेशजू महेश्वरी कृपाकरी १ ॥

तथा। तूहीं खग्गधार निराधारको अधार तूहीं तूहींधराधरको अधारह्वैअटतिहै। सुभटसमूहनमें आय जन आपनेको तूही रण रूपकी फतूहप्रकटातिहै॥ भनत कवीन्द्र तेरीमूरति त्रिलोकमयी तूहींसब मूरतिह्वै पूरति पटातिहै। जहां देववृन्दनको परात न राटीभीर तहां अम्बतेरी ऐनपाटी निपटातिहै २॥

तथा। शोभा सुर सम्पातिकी राशि जे प्रकाश करि अन्तरमें आवतही तमको हरतहैं। जापर अनङ्गरिपु नयन पतङ्ग कैसे दीपक के रङ्ग भूलि भांवरे भरतहैं॥ देत मन कामनाजे परसन भये अम्ब दरशनहीते दुख दारिददरतहैं। निकट न आवैं तिन्हें आपदा कीचिन्ता जेतिहारे पदचिन्ता मन चिंतन करतहैं ३॥

तथा। काके पास जाते दौरि निपट निराश रथ आशको पुजावतो गरीबनके मनकी। आपदके भारमें सम्हार कौन लेतो औ गोहार कौन करतो अधीनजन गनकी॥ त्राहित्राहिसुनि बांहगहिको उठावतोयों गाव-तोकहांलों ऊंचेटेक निजपनकी। होते जौन शम्भुरानी पदबरदानी तेरेतौपैकौन सुनतोकहानीदीन जनकी४॥

तथा। लोभझकझोरनते मदनहिलोरनते भारी भ्रमभोरनते कैसे थिर रहती। दुख द्रुम डारनतेपातक पहारनते कुमति करारनते कैसेकैनिबहती॥ जराजंतु औंकनके चिन्ताजल ठोकनकेरोगसोंगढ़ोकनके झाक

कैसे सहती। होतेजौन अम्बतेरे चरन करनधार मैया यहनैया मेरी कैसे पार लहती ५॥

स०। मारिमृगागजदेतप्रिये अरुमौक्तिकदन्तनसों शुभचालहैं। आपुन लेतसदा परिधानको आसनको मन मुदित खालहैं॥ माल मणीन की देत प्रिये नित आपलपेटत अंगन ब्यालहैं। भावन भावती के सुख दायकशंकरसों कहु कौन दयाल हैं ६॥

क०। पियो जब सुधा तबपीवेकोकहाहै औरलियो शिव नाम तब लेबेको कहा रह्यो। जान्यो निज रूप तब जानैको कहाहैऔर त्याग्यो मनआशातबत्यागिबो कहारह्यो॥ भनैशिवसिंह तुममनमें विचारिदेखोपायो ज्ञान धनतब पाइबो कहारह्यो। भयेशिवभक्त तबह्वैबे कोकहाहै औरआयो मनहाथतबआयबोकहारह्यो७॥

तथा। काली तेरीकीरतिहै छाई तीनोंलोकबीचकरै को बखान तेरो महाबल भारोहै। देवनको किह्यो पक्ष विश्वपर तेरीरक्षभयोउतपाती दैत्यतिनको संहारीहै॥ एक अर्ज मातु मेरी गरज लगीहै तासों शत्रुनचबाय डारो विनती हमारीहै। भूत प्रेतडाकिनी औ शाकिनी पिशाच जेते कहै रामलाल कुल शत्रुको उखारीहै८॥

तथा। बड़ेबड़े दैत्ययाहिजगमाप्रकटभये लैकैशमशेर हस्त असुरन भारीहै। चढ़ि कै गजारिजब लीन्होंहै कुलिशपाणिकीन्हों बहुजंगमचमतौ सबमारीहै॥ अहोजगदम्बा तेरेपकरेकदम्बामातुहोतहैगहरुममतनु



श्रीकृष्णचन्द्र जीका ऊँचेस्वरसे बाँसुरी बजाना।



त्राण कारीहै। भूत प्रेत डाकिनी औ शाकिनी पिशाच जेते कहै रामलालकुल शत्रुको उखारीहै ९ ॥

तथा। शम्भु बैठेहैं शिवाला पिये भांगभरिप्याला नितरहै मतवाला अहिअङ्गपैचढ़ायेहैं। गलसोहैमुंड-माला कर डमरू विशाला रहें ओढ़े मृगछाला भस्म देहमें लगायेहैं॥ साथसुरभी सुतवाला करै जक्तप्रति-पालामृत्युहरतहै अकाला शीश जटाकोबढ़ायेहैं। कहै रामलालामोको करो तुमनिहाला हरो गिरिजा पति कसाला जैसे कामको जलायेहैं १० ॥

स०। चन्द्र बिराजत भाल हवै अरु हाथ त्रिशूल औभस्म लगाये। बैलनकी असवारी हवै शिव ओढ़े बघम्बर काम जलाये ॥ भांग धतूरेके भोजनहैं शिव देहमें सर्प अनेक चढ़ाये। रमलाल पुकारिकहै कलि जक्त में छूटत पाप महेशकेगाये ११ ॥

क०। वहीज्ञानज्ञातावही सुमतिको दाता करमति दरशाता अङ्ग ब्याल लपटायकै। गरे मुण्डमालकण्ठ कालहूकोकाल शीश सोहतहै माल रीझै डमरूबजाय कै॥ ऐसेसमय महिमा बखानैको महेशजूकी बादेराम ध्यायोगुणकबितबनायकै। सकल सुमति सुखसम्प-तिसहित देकै सांकरमेंशंकर सहाय करो आयकै १२॥

स०। शम्भुको बाहन बैलबली बनिताहूको बाहन सिंहहि पेषिकै। मूसेको बाहनहै सुतएकसो दूजोमयूर केपक्षाबिशेषिकै॥ भूषणहै कबिचैनफणीन्द्रकेबैरपरेसब

तेसवलेखिकै। तीनहुलोकके ईशगिरीशसों योगिभये घरकी गतिदेखिकै १३॥

तथा। शुम्भ निशुम्भ बिनाशिनि पासिनि बासिनि बिन्ध्य गिरीशकि रानी। शङ्कर संग बिलासिनि अंग हुलासिनि श्रीकमलासिनिदानी। जाहिसदाशिव ध्यानधरैं अरुगानकरैं मुनिचातुरज्ञानी। नाथकहैसोइ शैलकुमारि हमारीकरैं रखवारी भवानी १४॥

तथा। गौर शरीरमें गौरी विराजत मौरहै औरहि रीतिकोजाके। नागनकोउपवीत लसैबलदेवकहै शशि भालमें वाके॥ दानकरैं पलमें फलचारि औटारत अङ्क लिखे बिधनाके। शङ्कर नाम निशङ्क सदाहीं भरोसे रहौं निशिवासर ताके १५॥

क०। नन्दीकीसवारी नागशृङ्गीकरधारी नितसन्त सुखकारी नीलकण्ठ त्रिपुरारी हैं। मुण्डमाल कारी शिरगङ्गा जटाधारीबाम अङ्गमें बिहारी गिरिराजसुता प्यारी हैं॥ दानिरेखभारी शेषशारदापुकारी काशीपति मदनारी करशूलचक्रधारी हैं। कलाउजियारी बलदेव सोंनिहारी यशगावैंवेदचारी सोहमारीरखवारी हैं१६॥

तथा। ओढ़े मृगछाला दूरि करत कसाला काटि डारैं भ्रमजालाधरे आधेअंगबालाहै। सोहैकण्ठकाला जोरजालिम डमरुवाला खोपड़ीके मालाजाके भसम रसालाहै॥ मूरति बिशाला नयनतीसरेमें ज्वाला मृग चर्मको दुशाला पिये बिषही को प्यालाहै। सुरन में

ाला आदिज्योति निरङ्काला सदा मेरे मनवालादेन वाला बैलवालाहै १७॥

तथा। मूसेपर सांपराखै सांपपर मोरराखै बैलपर सिंहराखै वाकीकाह भीतहै। कामपर बामराखै आगी पर पानीराखै बिषपर अमृत राखै सोइ जगजीतहै॥ पूतनको भूतराखै भूतनको विभूतिराखैछमुख औगुम्ज मुखराखै ऐसीवाकीरीतहै।देवीदासज्ञानीदेखोशङ्करकी सावधानी सबैबातलायक सोराखतराजनीतहै १८॥

स०। भालमें जाके कलानिधिहै सोई साहबताप हमारीहरैगो। अंगमेंजाकेविभूतिभरीरहैभौनमेंसम्पति भूरिभरैगो॥ घातकहै जो मनोभवको ममपातक ताहि केजारे जरैगो। दासजू शीशपै गंगधरेरहै ताकी कृपा कहो कोनतरैगो १९॥

क०। ततक्षण धरततनक अरचतजन गनगन सघन कनक दरशत दर। तरलनयन धनधरतअधरतन करतल करलस सरल गरल धर॥ अटत अजर यश रटत गहनघन सघनरजतरज रजत अचलधर।दहत सकल अघ दरशन दरशत दरद न रहत कहत नर हर हर २०॥

क०। पथऐंड़िन अरुणाई अङ्ग ओपाति गुराईजङ्घ युगलनितम्ब पीनताई पकरातिहै। कटिस्वीनताई लरिकाई लीनताईमुखचन्द्रमें जोन्हाईजोतिजाल बगराति है॥ भनत कवीन्द्र पेखि अंकुर उरोजनके पियहियप्रेम के खजानेसे भरातिहै। कुवँरिकेतनतरुणाई की अवाती

पेषि सौतिन के मनन मिवाती से परति हैं २१ ॥

तथा। दानिनमें बड़ेदानी चारयोयुग मानिश्रीके देवतनहूंके देवनागरसपीजिये। ऐसोसुखधामनामका-मनाको देनहारो आपनेजननदेत त्योंहीमोहिंदीजिये॥ भिक्षुकहौं ब्राह्मण न जानोंकोई उद्यमन नामशिवनाथ मेरो येतोयशलीजिये। अम्बिका भवानी बरदानीसब जगजानी समयपाइ शिवसोंअरजमेरीकीजिये २२ ॥

तथा। गुणनबिहीनहौं अधीनलीन मानमद औ-गुणअनेक अंग कहांलौं गनीजिये। कामक्रोधमोह माया याहीतेरहतप्रीति त्रिबिधतपततताप तातेतनु छी-जिये ॥ करतउपावये कुचाली बासिउरबीचकबि शिव-नाथ ध्यानकैसेकैलगीजिये। अम्बिकाभवानी बरदानी सबजगजानी समैपाइशिवसों अरज मेरीकीजिये २३॥

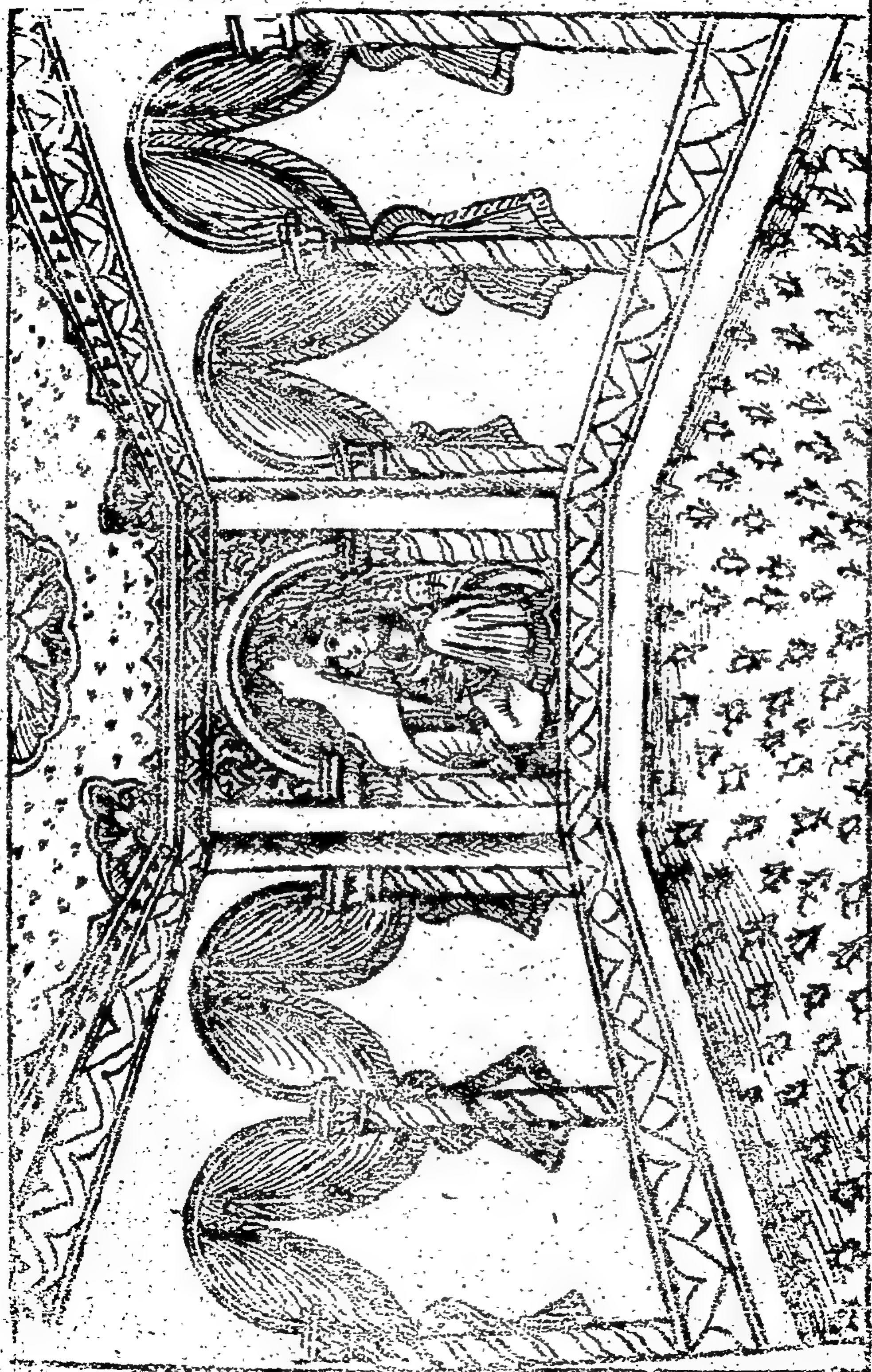
तथा। बैठिसिंह छालाको बिछाइ ब्यालमालधर नन्दीकी गिरैया पैरगाढ़ी चन्द्र माथकी। आये गरुड़ा सन भगे भुजङ्ग नन्दरामलाजतै सुधाकैबिन्दुखाल जीवसाथकी ॥ नाहरनिहारिभग्यो शम्भुकोघसीटिबैल शैलगैल गहेकहूं जैलगहे पाथकी। हँसे भूतगण भूत-नाथकी बिलोकि दशा लोटि २ हँसत किशोरी गिरि-नाथकी २४॥

श्रीगङ्गाजीमहारानीकीस्तुतिआदिकेकविरवबसैवया ५ ॥

क० कूरमपैकोलकोलहूपैशेषकुण्डलीहै कुण्डलीपै फबीफैलसुफनहजारकी। कहैपदमाकर सुफनपैफबीहै

देखो तसवीर नम्बर ४॥

श्री गंगाजी की मूर्ति ॥



भूमिभूमि पैफबीहै थिति रजतपहारकी॥ रजतपहारपर शम्भु सुरनायकहै शंभुपर जोति जटाजूटसोंअपारकी। शम्भु जटाजूटपर चन्द्रकीछुटीहै छटा चन्द्रकी छटानपै छटाहै गंगधारकी १॥

तथा। करमको मूलतन तनमूल जीवजग जीवनको मूल अति आनँदउघरिबो। कहै पद्माकर सुआनँदको मूलराज राजमूलकेवलप्रजाकोभौनभरिबो॥ प्रज्ञामूल अन्नसब अन्ननको मूलमेघ मेघनको मूलएक यज्ञ अनुसरिबो। यज्ञनको मूलधन धनमूल धर्म अरु धर्म मूलगंगा जलबिन्दु पान करिबो २॥

तथा। सुचितगोबिन्द ह्वैके सोवतेकहांधौंजायजल जन्तु पांतिजरि जैबेकोअखिलती।कहैपदमाकरसुजादा कहौ कौन अब जाति मरयादाहै महीकी अनमिलती॥ जलथल अन्तरिक्ष पावते क्यों पापीमुक्ति मुनिजन जापकन जोनदुर मिलती। सूखिजातो सिन्धु बड़वा-नलकीझारनते जोनगंगाधाराके हजारधारमिलती३॥

तथा। यमपुरद्वारेके किवारे लगेतारेकोउ हैं न रख-वारे ऐसेसबकेउजारेहैं। कहै पदमाकर तिहारेप्राणधारे जेते जेते अघभारे सुरलोक को सिधारेहैं॥ सुजन सु-धारेकरे पुण्य उजियारे अति पतितकतारे भवसिंधुते उबारेहैं। काहूनेनतारेतिन्हैगंगा तुमतारे आजु जेते तुमतारे तेतेनभमें न तारे हैं ४॥

तथा। अधम अजान एक चाढ़िकै बिमान भाष्यो झूतहौं गंगातोहिं परिपरिपांयहौं। कहैपदमाकरकृपा

करि बताउसांचीदेख्यो अतिअद भुतरावरोस्वभायहौं॥ तेरेगुण गानही की महिमा महान मैया कान कान नाइ कै जहांनमधिछायहौं। एकमुख गायताते पंचमुखपाय अब पंचमुखगाय हौं तौ केतमुख पायहौं ५॥

तथा। पापनकीपांति भांतिभांतिबिललातिपरीयम की जमाति हलकम्पन हिलतिहै। कहैपदमाकरहमेश दिवि वीथिन बिमाननकी रेलठेला ठेलनि ठिलतिहै॥ सुरधुनिरावरे उधारे जगजीवनकीछिनछिन श्रेणी इन्द्र लोकको पिलतिहै। आसनअरघ देत देत निशि वासर विचारेपाक शासनको सांसन मिलतिहै ६॥

तथा। लायेभूमि लोकतेजसूसजबरेईजाय ज़ाहिर खबरकरी पापिन के मित्रकी। कहै पदमाकर बिलोकि यम कहिकै बिचारो तो करमगति ऐसे अपवित्रकी॥ जौलौंलगे काग़ज़ बिचारन कछुक तौलौं ताकेकानपरी ध्वनिगङ्गाकेचरित्रकी॥ वाकेशीशहीते ऐसीगंगाधरब-रायबही जामेंबहीबहीफिरी बहीचित्रहू गोपित्रकी ७॥

तथा। गंगाके चरित्र लखि भाषै यमराज ऐसेएरे चित्रगुप्त मेरेहुकुममेंकानदे। कहै पदमाकर ये नरकनि मूंदिकरिमूंदि दरवाज़नको तजि यह थानदे॥ देखुयह देवनदी कीन्हे सबदेव या ते दूतनबोलाकै बिदाकेवेगि पानदे। फारडारु फरदनराखु रोजनामा कहूंखाता खत जानदे वहीको बहिजानदे ८॥

तथा। बईती बिरंचिभई बामन पगनपर फैलीफैली फिरी ईश शीश पै सुगथकी। आइ कै जहान जहनु

जहां लपटाई फिरि दीननके हेतदौरि कीन्हीं तीनि पथकी। कहैपदमाकर सुमाहिमा कहालौंकहौं गंगानाम पायोसोही सबके अरथकी। चार्‌यो फल फली फूली गहगही बहबहीलहलही कीरतिलताहैभगीरथकी ६॥

तथा। सहज सुभाय आय एक महापातकी गंगा मैया धोई ततोदेह निज आपहै। कहै पदमाकर सुमहिमा महीमेंभई महादेव देवनमें बाढ़ीथिर थापहै॥ जाकि रहेहैं यम थकिरहे हैं दूत दूनी सब पापनके उठी तन तापहै। बांचीवही वाकीगति देखिकै बिचित्ररहे चित्रकेसे लिखे चित्रगुप्त चुपचापहै १० ॥

तथा। जान्योजिनहैनजग योगजपजागरणजन्महिं बितायो जग जोपनको जोइकै। कहैपदमाकरसुदेवन के सेवनते दूरिरहे पूरिमाणिवेद रह होइकै। कुटिल कुराही कूर कलहीकलङ्की कलिकालकी कथानमें रहे जे मति खोइकै। तेऊ विष्णु अंगनमें बैठे सुर संगन में गंगकी तरंगनमें अंगनको धोइकै ११॥

तथा। जैसे तैन मोंको कहूंनेकहू डरातहुतो ऐसे अबतोसों होंहुं नेकहूं नडरिहों। कहैपदमाकर प्रचण्ड जोपरैगोतो उमण्डिकरितोसों भुजदण्डठोंकिलरिहों॥ चलोचलु चलोचलु बिचलु न बीचही ते कीचबीच नीचतो कुटुम्बको कचरिहों। एरेदगादार मेरेपातक अपारतोहिं गंगाकी कछारमें पछारि छारकरिहों१२॥

तथा। आयोजौनतेरीधौरीधारीमेंधसतजाततिनको रहोतसुरपुरते निपातहै। कहैपदमाकर तिहारोनाम

जाकेमुख ताके मुख अमृतको पुंज सरसातहै ॥ तेरो तोयछूके औछुवत तनजाको बात तिनकीचलैनयमलोकनमेंबातहै ।जहां जहां मैयातेरी धूरि उड़िजाती गंगा तहां तहां पापन कीधूरि उड़िजातहै १३॥

तथा।विधिकेकमण्डलु की सिद्धिहै प्रसिद्धयहीहरे पद पंकज प्रताप की लहरहै। कहै पदमाकर गिरीश शीश मण्डलके मुण्डनकीमाल ततकाल अघहरहै॥ भूपतिभगीरथके रथकी सुपुण्य पथजह्नु जप योगफल फैलकी फहरहै॥ क्षेमकीछहर गंगा रावरी लहर कलिकालकी कहर यमजालको जहरहै १४॥

तथा।हौंतोपंचभूतजजिबेको बक्योतोहिंपर तेतो कस्यो मोहिं भलो भूतनको पतिहै। कहै पदमाकर सुएकतनतारिबेमें कीन्हें तनग्यारहकहोसोकौनिगतिहै॥ मेरे भाग गंग यही लिखी भगीरथी गंगेतुम्हैं काहिये कछुकतो कितेक मेरीमतिहै। एकभवशूल आयो मेटिबेकोतेरेकूल तोहिंतो त्रिशूलदेत बारनलगतिहै १५॥

तथा । भाषाहोत भूषित सुपूरी अभिलाषा होत सुयश लताकी सुशाखाहै सुगतिकी। कहै पदमाकर त्यों बदन विशाल होत हालहोतहैरीछलछिद्रन की खंतिकी॥ गंगाजूतिहारेगुणगानकरै अजगवै आनहोत बरषासुआनन्दकी अतिकी। परहोत पुण्यनकोधूरि होतअधरमचूरहोताचिन्तादूरहोत दुरमतिकी १६॥

तथा।लोचनअसमअंग भसमचिताकीलायतीनों लोकनायकसोंकैसेकैठहरतो । कहैपदमाकर विलोकि

इमि ढंगजाकेवेदहू पुराणगान कैसे अनुसरतो। बांधे जटाजूटबैठे परवतकूट माहिं महाकाल कूट कहो कैसे कै ठहरतो। पीवैनितभंगै रहै प्रेतनके संगै ऐसे पूंछतो को नंगै जो न गंगै शीशधरतो १७॥

तथा। सबनकेबीच बीच समयमहानीच मुखगंगा मैया तेरे आजुरेणुकनह्वैगये। कहै पदमाकर दशा यों सुनोताकी वाकी छबिकी छटानाछितछोर जोरछ्वैगये॥ दूतदबकाने चित्रगुप्तचुपकाने औ जकाने यमजाल पापपुंज लुंज त्वैगये।चारिमुखचारिभुजचाहिचाहि रहे ताहि पंचनके देखतही पंचमुख ह्वैगये १८॥

तथा। कलिके कलंकी कूरकुटिल कुराहीकेते तरिगे तुरन्ततबै लीन्हींरेणु राहजब। कहै पदमाकर प्रयास बिन पावैसिद्धिमानत न कोऊयमदूतन की दाहदब॥ कागज़ करम करतूति के उठाइधरे पचिपचि पंचमेंपरे हैं प्रेतनाह अब। बेपरदबेदरदगजब गुनाहिनकेगंगा की गरदकीन्हे गरद गुनाह सब १९॥

तथा। रेणुकाकीरासनमें कीचकुशकासनमें निकट निवासनमें आसन लदाऊके। कहै पदमाकर तहाईं मंजुशूरनमें धोरी धोरी धूरनमें पूरणप्रभाऊके॥ पार-नमें वारनमें देखहु दरारनमें नाचतिहै मुकुति अधीन सबकाऊके। कूल औ कछारनमेंगंगाजलधारनमेंमँझ-रा मँझारनमें झारनमें झाऊके २०॥

तथा। तेरे तीर जौलौं एक लहरनिहारियतु तौलौं कैयो लक्ष सूक्ष लहरन धारती। कहै पदमाकरचहौ जो

बरदान तौलौं कैयो बरदाननकेगान अनुसारती ॥ जौ लौंलगो काहूसोंकहनकलाएकतुव तौलौं कैयो कलाके सम्हन सम्हारती। जौलौं एकतारेकोहौं रचत कवित्त गंगे तौलौं तुम केतिक करोरितारि डारती २१ ॥

तथा। कैधौं तिहूंलोककी शिंगारकी विशाल माल कैधौं जगीजगमें जमाति तीरथनकी। कहै पदमाकर बिराजैसुर सिंधुधारकैधौं दूधधार कामधेनुनकेथनकी॥ भूपतिभगीरथके यशकी जलूस कैधौं प्रकटी तपस्या कैधौं पूरीजह्नुजनकी। कैधौं कछूराखै राका पतिसोंइ-लाकाभारीभूमिकीशलाकाकैपताका पुण्यगनकी २२॥

तथा। यमको न जोर जब पापिनपै चल्यो तबहाथ जोरि गंगाजूसों चुगुली करै खरे। बड़ेन पै डरो पै ना डरोदेवि तुच्छनपै कहै पदमाकर सुनावतहरेहरे ॥ बड़े न पै डरे बड़ी पाइये बड़ाईदेखो ईशपै ढरीतौ तुम्हैंइश शीशपै ढरे। तुच्छन को देती जैसो नारायण रूपतैसो तुच्छ तुम्हैं तुच्छ करि पायन तरे करे २३ ॥

तथा। यमकेजसूस बिनती यमसों हमेशाकरैं तेरी ठाकुरीकोठीकनेकु न निहारोहै। बड़े बड़े पापी औ सु-रापी द्विजतापी तहांचलननपावैं कहूं हुकुम हमारोहै॥ कहैपदमाकर सुब्रह्मलोक विष्णुलोक नामलैकै कोऊ शिवलोककोसिधारोहै। बैठीशीश गङ्गाकेतरङ्गाहैअभं-गा ऐसी गङ्गानेउठायदीन्हों अमल तिहारोहै २४ ॥

तथा। बिन जपयज्ञदान तीक्षणतपस्याध्यानचाह-तहौंजोपै तिहूंलोकमें महाउदोत। कहैपदमाकरसुनौतौ

हालहामीभरो लीखौंकहै लैकैकहूंकागज़कलमदोत ॥ गंगाजूके नाम सुने हामीभरे लिखौ कहै ऐसेचढ़िजात कळू पुण्यन के पूरेगोत। सौगुने सुनेते औ हजारगुने हामीभरे लाखगुने लिखत करोरिगुने कहे होत २५ ॥

तथा। शरदघटासीखांसीउठतीअटासी दुपटासी क्षितिक्षीरधिछटासीनिरधारिये। लज्जासीछुटीसीछार छारीसीगढ़ीसी गढ़ मठसीमढ़ीसी औगढ़ीकेढारढारि-ये॥ कहै पदमाकर सुधौरीधौरीदौरीआवैचौरीचौरीचं-चलसुचारुचिह्नवारिये। हरेहरेछबि नईनई न्यारी न्यारीनितलहरै निहारी प्यारी गंगाजू तिहारिये २६ ॥

तथा। विघन बिनाशै भवपाशहोत नाशैभाशैनाशै पुण्य पुंजकी प्रकाशैरंगरंगाके। सुखकीसमाजैउपराजै साजछाजै क्षिति घनसे गराजै राजैशीशईशनंगाके॥ कहैपदमाकर सुजानै करि ज्ञानै जानै तानै मन मानै भोग आनै देव अंगाके। सुन्दर सुभंगानित अमित अभंगाआछे अघओघभंगायेतरंगादेविगंगाके २७॥

तथा। तहां आई भीमिते लगाईआसमानहूलौंजान गीरवान औविमाननके जुरेथोक। कहैपदमाकरजो कोऊनर जैसेतैसे तनुदेत गंगातीरताजिकैमहानशोक॥ सोतौदेत ब्याधै विष दुखनदुनाई देत पापन के पुंजको पहारनको ठोक ठोक। दगादेत दूतन चुनौतीचित्र गुप्तेदेत यमको जरबदेत पापीलेत शिवलोक २८॥

तथा। एक महापातकी सुगातकीदशा बिलोकिदे-त यौंउराहनो सुआठहू पहरहे। मीचसमै तेरेउतआ-

पगये कण्ठ इत ब्यापि गयो कंठ कालकूटसों जहरहै॥ आप चढ़ीशिश मोहिं दीन्हीं बख़शीश औ हज़ारशीशवारेकी लगाई अटहरहै। मोहिंकरिनंगा अंग अंगन भुजंगाबांधो एरी मेरीगंगातेरीअद्भुतलहरहै २९॥

तथा। हेरिहेरि हँसत न चाहत हरषि चढ़्यो बैल हूंविलोकिमन वाकीओरटरको। कहैपदमाकर सुदेखि कैंगरुड़हू को लेखि निज भाग अनुरागके नसरको॥ कापै चढ़ौं कौनतजों चाहतसबनयह शोचतपातितपस्यो गंगातीर परको। जौलौं घरीद्वैकरूप हरको न पायो तौलौं पातकी बिचारो भयो चोर भरे घरको ३०॥

तथा। सार माला सत्यकी बिचार माला वेदन की भारीभाग मालाहै भगीरथ नरेशकी। तपमालाजहनु की सुजप मालायोगिनकी आछीआपमालायाअनादि ब्रह्मवेशकी॥ कहैपदमाकर प्रमाणमाला पुण्यनकीगंगाजूकी धारा धन मालाहै धनेशकी। ज्ञान मालागुरु की गुमानमाला ज्ञानिनकी ध्यानमालाध्रुव मौलिमालाहै महेशकी ३१॥

तथा। ज्ञाननमें ध्याननमें निगम निदाननमेंमिलत न क्योंहू हरिहीमें ध्याइयतुहै। कहैपदमाकर नतच्छन प्रतच्छहोत अच्छनके आगेहू आधिच्छ गाइयतुहै। इन्दिराके मन्दिरमें सुनिये अनन्दभरे बांधेभव फन्द तहां कैसे जाइयतुहै। देवनके वृन्दमें न पैये क्षीरसिन्धुमें सुगंगाजल बिन्दुमेंगोबिन्द पाइयतुहै ३२॥

तथा। कामअरुक्रोध लोभ मोह मदमातसर्य्य इन

कीजंजीरनकोजारिहैपैजारिहै। कहैपदमाकरपसारपुण्य चार्यो ओरचार्यो फलधामनमें धारिहैपैधारिहै ॥ छोभ छल छंदनको बाढ़े पाप वृन्दनको फिकिर कुफन्दनको फारिहै पै फारिहै। एकै बार बारि जिन गंगाकोपियोहै तिन्हैं तारनि तरंगिनी या तारिहै पैतारिहै ३३ ॥

तथा। जन्म जन्म जिन छोर्यो तौन मेरो संगअंग अंग हितही के रहे जौन लपटानेहैं। कहै पदमाकरति-हारो सोहगंग योग जपके यतनमें न नेकु अकुलाने हैं॥ तौनपाप मेरेतेरे तीर पर मैया अब मिलत नहेरे इत कित धौं हिरानेहैं। कच्चेरकरारमें बहेकै बीचधारमें कै बूड़े वैसे वारिमें किबारूमें मिलानेहैं ३४ ॥

अथयमुनाजीकी स्तुतिके कवित्व व सवैया ॥

क०। आनभरी अधिक कृशानभरी पापनको दान भरी दीरघ प्रमान मान जमुना। तेजभरीमंजुलमजेज भरी रीझिभरी खीझिभरी दूतनकी दाहै दौरिसमुना॥ ग्वालकवि सखद प्रतीतिभरी रीतिभरीपरमपुनीतभरी मीतभरी भमुना। जंगभरी यमते उमङ्गभरी तारिबे को रङ्गभरी तरल तरङ्ग तेरी यमुना १ ॥

तथा। व्यापी अघ ओघको महापी मदिराकोदक्ष कीनो परदेशको पयान रुजगारीमें। पाककरिबेको लई लकरी करीलनकी सोकरील रावरे किनारेहुती क्यारी मैं॥ ग्वालकवि ताकोउड़िधूमगयो नर्कनमें पुरषन सह पापीश्यामछवि धारीमें। सुमिरणसेवाध्यानदर शपरश विमुक्तिकी दिवैया मैया यमुना निहारी मैं २ ॥

तथा। बैठ्यो तटनीके तटभाषत तिलक यायों एरे राहगीर पासआयजलछूजातें। अचवनकिये महामहिमा महीमेंहोत जानाफलहोत और देवनकी पूजातें॥ ग्वालकवि कौतुक विशालदेखिहालेहाल रसिकविहारी भयोजात अबदूजातें। कीरतिअखण्डहोततूजगप्रचण्ड होत होतहै अदण्ड मारतण्डकी तनूजातें ३॥

तथा। श्यामरङ्ग रंगतते श्यामैरंग होतसुने यमुना ज़रूरही जुरीहै जोरजंगीतू। देतहै अन्हैयन उठायपीत अम्बरनलकुट विशालदेत सुन्दरसुरंगीतू॥ ग्वालकवि गोरीरतिहूंते पाटरानीदेत देति मोरचन्द्रिका चमङ्कित कलङ्कीतू। सङ्गीकरै ग्वालन उमङ्गी मतिचंगीकरै करि बहुरंगीफिरि करति त्रिभंगीतू ४॥

तथा। कामनाकी गैयासीमनोरथ भरैयाभलैंअखिलअगारनमेंसम्पतिडरैयातू। दुरितदरैयाबिदरैयाबदराहनकी जुलुमजरैया टेकयमकी टरैयातू॥ ग्वालकवि भाषै छबिछोरनछवैया बेस सुखमें सनैया दुख हियके हरैयातू। शैयाकरै शेषकी सुयाति जगैयाजोर कान्हकी करैयामैया तरणितनैयातू ५॥

तथा। कैधों अन्धके अखिलअगार चारु कैधोंरस राजकी मजूखैं मंजु जाकीहैं। कैधों श्याम बिरहबियोगिनके नैन ऐन कज्जल कलितजल धारैं धार ताकी हैं॥ ग्वालकवि कैधौं चतुराननके लेखिबेको फूट्योमासि भाजन अनपछबि वाकीहैं। कैधों जलस्वच्छमें प्रत्यक्ष जलझाईं कैधों तरल तरंगे मारतण्ड तनयाकीहैं ६॥



हवालातसवीरनं·१ मुतअल्लिके सफा ३९

श्री हनुमानजीकीमूर्त्ति·



तथा। मारतण्डतनया तिहारेसुने कौतुकमैं सोतु-कगोबिन्द करै केतनकोमैयातू। तेजकरै आनन सुजा-ननमें आनकरै मानकरै जगत प्रमाण पसरैयातू॥ ग्वालकबि आनँदकी छकानिछकैया फेरकठिन कलेश-नके भेशनहरैयातू। सहर जमेसकी जरैया यमदूतन को कहर कुढङ्गनकी कतल करैयातू ७॥

तथा। भूलेहूं नजातो एको भुनगाहरी के भौनकैसे तृषावन्तनकीतिरषा बुझातीये। सागर अपारमैनदिये बेसुमार सबकासों मिलि मिलिके वहांलौं पिलिजातीं ये॥ ग्वालकवि धरम ध्वजान फहराती ऐसे कैसेहून बरण विवेकतानि भातीये। जीवतीं न गोपिका गोबि-न्दकेबियोग बीचजोनयमुनाकीजोर जेबदरशातींये८॥

तथा। रविकीकुमारी जाके प्रीतममुरारी सोतोइंदि-रादि नारिनमें शिरदारनारीहै। जोई उरधारीलेहैताहि निसतारिदेहैध्रुवन को सँभारि तैसे तोहु पार पारिहै॥ कहैरघुराई ताहिगाइ चितलाय नीके जाके बारीपाप नकी बारी बारिडारिहै। यमुना बिसारि है तो यमुना बि-सारिहै जो यमुना सँभारि है तो यमुना सँभारि है ९॥

श्री हनुमान् जी की स्तुतिके कवित्त व सवैया॥

क०। जयजय रामदूतमहावीर बजरंगी देवहोयतू दयालु मोंपै कृपातुम कीजिये। हौंतो तेरोदास मैंतोतेरे ही भरोसे रहौं कहै रामलाल एकअर्ज़ मेरी लीजिये॥ शत्रु अरु बैरीदुष्ट जतेबीर मेरेहोयँ तिनको तुमारिडारो

देखोतसवीरनंबर ५

यहै वर दीजिये । बीरनमें बीर महाबीर बड़ो बीर हवै लैकै बीरगदा हस्त शत्रुको उठीजिये १॥

तथा । जयजय हनुमान तूअड़ंगीबीर बजरंगी लैकैशमशेर शिर शत्रुन कोभारिये । पावकलगाय लङ्का वाटिकाउजारिडाय्यो फारिडाय्यो रावणतु असुरसँहारिये ॥ बज्चक्रनमाय्र्यो मेघनादहूउजारिडाय्यो वारि टारिडाय्यो बीर विग्रह बहुकारिये । कहै रामलाल मोंपै कृपाकरौबायुपूतशत्रुनको मारिमारिलातनपछारियेर२॥

तथा । जयहनुमान हिरण्यसुशैल समान शरीरबिराजतनीके । भाल विशालत्रिपुंड सुशोभित देखे मिटैं दुख भव रजनीके ॥ रामसुआनन चन्द्र चकोर पिवैया सदा गुण ग्राम अमीके । कर जोरि करै अमरेश विनय दुखदारुण वेगिहरो जनजीके ३ ॥

स० ।मुखसुन्दरमुन्दर मेलिलियो कपिखेलसमुंदर पारहिजाई । शिष सुन्दरदीनबिभीषणकोअवनीतनया कर शोक नशाई ॥ बागबिधांसि निशाचरहू बहु मारि दियो पुर आगिलगाई ॥ अमरेश लँगूरहिं सिन्धुबुझाइ कपीश सियासुधि रामसुनाई ४ ॥

तथा । अहिरावण राम सबन्धु चुराय पतालगयो क्षणमाहं छिपाई । लखिसैन्य विहालगयोहनुमानहत्यो मनुजादन बारलगाई ॥ सानुज रामहि कन्ध चढायके वेगिचल्यो निजसैनहिआई । दुःखहय्र्यो कपिभालुनको अमरेशभनैं यशसो चितलाई ५ ॥

क०।रामवर दूतबायुपूतसोसपूत प्रभुबल अनुकूत

तिहुँपुर सरनामहै। कनकाचल शरीर रणधीरमहाबीर स्वामीहरोभवपीर अतिबिकलगुलामहै ॥ गयोबाटिका अशोक तात हरयो सिय शोक छायो यश तिहूँलोकमें बड़ाईगमठामहै। दास अमरेशकेरी लाजतवहाथनाथ रहतभरोसेपैतिहारेआठौयामहै ६ ॥

श्री कृष्णचन्द्रजी की छबिआदि वर्णन के कवित्त व सवैया ॥

क०। केसरिको कंचनने कंचनको चम्पकने चम्पकको जीत्यों प्यारी रूपने अमन्दहै। गजगति छीने भूप भूपगति छीनहंस हंसगति छीनिबेको तेरीगति मन्दहै ॥ सबहारे बाणनते बाण पंचबाणनते कृष्णलाल तोहिं देखिरीझे नँदनन्दहै। गजमुखमूंदे कंज कंज मुखमूंदेचन्द्रचन्द्रमुख मूंदिबेको तेरोमुख चन्दहै १ ॥

तथा। माफ़ किया मुलुक मताहदी बिभीषणको कहीथी जुबान कुरबान ये करारकी। बैठिबेको ताइफ़ तखतदैतखतदिया दौलतिबड़ाईथी जुनारदारवारकी॥ तबक्या कहाथा अब सरफ़राज पापूहुये जबकीअरज सुनी चिरीमार खारकी। कारेके करारमाहं क्यों दिल दारहुये एरेनन्दलालक्या हमारी बार बारकी २ ॥

तथा। कदमकीडालीचढ़ि कूद्योबनमाली कोपि कालीदह भीतर बियोगबीज ब्वैगयो। कहैगिरिधारी धायनगर के नारीनर भईभीरभारी नीर नयननते च्वै गयो॥ नन्दनँदरानी अररानी परैंपानीबीच ओकओक

देखो तसवीर नम्बर ६॥

अररसशोर विषकै गयो। यमुनासमान्यो आजब्रजको सपूतहाय यशुमतिसुन बित सूनजग कैगयो३॥

स०। मोर पखानि बनो शिरमौर लसै अति केस-रिभालअनूप। बारछुटे झलकैं श्रुतिकुण्डल मालगरे लखिये सुरभूप॥ पीतपटो तन अङ्गदबाहु कलानिधि सोमुखहै अनुरूप। वेणुबजावत गावतसांझ गयेगड़ि नैनन लीननरूप ४॥

क०। कहा भयो जोपै काव्य भेद भाव छन्द बिना हरियश जामें सोई कथनि सुआईहै। सन्तजनगावैं सुनैकहैंजापैताहि कोरीकविता बनाईदेखिगिरापछिता-ईहै॥ रामरस बिनाजैसे फीकोलगै स्वादतिमि रामरस बिनास्वादगन्धहू नआईहै। सन्तमनभाई सुखदाई है सुहाईजामें कृष्णकेलिगाई सोईसांचीकविताईहै ५॥

स०। पण्डितहोइके कीनोकहा जुपै कृष्णकथासों न नेह ललामहै। कर्म्मनमें पचिभूल्यो वृथा श्रमही फलपायो लह्योनबिरामहै॥ ज्ञानगरूरहै घूरसबैहियमें जुपै नाहिंरम्यो घनश्यामहै। हैधनधाम अराम हराम सो रामबिना सबकाम निकामहै ६॥

क०। ब्रजकीलुगाइहैंचवाइ कैसीलखोमाई आवहिं सदाई इतैकरिकरिकोटिब्याज। कहैंलँगराईकरैकान्ह है तिहारोबङ्क लावतिकलङ्कइन्हैं आवतिनशङ्कलाज॥ बारोहैदुलारोमेरो चलिबोनसीख्योचाल अबहींनलाल केपहिरि आवै बालसाज। हालनैलगीहै घुंघुरारीलट नेकु नेकु पालनेते लालने उतारिपगुधार्य्योआज ७॥

तथा। फुहि फुहि बूंद झरैं बीर वारिबाहनते कुहूंकुहूं सुनिपरै कूककोकिलानकी। ताहीसमय श्यामा श्याम झूलताहिंडोलचढ़े वारोंछबिकोटिमैं रतिपपंचबानकी॥ कुंडललटकसोहै भृकुटी मटकमोहैअटकीचटकपटपीत फहरानकी। झुलत समयकी सुधि भूलत न हूलतरी उझुकनि झुकनि झिकोरनि भुजानकी ८॥

तथा। झांवरे लगत सुरजासुकी झलक झांकि सुखमा सराहोंकहा सांवरे सुजानकी। झूलिबेकी चाह करि चढ़े झूलने पै दोऊ कोऊ नाहिं सकैंकहि उपमा झुलानकी॥ कटिकी लचनिमचकनि चारु जांघनिकी अचकनि गहनि वोझूम झूमकानकी। झूलतसमयकी सुधि भूलति न हूलतिरी उझकनि झुकनि झिकोरनि भुजानकी ९॥

तथा। करैंजलकेलिश्यामभुजते भुजानमेलि मनो हेमबेलि रहीं लपटि तमालसों। एकअङ्कभरैंलै निशङ्क ह्वै मयङ्कमुखी एकबङ्क नैनके बतावैंसैन लालसों॥ एक छुटिधावैं एकपकरिलैआवैं जुटिएकनीरनावैंपानिपल्लवरसालसों। महिमाबिशाल नहिंजानै वेद जासुख्याल पर्योप्रेमजाल जो छुटावैं जगजालसों १०॥

तथा। वारोंकोटि मारुचारुधरिसे धुरेटेअंग लार मुखजैसेसुधाधारचन्द्रते ढरै। झूमिझूमि झलकैं झंडूले की लटैंलिलाट लालिताढिठौनादत्तकैसे मनतेटरै॥सांवरे सलोने की किलककलबोलनि अमोल सुखमा अपार कौनसों कहीपरै। बैंयां बैंयां चलनि बलैया लेतमैया

देखि हंसनि कन्हैया की जुन्हैया ज्योतिको हरै ११॥

क०। मोरके पखौवनके माथेपर मुकुटसोहै कुण्डल की झलक मानो गिरिके धरैयाकी। कांधेपर कामरी कसीहै फेंटफांवरीसूरतिहै सांवरीयशोमतिके छैयाकी॥ दत्तकवि जनपर कोटिकामवारिडारौं कैसीछबि बनीहै बलिभद्रजूके भैयाकी। आगेग्वालगैया पीछेपापापैयां सब गोपीलेत बलैया प्यारेनटवर कन्हैयाकी १२॥

स०। कटि काछनी काछे पितम्बरकी धरेमोर पखानकोमोरपखा। द्विजदेवजूयोंदुपटीफहरैमनो बोलत विश्वबिजैकरखा॥ वहकौनधौंमाधुरी मूरतिवारोअली छबिनैनन जाकी चखा। बिहरैं चहुंधावन बीथिनबीच मनोभव भूपको मानोसखा १३॥

तथा। गुच्छनकोअवतंसलसैशिखिपक्षनअच्छकिरीटबनायो। पल्लवलालसमेत छरीकर पल्लवसोमतिरामसोहायो॥ गुंजनको करमंजुलमालसो कुंजनतेकढ़ि बाहरआयो। आजको रूपलखो ब्रजराजको आंखिन को फल आजुहिं पायो १४॥

क०। सोहत मुकुटशीशकुण्डल श्रवणसोहै मुरली अधरध्वनिमोहै त्रिभुवनको। लोचनरसालबंक भृकुटी बिशालसोहैसोहैबनमालगरे हरेलेत मनको॥ रूपमन मोहनन चित्तते बिसारो मनसुन्दर बदनपर कोटिमदननको। जगतनिवासकीजै सुमतिप्रकास मेरे उरमें हुलासहै बिलास वरणनको १५॥

क०। छबिसों फबिशीश किरीटबन्यो रुचिसों हिये

बन्नमाल लसै। करकंजहि मंजुरली मुरली कछनीकटि चारुप्रभाबरसै॥ कबिकृष्णकहै लखिसुन्दरि मूरति यों अभिलाष हियेसरसै। वहनन्दकिशोर बिहारी सदा यहिबानिक यों मनमांझबसै १६॥

स०। आज लख्यो ब्रजराज कुमार सुदेश शृँगार बने सिगरेहैं। रूपकी रीझकही नपरै अवलोकिबिलोचन नीरभरेहैं॥ कृष्णकहै शिरसोहतमोर किरीट चँदाछबिपुंजधरे हैं। मनो अकशे शशि शेखरसों हरि शेखरचन्द्र अनेक कियेहैं १७॥

तथा। मैंनिरख्यों ब्रजराज ललाद्युति पुंजहियेहित साजरहेहैं। कृष्णकहै दृगदीरघ देखि प्रभातके पंकज लाजिरहेहैं॥ मंजुलकाननमें मकराकृत कुण्डल योंछबि छाजि रहेहैं। मानोमनोजधर्यो हियमें अरुद्धारनिशान बिराजिरहे हैं १८॥

तथा। भाग्य बड़ेनिरख्यो यहबानिक आजु किहौं बलिजाउँघरीकी। ऐन प्रभाललखि लागतिहै कछु मोको तौमैनकि मूरतिफीकी॥ देखुरी मोहनके उरभावतिमाल बिराजत गुंजाकिनीकी। मनहुं दिपत कहु बाहर होवहि ज्वाल दवानल अन्तरहीकी १६॥

तथा। चलिदेखरी बानिकसोंबनिकै ब्रजराजकोललाडेलो गावतुहै। मुखचन्द्रकीचारु मरीचनसों बलिनैन चकोर सिरावतुहै॥ जबडीठिको ओठनको पटको मुसक्यानको रंग मिलावतुहै। तब बांसुरी बांसहरेकी लला रचापके रंग दिखावतुहै २०॥

क०। शीतलसमीरजहां गुंजरतभौंरद्रुम भूमभूम रहेभरे फूलानिके भारहैं। चहुंओर नहरकी लहरि उठति अति चादर फुहारनसों फरैजल धारहैं॥ ग्रीषमन जानी परै बरषाकी रुचिधरे तरन करनकरैं नेकनसँचारहैं। सघननि कुंजतीर यमुनाके तहां जाय राधामन मोहनजू करतबिहार हैं २१॥

स०। कान्हछली गुरुलोग कहैं सबतापसह्वै दशकन्ध मल्योरी। बावन ह्वै बलिबांधि लियो सब राज दियो सुरराज भल्योरी॥ सततारि जलन्धरकी युवती हरणाकुश बालि को गर्ब मल्योरी। मोहिनी ह्वै शिव नाथ छल्यो इनको सजनी छलफैलि फल्योरी २२॥

क०। बंशकी न बिसरी सुधि भूठी सोहैं खायखाय तनआन मनआन कपट निधान हौं। लैले भाजिजात चीर माखन चोरायखात गारीदेतमुसक्यात निपट अयानहौं॥ दूरिदूरिदुदकारैदौरिदौरिपायँपरिडारिदई लोकलाज छलनि छलानहौं। बकिबकिको मरै आलीऐसन सों बारबारहितअनहितदोऊलागतसमानहौ २३॥

स०। जाकेलये यहगाउँ चवायमें नाउँ धराय कै बात सहीरी। जाकेलये गृहगोकुलछोड़िकैजायकै कुंजन बैठि अहीरी॥ जाकेलये पतिकोपरिहास बिलासतज्यो अरु लाज बहीरी। मोहिं मनायरहे विनती करिताहरि सों हमरूठि रहीरी २४॥

तथा। जाकेलये कुलकानि तजी घरहायनिकी चरचा नहिंमानी। जाकेलये सब गोकुलमें बदनामभई

मनमानि मलानी ॥ बन्दनदागबनाय कपोलन भोरहि लाल जगावत आनी। कोटि करौ मन योबन दै पर कन्त न आपनहोत सयानी २५ ॥

क०। जटित जवाहिर के भूषण सरस साजिचली गजगतिरति लालके मिलनबाल। पगपगमगमगकरतमनोरथनडगडग डिगडिग मैनमदमाती बाल ॥ किंकिणी कलित धुनि नूपुरनि रुनझुन हायल करतबजे पायल परतताल। चन्दते चटक प्यारी बदन सलोनताई पीरी परिगई पायोसेज पैनप्यारो लाल २६ ॥

तथा। जाको चित चरण बीच होयलवलीन सदा ताको तौ अपार सिन्धु बात ना तलैयाकी । औरहू अनेक भांति पूजनकरि सेवतहैं वेदऔ पुराणकहेबात है भलैयाकी ॥ रामलाल कहै मुक्ति होय क्यों न ताकी जिन एकबार लीला सुनी यशुमतिके छैयाकी। ऐसोहै कन्हैया मैं लेतहूं बलैया भलपूतना छलैयासी भेजी ातिमैयाकी २७ ॥

तथा। वारिडारोंशरदइन्दुमुख छबि गुबिन्दपरादिने ाहूंको वारिडारौं नखन छटानपर । कोटिकाम वारि ारौं अङ्गअङ्ग श्यामलखि वारिडारौं अलि अलि कुंवल लटानपर ॥ नैननकीकोरनपै कंजहूंको वारिडारौं ारिडारौं हंसहूंको चाल लटकानपर। देखसखीआज जराज छबि कहा कहौं काम धनुवारिडारौं भृकुटी टानपर २८ ॥

तथा। नैननसों नैनकोरै बाहुनसों बाहुजोरै बैठेसुख

सेज रस मोदरी करतहैं। भीजेतन प्रेमरङ्गरीभे लखि अङ्गअङ्गत्रिया मुसुकाननिमें फूलसे भरतहैं॥ पीवतहैं अधरसधीरेधीरेदोऊशाशि थोरेथोरेबेसरके मोतीथहरतहैं। माधुरी किशोर गोर पावत न सुख और येरी जबदोऊ रसबातन ढरतहैं २९॥

तथा। धाय धाय नागरी नवेली आई देखिबेको भानकेभवन भई भीर दरशानेकी। छद्दापै छितेपै छद रेपैऔर छज्जनपै गोखनपै दरपै दरीचिनपै आनेकी॥ आंगनमें आयोजब बन्नाबनवारीबनि निरखिप्रताप मुखसुख सरसानेकी। चकीसी भकीसी कोऊलागिटक टकीसी कोऊ चित्रकीलिखीसीभईनारिबरसानेकी३०॥

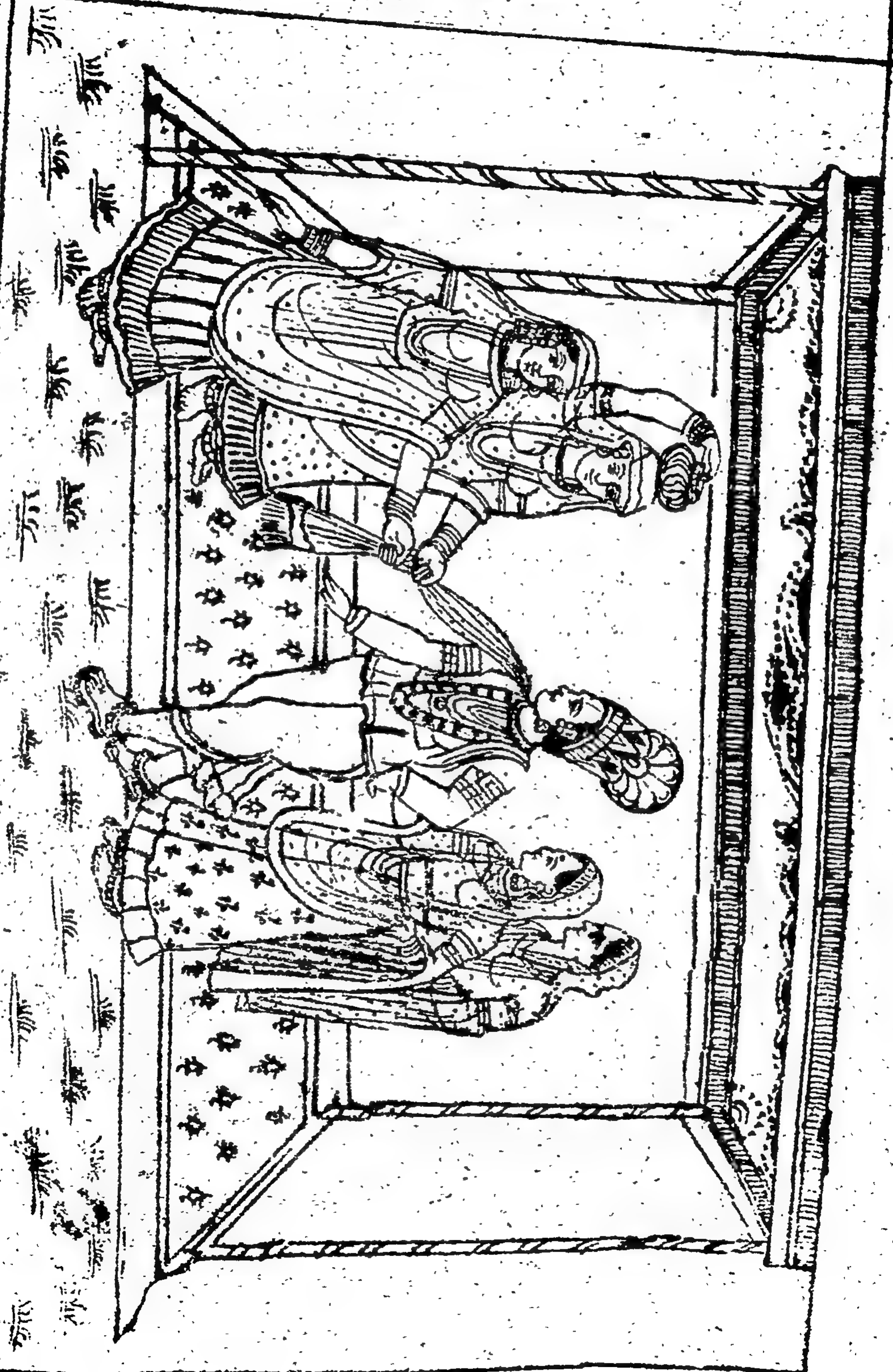
तथा। सेवती चमेली बेली मालती निवारी कुन्द खिलरहे फूल खिली चांदनीमें चन्दकी। नूपुरासितार वेनु बांसुरीमृदङ्ग बाज नाचत गुपालतीर तनया कलिन्दकी॥ नाचरहे मोरचारों ओरसों प्रतापदेखोफूलनपै नाचरही अवली मलिन्दकी। आगेगतिनाचरही नारिकुंजकेसरमेंबेसरमें नाचरहीमूरतिगोबिन्दकी३१॥

श्रीकृष्णचन्द्रसे प्रेम व स्नेह विषयके कबित्त सवैया॥

तथा। कबि कमलेश है अधीन गुनराजनिकोर्क्षि के अधीन गुणाधीन लेखियतुहै। क्षितिके अधीनधा धानकेअधीन प्राणप्राणके अधीनदेहसोई पेखियतुहैं देहके अधीननेह नेहके अधीनगेह गेहकेअधीनना।

देखो तसवीर नम्बर ७

श्री कृष्णचन्द्र जी का गोपियों से वार्त्तालाप करना तथा एक गोपी का-
श्रीकृष्ण जी का वस्त्र पकड़ना।





सो विशेषियतुहैं। नारि के अधीनभाव भावके अधीन भक्ति भक्तिके अधीन कृष्णचन्द देखियतुहैं १॥

तथा। छैल मनमोहनकीछबिमेंछकीहौंछीन एकहू न भूतल लगाई प्रेमडोरीहै। भनत ब्रजेश सांचीसरलसुभायभरी चायभरी वृन्दाबन चन्दकी चकोरीहै॥ गोकुलमेंबसतन गोकुलेशकास कुछू गोकुलेशहीकेवश गोपीकी किशोरीहै। गोरीदेह देखिकोऊ गोरीनकहोगेमोहिं हौंतौसराबोर श्याम रङ्गहीमें बोरीहै २॥

स०। याकी निकाई न पाईकहूं तियमेनका मैनकी जाईसीलागै। काननलागेलसे वहनैनक दैरतबैनसुधा समपागै॥ नादक गीत कलानि प्रवीन लखें तन दीपतिके तमभागै। द्योस लगै घर कंच लिपी सोराति ना न्हाई कियोतिन जागै ३॥

क०। घुघुरानेबार वारों मोतिनविहारवारों मुरली बजाय कछुटोनोंकारिदैगयो। यमुनाकेकूल काल्हि मिल्योहो अचानकही जानिन परत कछु बात मोसू कैगयो॥ जबते विहाल भई डोलै बनवीथिनमें कहैबलदेव यह मैनबीच बैगयो। सखियांनिगोड़ीहक्नाहकबकावतीहैं नन्दको कुमार हायमेरो मन लैगयो ४॥

स०। रूपकी रीझनप्रेमपर्यो किधौंरूपकीरीझनि प्रेमसों पागी। मण्डन मैन जग्यो मनसा बसकैमनसा बस मैन केजागी॥ लाजहितें कुलकानिभगीकिधौं लाजलियेकुलकानिहिभागी। नैनलगे वहिमूरतिमाईं किधौं वहमूरति नयननिलागी ५॥

तथा । तुम नाम लिवावतीहौहमपै हमनाम कहो कहालीजियेजू । अवनावचलैसिगरीजलमें थलमें न चलै कहाकीजियेजू ॥ कविमंचित औसर जोअकती सकतीनहिं हमपर कीजियेजू । हमतौ अपनोवरपूजती हैंसपने नहीं पीपर पूजियेजू ६ ॥

क० । यमुनातटबंशीवटके निकट कहूं लख्योपीत पटऔ मुकुट अति सोहमैं । उड़िगये भूषणबसनभूख प्यासबास श्वास आसरैनिदिन मिलिबेकी छोहमैं ॥ बारबारबरत वियोगकी बिथानबीच भनै शिवदीन परीमन सिजद्रोहमैं । ज्ञानगुण बोरिलाजकुलकानि भानिभानि वादिनते वाको मनमोहि रह्यो मोहमैं ७ ॥

तथा । पहिलेही जाय मिल गुणमें श्रवण फेर रूप सुधामधि कीनो नैनहू पयानहै । हँसनिनटनि चितवनि मुसुकानि सुघराई रसिकाई मिली मति पय पानहै ॥ मोहिमोहिमोहन नईरीमनमेरो भयो हरिचन्द भेदना परत कछु जानहै । कान्हभये प्राणमय प्राणभयेकान्ह मय हियमें न जानपरै कान्हहैकि प्रानहै ८ ॥

तथा । करिकै अकेली मोहिं जात प्राणनाथ आवै कौन जानैआय कब फेर दुखहरिहौ । औधको नकाम कछू प्यारे घनश्यामबिना आपकैन जीहैं हमजोपैइतै धरिहौ ॥ हरिचन्द साथनाथ लेनमैंन मोहिं कहालाभ निजजियमें बतावोसो विचरिहौ । देहसंग लेततोटहल हूकरतजातो ऐहौप्राणप्यारेप्राणलाइकहाकरिहौ ९ ॥

तथा । गुरुजन बराजे रहेरी बहुभांति मोहिं संग

तिनहूंछांड़ि प्रेमरंग राचीमैं । त्योंहींबदनामी लईकुलटा कहाईहौं कलङ्किनीहू बनीऐसी प्रेमलीकखांची मैं ॥ कहैंहरिचन्द सबै छांड्योप्राणप्यारे काजयातेजग भूंठ्यो रह्यो एकभई सांचीमैं । नेहके बजायबाजछोड़ि सबलाज आज घूंघुटउघारि ब्रजराजहेतुनाचीमैं १० ॥

स० । बाढ्यो करै दिनहीं क्षणहीक्षणकोटि उपाय करौं न बुझाई । दाहत लाज समाज सुखै गुरु कीभय नींद सबै सँगलाई ॥ छीजत देहके साथमें प्राणहुहा हरिचन्दकरौंका उपाई । क्योंहू बुझैनहिं आंशूकेनीर नलालन कैसी दवारिलगाई ११ ॥

क० । बाजीकरै बंशीध्वनि बाजिबाजिश्रवणनजोरा जोरी मुखछबि चितहि चुरायेलेत । हँसनि हँसावति जगतसों तिहारी मुरिमुरनि पियारी मन सबसों मुरायेलेत ॥ हरीचन्द बोलानिचलानि बतरानि पीतपट फहरानि मिलिधीरजमिटायेलेत । जुलफैंतिहारीलाज कुफुल न तोरैंप्राणप्यारे नैनसैन प्राण संगही लगाये लेत १२ ॥

स० । जादिन लाल बजावतबेणु अचानक आय कढ़े ममद्वारे । हौंरहीठाढ़ी अटा अपने लखिकैहँसेमो तन नन्ददुलारे ॥ लाजिके भाजिगई हरिचन्दहौं भौन के भीतर भीतिकेमारे । ताहीदिनाते चवाइनहूमिलि हाथचवाय के चौचँदवारे १३ ॥

तथा । व्याकुलही तलफौं बिनुप्रीतम कोऊतोनेक दया उरलाओ । प्यासी तजौंतनुरूपसुधा बिनु पानि

पपीको पपीहै पिआओ ॥ जीयमें हौंस कहूं रहिजात न हा हरिचन्द कोऊ उठि धाओ। आवे न आवेपि-यारी अरेकोऊ हालतो जाइकै मेरोसुनाओ १४ ॥

तथा। मेरीगलीननआइये लाल यासों सबै तुमहीं लखिजाइहै। प्रेमतो सोई छिप्यो जो रहै प्रकटे रसहू सबभांति नशाइहै ॥ आइहौं हौंहीं उतै हरिचन्दमनो-रथ आपको कुंज पुराइहै। अंकनबाटमेंलाइये जूकोउ देखि जो लैहै कलंक लगाइहै १५ ॥

तथा। मारगप्रेमको को समझै हरिचन्दयथारथ होतयथाहै। लाभकछूनपुकारनमेंबदनामहीहोनकिसारी कथाहै॥ जानतहै जियमेरो भलीबिधि औरउपायसबै बिरथाहै। बावरेहैं ब्रजकेसगरे मोहिनाहक पूंछतकौन बिथाहै १६ ॥

क०। उमड़िउमड़िदृगरोवत अबीर भये मुखद्युति पीरीपरी बिरहमहाभरी।हरीचन्दप्रेममातीमनहुं गुला-बीछकी कामभरझांवरीसी द्युतितनुकीकरी ॥ प्रेमफारी गरके अनेकरंग देखोयह योगियासजायेबाल बिरिछ तरेखरी। आंखियांमेंसांवरो हियेमेंबसैलालवहबारबा रमुखते पुकारतहरीहरी १७ ॥

तथा। जियमें जो होइ अधिकारतो बिचारकीजे लोक लाज भलोबुरो भलेनिरधारिये। नयनश्रवणकर पग सबैपरबशभयेउतैजातिजातइन्हैंकैसेकैसम्हारिये॥ हरिचन्दभई सबभांतिसों पराईहम इन्हैंज्ञानकहिकहो कैसेकै निवारिये। मनमें रहै जोताहीदीजिये बिसारि

मन आये बसैयासें वाहि कैसेके बिसारिये १८ ॥

स० । होते न लालइतोर इतेजोपैहोते कहूं तुमहूं बरसानियां । गोकुल गांवके लोगकठोर करैं छतहीय में मारि निसानियां ॥ यों तरसावतहौ अबलागणको मुखदेखिबेको दधि दानियां । दीनता की हमरेतुमरे निरदैयनहू की चलैगी कहानियां १९ ॥

तथा । दीनदयालु कहाइके धाइकै दीननसों क्यों सनेह बढ़ायो । त्योंहरिचन्द्रजू बेदनमें करुणानिधि नामकहो क्योंगवायो ॥ एतीरुखाई न चाहियेतापैकृपा करिकै जेहिको अपनायो । ऐसोही जोपै स्वभावरह्यो तो गरीबनेवाज क्यों नाम धरायो २० ॥

स० । पियप्यारेबिनायह माधुरी मूरति औरनको अबपेखियेका । सुखछांड़िकै संगमकोतुम्हरेइनलच्छन कोअबलेखियेका ॥ हरिचन्दजू हीरनको व्यवहारकै कांचनकोलै परेखियेका । इनआंखिनमें तुवरूप बस्यो उनआंखिनसों अब देखियेका २१ ॥

तथा । आवोसबैजुरिकै ब्रजगांवको देखनको जेरहे अकुलातहैं । चार चवाइनले दुरबीननधाओ न आज तमाशे लखातहैं ॥ सासजेठानी सखी सँगकी हरिचन्द करौ मिलि भेदकि बातहैं । घूंघुट टारि निवारिभये पियको हम आजु निहारन जातहैं २२ ॥

तथा । एकही गांवमें बाससदाघर पासइहौ नाहिं जानतीहैं । पुनि पांचयें सातयें आवत जातकि आस नचित्तमेंआनतीहैं ॥ हमकौनउपायकरैंइनको हरिचन्द

महाहठ ठानतीहैं। पियाप्यारे तिहारे निहारे बिनाअँखियां दुखियां नहिं मानतीहैं २३॥

तथा। यहसंग में लागिये डोलैसदा बिन देखे न धीरज आनतीहैं। छिनहूं जो बियोग परै हरिचन्दतौ चालप्रलैकि सुठानतीहैं॥ वरुनीमें थिरैं न झपैंउझपैं पलमें न समाइबो जानतीहैं। पियप्यारेतिहारेनिहारे बिना अँखियां दुखियां नहिं मानतीहैं २४॥

तथा। व्यापकब्रह्मसबै थल पूरणहैं हमहूं पहिचानतीहैं। पैबिना नँदलाल बिहाल सदाहरिचन्दन ज्ञानहिं ठानतीहैं॥ तुमऊधोयहै कहियो उनसों हम और कछूनहिं जानतीहैं। पियप्यारे तिहारे निहारेबिना अँखियां दुखियां नहिं मानतीहैं २५॥

तथा। जिनको लरिकाईं सों संगकियो अबसोऊन साथहि साजतीहैं। हरिचन्दजू जानिहमैं बदनाम चवावघने उपराजतीहैं॥ हमहाय कलङ्किनि ऐसी भई सखियांलखिकै मोहिं भाजतीहैं। निशिबासर संगमेंजे रहती मुखबोलिबेसों अबलाजतीहैं २६॥

तथा। पहिले बहुभांति भरोसोदियो अबहींहम लाइमिलावतीहैं। हरिचन्दभरोसेरही उनके सखियांजे हमारी कहावतीहैं॥ अबवोई जुदाह्वैरहीं हमसोंउलटो मिलिकै समुझावतीहैं। पहिलेतो लगाइकै आगअरी जलको अब आपुहि धावतीहैं २७॥

तथा। लैमन फेरिबोजानो नहीं बलिनेहनिवाह कियो नहिंआवत। हेरिकै फेरिमुखैहरिचन्दजू देखनहू

कोहमें तरसावत ॥ प्रीतिपपीहनकी घन सांवरे पानि-
परूप कबौंनपिआवत। जानो न नेकबिथा परकीबलि-
हारी तऊहो सुजान कहावत २८ ॥

क०। आई गुरुलोगसंग न्योते ब्रजगांवनई कुल
हीसुहाईशोभा अंग न सनीरही। पूछेमनमोहनबतायो
सखियन यहसोई राधाप्यारी वृषभानुकी जनीरही॥
हरिचन्द पासजाय प्यारे ललचायो दीठ लाज की
धँसीसो मानो हीर की अनीरही। देखो अन देखो
देखो आधोमुख हाय तऊ आधो मुखदेखबेकीहौसही
बनीरही २९ ॥

तथा। भूलीसी भ्रमीसी चौकी जकीसी थकीसी
गोपी दुखीसी रहतकछू नाहीं सुधिदेहकी। मोहींसों
लुभाई कछु मोदकसों खायसदा बिसरीसी रहौं नेक
खबरन गेहकी॥ रिसभरी रहै कबौं फूली ना समाति
अंग हँसिहँसिकहैबात अधिकउमेहकी। पछेतेखिसा-
नी होय उत्तर नआवैतोहिं जानीहम जानीहै निशानी
या सनेहकी ३०॥

तथा। कहोकौन मिलापाकिबातैं कहै कहि औरन
कोतो कछून पतीजिये। चितचाहैजहां बसियेमिलिये
न कभूजिय आवै सुईसुईकीजिये॥ अबप्राण चलेचहैं
तासोंकहैं हरिचन्दकीसो बिनती सुनिलीजिये। भरिनैन
हमैं इकबेरहूतो अपनो मुखमोहनजोहनदीजिये ३१ ॥

तथा। इतउत जगमें दिवानीसी फिरतरही कौन
बदनामिजौन शिरपैलईनहीं। त्रासगुरुलोगनकी आ-

सकैअनेक सहीकबबहु भांतिनकेतापसोंतईनहीं ॥ हरि-चन्द गिरिबन कुंजजहां जहांसुन्योतहांतहां कबउठि धाइकै गईनहीं । होनी अनहोनीकीनी सबही तिहारे हेतु तऊ प्राणप्यारेभेट तुमसों भईनहीं ३२ ॥

तथा। एकबेर नैनभरि देखैं जाहि मोहैतौन माच्यो ब्रजगांव ठांवठांवमें कहरहै । संगलगीडोलैं कोऊघर हीकराहैंपरी छूट्योखानपानरैन चैनबनघरहै ॥ हरीच-न्द जहांसुनौ तहां चरचाहै यही एक प्रेमडोर नाच्यो सगरोशहरहै । यामें ना सँदेह कछू दैया हौं पुकारेकहौं भैयाकीसौं मैयारी कन्हैया जादूगरहै ३३ ॥

तथा । जौनगली काढ़ौ तहांमोहै नरनारी सबभीर-नके मारे बन्दहोइ जात राहहै । जकीसी थकीसीसबै इतउत ठाढ़ीरहैं घायलसी घूमैं केतीकियेजियचाहहै॥ हरीचन्दजासों जोई कहौतौन सोईकरै बरबशतजैसब पतिब्रत राहहै । यामें ना सँदेह कछू सहजहिमोहैमन सांवरो सलोना जानै टोना ख़ामख़ाहहै ३४ ॥

स० । रूपदिखाइकै मोललियो मनबाल गुड़ीबहु रंगनजोरी । चाहत मांभोदियो हरिचन्दजू लैअपनो गुनकी रसडोरी ॥ फेरिकै नैनपरे तनुपै बदनामीकी तापैलगाईपुछोरी । प्रीतिकीचंग उमंगचढ़ायकै सोहरि हाय बढ़ायकै तोरी ३५ ॥

तथा । कौनकहै इतआइये लालन पावसमैतोदया उरलीजिये । कोहमहैंकहाजोर हमारोहै क्योंहरिचन्द वृथाहठकीजिये ॥ जो जियमें रुचै भेटिये ताहि द्या

करिकै तेहिको सुख दीजिये। कोरिही कोरी भलीहमहैं पियभीजियेजू उनके रसभीजिये ३६ ॥

क०। खोरि सांकरी में आजु छिपिकै बिहारीलाल तरुपै बिराजे छल जिय अति कीनोहै। ग्वालबालसाथ केहू इतउत घाटिनमें छिपहरिचन्द दान हेतु चित दीनोहै॥ ताहीसमैगोपिनाबिलोकि कूदिधाय सबऊधम मचायो दूधदधि घृतछीनोहै। दहीजोगिरायो सोतो फेरहूजमायलेहैंमनकहांपैहैंदानमिसजोनलीनोहै ३७॥

स०। लाज समाज निवारिसबै प्रणप्रेमको प्यारे पसारन दीजिये। जाननदीजिये लोगनको कुलटाकहि मोहिंपुकारनदीजिये॥ त्यों हरिचन्दसबै भयटारिकै लालनघूंघुटटारनदीजिये। छांड़िसकोचन चन्दमुखै भरिलोचन आजु निहारन दीजिये ३८॥

तथा। धारनदीजिये धीरहिये कुलकानिको आजु बिगारन दीजिये। मारन दीजिये लाज सबै हरिचन्द कलङ्क पसारन दीजिये॥ चार चवाइनसों चहुँ ओर सो शोरमचाइ पुकारन दीजिये। छांड़ि सकोचन चन्द मुखै भरिलोचनआजु निहारन दीजिये ३९॥

क०। पूरण पियूष प्रेम आसव छकी हो रोम रोम रसभीन्यो सुधिभूली गेहगातकी। लोक परलोकछोंड़ि लाजसों बदन मोड़ि उघारि नचीहौं तजिसंग तातमातकी॥ हरीचन्द येतेहूपै दरश दिखावै क्यों न तरसत रैनिदिना प्यासे मान पातकी। एरेब्रजचन्दतेरेमुखकी चकोरिहूमें येरेघनश्यामतेरे रूपकीहौं चातकी ४०॥

तथा। छांड़ि कुलबेद तेरी चेरीभई चाहभरीगुरु जनपरिजन लोकलाज नासीहौं। चातकी तृषित तुव रूप सुधाहेतुनितपलपलदुसहबियोग दुखगासीहौं॥ हरिचन्द एक ब्रतनेम प्रेमहीको लीबे रूपकी तिहारे ब्रजभूपहौंउपासीहौं। ज्यायलेरे प्राणन बचायलेलगाय कण्ठ येरेनंदलाल तेरी मोललई दासीहौं ४१॥

तथा। तरसतश्रोणबिनासुने मीठेबैनतेरेक्योंनतिन माहिं सुधावचनसुनाइजाय। तेरेबिनमिलेभई झांझरी सीदेहमान राखिलेरे मेरोधाइ कण्ठ लपटाइजाय॥ हरीचन्दबहुत भई न सहिजाइअबहाहा निरमोहीमेरे प्राणन बचाइजाय। प्रीतिनिरबाहि दया जियमेंबसाय एरे एरे निर्दयी नेकु दरश दिखाइजाय ४२॥

तथा। दौरिउठिप्यारी गरलावैगिरिधारी किन ऐसे पियहूंसों किन बोलै कल बादिनी। देखु हरिचन्द ठीक दुपहर तेरेहेतुआयोचलिदूरसों पियारोरी प्रमादनी॥ तेरेगृह चलत न दुखसुख जानिगिन्यो शीतलबनाउ ताहि सुरति सवादिनी। मखमलभूभलभो लूहभईसो री पासदूरी भई तेरेयहधूपभईचांदनी ४३॥

स०। परीरहैं बैर परोसिनैंपै ननदी उरशाल सिसालहिरी। बस बास बुरो ब्रजको सजनी हठिक्योंलखिये सुखजालहिरी॥ बड़ी आंखिनमोरकी पांखिनको तूमिलावबहै प्रतिपालहिरी। अबमेंटो बियोग बिथा तनुकी भरिकै भुजभेटौं गोपालहिरी ४४॥

क०। गईधोंकहांते कालिन्दीके कूल फूललेन हूल

सी लगतिनाहिं छबिउतरातिहै। मूरति अनूपएकआ-
थकै अचानकमें चानकलगाय अजों हियकोहरातिहै॥
ज़ुलुफमें कुलुफ करीहै मति मेरी छलि येरीअलिकहा
करों कलना परातिहै। जबजब वाकी करों सुधिबुधि
दीनद्याल तब तब मेरी सब सुधि बिसरातिहै ४५॥
तथा। कालिन्दीके कूलगई फूललेन तहांएक छैल
लखिमेरी मति धीरज न धारती। एंड़िन को देखिदबि
जातिकलाराबिकीहै किमिकैसोदीनद्याल भनै कबिभा-
रती॥ कहूंमैंकहांलों मनु शोभा तिहूं लोकनकी आनि
आनिताकी सबआरतीउतारती। तूरतिनबनैकलीमोहि
सुनिअलीरहीमूरतिसी ठाढ़ीवहसूरतिनिहारती४६॥
स०। मुरिकै मुसुकानिलख्योजबते ममतो तबते
कुलकानि नसी। कछुभावतहै नहिं ताहीबिनावहरैनि
दिना द्युति आनिबसी॥ गतिप्रीतिकी जानत कोउ
नहीं सबलोगकरैं उतपातहँसी। वहलालनकुन्तलजा-
लनमेंमति मोहरिनी अब जाय फँसी ४७॥
क०। जादिनते दुहींगाय मेरीघूमरीको मोहिं धूम-
रीसी आवै नहिं रह्योजायघरमें। वादिनते उठतचवा-
इनके उतपात सगरी सिहात बातबगरी बगरमें॥ कहूं
कहाहालया बिहालअब अपनोमें ढूंढ़ति गुपालको
फिरतिहौं डगरमें। दोहनी हमारीदै हमारेकरमाहँप्या-
री लैगयोमुरारी मनमेरोकरि करमें ४८॥
तथा। आजमैं निहारे कारेकान्हको सुपनबीच उ-
ठिकैसकारे यमुनापै जलकोगई। तबहींते दीनद्यालकै

रही मनीरवाल येरीभटूमेरीभटभेरी मगमेंभई॥ नन्द नन्दमोतन बिलोकिमन्दमन्दकह्यो येरीचन्दमुखीआइ कितते इतेनई। कलनपराति आली ललनललस्योनभले चलनसमयमें चलमलन दगादई ४९॥

तथा। कहाकहौंहेलीमैंअकेलीगई कुंज गेल फूली ही चमेली छैलतहांबेणुटेरोरी। पीतपटधरैंहरें हरैंआ-यगरैं गह्यो मोतिनकी लरी लखि कुंजकरें फेरोरी॥ कटिको लचाइकै नचाय भौंह नैननको सैननसों कियो चित्तचंचलकोचेरोरी। कुंजकीगलीमेंअली औचकसों आय छलीचुनतिकलीही चुनिलियो मनमेरोरी ५०॥

तथा।पीतपटकसी बसीश्यामकी सुरतिलसीतोलौं कुलफांसनासिगास को सहतिहै। आने नहिं नेक एक प्रीतिकी परीहैटेक करिकै अनेककला ललाकोचहति है॥ कबधौंमिलैगोवहसांवरो कुँवरमोहिंलाख लाखयहै अभिलाषकोगहतिहै। खिरिकीके माहिंखरी हिरिकी हरीक्योंहेरैघरीघरी फिरकीलौं थिरकीरहतिहै ५१॥

स०। सुन्दरगोल कपोलनपै अनमोलसो कुण्डल डोलनिप्यारी। हीहलकै द्युति मोहनकी झलकैंसुथरी अलकैं घुंघुरारी॥ वामुसुकानि बिलोकतही कुलकानि सबैतजि होतबिदारी। लागि जो जाहिं तो कीजैकहा सखिये आँखियां रिझवारि हमारी ५२॥

तथा। हैअतिभीति चवायनकी हँसिहैअरिपापिनि दै करतारी। लाजगही ब्रजराजबिलोकत आजलौं मैं कुलकानि सँभारी॥ आवतजातसदा यहिगैल सुछैल

छबीलानि कुंजबिहारी। लागि जो जाहिं तोकीजैकहा सखिये अँखियां रिझवारि हमारी ५३॥

तथा। देतिसदा सिखतू सजनी अरु मैंहू बिचारति हौंहितकारी। मान कियेगुणमानकहैं सनमान बढ़ै फिरिहै हितभारी॥ मोहनीमूरतिमोहनकी अवलो कत लोक रिझावनि हारी। लागि जो जाहिं तोकीजैकहा सखिये अँखियां रिझवारि हमारी ५४॥

तथा। लीनरहैं नितरूप पयोनिधि मीनकहैं कबि बुद्धि बिचारी। दीन अधीनरहैं नितही बिनु देखत तोषलहैं न सदारी॥ बानिपरी प्रियपेखनकी कुलकानि बिसारि दईइनसारी। लागिजो जाहिंतो कीजैकहा सखिये अँखियां रिझवारि हमारी ५५॥

क०। तूहैश्यामा वेहैंश्यामदोऊछबि अभिरामआठौयाम घनश्याम नामब्रतलायोहै। छकीहै छबीले के रसीले प्रेमछाकनिसों चोरिचिततेरोमोरनहीं उनदयो है॥ छपैहै छपाकर छपाये कहुंकरओट मुकुरैरीकहाजो टतेरो भलोभयोहै। प्यारो बलभय्याबनबेणुको बजय्याआय अबहींकन्हय्यातेरी गय्यादुहिगयोहै ५६॥

स०। भोगबिलासनमें जोसदा रहींआयतिन्हैंतुम योगसिखावत। देहसुरङ्गनपै सजिबेकहँ कैसेकुरङ्गकी छालबतावत। त्योंभुवनेश अनोखी अनोखी सुबातैं बनायकहा फलपावत॥ योग अयोगबिचारिसकोनहिं ऊधोकैसे प्रवीण कहावत ५७॥

तथा। हमजानतीं कीन निबाहहिंगे तबप्रेमकेफन्द

में क्योंपरती। भुवनेशजू त्योंबदनामीह्वती अपनेशिर पै हमक्यों धरती॥ उनकी करतूतिनकोलखिकैअबका हे उसासन को भरती। सखियान के सङ्ग निशङ्कभई व्रजवीथिन माहिं खेलाकरती ५८॥

तथा। तबतोमुखचन्दते मोहिलियो इनचित्तचकोरनशोभसने। भुवनेश त्यों प्रीतिकी रीतिबढ़ाय नअन्तरराख्योकछूसपने॥ भयोकाहनजानिपरैअबधौंनिठुराई गही इतनी तुमने। दिनरैनि नचावतहौहमकोबसेदेशमेंहौ पै विदेशीबने ५९॥

तथा। कैकैउठैवह प्राणबिहीन घरीघरीरावरीछोहन में।नयनचढ़ेभुवनेशरहैं नितहीसिगरीमगजोहनमें। सांसरहीचलिआसनसोंसबैसांचीकहौमनमोहनमें। राखिबोवाहिचहोजगमेंतो चलोहमरे अबगोहनमें ६०॥

तथा। राजत कुंजगलीनमें श्यामबिराजति बामदरीचिकाऊपर। दीठिचकोरसीश्यामके नयनकीचन्द्रमुखी पै लगीतेहि अवसर॥ प्रेम पगी झझकी भुवनेश गिरीबेंदी बेनीसों योंपगकेतर। मानहु कारो भुजङ्ग महा टपकायदियो मणिएक जमींपर ६१॥

तथा। व्रजराजके काज सँवारति सुन्दरि मांगन मोतिन आनभरी। रचिबिन्दगुलालको बालके भाल गरेमें लसै मुकुतानिलरी॥ भुवनेशसुकौन छटा बरणै पहिराईजुहैचुनिकै चुनरी। मनुइन्दुबधूनकी वृन्दअनन्दित हेमलतापरहैंछहरी ६२॥

तथा। इन्दुवधूनकी वृन्दनसों बिथुरीमहि में मणि

लालपत्यारी। त्योंभुवनेशझिल्लीझनकारसों नूपुरकी ध्वनि है अति प्यारी॥ घोरघटाघन औक्षण जोन्हसी सारीसजी जरदारीकिनारी। याविधि पावसकीसुखमा लहि प्यारी चली मिलिबे गिरिधारी ६३॥

तथा। हमसों अब बूझतिकाहअहो अपनी करतूति कहाकरोरी। भुवनेशजू भाग्यमें मेरेयही अनयास हीदुःख सदासहौंरी॥ करि प्रीतम प्राण सोमानअहो अफ़सोसमें हाय निते रहौंरी। करती कछु ऐसीउपाय अली मिलतवै यहीअब मैं चहौंरी ६४॥

तथा। आजु गईती बिलोकिबेको कलकुंजनमेंब लिकुंजबिहारी। ताहितहां न मिलेभुवनेश तबै गहि बैठी कदम्बकी डारी॥ बेदन ऐसोबढ़ो तनमें क्षणमें गईच्वैसी न जाति निहारी। कैसेगहै गृहकी अबगैल गई वहकामके बाननि मारी ६५॥

तथा। जब बोलतहैं वै दयाकरिकै चुपकैसेरहैं मन जातहरो। उनसोंमिलिकै अभिलाषसबै तुम्हैं रोकत को कि न पूरीकरो॥ भुवनेशजूलाभ कहायहीमें हमसों जुपै नाहकही झगरो। विधिभालमें जोई लिखी सोई होत अहो इन बातनमें न परो ६६॥

क०। चन्दते दुचन्दमुख चन्दकी चमाकैरुचि चन्द मौलिचित्तकै चकोररह्यो फँसिकै। चोरि लेत चेतचष चंचलचितौनिचारु रहीदीनद्यालबनमालगरेलसिकै॥ केसरललाटदियेगातको त्रिभङ्गकिये रहो हिये मेरेयह बानक सों बसिकै। आनन्द के कन्द ब्रजचन्दनन्द

नन्दनेक मेरीओर देखिये जू मन्दमन्द हँसिकै ६७ ॥

स०। हौंनाहिं जैहौं अली घर नन्द के फन्द करै वहु नन्द ललाहै। मन्दहिमन्द सुहांसहिको लखिम न्द भयो शुभ सोमकलाहै॥ कासों कहौं भुवनेश सबैदुःख यों व्रजचन्दमें चवचन्दचलाहै। चाइचवाइने कीबोकरैं उनकोमुखबन्द न एकपलाहै ६८॥

क०। आली आजु राग अनुराग से निकारे हम तौलौं व्रजराजआ अवाज़कोबिगारिगो। पीतपटकटि करलकुटी सोहावनहै भृकुटी कुटिल कजनैननिहारिगो॥ ताक्षणते भूलत भुलावैना दिवाकरजूमेरोरोमरोम हाय प्रेमदीप बारिगो। फेरिफेरि आनन अधरमुसुकायकर मीठेमीठेबैनन पियूषरस झारिगो ६९॥

तथा। डारेकहूं मथनि बिसारेकहूं घीको भांड़ा बिकलबिगारै कहूं माखन मठामही। भ्रमि भ्रमि पावति चहूंघाते तु याहीमग प्रेमपायपूरके प्रबाहनमनोबही॥ झुरसिगई धौंकहूं काहूकी बियोगझर बारबार बिकल बिसूरति जहींतहीं। येहोब्रजराज एकग्वालिनीकहूंकी आजभोरहींते द्वारपै पुकारत दहीदही ७०॥

तथा। वृन्दाबनकुंजनमें बंशीबटछांह असिकौतुक अनोखोएक आजलखिआईमैं। लागोहुतो हाटएक मदन धनीकोतहांगोपिनकोवृन्दरहो झूमिचहुंघाईमैं॥ द्विजदेवसौदाकी नरीतिकछुभाषीजाय ह्वैरही जुनैनउनमदकी देखाईमैं। लैलै कछूरूप मनमोहन सों बीर वे अहीरनै गँवारीदेहि हीरन बटाईमैं ७१॥

स०। होतरहे नवअंकुर की छबि छांह कछारन में आनिआरी। त्योंद्विजदेव कदम्बन गुच्छन येइनये उन येसुखकारी॥ कीजिये बेगिसनाथइन्हें चलिये बनकुंजनकुंजबिहारी। पावसकालके मेघ नये नवनेह नई वृषभानुकुमारी ७२॥

क०। बूझेहू न सूझतसुघाट बाटजलथल बिनशी सकल मरयादा सबठामकी। द्विजदेव देहरी के बाहर धरतपग फेरि सुधिकरत न धामकी न ग्रामकी॥ बूड़ति अथाहे कुलधरम निबाहेकौन बावरीबिलोकि यह झूकनि सुदामकी। पावसअँध्यारी हुती ऐसिये डरातीतापै आठोयाम रसवरषनि घनश्यामकी ७३॥

तथा। आवतचलीही यह विषमबयारिदेखु दबे दबे पांयन किवारनलरजिदे। कैलियाकलंकिनीको देरी समझाय मधुमाती मधुपालिन कुचालिन तरजिदे॥ आजब्रजरानीके बियोगकोदिवसताते हरेहरेकीर बकवादिनहरजिदे। पीपीकै पुकारिबेकी खोलैं ज्योंनजीहन त्योंबावरी पपीहनके जूहन बरजिदे ७४॥

स०। वहुऊपरहैखिरकीके खड़ो झुकिझूमतहैगुण संग सटापटि। करलीने पतंग उड़ावतहैं मनमेरेकोगेतसों देतझटापटि॥ शिरसोहत मोरकिरीटमनोहर हेरतप्रेमकी होत पटापटि। जबते लख्यो सांवरो नन्दकुमारलगी तबते कछुचित्त चटापटि ७५॥

तथा। कोऊभलोकहो कोऊबुरोकहो कोऊझुकैकिन रोषकेआये। आवतहाथ कहा कविराज जो पाक्षिन के

कहोपीछेकोधाये ॥ कोकरिकैअफसोसमरै बिधिकोजो लिखोसोमिटैन मिटाये। होतउदास सदा सजनी सुनु वासुओंप्रीति छिपै न छिपाये ७६ ॥

क०। नैनजैसे सलिलचाहैं सलिलजैसे बिमलचाहैं बिमलजैसे कमलचाहैं सीताज्यों रामको। पावस ज्यों पपीहा चाहै बहिन ज्यों भैया चाहै राधा ज्यों कन्हैया चाहै परदेशी धामको ॥ घन जैसे मोरचाहै चन्द्र ज्यों चकोर चाहै चकई ज्यों भोर चाहै कामिनी ज्योंकामको। सुखजैसे तनचाहै शूर जैसे रनचाहै वैसे मेरा मनचाहै प्यारेतेरे नामको ७७ ॥

स०। आजगईती कलिन्द जापैलखि कुंजलतान कलोलतहीं बन्यो। ठाढ़ीहोय त्यों श्रमसी करते कछु भींगे निचोलनिचोलतहीं बन्यो॥ आयगये यदुरायतहींद्विज देव गुमानसों डोलतहीबन्यो। कोटिउपायकरे तिहिकालपै आली गोपालसों बोलतही बन्यो ७८ ॥

क०। वाकेसंगहीते रातेकंज छबिछीने माते झुकि झुकि झूमि झूमि काहूको कछू गनैन। द्विजदेवकीसों ऐसीवनक बनाय बहुभांतिनबिगारै चितचाहन चहूंघा चैन॥ पेखिपरे पात जोपै गातन उछाहभरे बारबार ता-तेतुम्हैं बूझती कछूकबैन। येहो ब्रजराज मेरे प्रेमधन लूटिवेको बीराखाय आयकितै आपकेअनोखेनैन७९।

तथा। आजबरसानेकी नबेलीअलबेली बनिपावन चरित्र चलिबावन तयारीमैं। लैलैकर लेखनी लगावन लगीहैरंग आनँद उमंगते सबीह न्यारी न्यारीमैं॥ताहीं

समय बांसुरीसुनाई कहूंकान्हैं टेरिद्विजदेव कीसों या अनन्द अधिकारीमैं। चित्रलिखिबेकीकौनचरचाचला वै जब चित्रकी लिखीसो भई सारी चित्रसारीमैं ८० ॥

तथा। आजबरसानेकीनबेलीअलबेलीवधू मोहनविलोकिबेकोलाजकाजलैरही। छज्जाछज्जाझांकतीझरोखनिझरोखनिह्वै चित्रसारीचित्रसारी चन्द्रसमह्वैरही॥ कहैपदमाकर त्यों निकस्यो गोबिन्दताहि जहांतहां इकटकताकिधरीह्वैरही।छज्जावारीछकीसीउझकीसी झरोखावारी चित्रकीसी लिखी चित्रसारीवारी ह्वैरही ८१॥

तथा। सांझही शृङ्गारसाजि प्राणप्यारे पासजाति बनिताबनकबनी बेलसी अनन्दकी। कबिमतिरामकल किंकिणिकी ध्वनिसुनि बाजे मन्दमन्द चालज्योंविराजत गयन्दकी॥ केसरिमें रँगिये दुकूल हांसीमेंझरत फूलकेशनमें छायछबिफूलनके वृन्दकी। पीछेपीछे आवत अँधियारीसी भँवरभीर आगे आगे फैलत उज्यारी मुख चन्द्रकी ८२॥

तथा। ध्यावो घनश्यामको लगावो मति चातकसी नामकी रटानितजिऔर कछू ठानोना। लोकपरलोक को बहाओं प्रेमसिन्धुआजलाजके जहाजको बुड़ाओं आनि आनोना॥ गावो गुणलालको रिझावोमन दीनद्याल और जगजालजीव यशकोबखानोना।होंतोभईदासीब्रजबासी बलबीरजूकी करैंकोटि हांसीउपहासी तऊमानोना ८३॥

तथा। ऊधो बसुधामें सुधालहरी ललाकी बानी

मैन कलावारीकहिप्यारी कब बोलिहैं। मन्दमुसुकानि चारुचन्दमुखकी मरीचि फैलि चित कैरवकपाट कब खोलि हैं॥ लागिरही प्यास ब्रजजीवनकी आशहमैं कबधौं बिलासयुतरासमेंकलोलिहैं। कुंज बनमाहींये कदम्बन की छाहीं छैलमेलिगलबाहीं कबमन्दमन्दडो- लिहैं ८४॥

तथा। गरेगुंजमाल धरे खरे ह्वै तमालतरे लाल कब फूलनकी माल पहिरायहैं। ललित लताकी सेज पल्लव मईसुनई आपने करनि कबकुंजमें बिछाय हैं॥ धराधर धारीअतिप्यारी अधरान धरकबधौं मधुरध्व- नि बांसुरीबजायहैं। यशुदादुलारे प्राणप्यारे नन्दवारे कब मिलिकैहमारेसों मधुरस्वर गायहैं ८५॥

तथा। कलन परतिकहूं ऊधो इनगैयनको कबधौं ललन धौरी धूमरी पुकारिहैं। पूरिहैं श्रवण कबसुधा निज बैननिसों कब वह छबि हमनैननि निहारि हैं॥ बूड़िबोचहत ब्रजराधा दृगधारते कबधौं धराधरकरज परधारिहैं। मारिहैंअघासुर बिदारिहैंबकाकोकब बेणु को बजायकुंजबनमें बिहारिहैं ८६॥

तथा। ऊधोचित्तचोर नन्दकेकिशोर भोरसमयनय- नकोरकी मरोर चितैकब जागिहैं। लाखनउपायप्रिय परि अभिलाषनको माखन चुराय कबनन्दभवनभागि हैं॥दानकी गलीमें वृषभानकीललीपै पागिमांगिदही दानकब कान्ह अनुरागिहैं। लैहैंहम छीनबीनदीनब- न्धुहाथनते होयकैअधीन कबदीनतासों मांगिहैं ८७॥

स०। भामिनिकोनाहिं भोजनकीसुधि बावरीसीभई भौनमें डोलै। मीतिकीप्रीतिमें मातीरहै नितकामिनिके नकाहू सों बोलै॥ बातैंपिया मनमोहनके हितकी चित तेनहिं कैसेहुखोलै। नन्दकुमारक सुन्दररूपसों बाल बिकाइ गई बिनमोलै ८८॥

क०। कोऊकहो कुलटाकुलीन अकुलीन कहौ कोऊ कहौ अङ्क न कलङ्किनी कुनारीहौं। कैसेसुरलोक नर-लोक परलोक सब कोनमें अलोक लोक लोकनते न्यारीहौं॥ तनजाहुमनजाहु देवगुरु जन जाहु जीभ क्यों न जाहुटेक टरत न टारीहौं। वृन्दावनवारी गिरिधारी के मुकुटपर पीतपटवारेकीमें मूरतिपै वारीहौं ८९॥

तथा। मुकुटके रङ्गनिपै इन्द्रको धनुषवारों अमल कमलवारों लोचन बिशाल पर। कुंडल प्रभापै कोटि प्रभाकर वारिडारों कोटिक मदनवारों बदनरसालपर॥ तनुके तरणपर नीरदसजलवारों चपलाचमक मनमो-हनकी मालपर। चालपै मरालवारों मनपर मनवारों और कहा कहा वारिडारों नन्दलाल पर ९०॥

स०। नाइनको पियवेषकियो ठकुराइन पायँनजा वकलायो। सारी उतारिधरी उबटैबेको कंचुकीको हरि हाथचलायो॥ चौंकिचितै अवलोकि रही पतिकोपहि-चानिकै शीशनवायो। मेरेलिये इतनीकरि मोहन हाइ अली गहि कण्ठलगायो ९१॥

तथा। सुन्दरमूरति मोहनकी मनमोहनके हियमेंहिर कीसी। देव गोपालको बोलसुने छतियां भरि आई

सुधा छिरकीसी॥ ऊंचीअटानहिंबोलिसकै अरुनयनन लाजघटा घिरकीसी। पूरण प्रीतिभई हरिकी खिरकी चितकी वह फिरै फिरकीसी ६२॥

क०। नेहभरे नयननकीजबते नज़र मिली तबहीं तेचित्तकी तो लग्योअति चावहै। मिलत मिलत मन हिलमिल एकभयो पर्‍यो प्रेमफन्दको अनोखो उरभावहै॥ कहि न सकत तेरोहियोनिरमोही अतिमेरोहियो गह्यो कछु ऐसोई स्वभावहै। तेरे अनआय मनआवै ह्वै रहतमोहिं तेरेआयेआयजात प्यारीतनुआवहै ६३॥

तथा। जाको नाम नेक कहुं धोखेहुं कढ़त अन्तआवत न यमदूत स्वपने निकटरे। पावतसो मुक्तिजाहि याचत नित योगीजन छूटिजात बेगिभव शृङ्खला बिकटरे॥ सोइये अनन्दकन्द नन्दकेकुमार प्यारे ताहिके निरन्तर चारु चरणन लिपटरे। येरे परताप कोटिभ्रम को किवार टारि बार बार कृष्ण कृष्ण राधाकृष्ण रटरे ६४॥

तथा। अवली तमाल अवताल की विशाल सोहैं शाखा हैं सघनछबिछाये ये उतंगहैं। श्रेणिन अनेक द्रुमदाड़िम कदम्ब फूले फैलत सुगन्धवर दरशत सुरंगहैं॥ वृन्दावन वास अति अद्भुत बिलास छायो चहुं दिशिप्रताप कुलकूजत कुरंगहैं। यमुना केकूल औकदम्बनकीडारनपै राधाकृष्ण राधाकृष्णटेरतविहंगहैं ६५॥

तथा। स्वर्णके सँवारे सो पान छैपान सोहैं उठत अनूप कल तरल तरंगहैं। किलकत कलोल चहुं ओर

चकवा मरालमाते श्रेणीसरोजतारे गुंजत सुभृङ्गहैं ॥ छिनमें अपूत केतेजन्तुजड़ जङ्गम सब पावतप्रताप जाके परसत परसंगहैं। यमुनाके कूल औ कदम्बन की डारनपै राधाकृष्णराधाकृष्ण टेरत बिहङ्गहैं ९६॥

तथा। कानन करोरकुलकोकिल कपोल छाय रंग रंग प्रताप जाके चमकत अनङ्गहैं। लालपरचंगुलमनोगमुखलालसोहै शोभानिरेसचितलज्जितअनङ्गहैं॥ छहन निवासलै शीतल जलपानकर राते दृगातकरि करि तकि तकि तरंगहैं। यमुनाके कूल औ कदम्बन कीडारनपै राधाकृष्ण राधाकृष्ण टेरत बिहङ्गहैं ९७॥

तथा। तीर तीर नूतन कदम्बनकी महाभीरभूमि भूमि शाखारहे यमुना जल संगहैं। बल्लरीनबेलीफूल फूलरहीझालरसी भृङ्गमतवारे तापै गुंजतउमंग हैं॥ भनत प्रताप चहुं नृत्यत मुदित मोर त्रिविध समीर डोलै तरलतरंगहैं। यमुना के कूल औ कदम्बन की डारनपै राधाकृष्ण राधाकृष्ण टेरत बिहंगहैं ९८॥

तथा। कुण्डल विलोल कुलकानन कनकराजैकेसरिको तिलकभाल भृकुटी बिशालकी। कुन्दन किरीट तामें मोरके पखान खोंसे झूमत चलत मन्दगतिसों मरालकी॥ चितवनि तिरछीतीर तीक्षणअनंग केसे वेहँसतमें आलीजातलालीहै गुलालकी। कैसेहूंबिसानाहिं बिसरत प्रताप नेकमेरेमन बसीटेढ़ी मूरतिगोपालकी ९९॥

तथा। कानन बीच कुण्डल किरीट शिर दिव्यमोहै

कुन्तल कपोल राते लोचन रसालकी। कण्ठ कल आभा झौरझूलै कण्ठ भूषणसी पीक लीकछाईकैधौं छाईछबिलालकी॥ छबिसों मरोरे पीव मुरलीधर अधरनमें कालिनीसों काछे उर शोभा बनमालकी। कैसेकै प्रताप सुधिवातें बसै एरीमेरे मन बसी टेढ़ी मूरति गोपालकी १००॥

तथा। काहूको करोरिमुखसम्पति समाजबसीकाहूको वसीवेष मोहन कलबालकी। काहूको कपटदम्भ द्रोह अरु कोह बसी काहूको बसी त्रासवासर निशि कालकी॥ काहूको यन्त्र मन्त्रजप तप विशेष बसीकाहूकोबसी भाव भेषों बैतालकी। भनतप्रताप मनकेतिक कितीकवसी मेरेमनवसी टेढ़ी मूरतिगोपालकी १०१॥

स०। भोर भये जल लेनचली वह गोकुलगांवकी गैल में गोरी। औचक भेंटभई नँदराम परीउरमें लखि प्रेमठगोरी॥ आहटपाइके औरनकौन भईमनकीवहि सांकरीखोरी। मोहिगई न चलै न हलै तन मान तजै वृषभानुकिशोरी १०२॥

क०। मोसों क्यों न भाषतिहै आपनो हिवाल आली ऐसी कौनवात जौन तेरो अङ्गछरिगो। जानी हम जानी तेरेतरनितनूजातीरकारो विषवारोनेक नैननिमें परिगो॥ कहैंनन्दरामतैं नजान्यो लरिकाईवशमेरीजानि दूरहीतैतेरोगातधरिगो। कारबिस तिहारे अंगठहरिगयो री बाल कारबिसको रंगतेरेतनुमें छहरिगो १०३॥

स०। जौलौं उतै जुगुनू दरशै तनु तापइतै तबलौं

दरशै लगी । जौलौं समीर उतै सरसै नँदराम उसांस इतै उरशै लगी ॥ जौलौं जवास भरी भरसैं उत तौलौं इतै छतियां भरसैं लगी । जौलौं घनेरी घटा बरसैं उत तौलौं इतै अँखियां बरसैं लगी १०४ ॥

तथा । लखि मोहनै मोहिं मिलापके शोच घनेघने घायन घूटिगई । अब और विचार बिचारत ना मन मैन महन्तसों मूड़िगई ॥ नंदरामजू आपुगई सुखसिंधु हमैं उपचारन छांड़िगई । तुम कौनको आली पुकारतीहो वह सांवरे रंगमें डूबिगई १०५ ॥

क० । अंगना अनंग कैसी आईउठिआंगनमें रैनि को भूलत बिलासहास नाहको । छहरिछहरिउठैं छाती पर छूटे बार टूटो हार हियमैं बढ़ावैचित्त चाहको ॥ कहै नन्दराम बारबामके उनींदे नैन मैनकेसे तीरताकि तोरत सनाहको । बाहन उठाइकै जम्हाति अँगिरातिबाल ठाढ़ी मानो लेति सुखसागर की थाहको १०६ ॥

तथा। प्राणनकेप्राणपति देवताकेप्राणपति चितकी सुरतिकोनटारत पियारीसों । बारनगतीके बरबारनसँवारनको हारनको फूलबीनिलावत कियारीसों ॥ कहै नन्दराम कोटिकामसे कलानिधिसे बैठेपरयंकपरपरम अनारीसों । सोवै सासुरानी और ननद जिठानी तऊ लाज सरसानी सो न बोलत बिहारीसों १०७ ॥

स० । जातीहतीं यमुनाजलको हरिआवै तहां सँग तीने सखानरी । औचक भेंटभई वहिमारग हेरिहमारो हियो हरखानरी ॥ त्यों नँदरामजू नेकचितै चित चूरकै

देगो कपूरचखानरी। मोर पखान धरे मिलिगो भयो तादिनते मनमेरो पखानरी १०८॥

तथा। अलि इन्दु सुधा अरविन्द रमाजल बिन्दु लौवीच विचारियेना। घनश्यामको रूप निहारि अरी घनश्यामकोरूप निहारियेना॥ नंदरायजू अन्तरबीच निरन्तर भूलिहू अन्तरडारियेना। चितचाहत मेरो सदासजनी हरिके मुखसों दृग टारियेना १०९॥

क०। ऊधो जाय कान्हसे हमारीये हमारी सौंहैं कह्यो समुझाय बैन बिदित सुनाह वाह। तात के न मातके न भ्रातके न साथीभये जातिके न पांतिके न कुलके उछाहवाह॥ नन्दलाल गोपिनके न गौवनके न ग्वालनके येतेसब गुणनतजि करत गुनाहवाह। प्यारी को बिसारोजाय देहुँ कहा गारी करीकुबिजा घरवारी मित्र वाह वाह वाह ११०॥

श्रीराधिकाजी महारानी व श्रीरुक्मिणजीकी स्तुति
व छवि व नखशिख आदिके कवित्व व सवैया १०॥

दो० मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय।
जातनकीझाईपरे श्यामहरित द्युतिहोय॥

स०। जाकी प्रभा अवलोकतही तिहुँ लोक कि सुन्दरता गहिवारी। कृष्णकहैं सरसीरुह नयनकानाम महामुद मंगलकारी॥ जातनकी झलकैंझलकैं हरिता द्युति श्यामकी होत निहारी। श्रीवृषभानुकुमारि कृपा करि राधा हरो भवबाधा हमारी १॥

देखातमत्रीरनंबर ८॥

श्री राधिका महारानी का चित्र.



[illegible]

[illegible]

क०। काहूको शरण शम्भु गिरिजा गणेश शेष काहूको शरण है कुबेर ऐसे धोरी को। काहूको शरण मच्छ कच्छ बलिराम राम काहूको शरण गोरी साँवरी सी जोरीको॥ काहूको शरण बौध बामन वराह व्यास येही निरधार सदा रहै मतिमोरी को। आनँदकरनविधि बंदितचरणएक हठीकोशरणवृषभानुकी किशोरीको २॥

तथा। कोऊ धनधाम कोऊ चाहै अभिराम कोऊ साहिबी सुरेशभांति लाख लाहियतुहै। कोऊ गजराज महाराज सुखराज कोऊ तीर्थ व्रत नेम यज्ञ अक्लाहि-यतुहै॥ ऐसीचितचाहेचरचाहै दुनियांकीहठीचाहैहृदय एकतौन ठीक ठाहियतुहै। जन रखवारीकीसु प्रभुप्राण प्यारीकी सुकीरति दुलारी की नज़र चाहियतु है ३॥

तथा। हीनहौंअधीनहौं तिहारो ब्रजसाहिबिनी हिय में मलीन करुणाकी ओर ढरिये। भारी भवसागर में बोरत बरैहूमोहिं कामक्रोध लोभमोह लागेसबअरिये॥ बुरोभलो जैसो तैसो तेरे द्वारपस्यो मैंतो मेरेगुण अव-गुणतैं मनमें न धरिये। कीरति किशोरी वृषभानु की दुहाई तोहिं लक्षलक्ष भांतिसों हठीकीपक्ष करिये ४॥

तथा। जनदुख हरणी धरणीपति ध्यावैं तोहिं तेरी जगकरणी विधिबरणी बड़ेस्यानकी। चिन्ताकैसोघेरा मनढेरा सोभ्रमताफिरै हृदयनाहिंडेरा सुधिखानकीनपान की॥ ध्यावतबनैन मोहिं तेरोहीकहावतहै हठीपै कृपा की कोर राखिदया दानकी। अवगुण भरोरी हौं कहत करजोरे अब मोरीपक्ष करतू किशोरी वृषभानुकी ५॥

तथा। ध्यावतमहेशहू गणेशहू धनेशहू दिनेशहू फणेशत्यों मुनीशमनमानीहै। तीनौंलोक जपतत्रिताप की हरणहार नवो निद्धि सिद्धि मुक्ति भई दरवानीहै॥ कीरति दुलारी सेवैंचरणविहारी धन्य जाकी कित्तनित्त विधिवेदन बखानीहै। साधाकाज पलमें अराधा क्षण आधाहठी बाधा हरिबेको एक राधा महरानी है ६॥

तथा। शम्भु सुरध्यावैं सदाशेष गुणगावैं विधिपारहूनपावैं जे कहैया वेदबाणीके। पर्मपद पायकै चढ़ायवेको लायकहैं जन सुख दायक सहाय दधि दानीके॥ मुक्तिकेमालिक अतालिकहैं सिद्धनकेदीन प्रतिपालिक रखैया क्षितिपानीके। योगयज्ञ जपतप कछुवै न साधे ऐसे पद अवराधे हम राधे महरानी के ७॥

स०। माखनते मखतूलहू ते सुकुमार शिरोमणि कंज कलीके। लालगुलाल प्रबालकेभूषण दूषणहैं घनश्यामछलीके॥ आलीगुलाबकी आबहि वारिये वारिये ये ब्रज कुंजथलीके। भानु प्रतापको निन्दतहै पदबंदतहौं वृषभानु ललीके ८॥

तथा। जाकीकृपा शुक ज्ञानी भये अति दानी औ ध्यानीभये त्रिपुरारी। जाकीकृपाविधिवेदरचै भयेव्यास पुराणनके अधिकारी॥ जाकी कृपाते त्रिलोक धनी सो कहावत श्री ब्रजचन्द विहारी। लोक घटी ते हठीको बचाउ कृपाकरि श्री वृषभानु दुलारी ९॥

क०। मखमल माखन से इन्दुकी मयूषन से नूतन तमालपत्र आभाआभरनहैं। गुलसे गुलाबसे गुलाल

जपा जावकसे पावक प्रबालललाल द्युतिके दरनहैं ॥ उमापति रमापति यमापति आठौयाम ध्यावत रहतचारोंफलके फरनहैं । पंकजबरण रबिछबिके हरण हठीसुखके करण राधे रावरे चरणहैं १० ॥

केशवर्णन ॥

क० । कारे सटकारे केश मृदुता भरीहै बेस मखतूलश्याम कैधौं काहूके अँधेरे हैं । दिवाकरभट्ट यह कहत बिचारिबातकैधौं तमधारआय चन्द्रमाको घेरेहैं ॥ जम्बुफलहारे देखिकालिमा अनूपछबि कैधौं अम्बु यमुनाके शीश पै बसेरे हैं । निबिड़पयोद चहुंकोद ऋतुपावससी छूट कुचश्रृंगार छ्वै छवालौं लटकेरे हैं ११ ॥

तथा । मरकत सूट कैधौं पन्नग के पूत आति राजतअमृत तमराज कैसेतारहैं । मखतूल गुणग्राम शोभितसरस श्याम काम मृगकाननके कुहके कुमारहैं ॥ कोपकी किरणके जलत नलनील तन्तउपमा अनन्तचारु चमर श्रृंगारहैं । कारेसटकारे भीजेशोधे सों सुगन्धबास ऐसेबलभद्र नव बालातेरे बारहैं १२ ॥

तथा । बालाबार छोरके निवारत है बार बार तार तार फैलरहे चौग्रिद मुखिन्दुके । लहरत एंड़िनलौंछहरत चूमैंभूमि भ्भर भ्भर मोतीपरैं पुंजनजालिंदुके ॥ भनै रघुनाथ किधौं जानिकै सुधाके बुन्द जात चले मुदित मनोहर मलिंदुके । मानो चन्द्रमण्डलपै कुण्डमें अमीके हेतु धायगये छौना छायलाखन फणिंदुके १३ ॥

तथा । मरकत सूत किधौं पन्नगके पूत किधौं राज

तअभूततम राजकैसे तारहैं। मखतूल गुणग्रामशोभित सरसश्याम काम मृगकानन कि कुरुके कुमार हैं॥ कोपकीकिरणिकिधौं नीलकंजनालतन उपमा अनन्त चारु चमर शृंगारहैं। कारे सटकारे भीजेशोधेसों सुगन्धबास ऐसे बलभद्र नवबाला तेरे बारहैं १४॥

स०। नीलमणीनके सूतकिधौंकिधौं पन्नगपूत लसैं छविवार हैं। रेशमश्याम समूह किधौं किधौं कामबटै के बरोह अपारहैं॥ राजिवनयन सुनै रघुराज किधौंरस राज नदीके सेवारहैं। कैसटकारे महाछबि वारे प्रकाश पसारे सो रुक्मिणी बारहैं १५॥

क०। श्यामा अहि कोयल की श्यामता लगत कैसेकारे झपकारे प्यारे अरगजे सरसत। दीरघ अमल केशकपोल पै कुचनछवै जंघनते लटकि चरणहू लौंपरसत॥ कज्जलते चटक छटकिरहे शीशपर देखिदेखि मेघनज्यों कजरारी तरसत। चन्दनकी चौकी बैठी बारन सुखावै बाल छोरनते चुवै बुन्द मानो मोती बरषत १६॥

पाटी बेनीजूरा आदि वर्णन॥

क०। बारगुहि रेशमसे दीन्हींलटकाय पीठ ब्याली मानोहेमके शिलापैलटकारीहै। भनतादिवाकर सुगन्ध सरसात तामें मलयाके चाटि कैधौं सौरभबगारी है॥ देखि देखि मोरिनी करति अनुमान मनकैधौं भ्रमरावली कि नागकी कुमारीहै। लखि नँदलाल याते होतहै बिहालप्यारी ब्यालीतेबड़ी विषबेनीमें निहारीहै १७॥

तथा। जूरा शीशऊपर कंगूरा कामबीरकैसो सेंदुर लकीर मानो भानुको प्रकाशहै। भनत दिवाकर नखत लर मोतीमांग गंगा स्वच्छ पानी नाली यमुना निकास है॥ कैधौं स्वरभानु घेरोहै प्रभातकाल तिनके छोड़ायबेको तारा आसपासहै। कीरतिकुमारी कैधौं श्याममन बांधिराखी फंटमारिबैठो मानो नागआमखासहै १८॥

तथा। किधौं शशि मन्दिरपै श्यामघन कलश सोहै किधौं देहदामिनीपै तिमिर समेटोहै। गुणनको गूढ़ो कैधों शोभाकोसमूह छूटो कैधौं मखतूल सम बिराजत बिजैठोहै॥ काजरकी धूम किधौं लसतमशाल रसराज को शृंगार किधौं प्राण पिय पैठोहै। प्यारी शीश जूरी ऐसी शोभादेत रूरोकिधौं मानो हेमगिरिपै बियरऐंठि बैठोहै १९॥

तथा। अतरफुलेलमेल हेमककईसों ओछ पोंछ कै सरघानदई केसर तरौटी है। नाइन सिवारसे सम्हार बार बार बार त्रिलरसुधार गुंध कीन्हीं एक सोटीहै॥ भनै रघुनाथ किधौं आनंद अगोटी रसराजसों रँगोटी रति चोटीकरि खोटीहै। कैधौं व्याल जोटी युतपन्नगी सुमोटीबाल कैधौं तुवभालपै सोहाई लसीचोटीहै२०॥

तथा। कैधौं हेमशैलशृंग ऊपर बिराजोराहु कैधौं रतिनाहिनै निवास लियो भाकोहै। कैधौं बांधि चोटी कियो सहचरिपुष्टरम्भ देखिताहि रम्भाको गुमानकुल थाकोहै॥ भनैरघुनाथ कै नवलीइंदु आननते निकासि कलंकजाय बैठो छबिछाकोहै। जूरोजोखताको परपूरो

हैशृंगारकिधौंकैधौं प्रीतिपूरणयों सम्पुटछपाकोहै २१ ॥

तथा। दरशदरशको परसहोत बलभद्रकीधौं हैसरस शालासानि सुरभानकी। रसराज पक्षीवे युगम पंखवासेसोहै छांहबैठो छपाकर मेचकवितानकी॥ तमकेपरल लिपटाने हेमकूटसों कि सघन कदम्बिनीकरयोटी पंचबानकी। पाटीतेरी तरुणी युगुल ऐसी राजैमानो जमीजग यमुना सिवारतन सानकी २२॥

तथा। जीतिरतिकामहि कराति रसरीतितहां प्रीतमते दुहूंरचि बिपरीति रतिहै। मचीसिसकार रसनाकी झनकार जहां शम्भुमुख चन्द्रमाकी छबि छलकातिहै॥ कटि लफि लफि लचकतकुचभारन सों हारन ते ओरौं उरओप उलहातिहै। पीठपर बेनी मृगनयनी के लुरत मानो नागिनि सुमेरुके शिलापैलहरातिहै २३॥

तथा। बेनीनवबालाकी बनाई गुही बलभद्र कुसुमअरुण पाट मन मोहियतु है। कारी सटकारीनीकै राजत नितम्ब नीचे पन्नग किनारिन की द्युति दोहियतुहै॥ सातुकसिताई असिताई तेजतामसकी राजसरताई मिलिरूप रोहियतुहै। धरतात्रिगन बपु त्रिभुवनजीतिबेको मानोमहामायाई सदेहसोहियतुहै २४।

स०। कैधौंकुहू युग आयमिलीकिधौं भादौं रैनिकेयेयुगभागहैं। कामशृंगार अवासकिधौं किधौं येपिकके पपहवै संगलागहैं॥ जाह्नवी धारके दोऊ दिशै किधौं कालिन्दी धारहवे सोहे आदागहैं। केशव कैधौं बिदर्भसुताके त्रिपाटी लसै युगमैनकी बागहैं २५॥

तथा। कैधौं सुधारस चाखिबेको लपिटी लरितीन भुवंगिनि कारी। कैधौं प्रभाकरभीति शशी निशि को छरिकैनिकटैनिजधारी॥ कामकसा किधौं राजतिहै कल कीधौं शृंगारकी बेलिसुधारी। श्रेणीसही सुखमा की सजी किधौं रुक्मिनी बेनीबनीहै बिहारी २६॥

क०। कंगहीकरत रायबेलाको फुलेल लाय लाल गुणगुही मोतीलर लटकाईहै। कैधौंब्याल विषधरकलि हरें समेटि गढ़ी काम कोतवाल के कोड़ाते सरसाई है॥ आजना बचोगेलाल कोलकीनिरखिबेनीबरबसडसैगी ज कठिन बिषताईहै। मन्त्रऊ न लागै किलकोटि करो शिवनाथ बचौं बनवारी खैंचिमदन दोहाईहै २७॥

तथा। जूरोतिय शीशकै कँगूराकाम मन्दिरको शूरो उरशालतहै परीछांहकरिकै। चीरिमांगमोती भारिबन्द-न लगावैकैधौं पांवड़े बिछावै सुखलोकको डगरिकै॥ सरस सवांरि पाटी पारि पारि कङ्हीलै सौतिन के नैनन करोतीसीप करिकै। सोरहूकलाते परिपूरणहै कलानिधि शीशचढ़ि आई करि प्यारीघटाभरिकै २८॥

अलकवर्णन॥

क०। मेचक अलक लटछूटिकै कपोलआयो करत कलोल गोदपोआ द्विजराजकै। भनत दिवाकर सुटेढ़ी बेढ़ी चाबुकसों सोहतहै झूमि झूमि मार महाराजकै॥ कैधौं अरबिन्द मकरन्द रस लेबे हेत श्रेणीश्रेणी बैठि गयो भौरन समाजकै। राधिकारसीली कैधौं सेली ल-टकाइ शीश फांसिलेत अकुलाई प्यारोब्रजराजकै २९॥

तथा। विरचि अनूप जात रूपसों प्रपूरीप्रभा जर शशिवंश आदि कुण्डली अखण्डहै। तामें मणिभान क्रान्तक्रान्तपंजराखीगुनीजगमगज्योतिरहीताकी अति मण्डहै॥ भनरघुनाथकिधौंचूड़ामणितेरीबाल सौतमन शालनकोदीन्होंकामदण्डहै। कैधौंमेरुशृङ्गपैघनेघनपै जंपज्योति तापै उडकुंडमें विराजो मारतण्डहै ३० ॥

तथा। वदनकलानिधिकोपरमप्रकाशमानतमभाजि हेमशैल शिखर सुडाटीहै। कैधौंसुधापाय राहुबैठ्यो चन्द्र मंडलपै ताकोमांगरेख चक्र विष्णु अलकाटीहै॥ भनरघुनाथकिधौं दोनों ओर काम श्याम बसतहमेश किधौं मोतिनकीटाटीहै। सघनसुपाटी घन कैधौं प्रीति पाटीपढ़ि रसपतनाटी किधौं तेरी बालपाटीहै ३१ ॥

तथा। मोहर ज्योंमुकताकी युगुल विकारीदई लोचन तरंग कैधौं चाबुकमसन्दको। लहकि लहकि टेढ़ी बेढ़ीसी अलकदोऊ बहकिबहकि करैंचरचाअनन्दको॥ लटकि कपोलन कलोलन करत भूमि फैलि फहरानो कैधौं ध्वजा कामफन्दको। विषम कटोहै अलसोहै से कुशलसिंह नागनकेछौनापै बिछौनाकियोचन्दको३२॥

तथा। सांवरेरसिक रसवसाबिपरीतिरची प्यारीकेल-जोहैंनैन मनकोहरतहैं। मन्दमन्दमेखलाकी ध्वनिसुनि दत्तकवि चेटुआ मरालनके मनपकरतहैं॥ झूमतीहैं अलकैंछबीले मुखऊपरयों मानो बाल ब्याल सुधा चन्द तेभरतहैं। टूटटूट श्रमजल बुन्दयों परतमानो कनक लताते मुकताहलझरतहैं ३३॥

मांग सिंदूर सहित वर्णन ॥

क०। पीतम प्रबीनके खिलौनाहैं अनोखे किधौं द्रुतछबि चौखेदिपै हरित दुकूलहैं। कैधौं घनपाटिनके मध्यचंचलामें उड़ निकट अभानभये उदित अतूलहैं॥ भनरघुनाथ दिव्यादिपतति हारोभाल हालताल मोहन को कैधौं प्रीतिमूल हैं। शोभा अनुकूल मंजु सेंदूर समूले किधौं मोतीयुत मांगबाल तेरेशीशफूलहैं ३४॥

तथा। वारों कामकामिनी करोड़कामिनी तनुपै सुरभचँपावनी सुगन्धता चमेली की। सौतिन को गरव गमावनी गुमानभरी शोभानिघटावनी सुजात रूपबेली की॥ भनरघुनाथ दिव्यदामिनीदुरावनी सुचांदनीचरावनी है द्युति अलबेलीकी। निजछबिछावनी छिपावनी छपाकीछबि प्यारेमनभावनी सुदावनी नवेलीकी ३५॥

तथा। तमके विपिनमें सरलपन्थ सातुकको किधौं नीलगिरिपर गंगाजूकी धारहै। किधौं बनवारी बीच राजत रजतरेस कीनो चन्द्रकर अन्धकारको प्रहारहै॥ नापत शृंगारभूमि डोरी हासरसकी कि बलिभद्र कीरति किलीक सुकमारहै। पयकी असार घनसार कि असारमांग अमृतकी आप गाजपाई करतारहै ३६॥

स०। नीलके शैलपै राजिरही किधौं गंगकीधारहै शम्भुकीढारी। सोहतिहै किधौं श्यामनिशा मधिस्वाति की पन्थ महाछबिवारी॥ कामके कानन पन्थकिधौं तनु रावरे चन्दनरेखनिहारी। फूली तमाल पै मल्लिकाकी लतिका किधौं रुक्मिणी मांगमुरारी ३७॥

भाल वर्णन ॥

क०। पापीबिधि यशकीजनमभूमिशेषवहै उपजत जहां सब सुकृतको जालहै। तिलकतरोवरकी छाया सुखतल्प किधौं रसके अगारनको अजिर रसाल है॥ भागकैसोबासन सोहागकैसो आसनहै मोहनीकोसासन कियो तो बसलालहै। कामकी तुरंगनकी धायकी धरनि यह किधौं बलिभद्र गोरीभामिनिकी भालहै ३८॥

स०। सोहत कंचनपत्रकिधौं कलिकीधौं सुअष्टमि चन्द्र विशालहै। कामकलानिके सीखिबेकोकिधौं कामके बामकी पाटीरसालहै। भाषेमुनी रघुराजकिधौं रसराजकी राजै सभा छबिजाल है॥ कीधौं बशीकर मंत्रके यंत्रकी पीठिलसै किधौं रुक्मिणी भालहै ३९॥

भौंह वर्णन॥

क०। कैधौंअली पूछकोपसारिबैठो दर्पणमें कैधौं है कमानकाम गोसाकीनवाईहै। कैधौं द्वै सोनार मार नारिरूपजोखतहै पोखतगिराय पलडएडी थिरकाईहै॥ भनत दिवाकर नचायदृग बोलति जो खोलति कपाट प्रेमनाभीमें समाईहै। बंकअधिकाई कामधनुहु न पाई ऐसी राधिका तिहारी ऐसी भौंहकी निकाई है ४०॥

तथा। कैधौं चन्द्रबिम्बमें प्रकाशी मन्दरेखा बिम्ब कैधौं रूपसिन्धुमें बिकासे नीलअरबिन्दु। कैधौं शील तालद्वै बँधाये मणिनीलमैन कैधौंपंचबानकोकमानेजग डाख्योनिन्दु॥ भनरघुनाथ किधौंशोभासरजानतुन्द नयनकंजमानबसे मुदितमतेमलिन्दु। कैधौं रतिराजकी

पराजैके काज आज धनुयुग साजलै समाज रह्यो राज इन्दु ४१ ॥

तथा। सौरभ सुगन्ध वास चम्पक की नासिकाको कीधौं अली ऊरधते आघ्रनु करतिहै। कीधौं मुखचन्द्र धर्‌यो बाहन कुरंगकन्ध युवामरकतन को मनहिं हरतिहै॥ कीधौं बलिभद्र भालकंचनके भाजनमें दीपकगनैननको काजरू परतिहै। भामिनीकी भौंहकिधौं काम की कटारीयुग जिन्हैंदेखि सौतिनके गरबगरतिहै ४२॥

स०। खेलहिं खेल शशीमें किधौं अतिचंचलशावकद्वै अहिकेरे। कीधौं लसैयुग पांतिमलिन्दकी द्वै अरबिन्दनके अतिनेरे॥ भाषैमुनीरघुराज द्वैरेखबचायदिया किधौं मारिचितेरे। कामकृपानके कामकमानकैरुक्मिणी भौंहपरे दृगहेरे ४३ ॥

क०। कुटिल अनूपसोहै मानीकीसी गतिजामेंभृङ्गनकी श्यामतासरस छबिछाईहै। कामके शरासनतेत्रासन अधिकदेखो आसन मुनिन इन्द्रसासन चलाईहै॥ कासनकहौंरी योगी डासन तजत जगो सासन भरत रोगी भये मुरझाईहै। तानमें तुरंग मनपाई ऐसी बंकताई जैसी शिवनाथप्यारी भौंह बनियाईहै ४४ ॥

श्रवण वर्णन ॥

क०। सीपके समानकान रंचक लखातप्यारी कैधौं जेबघूरी काम धाममें लगायोहै। भनतदिवाकर सुविकस्यो सरोजकैधौं रूपके तलावमें चटकद्वै फुलायोहै॥ तरकी जटितज्योति झलकबसनश्वेत रविकेमयूषमानो

जाह्नवीमें छायोहै। कैधौंहै वजीर ताराचन्द्रके नजीक वैठो कैधौंहैफनूस ढिगगादीके धरायोहै ४५ ॥

तथा। वदन प्रयाग गंगधार वरबन्दीवेस पाठोंकेश यमुन सुभाल सुखदैनीके। शारदा सुछूटीलरी माणिक मणीननकी टूटी शीशफूलतें कपोल पिकवैनीके ॥ मन रघुनाथ कर्णराजतसुदेश युग्म सहितसुगन्ध चन्दनादि मृगनैनीके। कैधौं कंज एकएक दोनों ओर फूलि रहे अलियुत राजैं तट युगुल त्रिवेनी के ४६ ॥

क०। रूपके अनूपमकीराखीहै ध्वजाउतारि सारा कामयंत्रकी कि कंचनकेयोतहैं। पियकेवचन स्वावदन की सीप युग सुनतही मोदमुक्काहल तनोतहैं ॥ लोचन कुरंगन को कीनीहै परिघधार वलिभद्र झापेन झपत लोलहोतहैं। सुसके सुमनहैं श्रवणतेरे सुन्दरी किदरी है सोहागराग सारंग कि सोतहैं ४७ ॥

तथा। करनकरीहै जैसी करनी करनदोऊ चरणविचारि दीन्हों कंचनको दानिये। औरऊ करनएकपिता प्रतिपालकीन्हों वांहकासनीहै हम कथा मृदुवानिये ॥ कामिनीकरनदोऊ करतसो घटिनहीं करन विहारसमै सेजसनमानिये। वेकरनपिताभक्त मनवच कै शिवनाथ येकरनपतिके वचनभक्तिजानिये ४८ ॥

नेत्र वर्णन ॥

क०। हारिण हिरानेकहूं हारनमें हेरि नयन मीनहू समाने जलकंजखंज फीकेहैं। रूपकी वजार मदपीके मतवारे भये कैधौं हुद्दार ह्वै अनंग की अनीके हैं॥

नन्दराम कैधौं ये कटारहैं कटाकरके आंकरके अन्त के विभाग बरछीकेहैं। सानपै धरे हैं खरसानपै उतारे खूब कैधौं पंचबान यह ओपे ओपिनीके हैं४९॥

तथा। अलकअमोलअलबेलीकी अनोखीआंखि अतिअलसातओप अजब अमेजेमें। मन्द मुसिक्यान मांगमोती मोहनीकेनीके मोद मदमाती मनमदन मजेजेमें॥ यौबनजलूस ज्योति जोयकै नरायणजू सकलशृंगार नखशिख ते सहेजेमें। चन्दमुखी चंचल चलांक चंचलासीचारु चसकलगायगई कसककरेजेमें ५०॥

स०। भीषमकर्ण कृपाअभिमन्यु दुर्योधन सोमसों भूरिश्रवाके। अर्जुनभीम युधिष्ठिरधृष्ट बिराटबली सहदेव प्रभाके॥ सो शर व्यर्थ भये इनहूं के कहा कहिये निरदीनदया के। मेरेकटाक्षबचैं न मुनीशहु हैं कबिसो शर की समताके ५१॥

तथा। भूतपरेतको फेरोबचै यहिनैन कोफेरो हियो तोड़िडारे। तीर चलैं तलवारिचलैं अरु शम्भुकोबाण छुटै अतिन्यारे॥ बज्रको फेरोबचैतो बचै अरुप्राण बचैं नरसिंह हुँकारे। कालको फेरो बचै घाड़ि द्वैक बचै नाहिं नयन चपेट के मारे ५२॥

क०। कारेकजरारे रतनारे अरविन्द सम चपल मृगराज अनियारे सुखकारीहैं। भनत दिवाकर कुरंगबान खंजनको गंजनकरति श्याम अंजनकिनारीहैं॥ झूकि झूकि झांकति झरोखा लागि सानभरे लागेबनमाली मानो लोहकी कटारी हैं। मोरिमोरिलेति मुसुकाय दग

घूंघुटमें मारिकै फिरत ज्यों शिकारको शिकारीहैं ५३ ॥

तथा। गंजागिले खंजनकी भौंर भयकंजनकी बारि विधु मंजन औ अंजन समेत हैं। नेह भरे सागर स्नेह भरे दीपकसे मेहभरेबादर सलोने लखिलेत हैं ॥ तरल त्रिवेनीके तरंगन में तारा कवि मानो शालग्राम स्नान के निकेतहैं। मृगमद लागे शाखामृग दृगदागे मैन छाजनमें पागे नैन ऐसे शोभा देतहैं ५४ ॥

तथा। देखे अरुणाई करुणाई लगै कंजनको मृगन गुमानतजि लाजगहिबेपरी। तोषनिधिकहै अलिछौन-नहूदीनताई मीननअधीनह्वैके हारिसहिबेपरी ॥ चरचा चकोरनकी कोरडारे कोरनसों कविनकवीसत गरीबी गहिबेपरी। आई चोर चंचलाई राधिकाके नयनन में खासखंजरीटन खराबी सहिबेपरी ५५ ॥

तथा। सफरीसे कंजसे कुरंग करसायलसे आमकी-सी फांकें सबकहतसुजानहैं। नटुवासे नटसे तुरङ्गमसे खंजनसे बालकहठीले जैसे ऐसेठनेठानहैं ॥ देखौ टेढ़ी कोरैं मानो नखनैया छोरकैहैं बानऐसी अनीपैनी लागे लेन प्रानहैं । ठगबटपारे मतवारे कवि तुच्छमति इत-नेही नयननके कहे उपमानहैं ५६ ॥

तथा। मीनह्वैकमीनेपरे पानीमें निहारे हारि हारिके चकोरताते चुगतअँगारेहैं। भपतिभनत मंजुकंजनके खंजनके गंजनगरब करिडारे के निकारेहैं ॥ डारेरतनारे तारे कारे औ सितारे सेत उपमा सितासित तरं-

गिनमें भारेहैं। प्यारी तेरेमान दृगपानिपर सानधरे कैबरकसीसेवे कमानवारेवारेहैं ५७॥

तथा।आबदार अजब अनोखीअनियारीअलबेली ऐसीआंखैंएनऐननसे रूखीसी। भोजभनै योबनजलूस में नजागैज्योति ज्योतिजोम जुलुम जुलाहलमें पूखी सी॥ ताकिजातीतीक्षण तिरीछीतरुणाईपर तेरीदृगनो-कैं तेज तीरनतेतीखीसी। बैनमाढ़िजातीचारुचोखचढ़ि जातीहियेफोरिबाढ़िजातीचढ़िजाती साफ़सूखीसी ५८

तथा। ऐसे मैनमैनके न देखे ऐनसैनके जगैयादिन रैनिके जितैयासौतिमीनके। कमलकुलीननके मुकुली करनहार काननकी कोरनलों कोरन रंगीनके॥ भनत कबिन्द्र भावतीकेनैन चायकसे देखमैन पायकसेनायक नवीनके। सींचेहैंअमीनके अमीनमनो मीनके बखाने को मृगीनके खगीन पन्नगीनके ५९॥

तथा। मृगकेसेमीनकेसे खंजनप्रवीन केसे अंजन सहित सितअसित जलदसे। चरसेचकोरसे कीचोखे कांडकोरसेकी मदनमरोरसेकी मातराते मदसे॥ नवी कबिनैनासेकी औरनैनबैनासेकी सीपड़ल सोना मध्य राखेमृगमदसे। पयसेपयोधिसे कि और सोंधे सौंध सेकी कारभौंरकेसे अनियारे कोकनदसे ६०॥

तथा। राजतअमीके मदछाकेकालकूटकिधौं चंचल उरंगकी समाये येनकाकेहैं। पीके हियराके मृग मी नन के थाके किधौं सौतिसालहीके सुखमा के ऐन काकेहैं॥ परमकहतदेखि खंजनहूथाके किधौं श्याम

सेतताके लाल आभा साधि काके हैं । छत्र छपाकरके भूपालके छलाके चारु चंचल चलाके नैन बांके राधिकाके हैं ६१ ॥

तथा। खंजननवीनमीन मानके उमाकेदेत नाकेदेत मृगमदकंजके तहांकेहैं। ठौरठौर भँवर भ्रमतजाकेताके संग माखन चकोरकहै चंचल चलांकेहैं ॥ ऐसेनारमाके ना उमाके ना तिलोत्तमाकेप्रबलहरौल पंचबाण प्रीति नाकेहैं। है न मंजुघोखाके बखानैमैनकाके मैन ऐन सुखमाके नैन बांके राधिकाकेहैं ६२ ॥

तथा। एकही भ्रमाके में छमाके मनमोहै दृग ऐसे मारमाके न उमाके ना रमाकेहैं। दशहू दिशाकेमनसा के फल देनहारे करननिशाकेइमि जाकीओर ताकेहैं ॥ जायके जहांके तहां मीन जलढांकेगये हरिनहहाकेऐसे कमल कहांकेहैं । सदनसभाके सुखमाके उपमाकेचारु चंचल चलांके नैन बांके राधिकाकेहैं ६३ ॥

तथा। लालची लजीलेलोलललित रसीलेलखेलोगनिललकि लैलै लूट लंगराकेहैं। छिनमें छलीनचित्त छैलनको छोभैं छरैं छोरैं छरकीले सो छबीले छबिछाके हैं ॥ मनसा कहतडेरा डोड़ीके न डाड़ेडांका डारतडगर डगडारत मेंडाकेहैं। ऐसे और काके मैनकाके अबला के मैन बाननते बांकेनैन बांके राधिकाकेहैं ६४ ॥

तथा। पतिव्रतताके मंजुमन्दिरमजाके किधौं लखि मृगथाके चारु सरसुखमाकेहैं । कैधौंछमछाकेहैं अमन्द मौन भाकेहैं न ऐसेरमा रम्भाके उमाके औरकाकेहैं ॥

भनै रघुनाथधामकैधौं शीलताके प्रेम सागरके मीन नैन बांके राधिकाकेहैं। पिय मुददाके बसीकर बसुधा के कीधौं सुधासिन्धु मण्डलमें कुण्डल द्वैसुधाकेहैं ६५॥

तथा। खंजन चकोर मीन मृग शिशु सारमयौं बारिये कपोतहू अनूप कहि गोरीके। तीखेतीर खंजर कटारीतेग नेजनतें बांकाबिछुवातेहैं बँकैतबरजोरीके॥ भनै रघुनाथ हैं लजीले ललचौहैं लालपंकजगुलाबरंगराति मद मोरीके। ललित विशालयों रसाल कजरारे लोल मृदुरतनारे नैन नवलाकिशोरीके ६६॥

तथा। कैधौं चन्द्र मण्डलमें कुण्डद्वैअमीके भरेदेख कै फनिन्द जोटछांट तहँ गोसोहै। कैधौं दृग बानन मैं लागी नटसालकीधौं तूहीब्रजबाल नन्दलालका ठगो सोहै॥ भनै रघुनाथकीधौं तेरे यह तीखे तेग तापै धरी बाढ़ देख मैनहू ठगोसोहै। मन्त्रसों जगोसो तन्त्रमोहनी पगोसो कीधौं नैन कजरारिनतें काजर लगो सो है ६७॥

तथा। परम प्रवीन मीन केतकि ये मीनकीधौं सुख के सरोजहै कलाये भ्रयभानके। शरदकेखंजनामिले हैं मुख चन्द्रसोंकी जोरहै कुरंगरथ बाहनसमानके॥ मुनिनके मन उपजावतअनेकभाव मेरेजानयेईहैं विशिख पंचबानके। बालतेरे नैन की विशालसाल सौतिन के बलिभद्रसाने हैं सोहाग सरसानके ६८॥

स०। कै सुखमाके समुद्रके सोहि रहेयुगमीनअनेक कलाकरि। कीछबिकीरचि पिंजरी काम दियो तेहि में

युग खंजनकोधरि ॥ भाषै मुनी रघुराज किधौं विधुबाल कुरंग द्वै लीन्हों मुदैभरि । आपके पन्थमें लागे सुप्रेम में पागे किधौं रुकुमिनि दृगै हरि ६६ ॥

क० । कैधौं खंजरीटन की चपलताईहै छीनी कैधौं चंचरीकनकी कजरारी छाइये । कैधौंप्रातकंजनकी स्वच्छता निवास कीन्हों लाजको समेटि विधि लोचन बनाइये॥ चतुर चखांके बांकेसैनईउझकिझांकेपैनईसरस कैधौं मैनसरपाइये । हँसि हँसिहेरिहेरि फेरि फेरि शिवनाथ हरिसों हरिननैन नेक न दुराइये ७० ॥

सैनवर्णन ॥

तथा । चंचल विशालमीन खंजन मृगातेवेषताकन तिरीछीभई जबदृगजूटीकी । मृदुमुसुक्यायरूप झलक दिखाय फेरि मोरि मुखदीन्हों जोर डोर प्रीति टूटीकी ॥ भनै रघुनाथ भरी आनँद अटूटी लखिछूटी मान बान कान्ह सहितरत बूटीकी । लूटी सौत सानआन मेंड़सब फूटीदेखि नेजा मैन बूटीसैन नवलवधूटीकी ७१ ॥

तथा । नेकही निहारेनैन नायकासुकीयानारिमुनिन के मन मनसिजसौंतनौतहैं । बिनही कटाक्षकाटै लाज हीके कवचन काजर नयेते कोटि कामके उदोतहैं ॥ जो है निर्विकार तौ विकारकरै औरनको छांड़ै किक्योंकुलनसुभावजैसे जाके गोतहैं । बांकी चितवनमें करैगी कहाबलिभद्रसूधी चितवनमें असाधुसाधुहोतहैं ७२ ॥

तथा । कीधौं छतिमण्डलकुवेनी देखि तारागण होत मीनके तनके मीनसरकसहैं । मित्रनसों कहै सुख

हीकीबात बलिभद्र पूछतकीमन्त्र मुनिनसों बरकसहै ॥ लक्षी तर वरनिको छूटै धृतचतुरनि विशिख बिसारेपाथेकामकरकसहै । उज्ज्वल सरलचक्र चहतहैरैनिदिन अक्षके अपांगनके आछे तरकसहै ७३ ॥

स० । केशवबाकी चितौनकी कौन कलाकहौं जाति कही कछुनाहीं । यद्यपि सूधी सुधारस पागी बिकारबिबरजित सोहे सदाहीं ॥ तद्यपि जायपरै जहँ औचक नैकौ स्वभाव हते ज्यहि घाहीं । चेतनहोत जडैजड़चेतनकेतनको निरख्यो दृगमाहीं ७४ ॥

तथा । बाजकीबैठक लै उचकी पुनि बेधि कदी पर घूंघुट भीनो । उड़िजायकुही जिमि दूरि दुरी बहुरोगति आनि करीलकी लीनो ॥ तानतकाननलों चष लोलसों साननमें भरवारनकीनो । शालत देवअदेवनहू बरु पारथको पुरुषारथछीनो ७५ ॥

बरुणीबर्णन ॥

क० । शूर सुरमाकेसैन कामजंगजीतेहेतु साजेदृग अखकोर कानन सँवारेहैं । भनतादिवाकर सुधाकरनलेश जामें चकित सुरेशछोड़ि आसन सिधारेहैं ॥ बैठिके नजीकचारु चमरडुलावैं फेरि हेरिजोडि़दारनके करत इशारे हैं । उपमा विलोकतहू लोकमें न आवै प्यारी बरुणीबिलास जैसी राधिकातिहारीहैं ७६ ॥

तथा । तेरेयुगमनयननकी बरुणीयों बनी घनी मनो हैमनीनकी कनीकनकेलुंजहैं । शीलकेदुकूपचक्षुपल मुखबन्धनपै कंचन कँगूरये मनोजरचेमुंजहैं ॥ भनै रघु-

नाथकीधौं शोभाहै सरोवर पै सुवर बँधानन पै बरद्रुम कुंजहैं। पूतरीमनोहरन पातुरके चैल छोर कैधौं नयन सुभट सुधारे सपुंज हैं ७७॥

तथा। सुन्दरिकेसुन्दर पुरन्दर प्रियातेअति नाहिंनै सुसुन्दर यों यक्ष सुरनारी के। कामकीतराजूके अमोले पलाकंचनके कैधौं क्षेमधामछत्रपूतरी सुखारीके॥ भनै रघुनाथहै मनोहरपियाकिसदा कैधौं युगसम्पुटहैं रतन अपारीके। परखत मैनत्री लगावैना पलकनैन ऐसेहैं सुखैन नैन पलकपियारीके ७८॥

तथा। पातुरपुतरी पहिरे पवित्रपीत बास कीधौं येस कलसुख वासनाकेधानहैं। पियरूपपीबेको अधरआछे बलिभद्र सौतिनको एकोपल कलननिदानहैं॥ पिंजर कीखंजरीटकनके संपुटहैं जिनमें बसत प्यारे प्रीतमके प्रानहैं। कामतुलापलाहै पलकतेरी भामिनी कि त्रियाके कपाट कीधौं तारे न त्रान हैं ७९॥

तथा। कामकेकेदारनकी आयसकी कीन्हीबारीश्याम-लसघन कमलाकरके कूलहैं। लोचनअनन्त द्वैकीरस नासहसचारि काजरकीकोरैयुग रसराज कूल हैं॥ पल कअनङ्गकरतललनके पल्लवहैंकीधौं चितचोरहै हज़ार भुजमूल हैं। तरुणी की बरुणी बिराजैं ऐसी बलिभद्र मोहनी पटनवाटे छोरमखतूलहैं ८०॥

तथा। पयभरे भाजनन पैयतमधुपमध्य कीधौंक्षीर निधि मध्य दीपयुगकारे हैं। बसनबिसदबीच शोधेहीं केनिन्दुकीधौं देखिबेको मैनमुख दर्पणसँवारे हैं॥ छाती

धरे क्षिति जीतिबेकेकाज बलिभद्रतमकी रसकै तरुणि तेरेतारेहैं। कमलदलनपर मणिमयदेव कीधौं पीयमन द्विजपूजिबेको पायँ धारेहैं ८१॥

कोयावर्णन॥

क०। पाटलनयनको कनद कैसे दलदोऊबलिभद्र बासर उनींदीदेखिबालमें। शोभाकेसमुद्रनमें बढ़बकी आभाकीधौं देवध्वनि भारती मिली है पुण्यकालमें॥ कामके बरतु कैधौं नासिका उड़तबैठो खेलत शिकार तरुणीकेरूपतालमें। लोचनासितासितमेंलोहितलकीरें मानों बिधे युगमीन लालरेशमके जालमें ८२॥

भंजनवर्णन॥

क०। कंचनके कन्दपरिखंजनतलपकीधौंबांधे युग मीन नागफांससों मदन हैं। कामकेकसारनकी कूलन की कूपिका कि अहिखातिलकके शृंगार के सदनहैं॥ बिशिख पुलिन्दमैन भाजेहैं प्रदीपनसों बलिभद्रमुनिन के मनके कदनहैं। काजरकी रेखैं अवरेखी युगलोचन-न कीने चितचोरनके मेचकबदनहैं ८३॥

स०।अंजनकोरदृगंचलराजतकैमुनिनेश्वर आनिचुभी वेकैदुमुहीयहनागिनकीशिवनाथभनै रसनातिलसीवे। चन्दहिचाहिचढ़ीफहराय कपोलनकूलअमीरस पीवे। देखतहीबिषछायगयोउरकाटतही कहोकैसकैजीवै८४॥

तथा। खायहलाहल औरनमारतआली अचम्भव बात सरीहै। नेकदया जियमें धरियेयहतेरेई ऊपरपाप परीहै॥ काहेकोअंजनदेई सँवारत ऐसे हिये उरशाल

करीहै। को जगनाहिंभयो अभिमानअरी इननयनन वाढ़िधरीहै ८५॥

कपोलवर्णन॥

क०। मदनमहीपके मुकुरद्वैसोहात गोल माखन के गोल कैधौं हाथे चिकनाईहै। भनतदिवाकरकीरूप के समुद्रमांझ रतनसे रूरे युग सफरी तराईहै॥ कैधौं स्वर्णशीलचारु चांदीकीकलाईदैके सुखमा बिरंचिरचि हाथ से बनाईहै। कैधौं आसमानते मयङ्कद्वै देहहोय राधिका तिहारेये कपोल ठहराईहै ८६॥

तथा। सुरभसुवर्णजासु पुहुप गुलाब कंज आदर समाजेमनोमदनघनेरेहैं। डोलत सुलोलगोल लोलक अमोल झलकमानोप्रभा तालनीलकमलबसेरेहैं॥ भनै रघुनाथ दीप्त रासहैं प्रकाशपुंज आसन्न मनोजके सदा सो मेरेहरे हैं। पियमनलोलमोल लैनकेलिवासकीधौं गोलगोल अमल कपोलतिय तेरे हैं ८७॥

स०। चन्द्रमुखी चपलासीलली लखि लालमनोज कीमौजन बाढ़े। द्वैरस हासके कूपकिधौं पति प्रेमके पूरनकोयहखाढ़े॥ योंरघुनाथ बिलोकेलसै मुसक्यातही देतीसुधा जनुकाढ़े। मोहतीं मोहन के मनको मन मोहनी कीये कपोलकी गाढ़े ८८॥

क०। सुखमा भरतभरे परमाके सांचेढरे सुधासों सुधारिधरे दरपन सुदेशहै। आभाकी निकाईहै किदर किधौं कांतिनके तीनों पुररूप पुरजनकेनरेशहै॥ लप टन लोचन चितक देखि वलिभद्र झलकत चौधैकिल

कनिके सुदेशहैं। गोरगंडमंडल अखंड ज्योतिवन्ततेरे छबिके छपाकरकै द्युतिके दिनेशहैं ८९ ॥

स०। शोभाकीसांचमें मैनकीढारी लसैयुगआरसी आनँदखानकी। रावरेडीठिकेबैठिबेकी किधौं फाविरही फरसे फटिकानकी॥ भाषैमुनीरघुराज किधौंसरसीयुग सोहिरही सुखमानकी। रुकमिनिके किधौंगोलकपोल पराजैकरै उभय चन्द्र प्रभानकी ९० ॥

क०। मुकुरसे मंजुल झलकिरहे माणिकज्यों हँसत परतगाड़ अमल अमोलये। कमलकीकोमलाईलागत नाा नेकजामें रसभरे चीकने लटेतबने गोलये॥ गदगदे गोरेगोरेकठिनई थोरे थोरे अरुणाई बोरेचोरे चितहिं बिलोलये। अधरनकेप्यारे कैधौं मानहू कतारे शिवनाथ छबिवारे चन्द्र निरखि कपोलये ९१ ॥

कपोल गड़हावर्णन॥

क०। भामरि परत जल जोवनके जोरकीधौं जामें छवि बूड़त सकल प्रमदानकी। निकासि सकैन कस करिहारीबलिभद्र नैनना गनायबेकीबोड़ीबिधवानकी॥ उदित नवीन होत रितत भरतमानौ रूपकी निवारि कीधौंबुंडी सुखदानकी। पियमनपारद अटकिबेकीगाड़कीधौं गाड़गंडमण्डल मृदुल मुसकानकी ९२॥

तिलवर्णन॥

स०। राधेकी ठोढ़ीकोबिन्दु दिनेश किधौं बिसराम गोबिन्दके जीको। चारु चुभ्योकनको मणिनील कैधौं तमाबजन्योरजनीको॥ कैधौंअनंगशृंगारकेरंगलस्ये

वरवीचवस्यो करपीको । फूलेसरोजमें भौंरीवसी किधौं फूलशमीमें लग्या अरसीको ९३ ॥

क० । अमल कपोलपै अमोलगोल श्यामरंगआयके अनग कैधौं पूतरीसमाईहै । भनतादिवाकरनिशाकर कलङ्ककैधौं चन्द्रमाके धोखे मुखमण्डलमें आईहै॥ कैधौं कमलासन सँवारि छवि आननके नजरि नलागे याते कालिमा लगाईहै । कैधौं कीलनीलमणि राधिका तिहारेतिल कैधौंकैसवील जादूलालकोलोभाईहै ९४॥

तथा । कैधौं रूपराशिमें शृँगाररस अंकुरित कंकुरित कैधौं तम तड़ित जुन्हाईमें । कहैंपदमाकर किधौं योंकामकारी गरनुकतादियोहै हेमफ़रदसोहाईमें॥ कैधौं अरविन्दमें मलिन्दसुत सोयोआनि कैधौं तिलसोहत कपोलकी लुनाईमें । कैधौंपस्योइन्दुमें कलिन्दी जल विन्दु कैधौं गरक़ गोविन्दभयो गोरीकीगोराईमें ९५॥

तथा। फटिक शिलामें नीलमणि इकमुद्रितहै कैधौं खेतराजित सनेहबीज वोयोहै । कैधौंरसहास्यमेंशृँगारने अगार कियो कैतूंयशजाल डाल अयशहिगोयोहै॥ भनै रघुनाथ कीधौं यह तिलतेरो गोल गोलहीकपोल पै अमोल पीतमोयोहै । कैधौं क्षीरसिन्धुमें गोविंदयह राज्योकीधौं मन्द आनचन्दमें अनन्दमनसोयोहै९६॥

तथा । गाड़परयो कैधौंयह मदनमतंगमात्यो कैधौं चंचरीक अरविंद रसपाग्योहै । कैधौंश्यामघटाकोकन्हका टूटिगड़ि गयो रस वरसावन सरस अनुराग्यो है ॥ करत विहार बैठि बालकेवदनपर कुशलसिंह देखोयह

रूपमद दाग्योहै। नैनठगहाँसीफाँसी डारिमारिरसिक मनताहीते चिबुकगाड़ कालिमासों लाग्योहै ६७ ॥

श्रवण वर्णन ॥

स०। प्रेमकथा रसपीवनको युगकंचन प्यालकिधौं भलभावैं। आयकै बैन अन्हायबेको किधौं बावली ह्वै अतिमोद बढ़ावैं ॥ भाषमुनी रघुराजकिधौं सुखमाके समुद्रकी सीप सोहावैं। रावरे के गुणके किधौं भौनसो रुक्मिणी श्रवण किधौं छविछावैं ६८ ॥

क०। कंचनकेपत्र कैधौं मुक्ताजड़ाय दीनो प्यारीके बदन मैन मदसों उयो परै। बारिज दलन ओस कनसे विराजमानशिवनाथमंजुलकपोलनछुयोपरै॥ बीचबीच शीतलाके दागनमें ढुरिरह्यो जुरिकै उमड़ि आनिकचन दुवो परै। राहुके रदनके छदनबीच चंदनते छलकि छलकि अमी बुंदनचुवो परै ६९ ॥

नासिकासह भूषणवर्णन ॥

क०। कीरकैसे ठौर पेख परम प्रकाश मान सुरभि समीरके झकोर झहरातहैं। भनतदिवाकरबुल्लाश्वेत मोतीसंग कैधौं पंचबाणके निशान फहरातहैं॥ कैधौं बेधवायो बेध रूपआति बेधहेतु कैधौंटूटे चंचरीकतुण्ड दरशात हैं। बेसरिके बेसताबखाने कबिकौन राधे नाकके निहारे प्यारे श्यामतरसात हैं १०० ॥

तथा। कुन्दनलै विरंचिने नकासी मनो ताके बीच दीन्ह्यों जड़ कुलिश दुतिन्द्रका। ताके आसपास सजे शशिमणि चन्द्रकांतताराгणवृन्दमें विराज्यो नखति-

न्द्रका ॥ भनरघुनाथ रमा रतिलखिमोहैजाहि लजतन नाहिंदेखि भामिनी सुरिन्द्रका । छविन घनिन्द्रका न मोल सम जाके यह कृष्णचन्द्र मोहन किशोरी शिर चन्द्रका १०१ ॥

तथा । सुरपति तीकी द्युतिफीकी होत जाहि देखि रहत रतीकना गरूरतारतीकीहै । तीनलोककीकी कहौं जीकीहोययातेअतिनाहिंमें निकाईद्रौपदीकी नाकनीकी है ॥ भनरघुनाथ चारुअमल सुढारबेस अति सुखदान कान्हप्राणपतिहीकीहै । बर शुकनासाते बुलाक नथ-चासामंजुपरम प्रकाश पुंजनासा लाड़िलीकीहै १०२ ॥

तथा । शोभाकी सकेलिऊंची बेलि बांधी बलिभद्र राखो सम लोचन कुरंगनको रोसहै । दीपतिको दीप कुकी मुखदीपको सुमेरु मृदुमुख सारसको सिकाकुंद जोसहै ॥ कलपतरोवरीकीकली किधौं गंधकली उपमा अनूपमको विविध निसोसहै । तिलको प्रसूनहै कि नासिका तरुणितेरी सुरनकी शरण किसोरभकोकोस है १०३ ॥

स० । तीनहूंलोककी दीपतिसंचि रच्यो करसोंतिल फूलधौं मारहै । कैयुग अम्बुजकेमधि सोहिरही भल चम्पकलीसुकुमारहै ॥ मारके कीरकीतुण्ड किधौं किधौं कामकोतून रच्यो करतारहै । भाषैमुनी रघुराजकिधौं रुकमीनकी नासा बिराजै अपारहै १०४ ॥

तथा । नासिका चारु बिलोकतही बनजातसमोहन कीरछपाने । बेसरिको मुक्ता छवि देत मनो कमलागृह

तोरणलाने॥ श्वासनते उसकै पुटबाल कहैकवि कोमल होत पखाने। लैसिसकी मुसुकाचत भायन घ्राणसुगन्धनकी पहिचाने १०५॥

नथबेधवर्णन॥

क०। कैधौं प्रेमरंगको तड़ागहैतरंगभरो कैधौंसुधा सिन्धुप्रीतिमन्दिरघनीकोहै।क्षेमकोछलासोमैनफन्दकी कलासों किधौं रतिकमलाकीमति करनसों फीको है॥ भनरघुनाथ भान सौतिनको मथन निषंग पंचबाणनकी तीषन अनीको है। बेधतीय हीको भौन रसनूप जीको जुलम करतसुतीको नीको बेधनथुनीकोहै १०६॥

तथा। शोभा सुरसदनको बातयन बलिभद्र किधौं महामोहनी पिपीलिकाकोगेहहै। पैनोपंचबाणको छबीलो छिद्रछाजतहै देखिबेको देहमें अदेहजूको देहहै॥ पीयमन रोकिबेको निगड़ किलीको रंध्र सुख मधुकरको सोसिरजासों नेहहै। मैनकेमवासेमें धनुद्धरको मोरचाहै किधौं बामनासिकामें बेसरिको बेहहै १०७॥

स०। सालतहै नटसालहियो सरसालबिनिन्दततीक्षणताई। देखतही मनभूलिरह्यो कहियेकिमि नासिक बेधसुहाई॥ योंशिवनाथ बिराजतगाजत लाजतमोतिन बेधनिकाई। जानिबड़ोब्रितकामनाओर मनोकमलाग्रह सन्धिचलाई १०८॥

अधरवर्णन॥

क०। लालेमुकुथले सुघुलेफल कुंदुरूसे तामेरंग पानछबि दुगुनीबढ़ायोहै। भनतादिवाकरयों सुमननवीन

कैसो कोमल रसालदल देखिकैलजायोहै ॥ बिद्रुमबेरंग होत हारत उदोतपेखि कुसुमके रंगने निरेखिललचा योहै। प्यारीमुख चन्द ते पियूषरस च्वइ च्वइ अधर अमल मानो ऊपरमें छायोहै १०६ ॥

तथा। गुलगुले कन्दके सुमन्दकर दाखन को देखहु दुचन्दकलाकन्दकीकमाईसी। कहैपदमाकरत्यों साहिबीसुधाकीसबैब्रजबसुधामेंधौंकहांधौंपरीपाईसी॥खरक खरीको मधुहूंकी माधुरीकोशुभ सरदासिरीको मिसिरी को लूटि लाइसी। सांवरी सलोनीके सलोने अधरानमें सुमन्दमुसुकानिभरी मंजुलमिठाईसी ११० ॥

तथा। डाभकेसे चीरेओंठ अलप सुरेखअतिसुन्दर सुरङ्ग इन्दुनारि कैसो तनुहै। मधुर मधुर रस नारङ्गी कली की काक धरीहै सुधारि शुद्ध सुधाको सदनुहै ॥ सुघरसुपंकुबिम्बु लीनेशुकचन्दगोद लखियतमहामोहनीकोयहैधनुहै। बन्धुजीव बिद्रुम अनार कलिकाके दलतेरे अधरनकी अरुणताको अनुहै १११ ॥

स०। दाडि़मफूलके द्वैदलकी किधौं कंचन वेलि में विम्बु सोहावै। कैमधुसागर के द्वै प्रवाल सिंदूर द्वै लीकधौं इन्दुमेंभावै ॥ कीअरविन्दमें इन्द्रबधू अटि द्वैरघुराज प्रमोद बढ़ावै। रावरेके अनुरागके ऐनधौं रुक्मिणी ओंठ किधौं छवि छावै ११२ ॥

क०। अरुणासेअमल कमलकीसीकोमलाई अधरन देखिबिम्बा करतप्रलाप ये।जाके रूपआगे रूप बिद्रुम बेरंगहोत शोचिशोचि मोचिदग भरतअलापये॥खीनेहैं

नथूले भूले देखिकै कुशलसिंह देवतानहूंके मन सुखद कलापये। अमीरसमाते ताते चढ्योहैउन्मादउर द्वैजके युगुलचन्द करत मिलापये ११३॥

तथा। लालरंगराचेहैंप्रवालते अनोखेअति बिम्बाफल हालते विशाल द्युतिवारेहैं। उज्ज्वल अनूप अमीकूपके किनारेकिधौं ऐसे शची रम्भारती कौनके निहारे हैं॥ भनरघुनाथ वा बिधाता चतुराई धन्य जानैसब शोभाको समेटके सँवारेहैं। निजपियाप्यारे को मनोहर नवारे बने मधुर अपारेप्रिया अधर तिहारे हैं ११४॥

अधरगड़हावर्णन॥

क०। कीधौं द्विजराज मुखतर्पणको भाजनहै कीधौं प्राणतर्पक चोरापिया दानको। तपसास्वरूपताकोतपसाकोतपकुंड शोभाको सलिल कुंड सुरनकेन्हानको॥ राजरूप कन्दरा कि सुंदरि शरण ताकि बलिभद्र थिर ह्वै बसोहै अरिथान को। तेरेतिय ऊरध अधर कीपनारीमधि कीधौंपियलोचनापियालोमधुपानको ११५॥

स०। कैधौं गुलाबकी पाखुरीहै यहछांड़ि प्रसूनहि आनिबसीहै। कैयहमोहनीकी मरयादहै काहूकेप्राणन पैठिनशीहै॥ गाढ़परो तियके अधरांपर कै शिवनाथ बुलाक धसीहै। केहरिके उरकोतजिकै भृगुकोपदचिह्न सों आनिधरीहै ११६॥

दशनवर्णन॥

क०। कैधौंकली बेलाकीचमेलीकी चमकचारु कैधौं कीरकमलमें दाड़िम दुरायोहै। कैधौं द्युतिमङ्गलकी

मण्डल मयंकमध्य कैधौं बीजुरीको बीज सुधामय सिरायोहै ॥ कैधौं मुक्ताहल महावरमें रोषराखे कैधौं मन मुकुरमें सीकर सोहायोहै । रूपकवि राधिकाबदन में रदनछवि सोरहौंकलाको काटि बत्तिसबनायोहै ११७॥

तथा। कैधौं दानेदाड़िमके पांति पांति राजत हैं कैधौं इन्द्रवधूकी जमाति जमिबैठीहै॥ भनत दिवाकर सुस्वच्छता कहांलौं कहौं श्वेत अनुमान मुखतारागण पैठीहै॥ कैधौं विधिहीरा खरसानपैखरादिसुभ्र साधि साधि सुत्रनते गोलकील ऐंठीहै। राधिका तिहारे दंत दामिनि विलोकि व्योम समता न पावैयाते दूरि दूरि सैठी है ११८॥

तथा। कैधौं पद्मरागनकी पंगति विशाल कैधौं हीरन के जालके प्रवाल अलबेलीके। कुंदकलिकाहैं पुंजकुसुमजपाहैंकैधौं दाड़िमके बीजकैधौंपुहुपचमेलीके॥ भनरघुनाथ सुभ्रस्वच्छ शुचि शोभावानतापैलसेपान लाल रंगरस रेलीके। मोहतिहैं कंतयों दुरन्ति द्युति सौतिनके आति द्युतिवंत दंतनिरखिनबेलीके ११९॥

तथा। कैधौं कलीबेलाकी चमेलीकी चमकचौका कैधौं अनबेध मुक्ताहलवसाये हैं। हीरनकीखानि यहै जानिये कुशलसिंह कैधौंमाणिमरकतके सीकर सोहाये हैं॥ हंसनकेछौना येपढ़नआयेबाणीपास कैधौंयशबीज प्यारीमुखहीजमायेहैं। दामिनीचमककैधौं धसीहैदशन आनि सोरहौंकलानिकाटि बत्तिसौंबनाये हैं १२०॥

तथा॥ कैधौंकुन्दकलिकाकीअवलीअनूपकीधौंवाणी

कोबिपंचिका सुधारिधरी सारिहै। शशीके सदन शशि शिशु आये तीयकाज कीधौं मुखवारिजमें वारिजकी वारिहै॥ झलकत रुचिर बतीसी ब्रजबालिभद्र चमकत चारु बिज्जुरीकी अनुहारिहै। अमतके कनतपोधनको विमलमन तेरे ये रदन चंद्रबदन मैंझारिहै १२१॥

स०। कामके बाणनकी कलकांति भरी किधौंकुन्द कलीदरशाही।कैसुखमाकेसुसीपकेयेसुकुमारकुमारलसैं सँगमाही॥ कैमनहारीअनन्दके खानकी हीरनकी युग घ्यौलिलखाही। भाषैमुनीरघुराज किधौं रदरुक्मिणीके हदशोभासोहाही १२२॥

तथा। दाड़िमकेदाने आनिभुलाने मुखही लुभाने छबिछलकी। कैधौंमुक्ताहलखायहलाहल भयेकोलाहल लखि भलकी॥ भौंरनके छौना करतबिछौना करत न गौना पलदलकी। शिवनाथनरीचीरतानिकरीची चन्द मरीचीबलवलकी १२३॥

मुखवर्णन

क०। आनन अनूपछबि छलकी छटासीहोतज्योति जोन्हनिदै निशिकरचन्दनीकोहै। देखत चकोर से न मुरतसुनेश मन ममतामदादि तमकरै खण्डनीकोहै॥ ब्यास सनकादि वेदविदित विरंचिहरि शम्भुसे विवेकी जासुकरैंबन्दनीकोहै। कामताप्रसाद कलासोरहौं अ-खण्डमुख चन्दहूते नीको वृषभाननन्दनीकोहै १२४॥

स०। कैसुखमाकेसरोवरको बिकसो अरबिन्दअनू-पम भावै। रावरे आननदेखिबेको किधौं आरसीआनँद

की छबिछावै ॥ केशवकी तुव नयनचकोरको रूपसुधा-
निधिइन्दुसोहावै। भाषैमुनीरघुराजकिधौं मुखरुक्मिणी
को सुखसिन्धुबढ़ावै १२५ ॥

रसनावर्णन ॥

स०। मणिपारसज्यो हरसम्पुटमें मणिभवन दिवा
जनु साजतुहै। तिहिकी समता न चढ़ैचितपै जिहि दे-
खिरमारतिलाजतुहै ॥ रघुनाथ भनै पिय प्राण पिया
द्युति दामिनिसी छबिछाजतुहै। मृदुबैनपियूषश्रवैजिहि
ते रसना मुखचन्द्रबिराजतुहै १२६ ॥

क०। कमल बदनमध्यकमलाके काजरचि राखी
है कमलदल तलपसुधाहीहै। कीधौं सरतंतनकी लपि
यह बलिभद्र कीधौं सरस्वादनकी परखनहारी है ॥
ललित तमोलरंग गुणकी कसौटी कीधौं मंत्रनकीमूरि
परमारथकी प्यारीहै। रसिकरसीली प्यारी तेरी मृदु
रसनाकी पन्द्रहौं रसनकी रसानन्दकारीहै १२७ ॥

तथा। शारदाकी सेज कैधौं सुखकीसहेलीसो है रस
कीसीरानी कैधौं कवित विधानीहै। कोमल अमल अमी
अंशही चुरायकैधौं कमलाकलासी चारुचन्द्राहिछिपानी
है ॥ हरिसोंकहतबैन हासरसरीतिप्रीति नीति निपुणाई
कैधौं निगमनिधानी है। कुशलसिंहकैधौं अरबिन्दमे
निवासकीन्हों विधिकी वरङ्गनासरस वरदानीहै १२८।

मुखवासवर्णन ॥

स०। सुगन्ध प्रवाह वहै अवला मुखज्यों मलया
गिरिगन्धप्रकासी। चम्पचमेलीगुलावजुहीजही कुंकुम

केसरिपाई सुबासी ॥ चन्दनश्रौघन सारहि पैठिकियो इन बैठि बड़ोतप कासी। भूतलते भरिमैन बिलोकिहि मुक्तभये लहि नाकके बासी १२६ ॥

क०। पूरिपरिमलमलपाचल उरोजनको निजनीर-हारीहै कमल गुप्तपानिको । धूपते अनूपश्रावै बोलते बदनवाकबलिभद्रदस्पतिमधुपसुखदानिको॥ धुनिधुनि तपतेहैं गन्धकी नासिकाको अधिक अमोद इन्दकन्द कलिकानिको। शोधेभीजे भारती गुलाबसों प्रसेदकन तेरी देहदीपति सुगन्धकी खानिको १३० ॥

तथा। सोनेमें सुरङ्गसब वैसई लसतअङ्गजगमग जीवन जवाहिरसो सङ्गतास। रूपतरुकण्ठकामकन्दुक से सोहैंकुचचन्द्रमासे आनन अमन्दद्युति मन्दहास॥ शोभाकी निकाई देव कामकीनिकाईहूते नीकेभयेभूषण भ्रमरभ्रमैं आसपास। चौगुनीचटकतन चीरकीचटक-हूते सौगुनी सुगन्धतेहै मुखकी सहजबास १३१ ॥

मुसक्यानवर्णन ॥

स०। बोलत बात प्रसून भरेछहरै छबि होठनकी सुखशाला। भट्ट दिवाकर प्रेमकपाटन ठाटन लोहकी खोलतिताला॥ राजतहै गजरागरमें घरके चमकै जनु दीपकेमाला। खग्गके धारनते द्विगुणी मुसुकानि लगे नवला तेरी श्राला १३२ ॥

तथा। नयननकीगति कोरनलौं अरु कोरनकीगति कानलौं जानो। काननकीगति जीभलौंहै गतिजीभकी कण्ठतरेलौं बखानो॥ कण्ठतरेतेगिरागतिहै यशवन्त

सदारसनालौं मानो। हैरसनागति होठनलौं गतिहो-
ठनकी मुसुक्यानलौं मानो १३३॥

तथा। गहिहाथसोंहाथ सहेलीकेसाथमें आवतही
वृषभानलली। मतिरामसकाति न आवतितीर निवा-
रति भौंरनकीअवली॥ लखिके मनमोहनसोंसकुची
कियोचाहत आपनीओट अली। चितचोरिलिया दृग
जोरि तिया मुखमोरिकछू मुसक्याय चली १३४॥

क०। पूरत पियूषयों प्रकाशत प्रकाश पुंज पूरण
करण कान प्राणपति साधाकी। सुखद सदाही मील
सिंधुकी कल्लोलकीधौं हरण हमेश कृष्णचन्द्ररतबाधा
की॥ भनैरघुनाथ कौनकौन उपमादैकहौं कौनसमता
हैरूप सरतिअगाधाकी। चौगुनीसुचन्द्र चन्द्रिकातेसौ-
गुनीहेयह हांसीचंचलतातेहैहज़ारगुनीराधाकी१३५॥

तथा। कैधौं द्विजराजनकी तपस्या को तेज येहै कै-
धौं रसन अग्रकीरतिको वासुहै। बलिभद्रताकी छबिरं-
ग शुभ्रदेखियत कीधौं सरआपगाको आननमैंबासुहै॥
सुरनकी ज्योति सुरगनकी मरिचकाकी बिचकासुबीच
चतुराईको प्रकासुहै। पियपाय पारनको कीधौं निज
चन्द्रहासु सुखके सुमनकै कृशोदरीकोहासुहै १३६॥

तथा। क्षीराधिकी छीरकैधौं नीरसरआपकोहैकैधौं
हीर हारनकी हाटहीसम्हारीहै। हंसनकी पांति कैधौं
गुनकीहै भांतिभली कीरतिको सातिकैधौं शारदकीसा-
रीहै॥ अम्बुजकहतवसुधामें कैसुधाकीधार कैधौंहासरस
की हर्यौलमीरभारीहै। चन्द्रउजियारीकी बिहारी की

बसीकरन सीकरनवारो कैधौं हँसनि तिहारीहै १३७॥

स०। शारदाकी कीधौं पारदसीदिपै दामिनीदीपति मोदकरीहै। कैधौं सबै नषतानिकी ज्योति अकोति विरंचिबटोरधरीहै॥ भाषै मुनी रघुराजकीनेक सो दाड़िम मंजु मरीचि भरीहै। कैरुकमीनिकीहासछटा सुखमाकी किधौं महताब बरीहै १३८॥

तथा। अधरानहिंमें मुसकीवहबाल बिलोकत प्रातको वारिजलाजै। दन्तनकी झलकीछबिनेकसो दाड़िमदामिनिकोमद भाजै॥ माधुरता बरसै शिवनाथ सुधाधरसी परसी छबिछाजै। आनँदकन्द सपूरणचन्द मनोसुखरूपी विनोदन साजै १३९॥

क०। हँसिहँसि ब्यालख्याल करतसखीनहूं सोभरिभरि परत कैधौं मालती के फूलरी। कंठलकलकी तीनों ग्रामसे फिरतुजात शब्दभनकार सोतो सुरअनुकूलरी॥ चौका की चमक देखि तड़ित लजाय जाय घननदुरायरही उठी उरशूलरी। फूलभरी छुटत कैधौं छुटत चित शिवनाथ कुटतशीश सौतेजानिसुख निरमूलरी १४०॥

तथा। लुरिलुरि ढुरि ढुरि झुकिझुकि रीझिरीझि आधेआधेबरन कहतकिलकारीसों। सुनत सोहातनेको समुझि परतकैसो चुभकि चिबुकगाढ़परतहहारीसों॥ खैंचिखैंचि पीतपट लचिलचि गातउर अम्बुकउमगि मुसक्यानिअरुणारीसों। ढीलीढीलीभौंहन रसीलीछबि शिवनाथदैदै करतारी प्यारी हँसै गिरिधारीसों १४१॥

वाणीवर्णन

क० । केकी पिक कोकिला अवाजनपै गाजपरी केलिया लजाय छोड़ि सौरभ पराई है । भनत दिवाकर तिलोत्तमा न ढूंढ़ैकोऊ रूरे राग सुने सबसुरी शरमाई है ॥ कैधौं आयशारदा निवासकियो रसनामें बातनके व्याज बोलि भरतमिठाई है । राधिका की बानी कैधौं सानीहै पियूषरसदेतवरदानी ऐसीवेदमुनिगाईहै १४२॥

तथा । अमित लजीली शील सुमति सजीली सुच सुरसशृङ्गारमै रँगीली सुखदानीपै । बदन सुधाधर तैंकढ़तसुधासनी सहित सुवास रूपरासब्रजरानी पै ॥ भनैरघुनाथ शुद्ध सारथ सदैव सुनै रंभारति सकत न बातकर स्यानीपै । वारौं बरबानी बीन कोकिल कहानी कहा नागरी नवेली की सनेहमृदुबानी पै १४३ ॥

स० । धुनि कैधौं विराजि रही मनमोहनि मैन के बीनकी बेसवनी । विधिरावरेके बशकीबेलिये विरच्यो वसी मंत्र किधौं अवनी ॥ रघुराजकहै किधौं रागमयी प्रकटी सुर साजहुकी सजनी । मृदुरुकमिनि के मुखचन्द्रते कैधौं कढ़ै बरबानी सुधासो सनी १४४ ॥

चिबुकवर्णन

क० । मदनकेकूप कैधौं रूपके तलाव मंजु सलिल प्रसेद तील नीरज फुलायोहै । भनत दिवाकर गुलाब फूलि फूलिफूलि तूलौनहिं तूलमूल साखतेसुखायो है ॥ कैधौंबैन तौलतौल बोलकेबिरंचिमुख लालमणि छांटि केसुपलरा लगायोहै ॥ चिबुकतिहारेराधे श्याममनपरे

आई ऊबिऊबि डूबत बिकूवत थकायो है १४५ ॥

तथा। प्रीतम की प्रकट प्रतीति प्रीति भरीभरी दिपतअपूरीप्रभा सुरसअतोड़ीहै। गाड़हैगुनीलीकिली रसप्रतकीलीमनौकैधौंकलीकुंजकीमलिंदनीबिथोड़ीहै॥ भनैरघुनाथ भूप रसबशबासीभयो कैधौंश्यामबन्दिया रीतिकीमतिमोड़ीहै। करतनहोड़ीभई सवति निगोड़ी मनोबाल तुवठोढ़ीकी नजोड़ जगठोड़ीहै १४६ ॥

तथा। कनक बरण कोकनदके बरण अरु भूलत भाई यामें बसन रदनकी। कीनी चतुरानन चतुररचि पचिकरि आपुऐसीचौकीचारुआसनमदनकी॥ अंगुल सो वाको उपमानको अवधिसबसुमिलि सोपानमानो प्रीयके सदनकी। सुन्दर सुठाहै चिबुक नवनायिकाकी कीधौं बलिभद्र बादशाहीहै मदनकी १४७ ॥

स०। मैनके मंजुल ऐनके बागकी आबभरी धौं गुलाबकलीहै। मीतहिजानि मनोजाकिधौं रचिदीनी सो चन्दहि चौकीभलीहै॥भाषमुनीरघुराज किधौं अनुरागकी आमटिकोरी ढलीहै। रावरे प्रेमकी नारंगी धौं लसै रुक्मिणि ठोढ़ी प्रभानवली है १४८ ॥

क०। चिबुक प्रकाश कैधौं इंदिराको मन्दिर है कैधौं मैनसर जल भौंर छबिछाइहै। कैधौं ठोढ़ी काटि कै बनायो बिधि रतिमुख ताही ते पड्योहै गाड़ लगत सोहाईहै॥ कैधौंहरिकंठमणिताकोप्रतिबिम्बजानिकैधौं भवकूप नरलोगन बनाई है। राजसुखयज्ञताको कुंडहै यहै शिवनाथ शंकासमिधपाइ आहुति बनाईहै १४९॥

चिबुक तिल वर्णन ॥

क०। चन्द के चरण परि उबरो तनक तम किधौं तम गुणहीको पदु अतिखीनोहै। लगिरहो लोभ मकरन्द काज बलिभद्र सारसमधुपकोकि मनुहरिलीनोहै॥ मानो कलधौतपीठि बैठो रसनायकहै पियलोचननको परम सुखदीनोहै। काम रँगरेज़ बांधौंचूनरीको चिह्न एककीधौं तिय चतुर चिबुक चिह्न कीनोहै १५० ॥

मुखमण्डलवर्णन ॥

क०। कैधौं अरबिन्दप्रात वापीमें प्रकाशभयोकैधौं सोनजूही पै गुलाब फूल फूलोहै। भनतदिवाकर न ताब महताबआब देखत शिताब आफताबओपभूलो है ॥ सारीसेत घूंघुटते सुखमादेखात कैसे मानो जल जाह्नवीमें कंज झूलझूलोहै। शरद मयंक राधेताराके समूहसाथ तापै तेरेमुख के न जोटसम तूलोहै १५१॥

तथा। पायज़ेब जेहर जराऊ जरी जोरी हठीमणि मुक्तान हीराहार उरधारे हैं। सल्लानसमुद्र कढ़ी रमा रमणीय ऐसी अंगनसुगन्ध पाय झूमें भौंर भारेहैं॥ बैठीहै तख़्त खोल बख़्तपियारे जूको मानो काम बाम पै सुहाग चमरढारे हैं। दैकै मृगबिन्दुकीन्ही जोन्ह ज्योतिमन्दराधेतेरेमुखचन्दपैअनेकचन्दवारे हैं१५२॥

तथा। मोतिनकी वेंदी वर कनक जरावजरी पाटी बिच मांग मेरे मनको मह्यो करै। भारे कजरारे अनियारे वे तिहारेनैन रैनिदिन मेरे हियरेईको गह्यो करै॥

मीठे वै सु अधर कपोल मुसक्यानि लीन्हे मन्द मन्द मोहिं कछु बातसी कह्यो करै। जितै जितै लखौं तितै तितै सुनु चन्दमुखी आनन तिहारो आंख आगेई रह्यो करै १५३॥

तथा। राजत रँगीली रँगभौन रसमाती तहां भांकत झरोखनते ज्योतिनकोवृन्दहै। ज्वालामुखी मन्दिर प्रसिद्धसो दिखातवहां कैधौं स्वर्ण शैलकी गुहामें प्रभा कन्दहै॥ भनैरघुनाथ लोगलखत बिचारैमनो तारागण चन्दहै कि भानहै कि छन्दहै। चन्दतेहै दूनोंदीप्तिकन्द सदापूनोसम होतहैनऊनोमुखबालाबाल चन्दहै १५४॥

तथा। छहरै छबीलीछटा छूटि क्षिति मण्डलपै उमँगि उजेरी महा ओजके उबकसी। कविपजनेशकंज मंजुलमुखीके गात उपमाधिकात कलकुन्दनतबकसी॥ फैली दीप दीप दीप दीपतिदिपति ताकी दीपमालिका की रही दीपक दबकसी। परत न ताब लखि मुख महताब आब निकसो सिताबआफ़ताबकेभभकसी १५५॥

तथा। कोमलता कुंजते गुलाबते सुगन्धलैकै चन्द्र सों प्रकाशलैकै उदित उजेरोहै। रूप रति आननसों चातुरीसुजाननसों नीरनीरवाननसों कौतुकनिबेरोहै॥ ठाकुर बिचारिकै बनायोबिधिकारीगर रचना निहारि कान्ह होत चित चेरो है। सोनेसौंसुरंगलै सवादलैसुधा को बसुधाकोसुख लूटिकै बनायो मुख तेरो है १५६॥

तथा। आनँदको कन्द वृषभानुजाको मुखचन्द लीलाहीते मोहनके मानसको चोरै है। दूजो तैसोरचि-

वेको चाहत विरंचिनित शशिको बनावे अजौं मनको न मोरे है॥ फेरतहै सान आसमानपै चढ़ाय फिर पानी पै चढ़ायबेको वारिधिमें बोरैहै। राधिका के आनन को जोड़नविलोकैविधिटूकटूकतोरैपुनिटूकटूकजोरैहै १५७

तथा। कोऊकहै हैकलङ्क कोऊकहै सिंधु पङ्क कोऊ कहैछायाहै तमोगुणके भासकी। कोऊकहै मृगकदकोऊ कहैराहुरद कोऊकहै नीलगिरि शोभा आसपासकी। भंजनजू मेरेजान चन्द्रमाको छीलविधि राधेकोबनाय मुख शोभाके विलासकी। तादिनते छाती छेद भयोहै क्षपाकरके वारपारदेखतहै नीलमाअकासकी १५८॥

तथा। खरीखण्ड तीसरे रँगीलीरंग रावटीमें तकि ताकीओरछकि रह्योनँदनन्दहै। कालीदासबीचिनदरी-चिनछै झलकतछविकीमरीचिनकी झलकअमन्दहै॥ लोगदेखि भरमैंकहाधौं यहघरमैंसुरंगमग्यो जगमग्यो ज्योतिनको कन्दहै। लालनकी मालहै कि ज्वालन की जालहै कि चामीकर चपलाकि रविहैकि चन्दहै १५९॥

तथा। सुन्दरवदनराधे शोभाको सदन तेरो बदन बनायो चार वदन बनायकै। ताकी रुचिलेनको उदित भयो रैनिपति राख्यो मतिमूढ़ निजकरवगरायकै॥ कहै कविचिन्तामणि ताहि निशि चोरजानि दियोहै सजाय पाक शासन रिसायकै। याते निशि फेर अमरावती के आसपास मुखमें कलंकामिसकारिख लगायकै १६०॥

तथा। कैधौं सप्तऋषिनके मखनकी सिद्धिपुंज कै सुहंस चखनके मणिनकी ज्योत है। चपल चमककी

चहूंघाचकचौंधे कौंधे नेकहँसे दाड़िमदशनद्युतिहोतहै। जगर मगर जागेसगर बगर चारु चाहि चाहि चकित चकोरनको गोतहै। द्विगुणोदिनेशते चतुर्गुणो चन्दहूते हनुमान प्यारी तेरो आनन उदोतहै १६१॥

तथा। भृकुटीतनीको लट नागिन फनीको देवप्यारे लखि नीकोलगे फैल्यो कंज फीकोहै। मैनकमनीकोनैन बाणकी अनीको चोखे चैन रजनी को हौस हुलसनि नीकोहै॥ रूप रस नीको कहा रमारमनीको गजगति गमनीको सीवजीवमुरनीकोहै। बेनीबन्दनीकोरुखहास मन्दनीकोमुखचन्दहूतेनीकोवृषभाननन्दनीकोहै १६२

तथा। पानप पदुमकी बदन झलकतद्युति रूपकी तरङ्ग तामेंप्राणतानियतुहै। योबनकी ज्योति जगमगत प्रभासी मानो अजिर उदोत ताको उर आनियतु है॥ मुकुरते अमल बनायेहैं बिधाताबिधु बलिभद्र यहै उपमासुमानियतुहै। मेरीजानझाईं झलकत तेरे आननकीताहीको उजेरो जगज्योति जानियतुहै १६३॥

तथा। कैधौंशिवनाथ उदयाचलउदितभयो सोरहौं कलाते परिपूरणमयंकरी। लोचनचकोरये चलनलागे चारोंदिशि भरिभरि पियूष रसपीवत निशंकरी॥ सोते ये कमलनयनीसकुचिनमितमुख गईमुर्झाय फीकीपरी छबिपंकरी। राधेको बदन येरी सदनसुधाकोअति लग्योहै डिठौना सोई कठिन कलंकरी १६४॥

शीतलाङ्गवर्णन॥

क०। कैधौंस्वेद अहर बिचारिके बनायो बिधिकाम

की कटोरी कैधौं धोय धोय राखी है। भनत दिवाकर नखतव्योमउड़िकैधौं आननपैबैठिकैसुधाकेस्वाद चाखी है॥ कैधौंश्यामसुन्दर डिठौनागड़ेगाड़भये जूहीकेप्रसून छविदेखिदेखिमाखीहै।शीतलाकेदागराधेमुखमें लखात कैसो सांवरो प्रसंग के प्रस्वेद साथसाखीहै १६५॥

तथा। झिलमिले कपोलन पै कुण्डल सुडोलन पै कोकिलासुबोलनपै वारिवारिकीजिये। लालमुखपानन पै चन्द्रमा सो आनन कमल पत्र कानन पै प्रेम रस पीजिये॥ कोरदार नैनन पै चित्त चोर सैनन पै माधुरी सुबैननपै अमी रसपीजिये। भागवरेभागनपैड़्कैअनुरागनपै शीतलाके दागनपै लागन मनदीजिये १६६॥

तथा। चन्दकीमरीचीकानतोरिविथरायदीन्हों कैधौं हीराफोरिकै कनूका धरिधरिगये। कैधौं काम मन्दिर की झंझरी बनाईं विधि कैधौं सोनजुहीके पुहुप झरि झरिगये॥कामिनी मनोरथसुआलबालशिवनाथमैनक मतङ्गमाते बेलिचरिचरिगये।अमलकपोलनपैदागनहीं शीतलाके डीठि गड़िगड़िगई गाड़परिपरिगये १६७॥

ग्रीवावर्णन॥

स०। शंख जड़े मणिमाणिकसों शुभ गोत कपोत चिलातहै सीवा। भट्ट दिवाकर रेख निरेखकै मोहे सुरासुर मानुष जीवा॥ मालहुमेल जगामगते उपमानहिं तालत लाखव दीवा। स्वच्छ मनोहर चम्पकली अवलीनके संगमें शोभति ग्रीवा १६८॥

क०। सबसर तीन ग्राम रागनकोधामधन्यमूर्च्छना

सुतानै श्रुतिग्रहमति पैनीको। कैधौं चन्द्रमण्डलको परम अधार शुद्ध उज्ज्वलअनूप स्वच्छ दच्छपिकबैनी को॥ भनै रघुनाथ शीलशोभाको निवास यही प्रीतम की प्रीतिकी प्रतीतकरदैनीको। कम्बुते सुढाररम्भचार हैकिपोतहुँते रम्भारातिकण्ठते सुकंठमृगनैनीको १६९॥

स०। कोकिल कंठकी त्योंहीं कपोतकी कीरहुकी कलकांति नकासी। कारीगरीकरि कामहुँजोरचैकम्बु सुधानिधिको छबिरासी॥ भाषैमुनी रघुराजतऊ सति मानिये तीनहू लोक बिलासी। पावै न गो समता रुक्मीणिके ग्रीवकी सो सुठि मोद प्रकासी १७०॥

तथा। लचकैजिमि चारुकबूतरकंठहि रेखबिराजत कम्बुकलासी॥ देखि कपोलनफांसिदई उरजानि यहै छबि भानुमलासी। हंसनके चितचोपभईबिचरैंकरि आठहु याम तलासी। योंशिवनाथबनीनवला कमला गृह कंचनकीलवलासी १७१॥

भुजवर्णन॥

स०। जोशन बाजूबिजायठभूषित दामिनीसीदमकै अतिगोरे। भट्टदिवाकर बांह डुलाय दिखायकै लाल लियोचितचोरे॥ अमृतकी लहरीसीलगे जबलेतछि-पायकरेजनतोरे। नाकमें पेखीनऐसीसुरी रति रम्भा परीको दिमाकबिलोरे १७२॥

क०। सोनाकी कलीपैकैधौंभवँरा लपटि गयो कैधौं कालेरङ्गनके लायलाय चूरीहै। भनत दिवाकर कमल से अमलअति देखिद्युति विधुने बिहाय समैमूरीहै॥

दीपकीसी खासी चपलासी चन्द्रिकासी खासी युगुल हथेरी रंगमेहँदीकी दूरीहै। बिद्रुमकी बेलीसी नबेलीके सुअंगुरीपै नखतकेपांतिसों नखनमानोपूरीहै १७३॥

तथा। कैधौंअर्थधर्म काममोक्षफलदातावृक्ष स्वक्ष दक्षदान भृत्य पक्षको अथोरीके। रम्भाते सुढारु चारु उज्ज्वल मृणालहुंते पंकज गुलाब रंगरतिमदमोरीके॥ भनै रघुनाथ ऋद्धिसिद्धि के निवासकिधौं परमप्रकास वानपियचित्त चोरीके। सुकृतजरूरेपाति पदरत रूरे यहदीपतिप्रपूरे करकीरति किशोरीके १७४॥

तथा। तनतरवरकी उभयशाखाबालिभद्र सुन्दरसुडोल अतिगोलसमतूलहैं। सांचेभरिढारी विधि दामिनी के दोऊटूकदमकति द्युतिनाहीं दुरतिदुकूलहैं॥ सुखके सरोवरके पोषेहैं मृणाल कीधौं फूलेकर अग्रकोकनद केसेफूलहैं। कोमकन्द मैरेभाय कुन्दन कनकदंड कीधौं गोरीभामिनीके गोरेभुजमूलहैं १७५॥

स०। कैधौंसुधाके सरोवरके ढिग सोहैं मृणाल उभै अतिभाये। कैधौं मयंक पियूषके पानको पन्नग पीतद्वै ऊरधधाये॥ भाषैमुनी रघुराजकिधौं युगहेमके दण्ड अखण्ड सोहाये। कैधौंलसै सुखमाकीलताकिधौं रुक्मिणीके भुजद्वैछबिछाये १७६॥

क०। हलत चलत कैधौंक्षीरनिधिकीलहरि भाई सोभुजन नन्दलालन लोभायगो। गोरेसेअमलयेकमल कीसी कोमलाई हेरिहेरिसौतिनको मुखकुम्हिलाय गो॥ ऐरापति करकीसी तरासरी शोभियतचोभियत

चित्तमाहँ ऐसीछबि छायगो। कण्ठकेबसैया कैधौंआनँ-
ददिवैयाशिवनाथबरसैयारसलोचनअघायगो १७७॥

करतलवर्णन ॥

क०। कैधौंप्रीतिपीतमकीसनदलिखीहै विधिलेखनी
बिचित्र चित्तहरनमुनीनके। अमल सुधासोंभरे ताल
युगसोहैं बाल बिचरन काज किधौं प्यारे मनमीनके॥
भनैरघुनाथ किधौं सुरतरु तेरोतन शाखाभुजपत्रयही
नायकप्रवीनके। दरपण दिव्ययों सुधानिधिसीसभापुं-
ज प्रफुलितकंज किधौंतारे करपीनके १७८॥

तथा। सुन्दरि छबीली प्यारीतेरे करतलयेतो लिखे
हैं बिचित्र विधिलेखनी सुरेखसों। कंचनसेदरशतमा-
खनसे परसत भरेहैं सोहागसब भागहीकी रेखसों॥
कमलकलसि प्रेमनेमनीके बंधपाय रूपके अभासित
मिलेहैं मानोबेखसों। बांचतरहत नितनाहके नयनबुध
बलिभद्र लगत न नयन निमेखसों १७९॥

अँगुलीवर्णन ॥

क०। कैधौं कल्पतरवर शाखाय सोहावनीहैं मन
ललचावनी सदाही निजबरकी। जगमगहोतिज्योति
नखनखतावलकी पदिक प्रकाशके मरीचीहिमकरकी॥
भनैरघुनाथ किधौंकुसुमकली हैं भलीपुरदफलीहैंकैपत्ती
के मनहरकी। कैधौंयह अँगुली तिहारे करपंकजकी
कैधौं अनीकामके प्रसूनपंचशरकी १८०॥

तथा। फूलेमधुमालतीके पुहुपपुनर भवमानोबलि-
भद्रपंचशाखा देवतरकी। केसरिकलीसी कलिधौतकी

कलीसी कीधौं कली भलीभांति कंजलताकामसरकी॥ कोमलअमलअग्रदशचक्रचिह्नराजैं जीतीशोभा दिशा दशहूकी सुरनरकी। तेरेतन वसत तनकतन धरितन्त किधौं करपल्लव किशोरीतेरेकरकी १८१॥

स०। कैकिशलैमें लगीफली मूंगकी कोमल मंजु महामुद दानी। पंचदली किधौं फूले सुकंज सुगन्ध सने सुखमानकेखानी॥ पञ्चशरै शरपंचकिधौंजड्यो कंचन पीठपै शोभाअमानी। कै रुक्मीणिके पानिलसै रघुराज सुकीर्त्ति कवीन बखानी १८२॥

नखवर्णन॥

क०। कैधौं पद्मरागनमें मीनाबर हीराजड़े कैधौं कंजपातनमें बुन्दये सुधाकेहैं। कैधौंअमीकुण्डनमें तारा-गणकेलिकरैं देखैं मुखचन्दमहामोद छविछाकेहैं॥ भनै रघुनाथ किधौंहास्य रसहीके भौन कैधौंयश रत्न किधौं महलप्रभाकेहैं। कैधौंदिव्यदीपतिकेधामहैंअनूपकिधौं दशनखनीके अँगुलीमें राधिकाकेहैं १८३॥

तथा। मानो अधगुंजकासे चंचुकचकोरचषचाबुक चमकचोज विद्रुमतमालके। चेटकके चिह्नकैधौं नाटकके सुत्रकैधौं हाटककेहुन्नदेशदाक्षिणके चालके॥ जटित जरायमधि नायक अमोलमोल गोल गोल मोतीमानो मणिहेम पालके। अँगुरी अनीकीनीकी कनककनीसी कैधौंकामिनीके नखकेनगीना कामलालके १८४॥

तथा। कंचनके पल्लवमें क्षोभके वठीकमानो लि-ख्योहैउचाटमन्त्रविधिमोहसोंभयो। सुधाकोश्रवतमणि

माणिक लसतसोहैं आंगुरी किरणि ज्यों प्रभाकरउदय भयो ॥ मेहँदीरचितनख कैधौंमैनपंचबान खरसानधरे सोनोपानी तिनको दयो। आंचरके ओटतेअचानकही डीठिपस्यो तेरोहाथ देखे मनमेरो हाथतेगयो १८५॥

कुच वर्णन ॥

क०। मदन महीप कुच गुम्मज उठायउर भृकुटी कमानबङ्क मारत निशानाहै। भनत दिवाकर सुरेशनर नागलोक धीरताबिहाय सब अंगथहरानाहै॥ करत विचारलोग अबनाबचैंगेजानआंखिनकेसानमानोबीर रससानाहै। योबन उरोजबर सुन्दर उतंगबाम अजब अनोखोबाण काको ना समानाहै १८६॥

तथा। कैधौं जगजीति मार दुन्दुभी उलटि दीन्हे कैधौंपीन श्रीफल छिपाय उर राखेहैं। भनत दिवाकर गयन्दमणिहारगंग चक्रवाकतीरमें सिकोरबैठिपांखेहैं॥ कैधौं हेमकलश पियूष रसभरि भरि काले रँग मुख पे सुधाधरंग दाखे हैं। तुंगकुचरुद्रसे कररगोरे गोलगोरी पूजनकरमें मनकाको ना भिलाखेहैं १८७॥

स०। हूजे न आतुरहूअबहीं वहजानै कहां रतिकी परपाटी। खेलत साथ सहेलिनके फिरै आंगनमों नहिं अवघटघाटी॥ बूझिपरैकबिराज अबूअब मैन महीप कीलागीहै सांटी। योबनजामतयों उकसैं छतियांक्षिति ज्यों गुण आंकुर माटी १८८॥

क०। सुन्दर सजीले परलम्ब सहजीले राधे परम लजीले शुभकाजन कजीले हैं। बेलिन बसीले अलि

बेलिन हँसीले आदि रसमें रसीले रूप यशमें यशीले हैं। नेह रसशीले परनेह परशीलेअनु नयन वहकीले चटकीले मटकीलेहैं॥ तेरेकुचनीले छूटि छबीसे छबीलेमानो पन्नग रँगीले मैनमंजु बतकीले हैं १८९॥

तथा। गौन को नवेली तू भवनते न बाहरहो कुच तेरेकंचनमनोज द्युतिहरिहैं। फूलऐसीमाल औदुकूल ऐसी चपलासीललितन देखे चिलकनसी नजरिहैं॥ कहैद्विजनन्द प्यारी पूतरी छपायचलो अबतोये नयन तेरेरीपषानफरिहैं। ऐसी कसबाती तूतोनेक ना डराती काहूछाती न दिखाउ कोऊ छाती मारि मरिहैं १९०॥

स०। घूंघुटके पटढालबने बरछी की अनी झुलनी झलकावै। नागगली दोउयोबन जोरसो नयन महावतहूलतआवै॥ ध्यानाडिगैं मुनि ज्ञानिनकेजबकामिनि नयन कबाण चलावै। घायलसेघुमरैं कितने विधना यहि नैनके बाणबचावै १९१॥

तथा। योबन ज्योति जगामग होति शृंगार प्रभा सरसावतहै। रीझिरहैं लखि लालके लोचन मोदहिये भर आवतहै॥ सोहत टीको जरायजस्यो तिय भाल महा छविछावतहै। मानहुंचन्द्रके मण्डलमें दिननायक शोभा बढ़ावतहै १९२॥

क०। अचल चकोरकी कलीहै कोक नदकीसी दाड़िम जँभीरी किधौं फटिकै के पौआहैं। श्रीफल सोहायेकिधौं कोकनिके शावकहैं शृङ्गगिरि शङ्करकी कंचनके लौआहैं॥ कंजकी कलीहैं कैसिंधौरा रूपराशिभरेयोवन

के मग किधौं पकेसे बटौआहैं। अतिही कठिनहैंबखाने नाहिं जात क्योंहूं प्यारी के पयोधर कि काम के बटौआ हैं १६३॥

तथा। उठहैं उठानकरि उरज उचौंहैं दोऊ सुथरे गोलारे गेंदवारे गातगोरेमें। कैधौं हेम गुम्मज बनेहैं भांति आछिनके आछेफलश्रीफल कमलमुखमोरेमें॥ उपजो अचम्भो येपरीहै पहिचान धोके चकित विराहिम कहत सबओरेमें। मेरेभुज भेंटिबेको भागकहा देखियत जाके महादेवजू बिराजमानकोरेमें १६४॥

तथा। इन्दिराके मन्दिर अमन्दद्युति कन्दुक से बन्धुर बिमोदभरे युगधौं विरदके। तारापति ललित लताके स्वच्छगुच्छ कैधौं श्रीफल सुफलभयेआनिअनहदके॥ कैधौं चक्रवाक युग बैठे ऊंचीभूमिपर तुम्बके परनतीर बासी नाभिनदके। सुभग सरोजसे उरोजतेरे ओजभरे कैधौं मीर फरसमनोज मसनदके १६५॥

तथा। श्रीफलशरीफा किधौंदाडिम नरंगीरूपकैधौं स्वर्ण सम्पुट विशाल छबि वारीके। कैधौं यह गिन्दुक गुलाबअनफूले कंज गुंजत मलिन्द मनौ आसरसभारीके॥ भनैरघुनाथ हेमकलशरतीकृतकै पतिनटनागर के बाटाखिलवारीके। रसपतिबासकै निवासद्युति शोभा धाम आसनहै कामकै उरोज प्राणप्यारीके १६६॥

तथा। अमलकठोरे गोरेचीकने उतंगभोरे वरबस मरोरे मननेक ना डरोलये। शीशपै भिलमडारि बदत न काहूसूं घालय सालकरै घावकठिन करोलये॥ ऐंडि

के अड़त आनिखेत रस जूमहू में टरतन टारेभारेरति के हरोलये। अड़ाअड़ीपरेतेअँचलपै चलायदल कवि शिवनाथ छीनि मैनके सरोलये १९७॥

तथा। कैसे रतिरानीके सिधारे कवि श्रीपतिजू जैसे कलधौतकै सरोरुह सँवारेहैं। कैसे कलधौतके सरोरुह सँवारे कहि जैसे रूपनटके बटासे छबिढारे हैं॥ कैसे रूपनटके बटासे छबिढारे कहि जैसे काम भूपतिके उलटे नगारेहैं। कैसे काम भूपतिके उलटे नगारे कहि जैसे प्राणप्यारी ऊंचे उरज तिहारे हैं १९८॥

तथा। कंजकी कलीसे उपमानहूंभलीके सोहैं सुख-माथलीके लखिसोति मतिछरकी। कोकयुग नीकेपीके हीके मोहिवेको करीहेमकुम्भगाम करतूति निजकरकी॥ गिरिधर कहैंकुचनीके कामिनीकेइमि तापैमुक्तानिमाल छाजे छबिघरकी। मानो शम्भुशीशते भगीरथके साथ काज निकसी अपार युगधार सुरसरकी १९९॥

तथा। आजुअलबेली अलबेले संग रंग धाम रति विपरीतपूरीप्रीतिसो करतिहै। उझकि २ झुकि २ ल-चकीलोलंकअतिही अशंकअंकप्यारेकोभरतिहै॥ गिरि-धरदास उभयउरज उतंग सोहैं उपमा कहत बनि लाजहीधरतिहै। मानोद्वैतुम्बराखिछाती के तरे तरुनि सूरत समुद्र वेप्रयासहि तरतिहै २००॥

स०। कोई कहैकुच कंचनकुंभ सुधारससेभर राखे हैं ओऊ। श्रीफल शम्भुसुमेरु समान मनोजके गेंदकहैं कविकोऊ॥ मोमनमेंउपमा असआवत भाषतहौं पुनि

होउ न होऊ। जीतिसबै जग औंधधरेहै मनोज महीप के दुन्दुभि दोऊ २०१॥

हृदयवर्णन॥

क०। सुमति सुशीलअम्बु सरवर शोभावान कैधौं प्रियप्रेमको पयोनिधि सुनीतहै। बिम्बकुचबीचरोम राजी अति सोहतिहै मेरुतेप्रकाशी मनो भानुजापुनीत है॥ भनैरघुनाथचारु हीरनकोहार गंग लालन कीमाल बहै शारदा प्रतीतहै। तेरेतन तीरथ प्रयागमें त्रिबेनी तट प्यारी उरमाधवको मन्दिर पुनीतहै २०२॥

तथा। लाल गुनमुक्तासी सुरसरिसरस्वती बीच सुरसुता रोमराजीसुखदैनीहै। शुद्धभये न्हायकरिनयन हरिरायजूके बलिभद्रसकल अदान केरी छैनीहै॥ रस पतिहासअनुराग रस रसकोकि पदुम पद्मसुख पदुम नसैनीहै। रजतमसत की त्रिरेखाहृदयमैनीकी कीधौंति-य तेरेउर त्रिबिध त्रिबेनी है २०३॥

रोमावली वर्णन॥

क०। कारे सुकुमारे पन्नगीके रूपधारे बीरकैधौं फोरिपरबत कलिन्दजाके धारे हैं। भनतादिवाकर विरं-चिभाल भाग लिखि करते छटाकि मानो मसीके पनारे हैं॥ कैधौं जल भौंर सुधाकुंडपैरिबेकेकाज कीरकेबिनो-दजात बांधिकेकतारेहैं। कृष्णाकरझाईकेझलकझल-कारेकैधौं उदररोमावली नवेली के विचार हैं २०४॥

तथा। लागेलाल चौकीमें विराजेहरीरामकहैरोमा-वलीदंडहैअकालदियाकामको। कैधौं जलधरएकधारा

सोबिराजतहै कैधौं कबरीकीपरछाईं झाईंबामको ॥ कैधौं गजसूंड़ि नापि कुण्डजलपानकरै कैधौं कामदेव लिखिराख्यो रति कामको । कैधौंकुचभूप सीमा बांटि लीनो आधो आध कैधौं है पिपीलिकाकी पांति चली धामको २०५ ॥

तथा । पागरसपतिकी बिनत नाभि कुण्ड बैठी मेहरि मनोभवकी परनि को तारुहै । सरलअलपहीकी छातीहै अलप कीधौं भक्षतते भागिबचो भोगिनीकुमारुहै ॥ बालातन सदनसम्हारिबेको बलिभद्र धरि गयो रेखासूत बांधि सूतेधारुहै । पातसे उदरपर तेरी रोम राजी कीधौं जमल उरोजनकोठई मृदु बारुहै २०६ ॥

स० । प्रेमके कूपते हेतकलोल कढ़ी यकपन्नगीकैधौंबिराजै । इन्द्रमतंगके दानकेछिद्रमें भौंरन कीअवलीकिधौंछाजै ॥ भारतीभौंरसें कैधौंकलिन्दजा धारकी लीक सुढारसुभ्राजै । नाभिके ऊपर कैरघुराज सुरुक्मिणी रोमावली रुचिराजै २०७ ॥

तथा । बैठीमलीन अलीअवलीकिसरोजकलीनसों कै बिफलीहै । शम्भुगली बिछुरीढीचली किधौंरागललीं अनुरागरलीहै ॥ तेरीअलीयहरोमावलीकिशृंगार लता फल फैलिफलीहै । नाभिथलीतेजुरेफलद्वैकभली रसराजनली उछलीहै २०८ ॥

त्रिबली वर्णन ॥

क० । जंघयुग डोरिधरिलहरी सुरोमझारि नाभी के हलोरिभौंर लंचकुचगहीहै । भनतादिवाकरअन्हा-

न रस बापीलाख भये अबिनाशी ऐसी पुण्यशुभ लही है॥ कोककी कलानसोइ यशकेसमानसबकेलिककथान सो निदान मंत्रकहीहै। उदर सुदारतेरो पानके समान प्यारी त्रिबलीतरंग परलोकसीढ़ी सहीहै २०९॥

तथा। पुरटशिलापै किधौं सोहत सुधाको कुण्ड तापै आहिं तीनकला अमृत पिवैयाकी। कैधौं छबिकूप नीलमणि मुखबन्धनपै रोमावलीडोरचन्द्र सुजलभरैयाकी॥ भनैरघुनाथ स्वच्छरुचिर गहीरशुद्धहर्णहारही तलसुजान ब्रजरैयाकी। दलत हमेशमान सौतमनसालै बल त्रिबलि संयुक्त नाभिनवल दुलहैयाकी २१०॥

तथा। पानसों उदरतामें त्रिबलीबिराजमान कैधौं त्रैलोकहूकी शोभा मर्य्यादरी। नाभिकी गंभीरता बिलोकिमनभूलि जात सुरसरि सलिलके भ्रमनछबि छादरी॥ कोमलअमलद्युतिगोरीकीगोराईवर हेरिहेरि शिवनाथ नैननसी आदरी। कैधौं पार कूपये अबला उझकि झकि उठत तरंग कैधौंहरत बिषादरी २११॥

नाभिवर्णन॥

क०। सुखकी नदीमें कैधौं परतगँभीर भौंर धराको तखतापियलोचन अरथकी। कैधौंबरषामें रोमराजिरहै पन्नगकी कैधौं खानिखुलीहै जवाहिरके गथकी॥ घासीराम कैधौं सौति सुखनकी भाकसीसी मानभईखिरकी उरज गढ़पथकी। एरीमेरीबीर तेरी नाभीरसभरी कैधौं दोतकरताकी कै मथानी मनमथकी २१२॥

पीठवर्णन ॥

क०। बेनीछूटिशीशतेलटकिभूमिभूमिकरनागरिके धँसिके पनारीं पीठह्वैगई। भनत दिवाकर पुरट पात रंभकैसे ऐंचिकर आंचरचटाक चित्तलैगई॥ताछिन ते लाल खानपाननादुकूलसुधिअंग अंगसात्विक अनंग वीजवैगई। राधिका रसीली तेरी कहांलौं बखानोंछबि कविगणउपमा अनूठी सों अथैगई २१३॥

स०। मृगनैनी की पीठिपै बेनीलसैशुभगन्ध सनेह समोयरहीहै।अतिचीकनीचारुचुभीचितमें सुसुकेशसु-केशन जोयरहीहै॥ कविदेव कहाकहिये उपमा रविकी तनयां तन तोयरहीहै। मनो कंचनके कदलीदलऊपर सांवरी सांपिनि सोयरहीहै २१४॥

क०। कंचनकी पाटी तामें सोहन कर्यो है कैधौं मोहनीके मोहनको मोहनको बानरी। कैधौं बेनी भार ते पनारी परिगई प्यारी देवनकुमारी बलिहारी छबि कानरी॥कुशलसिंहहेरिहेरि हाहाकरि खोलि खोलि बोलिबोलिदीन्ही वै अदीनीभरी मानरी। नीठि नीठि पीठि प्यारी परसत परमपाणि मानिमानि नेह कीन्हीं प्रेम पहिचानरी २१५॥

कटिवर्णन ॥

क०। सारी जरतारी बूटी मोतिन किनारीदार किङ्किणी झनक नीवीछबि छहरातिहै। भनत दिवाकर उरोजपीन भारनते विजनवयारिलागे अंगथहरातिहै॥ सिंहिनी सुनातिकान आपने अधिकखीनदीनह्वै मलीन

मन हिये हहरातिहै। राधिकाके लंकलाल केलिपरयंक पर नीठि नीठिईश्वरसी दीठि ठहरातिहै २१६ ॥

तथा। छहरातिछबिक्षिति छोरनलों छटिछटाबशकिये छैलन छकाये हिरलातिहै। छीरदकी छोहरीसी छपासी प्रवीणबेनी छपामें छपाकरकी छातीमेंलसातिहै॥ छला छाप छाजत छराके छोर छिटकत छवनि छुवतछन द्युतिसी लसातिहै। छीन कटि छोटीसी छबीली ने छटांक भरी छाई छलछन्दाक्षिति पालाहिछलातिहै २१७॥

तथा। सुमनमें बास जैसे सुमनमें आवैकैसे नाहीं कहँ होत नाहीं हांकहे छहतहै। सुरसरि सूरजामें सूर सुतासोहैजैसेवेदकेवचनबांचेसांचेउचरतहै॥ परिवाके इन्दुकीकलाज्योंबसेअम्बरमें परिवाकी अच्छपर तच्छ नालहतहै।जैसेअनुमान परमानपरब्रह्म जैसे कामिनी कीकटिकवि मीरन कहत है २१८॥

तथा। लाजैजाहि निरखसुलंकलख केहरहूपुनरति रम्भाकै गुमान गुरहारोहै। तामें किंकनावल बिशाल सुरवारी बजैबर जरतारो लख्यो घांघरो घुमारो है॥ भनै रघुनाथ मंजुमृदु मखतूल तुल्य सौरभ गुलाबलों सुजान अलिधारोहै। कैधौं इन्द्रजालको यती मैंहूं निकार्‌यो बिधुकुन्दन तपायबाल सुकटितिहारोहै २१९॥

तथा। तागसों तपासों बारलाकसों लोकजने सों छिद्रकैसों छन्दकाहिबेको छलियतुहै।चितहिपरतचाकि जातहै चितौनिजौनि नैननकी गतिकोगुमान दलियतुहै॥ पगनधरत धरकताहियो बलिभद्र डगनभरतुडग

डग डगियतु है । कंचनके भार कुचभार कुलहारभार ऐसेछीन लंकसों निशंक चलियतुहै २२० ॥

स० । अंगकी सूक्षमताको कहै कटिकेहरिकी समता नहिंपावै । तार औवार सेवारकतार विचारकिये लघुहीं मनभावै ॥ देवकीसूनु सुतो रघुराज सुरुक्मिणी लंक अनूप सोहावै । ब्रह्मवसीठिधौं जीवकी पीठि धौं दीठिहै कीधौं न दीठिमें आवै २२१ ॥

तथा । स्वच्छसलंक विलोकत बालकी केहरिजायभयो वनवासी । सूक्षकोदान कि गौरिकोमान सो छीनिछवो छतुहै विमलासी ॥ भूतनहीं चितयो चितचोरतकादर की हढ़ता जिमितासी । कुचभारन ते लचिजात अजों शिवनाथभनै प्रियमानछमासी २२२ ॥

नितम्बवर्णन ॥

क० । कैधौं खरीखीनकटि निकसीनितम्बपीन कैधौं रतसमर प्रहारताके छालसी । मनतदिवाकरकी मदन तमूरधरे मेखलाके रवसोइ बाजत है झालसी ॥ कैधौं जातरूपयुग हरिडका उलटिराखे होत जगमग ज्योति सभावरजालसी । हरूवेवदनताके थम्भनलगीयोंमानों सौतिउरसालतहै पेखिपेखिसालसी २२३ ॥

तथा । वालावालवैसके वितांइक किशोरकर्णहर्णआ-तुरीके चातुरीके देनवारे हैं । मत्तगज ठवनि सिखावन गुरुहै किधौं प्यारप्रेमरंगके सुवर्णघटभारेहैं ॥ भनैरघु-नाथ विश्वविजयविलोकिमैन उलटिधरकैसन्तकुम्भके

नगारेहैं। कैधौंप्रभापुंजस्वच्छसुन्दरगुलाबरङ्ग प्यारी मृदुयुगलनितम्बये तिहारे हैं २२४॥

तथा। गानकरिमदनतँबूरन उलटिधरेकंचन बरण दोऊलगतसोहाये हैं। चीकनेउठौहैंमृदुबालके नितम्ब बर महिमानकहिजात ऐसीछबिछायेहैं॥ शोभाकोसमेटि औलपेटिसब उपमान चायनसहित बिधि इनहीं बनायेहैं। कैधौंजगजीतिरति आपनीदुहाईफेरि नौबत बजाइयेनगारेऔंधायेहैं २२५॥

जंघवर्णन॥

क०। कदलीदलहैं सुऊषमसहितएतोएतोहैं मयूषमय गुणाहिततरेहैं। जाकोकहुं रोमनकीपावैनरमनरुचि मेरेजान रम्भाहू के करभकरेरेहैं॥ रदमातिजिनकी दुरदकरजे कहतधुरकासस्थ उपमानते अनेरेहैं। शोभा के सदनके किकाचेकलधौतखंभ कीधौं मृगलोचनी युगलजंघतेरे हैं २२६॥

स०। कंचनकेकभनीयकिधौं कदलीअपने उलटे करिराखे। मैनमतंगनकेकैभले सितशुण्डहैं पीनअमी रसचाखे॥ कैसुखमा तियकेकरकेकर भैजुमहैं सुखमा तरुसाखे। बिम्बबिजयरससराजकेकैधौं रुक्मिणिजंघ कैकामदुसाखे २२७॥

क०। हाटकसमान रम्भखम्भसीलसत जानु कोलि में निधानु मानो भानुराते प्रातके। भनतदिवाकर बितुण्ड शुण्ड गोलरोल उपमाअतोलरससराजकान्हघात के॥ घनसार स्वच्छता सुबासताधसीसी जामेंएतोमैन

मानवोतो देववृन्दजातके। कौनकौन बातकीबड़ाईक रांखोजिखोजिकामिनीके जंघयुगडारपारिजातके२२८

तथा। शोभाके निवासको लगेहैंकिधौंस्वर्णखम्भ कैधौं चन्द्रस्यन्दनके युग धुरधारेहैं। रम्भाखम्भरम्य किधौं सुरतरुशाखा युगसुखद सदाहीनिज प्रीतमको प्यारेहैं॥ भनैरघुनाथपीनअमल सुवर्ण कंजदामिनतें अमित अमोघद्युतिवारेहैं। कैधौंये सुधारस भरे हैं इक्षु दण्डदोइ किधौंकामदण्डजंघयुगलतिहारेहैं २२९॥

तथा। कैधौं मैनमंजिनीमतंगिनी की सकुच छीनि कैधौंहंसहंसिनी विहारकीचलनिहै। कैधौं सुख सागर थहावत मयंकमुखी कैधौं नन्दलालमनमाणिकभलनि है॥ हरेहरेहेरिहेरिहठि हठि हरिननयनी भूमत भुकत कैधौं केशरीमालिनहै। शिवनाथकैधौं अनुरागमेंसुहाग वेलिफहरिफहरि फैलिफूलनफलनिहै २३०॥

पिंडुरीवर्णन॥

क०। शोभावान परम प्रकाशित लखेहौ बने किह त्रिधनाने निजहाथसों सवांरीहैं। मोहन की मोहनी सुढार मदमातीमैन देखतही सौतें मानछोड़ हियेहारी हैं॥ भनैरघुनाथ रम्य स्वच्छहैंप्रवालनतें युगमहतावी मनो मनसिज वारी हैं। रम्भा खम्भअग्रकम्बुद्रुतप्रति विम्बीकिधौं गहव गुलावीगोलगुलफतिहारीहैं २३१॥

तथा। कीधौं वैस वेलिवेको वेलनवनायविधि शोभाधर सधर सकल सुखदाईकी। कोमल अमलदल केतिकीके कलिकाकी केसरि कलाई मानो मनमथ राई

की ॥ कीधौं बलभद्र शोधि सकल सोहाग मुन सुचिर रुचिर रचि पचिके बनाईकी।आभा खण्डि सौतिनकी ऐपनसों माड़ी ताते कीधौं प्रेमनी ये तेरी पेंडुरी सुभाई की २३२ ॥

तथा। कञ्चनके खम्भकैधौं ईंगुरसों बोरिराखेगोरे गदगदे चोरे चिताहिं अमोलये। केलिके निधान कैधौं मदन विमान रूरे सरस सवाँरे प्यारे करत कलोलये॥ जंघन युगलदेखि कदली लजायबन गहनदुरीरहै बि-राजी छबि नौलये । कीराहिं बिलोकिके पटाकि डारै बार बार ऐसे सुखदायक अमलमृदुगोलये २३३ ॥

मुरवावर्णन ॥

क० । पायजेब घुंघुरू घुमाउदेई जेब पायँ नूपुरके रुनुकझुनुक ललचायये। घूमि घूमि लालमणि घूमत गोलाइनमें चाइन बढ़ायजबजीव अटकायये॥ भहरू दिवाकरभनत कोक पण्डितहै मण्डित पलंगपै छटाकों फैलायये। राधिका रसीली गरबीलीतेरी मुरवाने सुरी वो परीके किन्नरीके कहरायये २३४ ॥

स० । लख लाजत जाहि मरालगते गजराज तजैं गत आतुरवा। द्युति देखत दामिनिहू सकुचै दुरजात घनैघनकेकुरवा॥ रघुनाथभनै मृदुचालचलै अतिप्यारे लगैं सक्री चुरवा। मन मोहतहैं जग मोहनकी मन मोहनीके पग के मुरवा २३५ ॥

एंड़ीवर्णन ॥

क० । बिम्बमें प्रबालमें न ईंगुरगुलालमें न चम्पक

रसालमें न नेसुक निहारेमें। दाड़िम प्रसूनमें न मून धरा तूनमें न इन्द्रकी वधूनमें न गुंजा अधिकारे में॥ कुसुमसुरङ्गमें न किंशुकसुरंक मैन जावक मँजीठ कंज पुंज वारिडारेमें। राधेजू तिहारे पग अरुण समान ताको हेरिहारेकविता न आवत विचारेमें २३६॥

तथा। मृदुल मनोहर गुलाव दलहूते अति कमल प्रवालते सुरङ्ग दरसातीहैं। कलित महावरसों ललित लखेही बने दाड़िम प्रसूनहूते सरस दिखाती हैं॥ भनै रघुनाथ वाल ईंडुरी तिहारी बर सौतिनको सालतीं मनोज मद मातीहैं। चलतमरालचाल लाल बलिहारी करे निकस मरीची चन्द्र भौन चढ़ि जातीहैं २३७॥

तथा। जोगुन रंगवारी जावक सुरंगवारी आनँद उमङ्गवारीस्वच्छ छबि छाकीहै। सौतिगण भङ्गवारी सखी सतरंगवारी नवलेन रंगवारीअंगवारी ताकीहै॥ गिरिधर कहै सोहै सम्पुट सरोजवारी बशीकरण मंत्र-वारीयंत्रवारी वांकीहै। पियमनवेड़ी अक्षिलक्षणनिवेड़ी वेस उपमा न छेड़ी राजै एंड़ी राधिकाकी है २३८॥

पगतलवर्णन॥

क०। शोभाकेनिवासकैप्रकासकेनिकेतमंजुकैधौं यह उदधि अमोघ यशमारीके। कैधौं रस हांसके तड़ागया सुधाके सिन्धु सौति मदहारी किधौं यह सुकुमारीके॥ भनै रघुनाथवसैं हिये हमरेमें सदासवसुखदाता वृष-भानुकी दुलारीके। अरुण अमंद चारु विमलसोहाग भरे कमल गुलावरंग पगतल प्यारी के २३९॥

तथा। सातुकि सिताई रजगुणकी रताई मनुतामस को त्यागि सुख जनकेसहायके। कोमल अमल दलमोहनीकी पुस्तककी राजत रुचिरविधि वरण सुभायके॥ प्रेम दल दलकी सुपथ भूमि सोहै किधौं रहे खैंचि लोचन तुरंग हरि रायके। कीधौं मीन केतन तलप ताप ताम रसदल बलिभद्र तरुनीयोछा तेरेपायके २४०॥

तथा। करजोरे किन्नरी तिलोत्तमा तँबूरलीन्हे चौंर चतुराननी करत छबिछाकीहै। छत्र लेन छत्रपति नीहूं नचै रम्भा ठाढ़ी मकर पताकी बारी कलप लताकीहै॥ यमलाना राधिकासी कमलाहै हनुमान कौनकहैरसना फणीशहुकी थाकीहै। तलातलबितल रसातल महातलकी अतल सुतल कीते पंगतलताकीहै २४१॥

पगअँगुरीभूषणादिवर्णन॥

क०। अँगुठा अनोठओर अँगुरी अरुण तोरभूसुत सोहातमानो नलिनीकलीकीजू। भनतादिवाकर गुलाब सों चरणमृदु बोयेजलजातचले ब्रजकोगलीकीजू॥ जाचकके रंगजाकोफीकीसीलगतपाय एँड़ीकमलतेआ सुभलकाभलीकीजू। हंसकीसी चाल मगवाहीते चलति कैधौं भलीपगतल वृषभानुकीललीकीजू २४२॥

तथा। सहजरसीली गरबीलीछनकीली अतिशील मेंसनीहैंकरी सौतें जिनपंगुली। पूरणकरनहार आस पति शोभारास भूषण समेत देख निद्रैं भईकंगुली॥ भनै रघुनाथ भरीभाग यों सोहागसदाजावक लगेले

लसे लालरंगरंगुलीं। अमलगुलावकंज दलरंगलाजै लखि नवलसोहाईदश तेरे पदअंगुलीं २४३ ॥

स०। कोमलफूल मनो अरविंद दोऊ पद सुन्दरि के रसभीने। ताकी अनूपमआँगुरियां छबिलेत सुवर्ण कीमानहुँछीने॥आंगुरीलाललीलखीपदमेंजन भूसुतबैठि समाजहिकीने। उपमारतिनाथ लखात नहीं निजहाथ रचे पद अंग विधीने २४४ ॥

पदनखवर्णन ॥

क०। कैधौंपद्मरागरत्न जटितभरेहैं कुण्ड तामेंबिंद रोरीकी प्रकाशी प्रभापानीने। कैधौं पग पंकजमेंराजत रँगीलेनखजावक रँगे जे अलि सुमति सयानीने॥ भनै रघुनाथ प्राणपति मनमोहनको मोहिनी दिये हैं लिखि यंत्र बरबानीने। कैधौं मुख चन्द्रअमी बचनप्रकाशहेतु नज़र कियेहैं लाल दशरथ रानीने २४५ ॥

तथा। कीधौंमनवेधन वनाय मैनविधनाहैदेखिदृशा दरपण मोहे नन्दके लला। हंसनके गोलककी तारतार काननके कमल दलनपर स्वातिबुन्दके छला ॥ अन्तरकी आभा करवीरकोर कानिकोरवालिभद्र निरखि सिहात नितही हला। राका चन्द्रमुखीप्यारी तेरेचन्द्र कीधौं कामके कलंवन की भालचन्द्र की कला २४६ ॥

स०। कामविरंचिके वेष वनाय किधौं सुखमाकेसोहात सितारे॥ कंज दलीनके शीश किधौं लसै गंगके अम्बुके बुन्द कतारे। सांचीमुनो रघुराज किधौं सजे

चम्पकलीन पै मोतिनहारे । कैपदकेनखराकेमाणिके जिन पै कवि कोटि कलानिधिवारे २४७॥

पदवर्णन ॥

क०। कोमल अरुण स्वच्छ पुहुपगुलाबहूते अति द्युतिवन्तछविक्यकीरतिकुमारीके । नूपुरनिवासहै अनूप गतवारे शुभ मोहन सदैवकन्त मौलिमन्दहारीके॥ भने रघुनाथ ना बिसारो क्षणएकधन्यसब्ब सुखदाताकृष्ण-चन्द्रापियप्यारीके । वारों रतिरम्भा शचीशत अतिशो-भापुंज ऐसे पदकंजमंजु राधिका दुलारीके २४८ ॥

तथा। कोमल विमल मंजु कंजसे अरुण सोहैं ल-क्षणसमेत शुभ शुद्ध कन्दनीकेहैं । हरीके मनालय निरालय निकारनके भक्तिवरदायक बखानैं छन्दनीके हैं॥ ध्यावत सुरेशशम्भु शेष औगणेश खुलेभागअब नीकेजहां मन्दपरे नीकेहैं। कटैं यम फन्दनीयबन्दनीय हरहरिबन्दनी चरण वृषभानुनन्दनीकेहैं २४९ ॥

तथा। मखमल माखनसे इन्दुकी मयखनसे नूतन तमालपत्र आभा आभरनहैं। गुलसे गुलालसेगुलाब जपा जावकसे पावक प्रवाल लाल गावै भूधरनहैं॥ उमापति रमापति यमापति आठौंयाम ध्यावत रहत चार फलके फरनहैं । पंकज बरन छवि छविके हरन हर्षीसुखके करनराधे रावरे चरनहैं २५०॥

तथा। कोऊउमाराज रमाराजयमाराज कोऊकोऊ रामचन्द्र सुखकन्दनाम नाधैमें। कोऊ ध्यावै गणपति

फणपति सुरपति कोऊ देवध्यायफल लेतपलआधेमें॥ हठीको अधार निरधार की अधार तूही जपतपयोग यज्ञकछु वैन साधेमें । कटैंकोटिबाधे मुनि धरत समाधे ऐसे राधेपद रावरे सदाही अवराधेमें २५१ ॥

स० । करकंजन जावकदै रुचिसों बिछिया सजिके व्रजमाड़िलीके । मखतूलगुहे घुंघुरू पहिराय छलाछिगुनी चित चाड़िलीके ॥ पगजेवै जराव जलूसनकी रबिकी किरणै छबि छाड़िलीके । जगवन्दतहै जिनको सिगरो पगवन्दत कीरति लाड़िलीके २५२ ॥

क० । कलपलताकेकैधौं पल्लवनवीनदोऊहरनमंजुताकेकंजताकेवनताकेहैं । पावनपतित गुणगावैंमुनिताके छबिछलैसवताके जनताकेगरुताकेहैं॥ नवोनिधिसिद्धिताके आलेहैं असल हठी तीनोंलोकताके प्रभुताके प्रभुताकेहैं । कटैं पाप ताके बँधैं पुण्यके पताके जिन ऐसे पग ताके वृषभानुकी सुताकेहैं २५३ ॥

स० । वरषा अरु शीतहु आतपकोनिशि द्यौसहै सरहींमें खरे । कहुंसूखिहुँ जात कहूंहरियातरहैजलजातयोंध्यानधरे ॥ रघुराज सुनो तपके बल यद्यपिरावरे के भल मेहपरे । तबहूंन लहैसरिरुक्मिणिके पदकीमधुव्याजहि आश भरे २५४ ॥

क० । देखोशुभवालापदसुन्दरविशाला मानोईंगुरलजातजाके देखतचरणहैं । जलज गुलाबखिसियात देखि कोमलाई सिरसहुपुहुप मन माहिंसकुचतहैं ॥ ऐसे पग प्यारी के सकल छविछीनिलियो छविनाहिं काहूकी

पदन सरसतहैं । उपमा न काहूकी सकलकवि ढूंढ़िहारे मधुपति जैसे प्यारी तेरे ये चरण हैं २५५ ॥
तथा । सुन्दरसुरङ्ग नैन शोभितअनङ्गरङ्गअङ्गअङ्ग फैलततरङ्ग परिमलके। बारनके भारसुकुमारिकोलचत लंकराजैपरयंकपरभीतरमहलके॥कहैपदमाकरबिलोकि जनरीझैंजाहि अम्बरअमलकेसकल जलथलके। कोमल कमलके गुलाबनके दलके सुजात गड़िपांयन बिछौना मखमलके २५६ ॥
सर्वदेहछाबिवर्णन ॥
क०। जरीदारकंचुकीकेऊपरझलकिआईललितललाई मानो चूनिनप्रभाकरी। अंगअनुकूलेफूलेफूल से बिलोकियत लपटिदुकूलभुजमूलतसुभाकरी॥ऊंचेऊंचे निपट निवासचढ़ि चन्द्रमुखी झांकतझरोखेचोखेबदन सुधाकरी। अगम जिरह पैधि गिरहउजेरोकर बिरहा नबली आज आपही बिदाकरी २५७ ॥
तथा। बैसकी किशोरी गोरी शोभा वरणी न जात गातकी निकाई छबि नाहींकाहू योनमें । बासरगवांयो खोलि जीयमें वियोगबेलिसांझसमय बिथा बाढ़ीवैठि पीय भौनमें ॥ औधिके व्यतीत भये रंचको न कलपरी ब्याकुलसीभईजातसारेमन्दयोनमें। नीचेलेउठायनारि डीठि पर जागना सु आगिआगिआगिकेके भाजिगई भौनमें २५८ ॥
स०। बारिज सों मुख मीनसे नयनसेवारसे बारन की सुखदासी । कम्बुसों कण्ठलसै कुचकोकसों भौरसों

नाभि भरी भ्रमआसी ॥ गोकुलधारसी रोमवलीलहसी
सी लसै त्रिवली छविरासी । लाल विहारकरोरसमें ब्रह
बालवनी सुखकी सरितासी २५९ ॥
तथा । ऐसी न देखीसुनीसजनी घनिबाढ़तहै जो
वियोगकी बाधा । त्योंपदमाकरमोहनको तबतेकलहै न
कहूं पलआधा ॥ लालगुलाल घलाघलमें दृग ठोकरदै
गई रूपअगाधा । कैगई कैगई चेटकसीमन लैगई
लैगई लैगई राधा २६० ॥
क० । एंडीतोनारंगीऐसी उरोज दोनों श्रीफल सों
बिम्बाते अधरदन्त दाड़िम बिजैनसी । गति गजराज
कैसीकटि मृगराज कैसी अश्वकैसो घूंघुट मृगाके ऐसे
नैनसी ॥ कमलसोंचरणतल कुसुमसे सरसनीको चम्पे
कीऐसीकलीबाहींजूहीदैनसी । अलिकेऐसेकेशकीरकैसी
नासिकाकपोतकैसोकंठकोकिलाके ऐसे बैनसी २६१ ॥
तथा । अतरपुतायो मढ्यो महल सुगन्धन सोंद्वारे
गजमोतिनकी तोरनैंतनीरहैं । चन्दनचहलचारुचांदनी
चँदोवालालगोपमालमणी कनीकोरनै घनीरहैं ॥ उमा
चौंर ढारैं रमाआरती उतारैं ठाढ़ीरम्भा रति मेनकासी
कोटिन जनीरहैं । हठीदेवतानकी दिमाकदाररानी तेऊ
राधे महरानीजूके हाजिर बनी रहैं २६२ ॥
तथा । मोतिनकी तोरनैंतमाशेदार द्वारेंवा अमित
तरैयनकीशोभा बड़े सानकी । मखमली गिलमगलीचा
मखतूलनके अतर अतूलनकी झोंकें हठी मानकी ॥
जरकसी जरब जलूसनकी गद्दीकर रविछवि रद्दी

झुकी झालर बितानकी। कंचनकी बेली रमा रति तिन पेलीं
अलबेली रङ्ग रावटी अकेली वृषभानकी २६३॥
तथा। अतरपुतायो चौक चंदन लिपायो बिछी गिलम
गलीचनकी पंगति प्रमानकी। कारी हरी पीरी लाल
झालरैं झलकरही जैसी छबि छाई चारु चांदनी बितान
की॥ झीनी श्वेत सारी जड़ी मोतिन किनारीदार फैली मुख
आभा हठी राधे सुखदानकी। नाहनेह नदी कर रमा रूप
रदीकर बैठी आनि गदीपर बेटी वृषभानकी २६४॥
तथा। कंचन फरस फैली माणिन मयूषै तन्यो जरी
को बितान तेज तरनि तरा परैं। पांवड़े बिछौना परै
मोतिनके कोर वारे चारों ओर जोर जो प्रभा भरी भरा परैं॥
हीरन तखत बैठी राधे महरानी हठी रम्भा रति रूप गिरि
घसक धरा परैं। छूटी मुखचन्द चारु किरण कतार बांध
छ्वै छ्वै चन्द्रमण्डलसौं छबि के छरा परैं २६५॥
तथा। चांदनी में चांदे लग्यो चांदनी चँदोवा चारु
चांदनी बिछौनन अधिक छबि छाई है। बड़े बड़े मोतिन
कीलरैं रुरैं चारयों ओर बीच बीच जरी कोर सोहत सुहाई
है॥ गोरे गात श्वेत सारी हीरन किनारी घनी इन्दु सम बदन
राधे इन्दिरा लजाई है। भालदिये चन्दन सुनेह नंद
नन्दनसौं महक सुगन्धन सों सेजपर आई है २६६॥
तथा। मखमली गिलम गलीचनकी पांति चारु जर
कसी सेज तैसी रही छबि छाइकै। हीरनके माणिनके मोति
मालती के हार लालन प्रबालन के ल्यावती बनाइकै॥
एकै लिये सारी जरतारी कनी कोरवारी एकै हठी बीन

लै रिझावैंगीतगाइकै। चंदनचढ़ाय भालवन्दनलगाय राधेवैठी चन्दमंदकै मसिन्द पर आइकै २६७॥

तथा। कंचनमहल चौकचांदनी बिछौनातामें जरी कोवितानतानभानज्योतिमंदकी। लालनकीमालैंलाल सारीकोरदार अंगओठनकीलालीजिमि लालीजीवबंद की॥ रम्भासी रमासी खासीदासी मैनकासी हठीठाढ़ी करजोरैंतेऊछीनैंज्योतिचन्दकी।गावैंवेदबाणीचौंरढारत भवानीराधेवैठी सुखदानी महारानीनंदनन्दकी २६८॥

तथा। सारी जरतारी लगी मणिन किनारी द्युति दामिनी कहोरी गातजात रूपकन्दहै। हाराहिये भूषण जराऊ भाल वेंदीलाल अधर पर वालबिम्ब बसैजीव बन्दहै॥ उमाकी रमाकी सुखमाकी देवमाकीहठीरम्भा इन्दुमासी उपमासी गतिमन्दहै। तारापति कैसो मुख लहतगोबिन्दद्वारीतखतपैवैठीराधेवखतबलंदहै २६९॥

तथा। वैठीरंग भरीहै रँगीली रंगरावटीमें कहांलौं वखानों सुंदराई शिरताज की। चांदनीकी चंपककी चंचला चमीकरकी इन्दिरा तिलोत्तमाकी शोभाकौन काजकी॥ मोतिनके हारगरे मोतिनसों मांगभरे मोतिन सों वेनीगुही हठीसुख साजकी।चालगजराजमृगराज कीसीलंकद्विजराजसोंवदनराजैरानीव्रजराजकी२७०॥

तथा। चामीकर चौकीपर चम्पकवरणहठी अंगकी चमकैंचारु चंचलैंचलावतीं। तारासीतरंगनासी अतर लगावैं रतिमुकुरदिखावैंविजैवीजन डुलावतीं। कमला करन जोरे विमला सुतन्त्रतोरै नवलालै मरजी को

अरजी सुनावतीं । सुरनकी रानी सुरपालनकी रानी दिगपालनकी रानी द्वार मुजरान पावतीं २७१ ॥

तथा। कोऊ छत्रलीनै कोऊ छाहगीकीनै कोऊ बीनै लै प्रबीनै येनबीनै सुरगावतीं । कोऊ जरी जोरैकरअतर गुलाबबोरैलैलै अलबेलीहठीधावनतैंआवतीं ॥ कोऊचौंरढारै कोऊआरतीउतारैकोऊकरती सलामैं कोऊमुजरा न पावतीं । बैठीआनतखतपै बखतबलन्द राधे बाला दिगपालनकी मालापहिरावतीं २७२ ॥

तथा। फटिकशिलानकेमहल महरानी बैठीसुरनके रानी जुरिआईं मनभावतीं । कोऊजलदानीपानदानी पीकदानीलिये कोऊ करबीनै लै सोहाय गीतगावतीं ॥ कोऊ चीरचीनैं चारु चांदनीसे चौजवारेहठीलैसुगंधन सों झलकैं बनावतीं । मोतिनकेमाणिनके पन्नगप्रबालन के लालनके हीरनके हार पहिरावतीं २७३ ॥

तथा। जातरूपतखतपै बैठीरूपरासराधे अंगनकी प्रभाप्रभाकर को लजावतीं । चीर चारुहीरहार हिये पहिरायकरभूषणबनायबाल साजन सजावतीं ॥ अतर गुलाबलै सुगन्धनलगावैं सबै चन्दनचढायभालभौंरनभगावतीं । जोरिजोरिपाणि देवतानहूकी रानी हठी कोटि कोटि कोरनिशि झुकिकै बजावतीं २७४ ॥

तथा। केसरिसेअंग पट केसरकेरंगजगे मोतीगुही मांगहै अनंगहूकी बालिका । रम्भासी रमासी मैनका सीमंजु घोषा सम शचीसी उमासी सुखमासी ज्योति जालिका ॥ सांझ समय आन वृषभानुकीकुमारिराधा

ठाढ़ी दरवाजे हठीप्राणनकी पालिका। भागभरे नैनन निहारो नन्दलालचलि रैनि गुजरी सी उजरीसी दीप-मालिका २७५॥

तथा। सांभहीं गईतीबीर भौन वृषभानुजीके अति सुकुमार एक रूपकैसी रासीहै। दाड़िम दशन बिम्ब अधर प्रवालवारीसुधासीभरत्तवास मन्दमन्दहासीहै। देखीहौं गोपाल ग्वाल आजगरबीली हठीराधे कहि टेरेजानी रम्भारमा दासीहै। हिमकर कलासी चमक चपलासी है सो शम्भु अबलासी खासी दीप-मालिकासी है २७६॥

॥ स०। मंजनचीर सुहारहिये शिरबन्दन अंजनमोतिन वानको। जावक नूपुरमाल औ किंकिणि कंचुकी चन्दनहै गतियानकी॥ कंकण सोहै केयूर भुजानलसै मुखपानऔ बेंदी गुंधानकी।आवैगलीमें बिलोकोचली यह कंजकलीसी लली वृषभानकी २७७॥

क०। सारी जरतारी लगीमणिन किनारी त्योंहीं दामिनी दबायलेत दमकरदनकी। हीरनके हार हठी गजरा गोहाबदार अंग अंग फैलरही दीपकसदनकी॥ हेमकी छरीसी मान मुखनजराव जरी सबगुण भरी परीछबिके कदनकी। चांदनी बिछौना भाल चन्दन लगावै बालचांदनीमें बैठीलाल चन्दसे बदनकी २७८॥

स०। मोरपखा गरे गुंजकी मालकरै नव वेष बड़ी छबिछाई। पीतपटीदुपटीकटिमें लपटी लकुटीहठीमो मनभाई॥ छूटीलटैंडुलैं कुण्डलकान बजैमुरलीधुनिमंद

सुभाई । कोटिनकाम गुलाम भये जब कान्ह है भानु
लली बनिआई २७९ ॥

क० । बजत बधाय गायमंगल सोहाय मग पांवड़े
परायहैअवाई सुखखानकी । बैठी सुखपाल सुखपालन
की रानीसाथ ब्रजमहरानीकेप्रकटजगजानकी ॥ बोलि
कै पठाई आई नगरलुगाईसब देखिछबिछाई जिन्हैंसू-
झत न आनकी । महरमभाई हठी कुलहिसोहाईऐसी
गोकुलहि आई राधे बेटीवृषभानकी २८० ॥

तथा । केसरिसीकेतकीसीचम्पकचमीकरसी चपला
चमकचारुगातकी गोराईहै । जाकोमुखचन्ददेखिचन्द
मन्द ज्योतिहोति जाकेलखि नैन अरबिन्द द्युतिपाई
है ॥ नीलमणिमोतिनकी मालउर डोलत मयूरऔमरा
लनकीपंगतिसोहाईहै । देखिबेकोदौरिआईगोरीब्रजबा
लासबै भानुकीकिशोरीआजु नन्दगृहआईहै २८१ ॥

तथा । गायउठीं किन्नरीनरीनये सुरनसबै द्वारद्वार
नगर नगाराध्वनि छाईहै । सुरहरषानेदरशानै बरषाने
प्रेम सरसानेफूलबरषालय बरषाईहै । बन्दीजनबिरद
बखानैं भांति भांतिहठी लीन्हों अवतार राधे बेदनहूं
गाईहै । धन्यब्रजमण्डलसुधन्य कोखि कीरतिकी धन्य
वृषभानुजूके भागकी भलाईहै २८२ ॥

तथा । देखीभटू भावती प्रकाशभारे भानकैसो को-
किलासे बैन नैन ऐनन जुरैगई । मैनकासीनारी हठी
मैनका कहांरीप्यारी रम्भारमा उमावारी मन को मुरै
गई ॥ कमलकलीसी लली राजतअलीनबीच गोकुल

गलीनमें गुलावसो कुरैगई। बिज्जुलकेजालनकीकोटि न मशालनकीलालनकीमालनकी दीपतिहुरैगई २८३

तथा। मणिन महलमहँ महकैसुगन्धतैसी फटिक शिलानहूंको फरशसँवारोहै। जेवदार जवेदारज़रीऔ जलूसदार चोजदार बिशद बिछौनन पसारोहै॥ चन्द्र मणिचौकीपर चम्पकवरण हठी रम्भारमा उमा रूप गरव उतारोहै। देखो नँदनन्द सुख कन्द ब्रज चन्द आजु राधेमुखचन्द चन्दमन्द करिडारोहै २८४॥

तथा। बैठीकुंजभौन गोरीकीरतिकिशोरीराधे छूटत फुहारे हिमवारे एक पातीहै। अतर गुलाब घिसचंदन चहलसची चारोंओरसुमनसुगन्ध सरसातीहै॥ कैयो रङ्गवारी हठी उठतीं तरंगें त्योंअनन्त अंगनासीअंग आभाउफनातीहै। बांधि बांधि परासरासरीसुखाकिरणें यों छोरलौं धरापैछूटिछरा खायजातीहै २८५॥

स०। भौनते गौनके भानुललौ कढ़िदेखन आईसबै ब्रजनारैं। पेरेदुकूल शृंगार सजे मनो फूलिरहीं वन चम्पकडारैं॥ पांइन तें अँगुरी नख कै हठी लालीकी लीकैं कढ़ीअसरारैं। मैलीभई उपमासिगरीमनोफैली महीमें महावरधारैं २८६॥

क०। जबतेबिलोक्योंतोहिं सुंदरकुंवरकान्ह नेकुन सुहायकछू चित्तअकुलातहै। तबहीतेताजिभौन कीरति किशोरी तीन सखिन समूहसाथसुखसरसातहै॥ कहा कहौं तोहिं ताहि देखिआई तैसे भट कौतुक बिलोकि हठी हिये हरषातहै। यमुनाके तीरबहैशीतल समीर

तहां बीर बल बीर जू को बलि बलिजात है २८७॥

तथा। आजहों गईती बीरसहज निकुंजन में कौतुक विलोक्यों तहां सबसुखदानीके। कहतबनैनमोपैअचरज बातहठी काहि कहिहारे मुखचारवेद बानीके॥ श्रवण सुनैनमानैं आंखिन दिखाऊं तोहिं चलि दुरि मेरेसाथ चरित गुमानीके। लूटैंसुखमोटैं करैं मनुहार कोटैं बैठे पांयनपलोटैंलाल राधामहारानीके २८८॥

स०। चन्दसो आनन कंचनसेतन हौंलखिकै बिन मोल बिकानी। औअरबिन्दसी आंखिनको हठीदेखत मेरीये आंखि सिरानी॥ राजतहै मनमोहनकेसँग वारौं मैं कोटिरमारति बानी। जीवन मूलसबै ब्रजकी ठकुरानी हमारीहै राधिका रानी २८९॥

क०। गतिपै गयन्द वारौं पग अरबिन्द वारौं हठी अलिवृन्द वारौंअलकन फन्दपै। गुलफगुलिन्दवारौं शीलतापै सिन्धुवारौं सकलसुगन्धवारौं मुखकी सुगन्धपै॥ कटिपै मृगेन्द्रवारौं तनछबिवृन्द वारौं बेनीपै फनिन्दवारौं जात नँदनन्दपै। ओठजीवबन्धुवारौं हासी सुधाकन्दवारौंकोटिकोटि चन्दवारौंराधेमुखचन्दपै२९०

तथा। मलिन अटापै ठाढ़ी पुरटपटापै प्यारी रूप की अभरनो खरीभत गोपालहै। चरनकरनकी नख [illegible] नकी दुलौना प्रभालालहै॥ जकिरह्यौ थकिरहे देखि पकि चकिरहे हठी नरनारिनको ऐसो भ्हालतहै। कैधौंकछु ख्यालहै कैमोहनीकोजाल है कैधौंकी मालहै कैमदनमशालहै २९१॥

तथा। पौरही पै ठाढ़ेरहौबाढ़े घरहीकेलाल चौकीहै हमारी यहांबूझो नासहलहै। अरजकरैंगी घरी द्वैकमें तिहारी अबै सोजराई सखिनकी चहलपहलहै॥ गोकुल के नाथ आये ग्वालनके साथदीजै सिगरी बिसारिजौन गुरुता गहलहै। अदबसों रहौबेअदबकीन कहौकान्ह बृन्दावन महारानी राधाको महलहै २९२॥

तथा। पैन्हें श्वेतसारी जरीमोतिनकिनारी द्युति दामिनि कहारी प्रतिजातरूपकन्दहै। हारहिये भूषण जराऊ भाल बेंदीलाल अधरप्रवाललाल औरेज्योति चन्दहै॥ दमकसमाकीहठीरमाउमाइन्दुमाकी रतिरूप उपमाकी करै गतिमन्दहै। नखतपतीसों मुखलखत गोबिन्दठाढ़ो तखतपै बैठीराधे बखतबलन्दहै २९३॥

तथा। कोठरी अँधेरीप्यारी बराति मशालकैसी दीपक शिखाकेद्युतिदुरिदबिजातेहैं। भनत दिवाकर कुचन गोलगोरीजोरी श्यामकेनिहारे दृगझपाकि झपाते हैं॥ शीशकेमहलमेंअनेकप्रतिबिम्बजाकेजादूसेप्रत्यक्षहोत जात करमातेहैं। भौनसे निकसिके अजिरजब आई राधे चांदनी करत मन्दचन्दभागिजातेहैं २९४॥

तथा। कंचनके बेलीसी नवेलीकेशरीरलागेनराति [illegible]वीदेवीसी मुखार ब्रजभभकी। [illegible]यारीनिभकी॥ के न रम्भाक[illegible] [illegible]गीन [illegible] आरसीउदास [illegible]मी [illegible] सुरसम्पा प्रकाश की जवासतातसभकी। भ[illegible] वो अंजन [illegible]गराग जावक के पावकके रंगनदुकूल देहचमकी[illegible]॥

तथा। बैठीचढ़ीचांदनीमें चंद्रमा बिलोकनकोउन्नत उरोजनते उछरे हरसपरें। दमाक्षमा केतक तिलोत्तमाहैं घनश्याम रमारति रूपदेखि धसकेधरापरें॥ जेवरजड़ा ऊमारजगमगें अंगनते नेवरजड़ाऊतेज तरुन तरापरें। राधेमुख मण्डल मयूषनतेमहाराज छूटिके छपाकरके ऊपर छरसपरें २६६॥

तथा। अमल अनंगके अनंदकी उदित भूमि जीति पियाबाजी दगाबाजी सीपसारीहै। कनकके पानसे उदरमें उदितद्युति त्रिबली तिहारीमें निहारीमैनहारीहै॥ रूपगुनचातुरी सो सुरनर नागनको जीतेमानिकंठाविधि सोहेरेख सारीहै। सौतिसुख उतरेकोपिय प्रेमचढ़िबेको कुन्दन की प्यारीपै रकारी शीशवारीहै २६७॥

तथा। कंकन करन कलकिंकिनी कलित कटि कंचन कँगूर कुच केशकरी यामिनी। कानन करनफूल कोमल कपोलकंठकंबुक कपोतग्रीव कोकिल कलामिनी॥ केसरि कुसुम कलधौतकी कछू न कांति कोबिद प्रबीन बेनी कारिवरगामिनी। कोककारिका सी कीनरीककन्यका सीकैधौंकामकीकलासी कमलासीखासीकामिनी २६८

स०। अलबेलीअलीपैधरैभुजको अंगराईजम्हाई चितै त्रिबली। सरकोशिरचीर गिर्यो कटिछ्वै पजनेस प्रभाकी जगी अबली॥ परबैजड़ी बालकी बेनीबँधीभ लकैं मुक्तालीक पांकथली। बिधुकेरथ चक्रत चक्रमनो कलकोंचुली नागिन छांड़िचली २६९॥

क०। चलत मरालनकी महिमा घटावै बैन बोलत

अचैनकरै प्रभुता पिकनकी । मुसुक्यात सुधाकोसोहा गसोसकेलिलेति बरनसो जीतै सुन्दराई सुबरनकी ॥ भनतकवींद्र वाकीनिरखि सुघरताई पाईहैदृगननेबड़ाई डीठिपनकी । मनते न भूलति भुलावैमनहीको वह चह चहेचखनकी लहलहे तनकी ३०० ॥

तथा । राधिकाकेचरणविराजे चारुमानिकसे मूंगकी फलीसीभली आंगुरीसुभाषैं हैं । गदाधरकहै करीकरसे युगलजानु छीन कटि केशरीसी बेषअभिलाषैंहैं ॥ पान सोउदर हेमकुम्भसेउरोजवर बाहुलतिकासीखासी का मतरुशाखैंहैं । इन्दुसो बदन कुरुबिंदसे अधरलाल कुन्दसे रदन अरबिंद सम आंखैं हैं ३०१ ॥

तथा । राधाठकुरानी पासवानी लियेपानीखरी आस पासचेरी चौंरढारैं देवदारसी । अंगराग अंगानिल गायबेकोल्याई रति अम्बरअमललिये फूलनको हारसी ॥ युगलकिशोरकहै नन्दकेकिशोरजहां जोरेकरजोहैं ज्योतिजिनकीचारसी । मोदकबढ़ायबेको तुरकीहराहैं लिये एक हाथ फूलगेंद एक हाथ आरसी ३०२ ॥

तथा । कुंतीपांचाली दमयन्ती ताराशकुन्तला कीआहल्याहू मंदोदरी पहिले सुधारेहैं । मेनका घृताचीरम्भा मंजुघोषाउरबशी तिलोत्तमाको तिनहूते हलुकी निहारेहैं ॥ विदुषसुकविभनैगिरारमाजमासिया मोहनीहूं रचि फिरि मनमेंविचारेहैं । राधेकोवनायविधिधोयेहाथ जामोरंग ताकोभयो चन्द्रकर झारि भये तारेहैं ३०३॥

तथा। ऐसीरूप वारीप्यारी हौं न देखी कामनारी जैसी वृषभानकी दुलारीजोनिहारिये। कंजकेसरिराशि जाके अंगनिसुबास बश आसपासभृंगनकीभीरहाथ झारिये॥ छाईज्योतिभूषणकीदूषणकोचन्द्रशोभामंदग-ति धारैपाये देखिबेस धारिये। खंजमृगमीनकीनिकाई ब्रजहोसनजूनैननकीद्युतिपरबारबारवारिये ३०४॥

तथा। वहचितवन वहसुन्दरकपोलद्युति वहदश निनि छबि बिज्जुकी धरतिहै। वहओठ लाजी वह ना सिका सकोरनिमें वहहावभावकै योंकौतुक करतिहै॥ कहै मनीराम छबि बरनिसकैकोवह रतितेसरसमन मुनिको हरतिहै। वहमुसकानि युग भौंहनि कमानि द्युति वहबतरानि नाबिसारीबिसरतिहै ३०५॥

तथा। बाटिका बिहारी अभिसारकी सिधारीभारी सांकर अँधेरीमें उजेरी कैसोकन्दहै। भादौंको बिषम मेहदीपसी दुरैनदेह नागरकेनेहकोसनेह द्दष्टिफन्दहै॥ शिवाजान्योनागरि पिशाचनि कमरूयाजान्यो मृगनि कलानिधि औछलीजान्योछन्दहै। बिज्जुजान्योघनघोर घटापटमोरजान्योभोरजान्योचोरनचकोरजान्योचन्दहै

स०। करतापतिकेउर आनँदकी सुखमायों प्रकाशन की सरता। रतिरंगसमै निज अंगनसों निशिमें द्युति दामिनिकीहरता। रघुनाथ भनै बिरचीविधनै लिहिकी धनिधन्यहै चातुरता। रतिरम्भाशचीयुतमेनकाहूलखि लाजती बालकी सुंदरता ३०७॥

क०। भानुसेअधरबिम्बकृषणसे चिकुरप्यारीशीत-

करआनन छटानवगरायोहै । हरिसोहेलंकबंकभृकुटी कमानमैन नयन खरसानदन्तदामिनिदुरायोहै ॥ वदन दिवाकर उरोजशम्भु गंगाहार नखन सरस्वती विमल धारछायोहै । देखिनापरत है चलाकी कमला सनकी जिन वनितामेंसारेदेवता बनायोहै ३०८ ॥

तथा । भालमें विशेष वास अधर बुझावै प्यास लोयनके कोयेशालग्रामको प्रकाशहै । भृकुटी पिनाक नाक मघवानिवासपुर पाञ्चजन्य ग्रीवा पारिजातके सुवासहै ॥ दिवाकर कहै कान करन प्रयागतीर्थ वेनी शीशशेषदांतहीराकेउजासहै । एतेद्रव्यदेवामिलेवनिता मिलतअंक ताके परिरम्भनमेंकौनपरिहास है ३०९ ॥

तथा । फटिकशिलानिसोंसुधार्योसुधामंदिर उदधि दधिको सो अधिकाय उमगेअमंदु । बाहिरतेभीतर लौं भीतिना दिखैयेदेव दूधको सो फेन फैल्यो आंगन फरसबंदु ॥ तारासीतरुनि तामें ठाढी झिलमिलहोति मोतिनकीज्योतिमिल्यो मल्लिकाकोमकरंदु । आरसीसे अम्बरमेंआभासी उज्यारी लगे प्यारी राधिकाको प्रतिबिम्बसोलगत चंदु ३१० ॥

तथा । मांगसिंदुरारी तनअरुणतरुण ज्योति बेंदी रविबन्योछविपुंज उघरतुहै । सघनजघनकुच सकुच दुबीचदब्यो उचकिउचकि जङ्क लचकयो परतु है ॥ जोबन वनकबने तनमें तनक देवभूषण कनक मणि आभाउभरतुहै । वेसरिको मोतीसुधाविंदुसो चुवतमुख इंदुसों चुयत बूडि बूडि उछरतुहै ३११ ॥

तथा। बालकोबिलोकि मनमोहनकैगयो हालयेरी मेरी वासों लगन लागीअति है। वादिनते वाहिसुपने में निहारि सदा तलफत नींद कहूं नेक जो परति है॥ भोजन न भावै कछुबातना सुहावै मोहिंकोन पीरपावै परीमदन विपतिहै। वाकी छबि चित्ततें बिसारी बिसरतिनाहिं निशिदिन नैननके नीरहींरहतिहै ३१२॥

तथा। चोवासोंचुपरिकेशकेसरीसुरङ्ग अङ्गकेसरिउबटिअन्हवाईहे गुलाबसों। अतर तिलोंछिआछे अम्बरलैपोंछिओंछि छतियांअँगोछि हँसिहँसि रसभावसों॥ कटि मृगराजकेसी मुखहै मयंकमानो तीखेदृगदेवगति सीखीमृगसावसों। पैन्हेपीरोचीरचारुचौकी परठाढ़ी भई चांदनीसों प्यारीपै उज्यारी महताब सों ३१३॥

तथा। केसरिकलितपचतोरियालालछितलाल लहँगा लसत लङ्कलोनेपर घेरदार। जगमगे जोडिलजड़ाऊ पगमायेजेच पङ्कज प्रभानि प्रभा पांवडे मेड़रदार॥सदा नन्दसुन्दर सघनघुंघुवारेकच कंचुकीपेंडारे अहिकारे मनो फेरदार। ऐंड़दार ऐनानि मरोरदारतोरदार करत कजाकी कजरारे नैन कोरदार ३१४॥

तथा। योवन उज्यारी प्यारी बैठीरंग रावटीमें मुख की मरीचें वो दरीचेंबीच झलकें। भूधर सुकविबांकी भौंहें मनमोहें खरी खंजनसीआंखें मनरंजन वेपलकें॥ शीशफूलबेंदी बंदीबीरी और चन्दनकी चन्दनकीछवि हियेबीचबीच झलकें। कोरवारीचूनरी चकोर वारीचितवनि मोरवारी बेसर मरोरवारी अलकें ३१५॥

तथा । गरब गुरजप चढ़ाई तोपकोप करि सौतिन जखीरा कियो योवन जमाकोहै । भनतकबीन्द्र अभरन भार भारीभट नूपुरनगारे नौबतीनको भमाकोहै ॥ मैन गढ़पति आगेलड़ै नैनसैनदैके छूटत कटाक्ष बामलागै उरजाकोहै । हांको चहुंघाको करि प्यारो लेन चाहै प्यारी तेरोरूप गढ़ग्वारिय हूते बांकोहै ३१६ ॥

तथा । रातहरीचांदनी बिलोकिबेकोरनिवास सगरी बुलाईमोद मंदिरमेंभरिगो । रघुनाथतासमैकीशोभाकी समाजदेखि रीझिरहीमोपै न बखानकछुकरिगो ॥ घूंघुटके खुलत दुलहिनीकेआननते दशहु दिशानमेंप्रकाश ऐसोअरिगो । ढरिगोगुमानतम सौतिनके जीको भटू तारन समेत तारापति फीकोपरिगो ३१७ ॥

तथा । रङ्गभरीरसभरी सुन्दर सुगन्धभरी सुखभरी पैनऐन नैनमैनकासीहै । दर्प्पणसी देहतैसी नेहकीनबेली नईब्रजबनितान ऐसी सुरपुरबासीहै ॥ आलमसुकबिलोने सोनेके सरोजहीते फूलहीके भारभरे पानकी लतासीहै । चन्दनचढ़ायचारुचांदनीसी छायरहीचन्द्रमासी मोतीसी चमकचन्द्रमासीहै ३१८ ॥

तथा । रगमगी सेजपर जगमगी शोभाचारु मणिमय मंदिर मयूखन अथाहकी । उदयनाथ तामें प्राणप्यारीअरु प्यारेलाल कोककीकलिनकेलि करतसराहकी ॥ किंकिणी किधुनितैसी नूपुरन नादसुनि सौतिनके बाढ़त बिषाद बाड़गाहकी । त्रिभुवन जीतिकै उछाहकी बजतमानो नौबतरसीली मनपंथपादशाहकी ३१९

तथा। राधा बनमाली संगकरत अनङ्गऐश घिरत चहूंघा बासफूलनके ढेरकी। उदयनाथसुकवि सोहाई सखी श्रवणनकीकिंकिणी झनककाम नौबतकोजेरकी॥ मोतिन को हार चारुलटको कुचनपर अटको योंडोलो करै शोभाघन घेरकी। पांत पांत होकर नखत सब देत मनो पुण्यहेतु पूरण प्रदक्षिणा सुमेरकी ३२०॥

तथा। कीनीजानआसनमें दुनईशरासनसींगरेभुज पासनसोंपकरिछबीलीको। कालिदासललकि लपेटिले-तदामिनिज्यों श्यामघन द्युतितनगरगरबीलीको॥गह-त कठोर कुच कुंकुम कनकरंग चुम्बनकरत अंग अंग चटकीलीको। मैनमददूम दूम तूल सम तूम तूम लेत मुखचूमचूम राधिका रसीलीको ३२१॥

तथा। राधिकारसीलीकामसीलीमिजसीली गुणगरब गसीली गरोगहतगुपालको। कालिदासमृग मदपान पायकर रंग फूली फूलकलित ललित बनमालको॥ पियत पियारी दोऊ अधरन धरि धरि अधरमधुरमधु सूदन सुभालको। रंगरसहूमें सबछके रङ्गहूमेंकरदेकर कपोल मुखचूमै नंदलालको ३२२॥

तथा। कञ्चनसेगातजलजातसेलजीलेनयनभृकुटी कमानमानो मैनकीमरोरीहै। रञ्चकउरोजकीउँचाईत्यों ललाई अधरानकी मिठाई चारु चौगुनीचभोरीहै॥कहैं नन्दराम लरिकाईभरभोरे बैनप्यारीवैसगोरी वृषभानु कीकिशोरीहै। श्वेतरंगसारीअंगओपतेदुरंगहोतिजानि परैकेसर कुसुमरंग बोरीहै ३२३॥

तथा। याहीतेन जैयततुम्हारेकहेकुंजवन औरनकेमारे कलपैयतनभौनमें । दूजे आजुदसौंहित हाँसीह [illegible] में आलेहैंघते फूलतूल लौंलगोनिमें ॥ कहैंनन्द रमनके कौरप्रसुनकितीर दौरिपरै देखतजल ताई आदसौंक [illegible] है चकोर आली मुखमेरो चन्द जालिसांच्यों [illegible] भूंठीजाय हौंलसें ३२४ ॥

तथा। शशिको ऐसो वदनजाको कनकको ऐसोरूप कुन्दकी कलीमानो डारहूसेतोरीहै । चन्द्रमाकी ऐसी उजियारी केसरि कुसुम्भ भारीपहिरे अमसारी दिनन हूंकीथोरीहै ॥ कहिवेको नारी वृषभानुकी दुलारी श्री नन्दकी सवाँरी रुचिरुचिरंगमें वोरीहै । येहो यशोदा रानी कैसेको सनेह होत तेरोकृष्णकारेहमारी राधिका जी गोरीहै ३२५ ॥

तथा। रोहिणी रमणकी मरीचीसी सुखदसीरी सो- हिनी सरसमहामोहिनीकीथलसी। श्रीपतिसुकविवाल रविके किरणऐसी मदनमुकुरसी अमल गङ्गाजलसी ॥ ग्वालिगरवीली तेरे गातकीगुराई चपलानिकी निकाई ऐसी लागत सहलसी। माखन महलसीप्रसूगकेचहल सीगुलाबके पहलसी नरममखमलसी ३२६ ॥

स०। मदमैनसों यों अलसानी लसे जनु जागीभले भरि यामिनीहै। मृदुबैनसुने हनुमानकहैंकहा कोकिल मंजु कलामिनीहै ॥ चकचौंधकालागैलखे आँखियांतब कैसे कहों रति कामिनीहै । परयंकपैसोहै सोहागभरी यों मनो थिरकै रही दामिनीहै ३२७ ॥

तथा। ललना मुख इन्दुते दूनौं लसै अरविन्दबसै चख चारसीलै। मुसक्यानि मनोहर ज्यों न महा कहि मिश्र जुबान सुधारसीलै॥ तन ओपकरै द्युति चम्पक लोप शची सकुचै अति पारसीलै। कहि आवे न रूप सिपारसी यातें दिखावें लला कर आरसीलै ३२८॥

तथा। जासुकी दीपति दीपते सौगुनी दामिनि कुन्दन केसरि आइका। काम की बानि सदा मृदुबानि सनेह छकी छिति में छबि छाइका॥ अङ्ग अनूपम को बरणी सब अङ्गन प्रीतमको सुखदाइका। मानो रची छबि मूरति मोहनी श्रीधर ऐसी बखानतनाइका ३२९॥

तथा। कोरतिहै अरु कौन रमा उमा छूटी लटैं निचुरैं गुंधी मोती। हाय अनूठे उरोज उठे भये सैन तुठे भये औरहैं कोती॥ त्यों कवि ग्वाल नदी तट हाय खड़ी लड़ी रूपकी सुन्दर ज्योती। मोरतिनार मरोरति मोहन चोरति चित्त निचोरति धोती ३३०॥

क० जोपै मुख प्यारीको बताऊं चारुचन्द्रसो मैं तोपै रहै रातही मैं ज्योतिनके जोहनी। याकोतो दिवाकर के तेजहूते तेज तेज जोपै कहूं भानुतौ न रैनहाय सोहनी॥ ग्वालकवि यातेमुख मुखमाहिं मुखहै जूसो मुखसोसोई अति आनन्दकी बोहिनी। आंखतेनदेखी सुनीकानतेन ऐसी ज्योति जैसी वृषभानुकी दुलारी मनमोहिनी ३३१॥

तथा। गोरी महा भोरी तेरे गातकी गुराई देखि दिन दिन दामिनी की छाती होति खुधासी। श्रीपति कमल

की कसानी मखमलकी बद खसानी लाल की ललाई लागे मुदासी ॥ मोमनिदरतसो प्रकाशको हरत जोम रोमरोम छुरतक्षपायनकी क्षुधासी। सुखमाकोऐन मई हीतलकोचैनमईपविनकोभैनमईनयनकोसुधासी ३३२

तथा। चौतनी चकोरचहुंओर जानिचन्द्रमुखीरही बचि डरनि दशन द्युति दम्पाके। लीलि जाते बरही विलोकि बेनी बनिताकी गुही जौन होती तौ कुसुमसर कम्पाके ॥ रामजी सुकवि ढिग भौंहैं ना धनुष होतीं कीरकैसे छांडतेअधर बिम्ब झम्पाके। दाखकैसे भौंरा झलकत ज्योति योवनकी भौंर चाटिजाते जोन होती रंगचम्पाके ३३३ ॥

तथा। कुन्दनसे अङ्गनव योवन तरंग राजै उरजउतंक लंक छान छवि देतहै। बादले की सारी दर दामिनि किनारी दार बदनकी ज्योति मानो हूसन समेत है ॥ शोभनाथ निरखि सुजान अंगिरान प्यारी दोऊ करजोरि मुखमोरिहित चेतहै। सदन मलाहके सलाह सोंउछाहभरी मानोरूपसागरकी ठाढ़ीथाहलेतहै३३४॥

तथा। आननकी उपमा जो आनन को चाहैं तऊ आनन मिलैगो चतुरानन बिचारेको। कुसुम कमानके कमान को गुमान गयो करि अनुमान भौंहरूप अति प्यारेको ॥ गिरिधरदास दोऊदेखिनयन वारिजातवारि जातवारिजात मानसरवारेको। राधिकाकोरूपदेखिरति कोलजातरूपजातरूपजातरूपजातरूपवारेको३३५॥

तथा। उज्ज्वल अखण्ड खण्ड सातयें महलमहा

मंडलछवारो चन्द्रमण्डलकी चोटहीं। भीतरहूलाल-
नकी जालनि बिशाल ज्योतिबाहिर जुन्हाईलगी ज्यो-
तिनकी जोटहीं॥वर्णतिबानी चौंरढारतिभवानी करजोरे
रमारानीठाढ़ीरमनकीओटहीं।देवदिगपालिनिकी देवी
सुखदाइनिते राधाठकुराइनिके पांयनपैलोटहीं ३३६॥

तथा। आईबरसानेते बुलाईवृषभानुसुता निरखि
प्रभानि प्रभा भानुकी अथैगई। चक्र चकवानि के
चुकायचक छोटिनसों चौंकत चकोर चकचौंधीशोचकै
गई॥ नन्दजूके नन्दजूके नयननिआनन्दमयी नन्दजूके
मन्दिर निचन्दमयीछ्वैगई। कंजनिकलिनमयीकुंजन
अलिनमयी गोकुलकीगलिन नगिनमयीकैगई ३३७॥

चालवर्णन॥

क०। साजीपीतसारी लालअंचल किनारीमांगमो-
तिनसवाँरी वृषभानुकी दुलारीहै। चलति मरालगति
बेंदीभालछाई आतिमानो इंदुमध्यसूर सुखमासवाँरीहै॥
कहैकविश्रीगोविन्दगोपिनके वृन्दनमें राजैमनु तारकन
बीचहिमिकारीहै। नैननचकोरतें निहारतयमुनतटगोप
संगआजुकहूंआवै गिरिधारीहै ३३८॥

तथा। चलतगलीमें ललीसहज सुभायनसोंलखत
गरूरताबिलात मारकामाकी। रम्भाशचीद्रौपदीबिलो-
किजिहिमोहैंतबकौन कहैमैनकादि और सुरभामाकी॥
भनै रघुनाथशील शोभाकी निधानबाल मैनमदमाती
कंज पदसुखधामाकी। लजतसुडारयों कपोतमदत्याजे
देखिसरसमरालते सुचालबर श्यामाकी ३३९॥

तथा । छबिनकीछायासबसुखनकी सुखदायामोहनीकीमायाकीधौंकायाहै अनंगकी । बलिभद्रभागकीसोहागकीसहायककीप्रीतिकी वकीलसखीयोबनके संगकी ॥ चित्तहीकी चातुरीकिआतुरे चरणकी कीकातुरीकपट प्रीतिवर्दीसवअंगकी । पीयसुखदैनी इन्दुबरनैनतेरी गति सारसमरालगजराज गतिभंगकी ३४० ॥

तथा । कञ्चनकेखम्भ कैधौं ईंगुरसों बोरिराखेगोरे गद्‌गदे चोरेचितहि असोलये ॥ केलिके निधान कैधौं मदन बिमानरूरे सरस सवाँरे प्यारे करनकल्लोलये ॥ जंघनयुगलदेखिकदलीलजाय बन गहन दुरी रहैं बिराजी छबिनोलये । करिहि बिलोकिके पटाकि डारै बार वार ऐसेसुखदायक अमोल मृदुगोलये ३४१ ॥

स० । जाहि बिलोकि मरालहुलै कुलजाइरमै सरमै सरमाई । त्योंसरिको करिकै करिहू भरिलाज उरै रहैं शैल सकाई ॥ श्रीरघुराज सुनो चितदै सति रुक्मिणि गौनहै मंजुमहाई । उर्बशीमैनकै रम्भौतिलोत्तमै कीधौं इहैगति मंदसिखाई ३४२ ॥

क० । घाँघरेकीघूमनि घनेरीछबिघूंघुटकी छाईसरसाई धुनिमंजुल मँजीरकी । लंककी लचनिकुचभारकी खिचनि अंगरागकी रचनि नैनचोरै गतितीरकी ॥ कहै नंदरामतैसे मुरलीमुकुटकटि तट पीतपटजो हरतमति धीरकी । गोरे गोरे गातके निहारे नंदनंदनत्यों सांवरी सजीली देखीनंदनी अहीरकी ३४३ ॥

चतुराई वर्णन ॥

क०। मंजनमें अंजनमेंपुनिद्दगकंजनमें हेरनमेंटेरनमें सैनमेंसोहाईहै। सैननमें बैननमें कंचुकी उतारनमें अम्बरकेधारनमेंमंजुतासमाईहै॥ भनैरघुनाथदेतपान खानहूंमें बहुहँसबतरान औरमानमें मिठाईहै। चालमें जँभाई अंगराई मनमोहनमें देखो जहांछाई तहांचारु चतुराईहै ३४४॥

तथा। आननकीओप कहिबेकेकाज बलिभद्र कबि कोरिउपमान मनमेंकसतु है। जोई भाउ देखत अघात नाहीं नयन नेक सोई भाव पीतम के मनमें बसतुहै॥ गोरोबड़रारो त्रिय सुन्दरबदनतेरो बोलत जँभातमुसुकातहुलसतुहै। मित्रकी किरनि परसत कोकनदमानो छिनकुमुदित होत छिन बिगसतुहै ३४५॥

वस्त्र व आभूषण आदिके कबित्व व सवैया ११॥

सोरह शृङ्गार वर्णन ॥

क०। मंजन सुनेह शील बोलन चितौन चाल मृदु मुसुक्यानचारुगूंधन सुबैनीकी। सेंदुर सुमांगभाल तिलक द्दगंजनहूं बीरीमुख चिबुक मसीकनकेदैनीकी॥ भनैरघुनाथ अंगरागबरकेसरिको करमेंहँदीकी दैनसब सुखदैनीकी। जावकसमेत १६ लसैंकंजपदकैसे आज देखत बनैहै कान्त वहिमृगनैनीकी १॥

बारहआभूषण वर्णन ॥

क०। बेंदीभाल नासाबेस बेसर तरौनाकान कण्ठसिरी कण्ठहार हीरामणिसंगमें। बाजूबंद कंकन अँगूठी

छलाछापयुक्त नीवीबन्दकिंकिणीसोहाईरसरंगमें॥ भनै रघुनाथ पांयनूपुरमंजीरमंजु राजत रँगीलीभरीयौवन तरंगमें। लीन्हेंप्रतिबिम्ब चन्द्रबिम्बकी निकाईलखे बारहूअभूषण बिराजैबालअंगमें २॥

सारीवर्णन॥

क०। कंचनकीबेलीपै तमाल तरुछायाकिधौं कैधौं घटाकारी आनिछायरही छनपै। कैधौं यमुनाजलमें कमलक दिखातादिव्य तारागणचन्द्रभानपुंजाविञ्जुघनपै। भनैरघुनाथ कहौं कहउपमादैयाहि हारचोहेरिचिदत मकोभोर मनपै। कैधौं जरतारीमणि मोतिन किनारीदार सोहतहै प्यारी इयामसारीगोरतनपै ३॥

तथा। खेतसारी सोहतकिनारीदारजगमगी सारीसरीकोरनसोंमोतिनकोसाजरी। चन्दाथिरशरदकोमेघ ज्योंउमड़िआयो ताड़ित समेतकैधौं शोभाभरयादरी। चांदनीतरैयानैनमृगनकीपालकीपै चढ़िचलीशिवनाथसहित समाजरी। राकाकीसीमूरतिबिराजमान बालवर पाहुनी परमआई शरदके आजरी ४॥

लहँगावर्णन॥

क०। वरकमखावलाल ललितजरीसोंजगौ बूटाबेलबेसभरो रतन अथोरीको। बनतविशालजालदार मणिमोतिनकी नहिंउपमानहै त्रिलोकतिहिंजोरीको। भनैरघुनाथ ताहि देखत शचीहूलची मोही रतिमानगयो धनपति गोरीको। राजत रसीलो चटकीलोकटिकेहरिमें शोभापुंजघूमदारघांघरोकिशोरीको ५॥

स०। घेरिरह्यो कटिघांघरोघूमि मनोघनघोरि उठो करि शोरन। चौंकि चितै वहि कुंजनते चहुँ ओरनकूक करीबनमोरन॥ बूटनलूटनप्राणलगे जरतारीकिनारी लगी सबछोरन। प्रातचली वृषभानलली लहकैलचि लंक परी झकझोरन ६॥

नीबी वर्णन॥

स०। बातकहै अबलाजबहीं तवहीं उचकै लखि मान भरीसी। जोहृत देतबधूमुखतैसइ नाचतलाजहिं छांड़ि डरीसी॥ योंचुनिकै कसिराखतहै पियके ललचावन काज धरीसी। नीबीबिराजत नाभि मनोहर कै शिवनाथ सनाथकरीसी ७॥

कंचुकी वर्णन॥

क०। नीलरंगवारी जरतारीजरी हीरालाल लोहित किनारी हरीमानिन गसीहैकै। कैधौं चक्रवाकन पै छाईहै क्षपाकी छबि तापै नखतावलिकी ज्योतिहीलसी हैकै॥ भनरघुनाथ किधौंसघनघटापटमैं दरशत दीप्तिवान युगुल शशीहैकै। सम्पुटसरोजनपै आभाहैमनोज किधौं उनित उरोजनपै कंचुकी कसीहैकै ८॥

तथा। राजै सुरमन्दिरमें सुन्दरि अनन्दमान मानो हेमशैल खोह शशिछबि छाज्योहै। बिम्बकुचकुम्भन पै श्यामता अमन्दलसे तापै श्यामकंचुकी निहारितम लाज्योहै॥ भनरघुनाथहियेलालजनकीमालमध्यकुलिश विशालएकअतिद्युतिसाज्योहै। कैधौंचन्द्रशेखरपै राहुह्वै छटापैघटातापैतड़ितामैंआनिचन्द्रमाबिराज्योहै ९॥

रोरीविन्दुवर्णन ॥

क०। कैधौं चन्द्रमण्डलमें मंगलप्रकाशकियो कैधौं सुधासिन्धु मध्य फूल्यो अरबिन्दुहै। पीय सुखदानहै गुमान गजरम्भारमा हतरतिसान मान सौतिन को निन्दुहै ॥ भनरघुनाथ नेमसागर उजागर है आगर सोप्रेमक्षेमशोभासुखसिन्धुहै। नन्दललानिरखिनिहाल होतजालबाल देखेतुवभाललालरोरीकोयेबिन्दुहै १०॥

तथा। वपुवक्षसो लगायो भायोगुरुबन्धुजानि भूमि सुतभेंटत कैठ उप नरिन्द है। कीधौं रविस्वारथी कुरंग रथस्वारथीभो कीधौं निज नारिलिये उरपर इन्दहै ॥सौतिनके गर्व दहिवेकोहै दहन कन बलिभद्र सबसुखदेन दुखनिन्दहै। राग पियमनको पराग सुख पंकजको भामिनीके भाल कीधौंबन्दनको विन्दहै ११॥

ताम्बूल वर्णन ॥

क०। सागरसुधामें किधौं सुरगुरु शोभावान कंज तें किधौं या अनुनाई फलकतहै। लालनको जाल के दिखात रतनाकरमें कैधौंरूप अम्बुधतें छबिछलकतहै॥ भनरघुनाथ गोरताईको मिलाईपुन सरस निकाई की रतीहू ललकतहै। पानपीक लीककी लखाई परै कंठ बीच प्यारीमुखचन्द्रमें ललाई झलकतहै १२ ॥

तथा। ओंठसुठपुरटबनायेबिधिकारीगर जड़तचुनीन मनमोहन सुमरके। सुन्दर सुढारुचारुसुन्दरिके कानन में राजै पान चारुरूप मानो दिनकरके ॥ भन रघुनाथ हे न मोलको कुबेरकोश डोलतन मीनपत्र कैधौं देवतर

के। रतिमद नाखा किधौं पति अभिलाखा दैन साखा प्रेम पातकै पताका पंचशरके १३ ॥

मेंहदीबुन्दवर्णन ॥

क०। कैधौं कंजपातनमें व्रज मकरन्दबुन्द सौतिनको मानभयो देखदेखऊनरी। कैधौंप्रतिबिम्बनमें झलकत पद्मराग लाल यों प्रबालकी भईहै द्युतिन्यूनरी॥ भनरघुनाथ कंजलोचनी ललीके करमेंहदीके बुन्दलाल शोभाकुंज दूनरी। प्रीतमकी प्रीत किंकरी कै दैन काजकिधौं दासी रंगरेजनी बनाई बर चूनरी १४ ॥

महाउरवर्णन ॥

क०। वारौंमुखचन्द्र चन्द्रकापै चन्द्रकाकीछटा वारौं शचीरम्भा काम सुन्दरी निकाईपै। वारौं कंज कोमल गुलाब गुलखैरा फूल प्यारी मृदुमूल कंजपद अरुणाईपै॥ भनरघुनाथ जपा दाडिम कुसुम्भ गुंज रम्भा जायसोनके प्रसून रंगछाईपै। वारौं पद्मरागलाल मानिकप्रबालरंग तेरेपदपंकजकी जावकललाईपै १५ ॥

तथा। कीधौंबन्धुजीव सेवै चरणसुगन्धकाज सोहत सकल शुभ रजोगुन सीवहै। कूलकूले सुखके कलासी हारे कोकनद बलिभद्र करकस नाल छिद्रगीवहै॥ कनककी भूमि पूरिपूरिरह्यो भारतीको ईंगुरके आखर बसतपीयजीवहै।रतिरसरंध्रहै रसदुरसतिय तेरेपायेंसोहै जावकको रंगकै शृंगारन की सीवहै १६ ॥

शीशफूलवर्णन ॥

क०। शीशफूल शीशपैरतीशके निशानकेधौं लाल

लेभुजंग दावे मुखमें सोहातहैं। भनतदिवाकर की य-
मुनाकेतटपर तोयपरफूले जलजात सरसातहै॥ हारोहै
लडाई कैधौंराहुने क्षपाकरते लागेचोटग्रीवमानो लोहू
उगिलातहै। कैधौं कालेमेघमें विभासमानमंगलहै मा-
र्त्तंडज्योति पेखिपेखितरसातहैं १७॥

भालसहटीकी वर्णन॥

क०। पाटी तरे बन्दनी जटित पोखराजराजें भा-
लरहू मोतिनकी भूलत रसालहै। भनत्तदिवाकर सुटि-
कुलीजडाउदार भानके नखत कैधौं चारासुत आलहैं॥
देवनके गुरु शीश सोहै बिन्दु केसरको येसब एकत्रह्वै
वढायो छवि जालहै। हीरामणि माणिकते बन्दनी चम-
कदेत ओपके उजास कैधौं मैनकी मसालहै १८॥

तथा। अमित प्रभासो जासु परम प्रकाशपुंज त्रि-
यमन आसदास गुनियन साज्योहै। जिहि लखि सौत
को गुमान ध्वांत भाज्यो हेम बेंदी वेश बालके सुदेश
भालराज्योहै॥ भनरघुनाथ जडी हीरनकी कनी मनो
ताकेबीचमानिक अनूपछबिछाज्योहै। तारागनआसन
बनायपायमान महा कैधौंभानमंडलमें मंगलबिराज्यो
है १९॥

नथवर्णन॥

क०। कुन्दन कमायो बिध सुघर सुनार मनो रतन
जरायदेखि मुनिसन नथकौ। पीय युगनैन ऐन फांदब
फँदाहै किधौंसुखदसदाहै निजनायअरथकौ॥ भनरघु-
नाथप्रेमकुंडहै अखंडमारतंडकी कलाकैसेतमात्नध्वांत

मथकौ। अकथ अमन्द नाकनथ नवमंजुकिधौं प्रीति कुंज पुंज चक्कर कैधौं मैन रथको २०॥

तथा। नैननटवानके निकसिबेकी कुंडलीकी पारस अदसकै चरणचन्दरथको। किधौंबलिभद्रकीन्हों सुक्षम सुहाग जानि जातरूप कुंडपिय मणिकेसपथको॥ किधौं जगजीति धामदीन्हों है कि तोहिं बाम कामदेव चक्कवेकी चक्र आप रथको। नीकी नासापुटनीकी नथ नईकिधौंनाहचितकान्दिबेकोफंदारोप्योमंनमथको २१॥

लटकनवर्णन॥

क०। जड़ेहैंजवाहिर हीरामोतीलगेआसपास तारागन मध्यमानोबैठोबड़ोचन्दाहै। कीधौंसरसरसगुलाब बीचसांधिराखो कीधौं अतिप्यारोलागेओसकैसोबुन्दा है॥कीधौंयशवन्तसिंहशोभाको अंकूरबनोमेरोमनमोहिबेकोकीन्होंकामफन्दाहै।भूमिभूमि झुकिझुकि झुमाईलत अधरनपरलटकननहोयप्राणफांसिबेकोफन्दाहै २२॥

बुलाकवर्णन॥

क०। कुन्दनकीतारकींसंभारी बरवारीबेधि बंशीसस बीचलगी मणि द्युति भारीकी। नासा मध्य लसत्तबिनोदरसपागीसदा सौलमदमथनमनोजमतवारीकी॥ भन रघुनाथ चाखो अधरसुधारसको डोलतहै हंसबतरानिमें दुलारीकी। पतिअभिलाष पूरणकरनहार साखसुबरण मुद्रा की बुलाकवह प्यारीकी २३॥

करनफूलवर्णन॥

क०। परमप्रकाशवानशोभाकेनिवासदुचौ कैधौंये

प्रभाकरकेमंडिलअतूलहैं। जगमगहोतज्योतिज़ाहिर जवाहिरकी यदिपदुरयहदिब्यहरितदुकूलहैं॥ भनरघुनाथपीनजटितमनीकनसों रबिद्युतिछीनैंकीधौंतारातरुमूलहैं। पियहिय कर्नफूलकलपफूलसेहैंयहतेरेकर्नस्वर्णके सुवर्णकर्नफूलहैं २४॥

तथा। जरितजरायजगमगतसहसकरबालिभद्रसुखकीकुमारिकाके भानहै। धरतत्रधारहैअपारतीछनैननको कैरवअनंगआय रोपे खरसानहै॥ उपमानआन मनरंजन बिहारीरीति ताउबकेतारजिनैंजानतजहानहै। चन्दरथचरनकीकामचक्रवैकी चक्र कीधौंतियतरलतरौनातेरेकानहै २५॥

लोलक वर्णन॥

क०। कंचनमणीहै अर्धअर्ध दोई नीलमणिगोल गोलअमलरहीतेछबि छायकै। सोहैश्रुतिसुन्दरीसुमानहतसौतिनको पतिमके हीतल मनोभवजगायकै॥ भन रघुनाथ किधौं बीरमें सिंगारबसो कैधौंग्रस्योभानराहुगीकी संधिपायकै। धनअलकेश कौनमोलयों अमोल रहे डोल लोललोलककपोलन पै आयकै २६॥

बाली वर्णन॥

क०। विरचिविचित्र विश्वकर्माके अनन्त बुद्धशुद्धशुचिसोनेकीसम्हारीसुखसालाकी। हीराकनीजड़ीमणिमोतिन लड़ीसेंमंजु उमड़ मरीचीगहीफैलद्युतिजालाकी। भनरघुनाथरतराजती छबीलीश्रुतयुतअतिशोभारूपरुचिर बिशालाकी। होतहैंनिहालदेखिलालबालि-

हारी करैं जाल द्युतिवारी बरबाली बरबालाकी २७॥

कराठसिरी वर्णन॥

क०। सोहतहै प्यारीके गलेमें हेम कंठसिरी जाहि देखिसौतिनकोदूरभो अनन्तमान। जटित अनूप नील मणिकनतामैं पुंज निजकर मानौ रची बिधिबर शोभा वान॥ भनैरघुनाथ किधौं गोपिनको वृन्दमान घरबहु रूप मिले चतुर सुजानकान। जानतुंड शरद निशाकर प्रकाशाकिधौंसोनजूहीफूलनपैबैठेअलिनन्द आन २८॥

हार वर्णन॥

क०। सुघरसुबुद्धी बिश्वकर्म्मासम कारीगर अवा-कोचित चंगसोचढ़तहैं। डोलतफिरतनहिं खोलतहिये कीपरि मेरीकरतेरीसोंह तोजसपढ़तहैं॥ तुमतोसुघर स्यानीकहिये सबहिबात चलियेजरूरबैठे कहोकाकढ़त हैं। मेटोमनबाधा हठीपूजे मनसाधावेतो रातौदिनराधा राधाराधाहीं रटत हैं २९॥

तथा। बैठीकुंजभौनमहरानीसुखदानीसबै किन्नरी नरीनये सुरीन सुरगावतीं। कौरैकंबलसी सुवामेंइन्दु आननसी प्रमुदितझूमिझूमि पगसहरावतीं॥ लैलेरी सुगन्धैं गुंजैंधीरेधीरे प्यारीपर भौंरनकीभीरहठी ऐसी छबिछावतीं। गोरेगोरेगातनपै नवलकिशोरीजूके श्या-मरंगबोरेमनोचौंरनचलावतीं ३०॥

स०। हीरनकेहठीहारगरे गजरागजमोतिनकेसुख दानी। जोरै जरीभरीमांगासिंदूर सुरम्भारमारतिरूपन सानी॥पन्नाप्रबालनलालनकी पसरीकिरणैंसुखमासर-

सानी। कोहैत्रिलोकमेंमोहैनहीं लखिसोहै सोहागिनि राधिकारानी ३१॥

क०। केसरअगरखसचन्दनलगायोभौन अतरपुतायोभो सुगन्धचहुँओरीहै। कंचनफ़रशमखमलकेबिछौनाबिछे जरीकेबितानआसमानजनुजोरीहै॥ आसपास चन्द्रमुखीबिंजनचंवरढारैं लीनेपानदानकीने रतिद्युति थोरी है। सुखदानभरी रूपकेगुमान आज स्यानकरि बैठीवृषभानुकी किशोरी है ३२॥

तथा। करनतरौना जगमगतजराऊतापै दामिनीदमकचारुचपलाबिशेखोतौ। सुन्दरसुघरमनमोहनसुजानहठीइन्दीवरलोचनसुफलकरलेखोतौ॥ मोतीगुहेमांगमध्यतारागंग धारकिधौंभागवा सोहागकीबनाईविधि रेखोतौ। मृगमदाबिन्दुदीने कोटिचन्दमन्दकीने राधे मुखचन्दब्रजचन्दचालिदेखोतौ ३३॥

तथा। पियहितकारीक्षीर फेनसीसम्हारीसेज मैन मदवारीशोभा सोहतबदनमें। मोतिनकिनारीवारी हठी सेतसारीशीशकैधौंदामिनीकीद्युतिराजतरदनमें॥ कोटि कोटिसुखमासीमंजुघोषा औतिलोतमासी रम्भारतिमैनकासीवारियै अदनमें। सुखसरसानी कलकोकिलकी बानी सुरगावैसुररानी ब्रजरानीकेसदनमें ३४॥

तथा। फिरतकहांहैबीरबावरीभईसीतोहिं कौतुकदिखाऊंचलिपैंडे कुंजद्वारीके। निमिषनिहारैडीठ कितहुंन टारैमार नन्दकेकुमारमैन सैनसुकुमारीके॥ करनपसार करद्वगनलगावैहठी बशपरैगरबीलीग्वालसुकुमारीके।

आईदेखिहौंहू औदिखाऊंतोहिं चलिलालचरणपै लोटै वृषभानुकीकुमारीके ३५ ॥

तथा। झूमिझूमिआयेघूमिघनेघनश्यामआलीकूकै काकपालीकामपालीबरसातके। मणिस्फटिकचन्द्रकांत शुचिहीराहेरमोतीमीन बंशजबराइबड़दामाके ॥ भनै रघुनाथवही साजतरसीलीग्रीव कैधौंयह शोभासिंधु सींवतनकामाके। कैधौंगंगधारगरे हेमगिरिआई यह राजतहै कैधौंचन्द्रहारउरश्यामाके ३६ ॥

पोतदुलरी वर्णन ॥

क०। त्रिभुवनरूपकी त्रिरेषाकीधौंमोहनीकी सुरनर नारिछबि करननिकन्दकी। पोतिकलमेचकदुलरिद्युति दमकतमानो अंसहंसके लसतसंगमन्दकी ॥ झलकत सुतिसिरीशोभालोलगोलगति कीधौं हैबिराजति किरण मुखचंदकी। बलिभद्रग्रामको कलंबनिकीकोक कीधौंकम्बुकण्ठ राजतलकीर जम्बुनंदकी ३७ ॥

चम्पाकली वर्णन ॥

स०। शशिभानुगुरू बुधभौमकवीयुत पुंजनक्षत्रन कीअवली। गिरिमेरुकीदेत प्रदक्षिणासों किधौंचाहतहै निजपुण्यबली ॥ रघुनाथभनैकिधौं कंचनकीरतनावलि सोंजड़ीभांतिभली। वृषभानुललीकेगलेबिचसों यह सोहत सुन्दर चम्पकली ३८ ॥

जोशन वर्णन ॥

क०। वोपितअनूपद्युति लोपितप्रभाकरकी रोपित पतीमनप्रभाकेपुंजमोखेये। गोपितमनोजरंगपाटअति

शोभितकुन्दवरमानो रसराजकेझरोखेये॥ भनैरघुनाथ मंजुकंचनकमायकियेकैधौंअतिपरमप्रकाशरसचोखेये। सोसनकरन हेमदोसनसों बचेबंधभुजमृदुकोसननपै जो-सन अनोखेये ३९॥

बाजूबन्द वर्णन ॥

क०। सोनेकेसम्हारेजड़े मणिउरबिन्दबज्र नीलम अमंदजेखरादेखरसानपै। कैधौंआलबाल पारिजातके पवित्रयुग्म धाराबांधिकिरण कतारापरे भानपै॥ भनै रघुनाथप्राणपतिसुखदानसदा करतप्रकाश अंधकार सौतसानपै। मोहतपुरंदरीलजातरतिरम्भादेखि बाजू-बन्दराजैंशुचिसुन्दरी भुजानपै ४०॥

कंकण वर्णन ॥

क०। शुद्धकरसोनाजड़े मरकत पद्मरागपदिकबड़े जेशुचिशोभासुबरनमें। परमप्रकाशवानचारुचंचलाते अति दीपतिनऐसीहै निशाकर तरनमें॥ भनैरघुनाथ विश्वकरमा बनायेकिधौं तिनसमताकोकहा ताकेया धरनमें। कहतअसंख्य मोलशंकउरआवैलखि राजत हैं कंकणकिशोरीके करनमें ४१॥

पहुंची वर्णन ॥

स०। मणिमाणिक हीरा जड़ायजड़ी ललना करमें छवि छाजतीहैं। बिच राजती कंकण चूरिन के उपमा जगकी सब भाजतीहैं॥ रघुनाथ भनै तिन्हैं देखतही रतिरम्भा रमाशचीलाजतीहैं। सुखमामेंसनी द्युतिवारी घनी पहुँची करमेंअति राजतीहैं ४२॥

चूड़ी वर्णन ॥

क०। कंचनकीहरित मणीनसों जड़ीहैबर कैधौंभरी प्रीतिपतिब्रतकी उभरमैं। शीलमेंसनीसी रतिमानको हनीसीघनी ज्योतिजालजाकेमिलिजात प्रभाकरमैं ॥ भनैरघुनाथकिधौं सुखसर शोभासिंधु जुरत न एकौ उपमान विश्वभरमैं। भागभरी भूरीयों सोहागभरीपूरी हरी पूरीपूरीचारुशब्द चूरीकंजकरमैं ४३ ॥

छल्लावर्णन ॥

क०। पुरटअपूरेभरे जटितमणीकनसों निघटतमान सदाकाम भामिनीकेहैं। राजैंकरअँगुरीनअतिछबिछाजैं शुचि करनसलज्ज्यजामिनीमैंदामिनीकेहैं ॥ भनैरघुनाथ यंत्रमोहनी समंत्रकिधौं सिद्धकिये राजत गयन्द गामिनीकेहैं। प्रेमके लताहैं कामफन्दकेकलाहैं किधौं सौतमदलाहैं कैछलाये कामिनीकेहैं ४४ ॥

अंगूठीवर्णन ॥

क०। कंचनलै बिमल बिरंचिने बनाई किधौं रुचिर अनूप देखि लाजत पुरन्दरी। तामैंचन्द्र क्रान्ति एक अर्द्धमणिमुद्रितहै मानोंरसबीरमें प्रकाशी हांसबुन्दरी ॥ भनैरघुनाथ किधौं मेरुकन्दरा में चन्द्र कैधौंभानुगोदमें बिराजो इन्दुनन्दरी। देखैंकामसुन्दरीभईहै माति कुन्दरी सो अंगुरीअमंद सुन्दरी कि यहमुन्दरी ४५ ॥

छापवर्णन ॥

क०। कंचनमेंसाज्यो एकहीराभूरतौलमौल राजत है तर्जनीसुजानसी रसीलीकी। केसरके कुण्ड में प्र-

काशवानकैधौंचन्द्र कैधौंछटाछाई यही नागरीलजीली की॥ भनैरघुनाथहैन दूजो उपमानलोक हेरिहिये हारो प्रभापुंज उमगीलीकी। हरण त्रिताप या सदैव निज नायककी परमप्रतापवान छापहै छबीलीकी ४६॥

किंकिणीवर्णन॥

क०। कैधौं हेमशैलकी शिखापै लखिबैठो चन्दउड़ अवलीनै मन बात या बिचारीहै। चढ़कर भूधरपै पूज- हि प्रमोदपाइ पावत न राहरही घेरहियहारीहै॥ भनै रघुनाथ किधौं मंजुकटिकेहरिमें मोतीमणि हीरालाल जालकीकटारीहै। लाल मनमोहनको नवलरसालबाल साजी अलिमण्डन या किंकिणी तिहारीहै ४७॥

पैंजनीवर्णन॥

क०। सुबरसुनारकै विरंचि विरचे हैं किधौं लैकर सुवर्ण स्वर्ण यहअलबेलीके। लसत सुवर्ण चर्ण परम सुवर्ण युग्म कैधौं आल बाल ये शृँगार रस बेलीके॥ भनैरघुनाथ दिव्य सुर अति शोभावान परम प्रकाश- वान रतिमद झेलीके। रतिरणजीतके बजेहैं रणकङ्कण ये कैधौंपदपंकज में पैंजनी नवेली के ४८॥

पायजेब वर्णन॥

क०। सुभग शृँगारलोक सुन्दर सुपानमनो पेख- त परम उपमाऊ बिसरातिहै। गातिके सदनकी मदनके समासेहैकी गुरज पियाकी माति तिनसों अराति है॥ प्रेमछत्रदण्डककी वीडकीधौं बलिभद्र कल धुनि राग

रागिनी न निदरतिहै । पूरण मयङ्कमुखी येरीयहतेरी सुनि जेहरिबिहारीजूके मनाहिं हरतिहै ४६ ॥

तथा। कंचनसेजटिलजवाहिर अमोलरत्न आइकै समाइरहींशोभाजगजेतीहैं। देखतहीरम्भारति मैनका लजाइरहीं चारुचंचलाकोयह चुरायेचितलेतीहैं ॥ भनैरघुनाथरव सुरसुनिमोहैकन्त मानतजिहोतीमन्द सौतिजगजेतीहैं। औरनकेपाय पायजेबनको जेबदेत तेरेपदपायपायजेबजेबदेतीहैं ५० ॥

कड़ेवर्णन ॥

क० । राजैबालपगनसुवर्णकेसुवर्णवेशअतिछबि छाजैप्रभापुंजरसचाखीये । कैधौंप्रेमफन्द कृष्ण रस तरुकन्दाकिधौंआनँदकेसिन्धुके गुबिन्दगुणभाखीये ॥ भनैरघुनाथ चड़ेपीन पेड़री न आनंकैधौं मड़ेमान कड़े तड़तहिनाखीये। मैनके गड़ेसे जड़े बड़े बड़े हीराचीर कांततैं कड़ेसे कड़े करत कजाखीये ५१ ॥

नूपुरवर्णन ॥

क० । कनिक रचीहैं जड़माणिन शचीहैं बेशदेखतही चातुरीभुलानी चतुरनकी । चलत मतंगचाल मैन मतवारीमंद बजतबधाई मनोजीतिरतिरनकी॥भनैरघुनाथ सप्तसुरबरपूर्णशुद्धशब्दसुनिमोहैं मनयक्षकिन्नरन की। लाजैं सबसौतैं प्राणपति सुख साजतहैं कानसुनै बाजन अनूपनूपुरनकी ५२ ॥

तथा । लाजकेसँघातीकै सँघातीमुनिध्यानिनके मन मोहि बलिभद्र थातीये लहतिहैं । जावक शोभारती

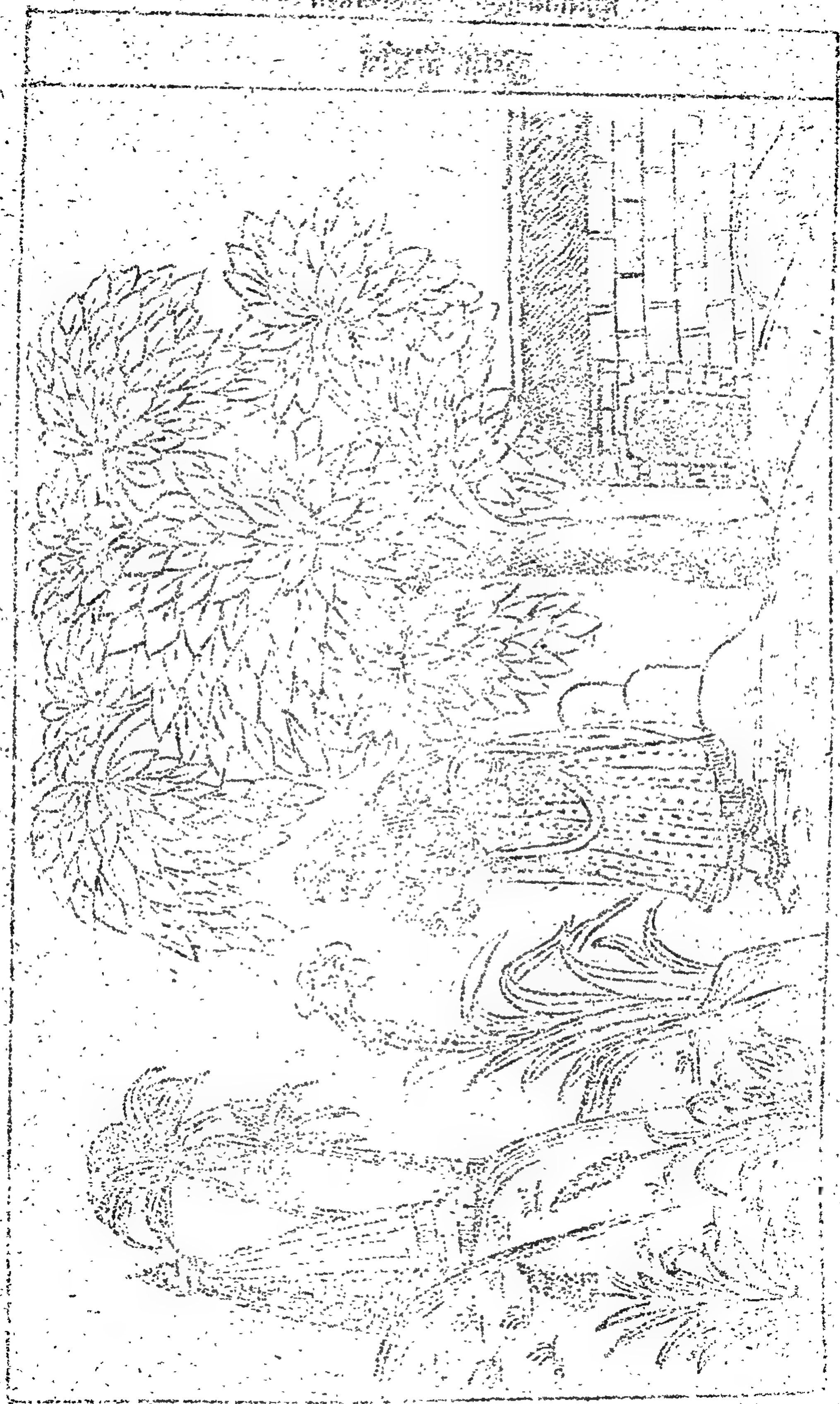
कीकुलद्विजदेवकैधौं करतनिगमधुनिअघनदहतिहै ॥ प्रीतिके वढ़ावनहै गावनहै भावनक काननकोकाम की कहानीसी कहतिहै।नूपुरबिचित्रतेरे चरण परतनीके जिनकेसुनतही बिचारनारहतिहै ५३ ॥

तथा। सुरनको साजि कैधौं गतिनसमाजसोहै मोहै मनमोहनकोऐसीधुनिकामेंहैं । कमलकेदलनिमरालन के वालनज्योंलियोहै बसेरोकलमुखरछमोमेंहै ॥ श्रुति सुखकारकी बिहारीकी निपुणताई कारणबनाये विधि तालनकेधामेंहैं । चितउचकावनलोभावन कुशलसिंह नूपुरवजतकैधौंमदन दमामेंहैं ५४ ॥

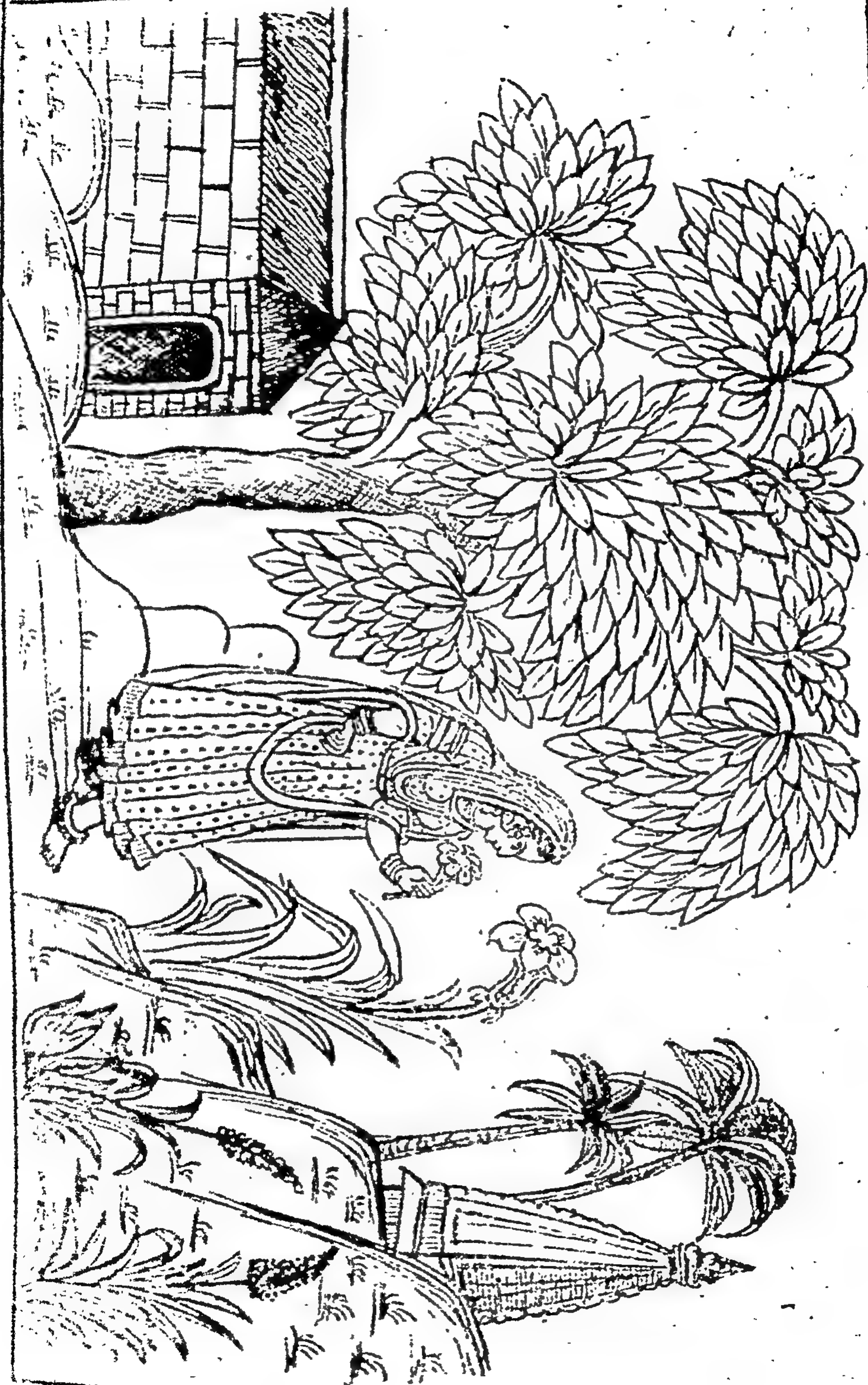
बिछियावर्णन ॥

क०। सोनेकेसलोनेअतिऐसेहैंनहोनेकहूं टोनेसेबिलोकिमनोमोची सौतियनकी। मदनाखिलौनेसे गढ़े धौं यहकौनेवेश वरअनुहारहैंगुलाबकलियनकी ॥ भनैरघुनाथसुन्दराईकेनिकेतलेख देखतहींधामदीप्तिदुरतादियनकी। छनकछबीलीचलैसुरतलजीलीहोत झनकसुने तेझनकारेबिछियनकी ५५ ॥

तथा। नवचितगतिकीकिरतिकीधुवाईकाम कारिका सुहाईसोकहाईआपुभारती।स्मरसमरकाज भरनकवचसाजवाजततवलसौतिलाजतनिहारती ॥ गुनकेप्रशंसीकेसोहागअंसी वल्लिभद्र मुदितउदित सहचरित निवारती। कोमलअमलपदपंकजनहंसकैधौं मदनमहोत्सवश जोइराखीआरती ५६ ॥



कुबड़ीकी मूर्त्ति ·



अनौटवर्णन ॥

क०। पोसनशिंगारुचारु ताकेगृह चारुकिधौं रसपतिसारशुद्ध अमितनबेलेहैं। जिनाहिनिहारिलजीसुरपतिनारि प्रभापूरितअपारकै मनोजखेलखेलेहैं ॥ भनै रघुनाथ पर्मपूरणसुहागभरे भागभरे अतिअनुरागरस रेलेहैं। पुरटपटेहैं मणिजटितअजूबेअटे बालातोअंगुष्ठहै अनौट अलबेलेहैं ५७॥

श्रीकूबरीजी विषयके कवित्व व सवैया १२ ॥

क०। छलकरि छैलतजिगोकुलकीगैललगीकुबिजा चुरैल पगी मनबच कायहै। आपहैं सुखारी हमैं कियोहै दुखारी प्रीतिपाछिली बिसारीकहौ एक कछूनाय है ॥ घनश्याम जीत ब्रजकाम बामलातहैं मसारख परीते सो यही परनपायहै। तरनउपायहै न देखिहैं न पाय हैंजो औरैकलपायहै सो कैसेकलपायहै १ ॥

स०। छांड़िकैमोहिं गयेमथुरा कुबरी तहँ जायभई पटरानी। जोसुधिलीनी तौ योग सिखायो भये हरिचन्द अनूपमज्ञानी ॥ गोपसोंजोपै भयेरजपूत लड़ोकिन जोड़को आपुने जानी। मारतहौ अबलोगनकोतुम याहीमें बीरता आय खटानी २ ॥

तथा। जाहुजू जाहु जू दूरहटो सोबकै विनवातही को अब यासों। वाछालियाने बयानके खासो पठायो है याहि न जानेकहासों ॥ काहिकरैउपदेश खरो हरिचन्द कहै किन जाइकै तासों। सो बनि पण्डित

देखोतसवीर नम्बर ६ ॥

ज्ञान सिखावत कूबरीहू नहिं ऊबरी जासों ३ ॥

तथा। अबकाकहिये कहते न बनै हमरेसँगजो उन ऐसी करी। करिकैबिसवासमें घातहहा बिषघोरिदई मिसिरीकी डरी ॥ भुवनेश न चैनपरैदिनरैनिसुऐसी भईहै दशा हमरी। तजिकै हकनाहक हायहमैं सजनी उनने कुबरीकोवरी ४ ॥

तथा। नागरि एकतेएकबड़ी बड़ेनैन बड़ेकुचकुम्भ कितारे। जानतिहैं रसरीति प्रकास बिलाससुहासमहा मृदुवारे ॥ द्वारकाराज भये कादिवाकर कूबरी नायन को पगटारे। गोकुलसे सुखनाहींमिले जिन्हराधेसी नारिअहीरकेवारे ५ ॥

क०। गोपी मनरंजन निरंजन बनेहैं जाय कुबि-जासोंनेहलाय नीकीसौनतालई। वैसेही सुहाये सखा आयेहौ बसीठीलुम मीठीसी बनाय हमैं चीठीयोगकी दई ॥ ऊधोहमध्यानधरैं वेईदृगखंजनको अंजनकीइया-मताहमारेदृगलेगई। रैनिदिनधारयेअपार बहैंखारि खोरि कहियो निहोरि अबकोरिकालिन्दीभई ६ ॥

तथा। फांसीनिरवानगुने ज्ञानसुनेहांसीहायश्याम कीउपासीसबगोकुलकी डावरी। भाषिहैं सुनामवाको रसनासों आठौंयाम राखिहैंहियेके धाम सूरति व सां-वरी ॥ वकिवोवृथाहै तव वातको न मानैहम बिरहाकि चायते रहैंगीबनी बावरी। कुब्जै सुहागदियोहमको बिरागऊधो वाजीतांति जानीगईरागरीति रावरी ७ ॥

तथा। यहांअनुराग ऊधोलसतगुलालवहांयहांजागे

योग वहां भोग दरशातहैं। नैन पिचकारिनते बोरै अँशुवानयहां वहांरंगकेसरि रसाल छिरकंतहैं॥ हमैं हायदागत अनंगअंगअंगयहां वहांअंग अंगनशिंगार सरसंतहैं। खेलत हमारेसंग बिरहाबसंतवहां कूबरी के संग कंत खेलत बसंत हैं ८॥

स०। पाई बिभूति घनीतौहमैं चितचाहि पठाई बिभूति उहांतें। त्यों द्विजदेवजू कूबरी यों पठई यह कूबरी संग मनातें॥ ऊधोजू कीजै कहा इतनोश्रम यों उपजाय हियेबहुधातें। जाहिरहैं सिगरे ब्रजमें उन सुंदर श्यामसनेहकी बातें ९॥

क०। आवतउसासी दुखलगै औरहासीसुनिदासी उरलायकहो कोनाहिं दहाकियो। कहै पदमाकरहमारे जान ऊधो उन तातको न मात को न भ्रात को कहा कियो॥ कंकालिनि कूबरीकलंकिनि कुरूपतैसी चेटकन चेरी ताकेचित्तको चहा कियो। राधे की कहनि कहि दीजो तुम मोहनसों रसिक शिरोमणि कहाय ये कहा कियो १०॥

तथा। ह्वै रही कनौड़ी मतिकौड़ी भईगोपी अति डौंड़ी फिरी लौंड़ीकी न लाजधारियतुहै। बने महराज आजसुनेहैं समाजबाद ताते फ़िरियाद हमहूंपुकारियतुहै॥ दरदहरे हैं तब शरद निशामें श्याम अबक्यों करदसे करेजाफारियतुहै। चाहिये कठोरतान एती बरजोरऊधो कांकरीके चोरन कटारीमारियतुहै ११॥

तथा। दासी वह्लभकी सरूपते प्रकासी किमि

कैसी चाल खासी कौनिचातुरीसों भरीहै। कौनिसिधि सनी केहि विधिकी वनाईबनी जाको ऋधि निधिघनी भजैं घरी घरीहै॥ कहो कौन साजि साजहर्यो मन महाराज लोक लाजतजि जातेऐसीप्रीतिकरीहै।सोने की शलाकासी सुनीहै हम शाकाऊधो कामकीपताका किधौं नाकाधीशपरीहै १२॥

तथा। जानिजातकछू कलावसैवाके कूबरमेंजातेललापलापलाभरैंभलीफेरीको। छलकी छटीलै नटीकपटी कन्हैयैभले कपिसोनचावाति वजायकैहथेरीको॥नन्दन को त्यागि नँदनन्दनसोंकहोऊधो सेवनकरत कहारूंधो चनवेरीको। रूपगुणखानी राधानागरी भुलानी अब छांड़ि कुलकानि पटरानी मानी चेरीको १३॥

तथा। आवतिहै हासी उपहासी कान्ह कथासुनि किङ्करीको खासीमणि कीन्हीं अवतंसकी। फाँसी फँसे ताहिकी उदासीरहैं ताके चिन नासी सवलाज महाराज यदुवंसकी॥ भोरी मतिभई कहा रावरी सिखावो किन जोड़ी नहिंबनै सुनोऊधो वकीहंसकी। कहां सुखरासी व्रजराज शम्भुहृदैवासी जगत प्रकासी कहो कहांदासी कंसकी १४॥

तथा। जौनप्रेम नेम प्राणप्यारेको हमारेसाथ कहो व्रजनाथ गोपीनाथक्यों कहावहीं। लायअङ्कबङ्कलखे पङ्कजसेलोचनते आवैअवशङ्कतो कलङ्ककहालावहीं॥ नन्दकेकिशोर चोरचीरदधि माखनके लाखनकरैंगेतऊ नामये न जावहीं।सांचीप्रीति राचीजोजगतगीतिमाची

ऊधो क्यों न कुबिजा को अब बिरद बुलावहीं १५ ॥

तथा । खूबरीमचीहैजगकीरीतिवाकूबरीकी बासी अब गिनी न सुहागिनी अवनिपै । रम्भाउरबशीशची रमारतीपारबती रतीहै न ऐसीआज सुरकी रवनिपै ॥ जासुगुणग्राम बसुयामही सराहैं श्याम ऐहैं नहिंराते माते कुंजरगवनिपै । दीनकेदयालकी अनूठीयहचाल आली खीझतहैंमानगहे रीझत नवनिपै १६ ॥

तथा । गेह न सुहात हमें मेहसे झरैहैंनैन श्यामके सनेह देह दशाभई दूबरी । वेतोबनबासीग्वारनन्दके कुमारसखी वातोकंसदासीबनीखासीमहबूबरी ॥ वेतो हैं त्रिभङ्गी और वाको अङ्ग कूबरमें मिलेहैं उमङ्गदोऊ संगबनोखूबरी । बड़ीहैसयानीबशआनी कोऊचेटक सों श्यामबने राजा अरु रानीबनी कूबरी १७ ॥

तथा । चन्दनलगाय नँदनन्दनको फन्दडारि मन्द मुसुकाय कछुकीनीधौं ठगोरीहै । आलीप्रीतिपालीउन गनी न कुचाली क्योंहू वेतो बनमाली वह मालीकी किशोरीहै ॥ जैसे कपटीहैकान्ह तैसीछली वाहू जान हस्योहिय हाथहीमें बांधिप्रीतिडोरीहै । करीअरधङ्गी निज कुबिजै त्रिभङ्गी श्याम वे अहीर दासी वहखासी बनी जोरीहै १८ ॥

तथा । फीकेपरेप्रेम ब्रजतीकेसाथ एहोनाथ जानै हमनीके मतिकूबरीने डहकी । लीन्हींसुधिनाहिं अजौं कोरकरुणाकीचितै कितैरहे वितैदिनगोपीगिनअहकी॥ बीतैंपलअलपकलपसे निहारेहीन कीजैकिन दीनबंधु

खाविक्षालीकूहकी। देखिदुखहाल क्योंनहोतहोदयाल
आय डारो आयलाल काहे ज्वालमें विरहकी १९॥

तथा। दूबरीभईहैदेह कूबरीसनेहसुने ऊबरीनशोक
सिन्धुपायज्ञान बोहितै। रहीअकुलाय हायकरैशिरको
नवाय कहैंयदुरायरहैंकेते दिनकोवितै॥ गाढ़ये असाढ़
देखिबाढ़तवियोगव्यथा दामिनी दमकि मोर शोरहैं
जितैतितै। आये घनश्याम काहू बामले सुनायोटेरि
चौंकि चौंकि उठींचन्द्रमुखीचहुंघाचितै २०॥

तथा। आपुहैं त्रिभङ्गीगातभलीबनिआईबातयोग
योग मिलेबाढ़ैं भोगअधिकारेहैं। कारे अहिकुण्डलीहैं
याहीते न तानकी धुनिसुनिसो ये गुनि फुङ्करनिधारे
हैं॥ धारेहैंमुकुटवहै माथमें विराजैमणि बांकीचितवनि
विषत्रजमेंनगारेहैं। भारेहैंगुरनिउन्हैं लाजौ नालागति
कुरकूबरीकेकैके होनचाहत हमारेहैं २१॥

तथा। जैसेकान्हजान तैसेउद्धवसुजान आयेहैं तो
सङ्गिसानपरप्रानहैंनिकारेलेत। लाखबेर अंजनआंजा-
ये इनहाथनते तिनकोनिरंजन कहत झूंठधारेलेत॥
ग्वालकवि हालहीतमालनमें बालनमें ख्यालनमेंखेले
हैं किलोल किलकारेलेत। ह्यां न परचेरी योगचेरीसंग
परचेरी योगपरचेरी भेजिपरचे हमारेलेत २२॥

तथा। ऊधोतेरेयार ऐसे कैहैं रिझवारजाय जान-
ती विचार तोपैसूधोहोन जायबो। करतीविचार भांति
भांतिकेसुभायभायकेतीबड़ीबातहुतीवाकोअटकायबो॥
ग्वालकविपीठनपै एकएक हांडीबांधि नीकेमनमोहन

को करतीं रिझायबो। यातोकहूं कोई बहुरूपियातलाश करि सीखिलेतीं हमसब कूबर बनायबो २३॥

तथा। कैसेकैकन्हाईकी बखानैंचतुराईकोऊ भेजीजो मिठाईतो कभू न भरिहौं गरो। सारी जरतारी आंगी ओढ़नी किनारीदार धार धार फारिहौं पैन तलहिं है मरो॥ग्वालकवि भूषणहूं भेजेहैं तौ टूटजैहैं ऐसे उर धारकै बिचार कियोहै खरो। भेजी मथुरातें नई योगकी सौगातसखी खातिरजमासोंखाउपहिरोखुशीकरो२४॥

तथा। गोपिनकेकाजयोगसाजदैपठायोऊधोआवतन लाज ढीठप्राणन पियोचहै। बरीहौं बियोग बिरहागिन भभूकनमेंतापरसलूकलूकलाखनदियोचहै॥ग्वालकवि कहै कौन कान्हरकी कुटिलाई कटेपै लगावैनोन काटन हियोचहै। कंसकी जो चेरी ताको चेलाभयो हायजाय हमें मेंजिसल्ली चेली आपनी कियोचहै २५॥

तथा। कूबरी कसायनकी रसकी रसायनमें शोभा सरसायनमें रहत खड़ाभयो। प्रीति ब्रजबालनकी नित उठिख्यालनकी हंसन रसालनकी भूलके छड़ाभयो॥ ग्वालकवि ऊधो तौहू बिगस्यो कुसंग पर श्याम तो लबार और निलज बड़ाभयो। आपकरैजारी हमैंयोग जरतारीभेजी देईकहागारीभलोचीकनो घड़ाभयो२६॥

तथा। कियेथे करारसो बिसारदिये दगाबाज नन्दकेकुमार संगको सँयोगिनी बनैं। कौन सुख लैकै तोहिं उद्धव पठायो यहां कैसे कही वाने हाय लंक लोगिनीबनैं॥ ग्वालकवि यातें एकबात तू हमारी सनु

चुनिकै कहीहै यहतोपै योगिनीबनैं। कूबरीकोकूबकाटि लायदे शिताबीहमैं टोपीधरिताकी तब गोपी योगिनी बनैं २७॥

तथा। कहांगई अकिलतिहारी अबहींतेऊधो सूधो पन्थ छांड़ि टेढ़ो पन्थ क्यों गहतहै। श्यामजाको रंग रूप कामते करोड़गुनो नैनसैनबैनहू सुधासे उलहतहै॥ ग्वालकवि जाको निराकार तू बतावतहै कैसे हमसानैं निरोझूठही लहतहै। जूठनकीखानहारी कुबिजानका- री दारी करी घरवारी तऊब्रह्मलूकहत है २८॥

तथा। रूपमेंनकसर औरागमेंनकसरयहां लागमेंन कसर न लाजहूंकी घेरीहैं। रंगमेंनकसर नकसर उमंग मेंहे प्रणके प्रसंगहूमें परमघनेरीहैं॥ ग्वालकविहावमें न भावमें कसरयहां चावमें न कसर चलाक बहुतेरी हैं। तीनहैं कसर ऊधो काहूकेनकूबयहां नाइननजाति अरु काहूकी न चेरीहैं २९॥

तथा। कौनदिनकान्हने चढ़ाये प्राणऊरधको कियो कब इन्द्रिनको साधन सुधारहै। कौनसे सघनबन वैठिकै समाधि साधी कौनसे गुरूते सीखो योगको विचारहै॥ ग्वालकविऊधोजाहि निर्गुणकहौ हौ तुमसो- तोवह औगुणको अखिल अगारहै। ऐबेको करारकियो आयो ना लबारमहा मामादियो मारबन्यो कूबरीको यारहै ३०॥

तथा। कौन चतुराई करीजायकै कन्हाई वहां कूबरी लोगाईकरीऔरतोझुरीलगीं। देवकीकीसेवकीनसेव-

कीपीताकी करीनाइनसुताकी भलीगांठसीखुरीलगीं॥ ग्वालकाबिऊधवयोग पतियांकी बतियांयेबिछुरीहुतीन विषबुभीसिछुरीलगीं। लोकलाजलोपी प्रतिरोपीअंग ओपी जऊतऊहमगोपीहाय श्यामकोबुरीलगीं ३१॥

स०। प्रीतिकुलीनन सों निबहै अकुलीनकीप्रीति मैं अन्तउदासी। खेलतखेल गयो अबहीं हमैं योग पठाय बन्यो अबिनासी॥ त्योंकबि ग्वाल बिरंचि विचारिकै जोड़ीजोड़ाइदई अतिखासी। जैसोई नन्दको पालक कान्हसो तैसईकूबरी कंसकीदासी ३२॥

तथा। नन्दकोपालकहो पहिले फिर कंसकीचेरीको चेरोभयो। ताकोपरेखो कहाकरियेभटू लाखनवार को हेरोभयो॥ त्योंकबिग्वालकरैतोकहा फिरसांपिनिसौति कोघेरोभयो। नेहछली मनमोहनको हमकोअलि भूत को फेरोभयो ३३॥

तथा। उद्धवएक संदेशोयही कहिदेउ तोबातसयानीकरो। कूबरीकोठकुरानीकरीसोभले अपनीमनमानीकरो॥ पैकबिग्वाल मुनासिब औरहूसोऊ जरूरप्रमानीकरो। लांगरी लूलिन आंधरीकानिन रानिन में पटरानीकरो ३४॥

तथा। तोरिकै प्रीतिगयो मुखमोरिकै कौनसोनातो तुम्हारोरह्यो। मोहनसे छलियापैभलो अरेउद्धवतूहल कारोरह्यो॥ औरकहा कहियेकबिग्वालसोनन्दहूतेवह न्यारोभयो। चेरीकोनेहनगारोबज्यो अब काहेकोप्यारोहमारोभयो ३५॥

तथा। लैगयोहैजबते अक्रूर अरीतबतेबहुरंगीभयो। प्रीतितजी सबगोपिनते इकलोकुबिजाकोइकंगीभयो॥ योंकबिग्वालहीभाललिखीहुतोमीतसहीपैकुढंगीभयो। माय न बापको अंगीभयो सो हमारो कहो कब संगी भयो ३६॥

तथा। रासकियो औविलासकियो रहे पास हुलास कीरासलैलूटी। जादिनते अक्रूरलेवायगो तादिनते गतिऔरही जूटी। त्योंकबिग्वालकलंकिनिकूबरीकान लगेते सबै मतिफूटी। वाहरेवाह गोविन्दछली भली योगकी भेजिदईविषबूटी ३७॥

क०। माखनकेचाखनकोलाखनउपायकियो साखनतुम्हारी तऊद्वारपैअरेरहो। चोरि चोरिदही लियो छोरिछोरिमहीलियो कहीअनकहीसबसहीपैखरेरहो॥ ग्वालकविअचम्भोयही लहिकेहौ भूलिगये भेजोयोग मूलनेकलाजतौधरेरहो। जानोंकहा रसकीरसायनगोपालतुम कूबरीकसाइनके पांइनपरेरहो ३८॥

तथा। तजिब्रजवालनकोमथुरागयो तौगयो उहां जायकौनसो सुयशजग छायोहै। करतो बिवाहजाति पांतिकी कुमारीसंग तऊहमजानतीसुपंथमेंसिधायोहै॥ ग्वालकवि जो परसूरतहीपै रीझहुती तौपैभलीजाति की ननारीपैलुभायो है। कूबरीकलङ्किनि वाआङ्कनको अङ्कलायकान्ह भलोकुलको कलङ्कतैंलगायोहै ३९॥

तथा। एरेनिरदई तेरीसुधिबुधि कौनेलई गईकहां प्रीतिरीति पाछिली जो खेली हैं। योगदैपठायो ऊधो

आयो औ सुनायोहमैं सब समझायोभलोतेरोयहमेली हैं॥ ग्वालकविहमतो वियोग योगधार चुकीं तोईकोमुबारक होय योग अरुसेलीहैं। कूबरीकेकानफाड़माथो मूड़िराखलायचेलाबनोताकेयाबनावोताहिचेलीहैं४०॥

स०। शारदमासमें रासरचो यमुनातटपुंजबिलास की छावों। बीन मृदंग पखावजबेनु बजायबतायप्रताप हों गावों॥ ऊधो सुभौंह कटाक्षकेकोरकरोरकै प्रीति की रीति रिझावों। रीझेगोपाल जो कूबरीपै तो कूबरआज मैं कौन पै पावों ४१॥

क०। पिंगपटलंकअंकजाल गुंजमालराजैचन्द्रिका मयूर चूड़ बंशीकर चहियो। मकराकृत कुण्डलप्रताप हों काननमें देखिदेखि आभा ऐन नैन लाहुलहियो॥ हाहासमीर बीर तोसोंहै निहोरा एक नेक वा बिश्वासी के पास होय बहियो। मोपै कृपाकै बहु भांति तू पाइँन परि मेरीगोपालजूतें जैगोपाल कहियो ४२॥

तथा। जेते गयेधीरजदै मधुपुरपाथिक लोग तेऊ फिरे ना एक नैन थकिरहियो। चित्रसी ठाढ़ीह्वै जोहती घरनिमग तुमको विलोकि कछुधीर उरलहियो॥ जात हौ कापै प्रतापनेक ठाढ़ेहोऊ एकहम दीननकी बातउर गहियो। हाहाबटोही बीर मधुपुर पधारो तो मेरी गोपालजूते जैगोपाल कहियो ४३॥

तथा। आपहीत्रिभंगीगात भलीबनिआईबातयोग योग मिलै बाढ़ै योगअधि कारैहै। कारेअष्ट कुण्डली है याहीते न ताननहै ताननकीधुनिसोंये फुंकरन धारै है॥

मुकुटवहै माथेमें विराजै मणिवाकी चितवनिविष ब्रज
में वगारैहै॥ मारैहै गुरनिउन्हैं लाजौं न लगतकूरकूबरी
के ह्वैकै होन चाहत हमारैहै ४४॥

स०। योगलिखोहमकोमनमोहनकूबरीकी यहसीख
लईहै।केलिइतेकुबजापरिहासइतैब्रजमेंविषबेलिबईहै।
चाहिये जैसीनतैसीकरीबिधिभाल बदीशिवनाथभईहै
ज़ेपरहाथनहासरिवातकी ऊधोतिहारियोबुद्धिगईहै४५

क०। कहा लिखि पठवों संदेशो आली ऊधो हाथ
उनके तो मनमांझ वहैबसी खूबरी। बारेकेबहेवाकान्ह
कारे अति अंगहीके कारी कारीबातैं सुनिहोतहै अजू
री॥ कहैगोपीनाथ प्राणनाथ जिय ऐसी ठानी जो पै
जिय आनीऐसीगही दांत दूबरी। कहिबे को शरमी है
देखिबेकोनरमीहैं वड़ेइसुकरमीहैं कूबरी न ऊबरी ४६।

तथा। शोचन हमारे कछुत्यागे मनमोहनके तनको
नशोच जोपै योंहीं जरेजायहैं। कहै पदमाकर न शोच
अब येहू यहां आयहैं तो आयहैं न आयहैं नआयहैं।
योगको न शोचअरुभोगको नशोचकछुयाही बड़ोशोच
सोतोसबनिसोहायहैं। कूबरीकेकूबरमें बेध्योहौत्रिभंगत
त्रिभंगको त्रिभंगी लालकैसे सुरझाय हैं ४७॥

स०। पाती लिखी नँदनन्दनको कछु द्यौस में घि
घटा घहराइहैं। दादुरकीवैदरारनको सुनिधीर अधी
न क्यों धरजेंहैं॥ ज्वाब कछू लिखिदीजो हमैं नँदरा
न ताप हिये सरसैंहैं। आइहो जो मनमोहन तौ व
कूबरी दूबरी दूबरीह्वैहैं ४८॥



श्रीकृष्णचन्द्रजीका जितनी गोपियां थीं उतनेही रूप धारण करके रासलीला करना



रासलीला के कवित्त व सवैया १२ ॥

क० । बाजतमृदङ्गमुरचङ्ग बीन औ उपङ्ग तातथई तातथई करत उमङ्गमें । मेलिके भुजानकोसुजाननृत्य कला कान्ह बीच बीच नाचैं मिलिगोपिन के सङ्गमें ॥ भृकुटी मटक पटपीतकी चटक चारुकुण्डल झलकछ-जै छबिके तरङ्गमें । पदकी पटक पानि झटकसुमसु-कानि ग्रीवाकीलटक सजैशोभाअङ्गअङ्गमें १ ॥

तथा । देखिहरिनीके नयन देखहरि नीकेइनलगें त्रिण फीके पीके मगको निहारहीं । नन्दके कुमारछलि गये इनहूं को अलितातें यह बार बार आंसूधारडार हीं ॥ ठाढ़ेपति सोहैंनाहिं जोहैं संग रूपराची चलति अगोहैं सरसोहैं ध्यानधारहीं । बूझिइनपाहींयेऊबिर-हीं भुलैहैंनाहींचलिगलबाहींधरि हरिसोंबिहारहीं २॥

स० । मण्डलसीयुवती जुरिकै कर मण्डल बांधि गोपालधनीके । आनँद सों चढ़ि आनन कीद्युति ल-ज्जित कोटिमयंक पुनीके ॥ छायरही छबि ज्योतिमहा झलकैं कल भूषणअङ्ग कनीके । पुंज प्रताप प्रकाश चहूं रुचि नाचत कुंज कलानिधि नीके ३ ॥

तथा । गावतजो दशअष्टसदा षटचार न पावत पार भनीके । सन्तनचारु विचारि प्रताप थकेफणऔ लिसहस्रफनीके ॥ कोटिक छायकुटी बनबीचरमायक-लेवर खाक धुनीके । पुंजलताबनितानन्नमें सोइनाच-तकुंज कलानिधि नीके ४ ॥

देखोतसवीरनम्बर १० ॥

तथा। फूलिरहे द्रुम औरलता कलितासु कुसुम्भ वितान वनीके। गुंजत भृङ्ग प्रताप मनोहर फैलिरही मधु गन्धसनीके॥ बाजत बीनमृदंग निचैधुनि पूरि रही नभलौं धरनीके। मत्तप्रियागल बांहदियेगतिनाचतकुंज कलानिधि नीके ५॥

तथा। मण्डलमोर किरीटलसैबिलसै बिधिआनन ओपअधीके। कुण्डल कुन्दन श्रीनदुहूंकल चंचलता चपलाछवि फीके॥ स्वेदचलै मुखमंजुप्रताप हरेगति चंचलमें बिधिहीके। बाजतपुंज मजीर बिमंजुसुनाचतकुंजकलानिधिनीके ६॥

तथा। साथछुटीकचलाजदोऊ बिलसीछवि वाम छकीछविपीके। छाइरहीश्रम आननचन्द्र तजीसुधिसुन्दरमन्दिरजीके॥ नाचत मण्डल मंडिप्रतापबजैकल पायल पायनतीके। श्रीअधरानन बेनुधरें मधिनाचत कुंजकलानिधिनीके ७॥

क०। शरदरयन अरुनिर्मल प्रकाशजानिकान्हयमुनाकेतट बांसुरीबजाईहै। रागरागिनी छतीसोताहि में प्रवेशकरितालकोबन्धान सुरतीनलोकछाईहै॥ मोहे शेषऔ गणेश बिधिलोकपाल सबषोडशसहसगोपी सुनिउठिधाईहै। पायकेकन्हाईजीने रहसमचायानित यामिनीचढ़ाई षटमासकोबिताईहै ८॥

तथा। दीपातिबिशालत्यहि बीचबीच नन्दलाल करतलकरघालमंडलबनाईहै। सांवरोबरनगोरोशोभा होतएकठौरघनकीघमंडमानोदामिनीसोहाईहै॥ भूषण

श्रीकृष्णचन्द्रजीका एक गोपीसे प्रेमकी बात चीत करना



सकलअंगवसनअतिसोहैंसुरंगनृत्यकोकरतछमछमछ-बिछाईहै।देखतबिमानचढ़े भामिनीसमेतदेव हरषिनि-रखिनभफूल झरलाईहै ९ ॥

तथा। त्रिबिधसमीर मंदशीतल सुगंधवहै निरतत ब्रजबाल नन्दलालसाथहैं। कुण्डलझलककानमुखसों अलापैतान नथकीहलन औचमकबेंदीमाथहैं ॥ रंगरंग सारीजामेंजड़ीहैं किनारीछबि होतन्यारीन्यारी सबसोहैं जोड़ेहाथहैं। नूपुरझनक करकिंकिणी खनकबन तालकी बनककेलिकरैं यदुनाथहैं १० ॥

तथा। ग्रीवकोफिरावैं श्रुतिफूलचमकावैं करकंजल-चकावैंरसबस बड़ोतावरी। कटिकोदुमावैंघूमि चक्रभर-मावैं औरनूपुर बजावैं फरकावैंअंगपावरी ॥ घूंघटलवा-वैंशिरसारी सरकावैं हसिभावको बतावैंप्रभूदासीहौंमें रावरी। नैनकोतरेरी दृष्टिकरिके करेरीनन्दलालतनहेरि ब्रजबालभई बावरी ११ ॥

परस्परलीला व वार्त्ता के कबित्व व सवैया १४ ॥

क०। एकैकरैं ओटपटओटकर ओटकरिएकैजेनिघ-रघटचोटहि बचावतीं। एकैनिरसंकअंक लागतींसुवंक तजिसकैजे मयंकमुखीलंकाहिलचावतीं॥ ईशकहैंकेसरि गुलाब नीरघोरिघोरि जोरिजोरि मुंडरंग धूमहिमचा-वतीं। देतीगाल गुलचा गुलालाहिं लपटि सुखदैकैकर तालीनन्दलालाहि नचावतीं १ ॥

स०। काननलौं अंखियांये तिहारीहथेरी हमारीक-

हांलगि फैलिहैं। मूंदेतऊ तुमदेखतीहौ यहकौरै तिहारी कहांधौंसकेलिहैं॥ कान्हरहू को सुभावयहै उनको हम हाथनहीं परमेलिहैं। राधेजूमानौ भलोकिबुरो अंखि मीचनिसंग तिहारेनखेलिहैं २॥

तथा। बूझतनन्द यशोमतिबात कहौकुशलात उतै दोउभाई। आवहिंगेकब प्राणनिवास उदाससखा सब लोगलुगाई॥ पीतपटीसरलैलकुटी करवायमुनाकीतटी सुखदाई। फेरिकहौ कबदेखिहौं उद्धवयाबन चारतधेनु कन्हाई ३॥

तथा। लालनगेजबतेतबतेबिरहानलज्वालनतेमन डाढ़े। पालतहैंब्रजगायनग्वालहुतोजबआवतसंकटगाढ़े॥ श्यामबिनासुखधामनहींछिनहींछिनजातमहादुखबाढ़े। फेरिकहौकबदेखिहौंउद्धवमाधौमाखनमाँगतठाढ़े ४॥

तथा। डोलतबालमरालकीचालन रेलतलालफिरैं ब्रजखोरी। सोहतमाल विशालहिये तरसोहतनीलसो पीतपिछोरी॥ साथसखाशिरमोरपखा धरिहाथनचावतहैं चकडोरी। फेरिकहौ कबदेखिहौं उद्धवश्याम लला बलरामकी जोरी ५॥

तथा। सोवतढाकिहुतेपट पीतसों भोरभये मुखपंकजखोलत। दैजननी मोहिंमाखन भावतधावत बालन संगकलोलत॥ लागतकैकहितातगरे सुनिहौंकबतोतरे बैनन बोलत। फेरिकहौ कबदेखिहौं उद्धवमाधौ कोइन आंगन डोलत ६॥

तथा। एकसमैलिये मोहन ग्वालन मोहनचेरिकेखा

तदहीं ॥ उद्धवजू छलसोंकरिकै हरिकीयशुदा दोउबांह गही । ऊखलबांधिदियो डरताक्षण आंखिनतेजलधार बही।सोतकसीरभईहमतेसुत जोउतयादिकरैंतोसही ७॥
तथा। अवधेशनरेशकी प्रीतिसही प्रियकेबिनु प्राण पयानकियोहै । संगफूटत फूटसेफूटो नहीं ममपाहनहूंते कठोरहियोहै ॥ हमतेबरुमीनप्रवीनबडो जलते पलएक नहींयहजियोहै । अबउद्धव हहाबलबीर बिछोहते क्यों विधनामोहिं धीरदियोहै ८ ॥
क०। भाषतयशोदापायँ परौं मैंतिहारेऊधौ कहियो यहबुझायमेरी बिनतीकन्हैयासों । जादिनपधारेपगगो-कुलते प्राणप्यारे गोकुलधिचारे भूखेफिरैंतासमैयासों ॥ पावहिंविपुलपीर बछराबिपिन गेह धावहिं अधीरनेह लावहिंनगैयासों । सूखिरहे कुंजपुंजगुंजत न भौंरभीर एहो बलबीरकैसे रहोजाय मैयासों ९ ॥
तथा। प्राणकेअधारे मेरेबारेकोभुरायल्यावै कहियो यहबुझाय उद्धवप्यारेबलभैयासों । वादिनकीबाततुम्हें भूलिगईमेरेतात खातनहींदहीभात उरझेजुन्हैयासों ॥ खेलतउमंगभरे संगसखा बालनके लालनक्यों रोसिर-ह्योब्रजके बसैयासों । बूडतमझारधार निराधार गोपी-ग्वाल कीजे एकबारपार कृपामायनैयासों १० ॥
तथा। सावन सोहावनह्यां लागतभयावनसोंआव-नअवधिअब शोचैंगजगामिनी । आयहैंकबहुं बलबीर ह्यांकिनाहीं उद्धवकैसे धीरधैरैंये अधीर ब्रजकामिनी ॥ जहां तहांयोगनकी ज्योतिजगैंज्वालजैसेयमकीजमाति

सीजनातिजाति यामिनी । जारे हैं पपीहरा पुकारेपीउ पीउटेरिघेरिमारैवादर दरेरि मारै दामिनी ११ ॥

तथा । रहियेअनन्दमाहिं गुनिये अँदेशनाहिंसुनिये सँदेशनन्द निजप्राणधनको । कहियो पांयलागनचड़ेई अनुरागनसों भूलियो कन्हैयावलभैयाको न छिनको ॥ कोऊनावलैया लेतमैयाविना मोहिंयहां होहिंदूवरीनगैयासोंजियोयतनको । माखनकियो नाहिंचाखतहूं जबहींते तवहीं ते आयोतजि आपने वतनको १२ ॥

तथा । कुंजनकी गलीमें एकनवलअकेलीबालदेख व्रजराजऐसी पाइराने चाहेते । दौरिगहीवांह उनआइवेकीवांह दीन्ही सांचिकरिमानिवी जूनेहके निवाहेते ॥ कहैंकविकाशीराम सुतावृषभानजूकीअतिअतुराईचतुराई चितसोहेते । हाहाकरि हारी पतियानेनहीं पांयपरछातीके छुयेतेकहुँ छांड़िदीन्ही कहेते १३ ॥

तथा । छाईशीतलाई मुरझाई कलाकुंजनकी मानो मनरंजनको पाइके जुदाईहै । कापैकहीजायदिनहूकीलघुताईजनैरहीछलताईलखिप्रीति सकुचाईहै ॥ रैनअधिकाईभयो विरहसहायतासो शीतचहूंघाई विनुमीत भीतधाईहै । पीरसरसाई फूलीसरसों सरसमाई हिमऋतुआईनाकन्हाई सुधिपाईहै १४ ॥

तथा । गोपीमनरंजन निरंजनवनेहैंजाय कुबिजासों नेहलाय नीकीमौनजालई । वैसहीसोहाय सखाआयेहो वसीठीतुम मठीसीवनाय हमैंचिट्ठीयोगकीदई ॥ उद्धव हम ध्यान धरैं वई दृगखंजनको अंजन की श्यामता

हमारेढगतेगई। रैनिदिनधारये अपारभईखोरिखोरि कहियेनिहोरि अबकूरकालिन्दीभई १५ ॥

तथा। फांसीनिरबानगुनेज्ञानसुनेहांसीहोत श्याम कीउपासी सब गोकुलकीडावरी । भाषिहैंसुनामवाको रसनासों आठौंयाम राखिहैंहियेकेधाम सूरतिवहसां-वरी ॥ बकिबोट्टथाहैसबबातकोनमानेंहमबिरहाकीबायु तेबनीरहैंगीबावरी। कुबिजै सुहागदियो हमको विराग उद्धव बाजीतांतिजानीगई राहरीतिरावरी १६॥

स०। साजिचलींदधिबेचनको मटुकीधरिकै शिर ऊपरभारी । पैन्हिकेचीर सुरंग सुहावनो नीलीलसै शिरसुन्दरसारी ॥ नूपुर खूबछमाछमबाजत पायलकी धुनि लागतप्यारी। याबिधि साजिचलीं बनिता तिन आगेचलींट्टषभानुदुलारी १७॥

तथा। काहेकोमांगत दान लला हमसों नइरीति कहा तुमठानी। छांछको दान सुनो नहिं कान भयेतुम आजनयेहारिदानी ॥ बापचरावतगोरूहुतो अरुआप करी कबसेरजधानी। अबलौंकोउनाहीं भयो ब्रजमों तुमदानीभये हमने अबजानी १८॥

तथा। काहेकोठाढ़ेसोकाकरिहौ अरु क्योंइतनोहौ रिसात कन्हैया। जानेतुम्हारेमैं नन्दबबा अरु जानी तुम्हारीयशोमति मैया॥ कंसमरो नहिं राजगयो नहिं क्योंइतनोअड़िलातहौभैया। वासोंहँसोजोहँसै तुमसों हँसिआवतहै कि अनोखे हँसैया १९ ॥

तथा। कृष्णकहोउनसों तब यह तुमकाहेको रारि

वढ़ावतीहौ। सांझकिहो तुम्हैंजोरहैकाको औकौनकी नारिकहावतीहौ॥ फोरिसबै डरिहौं मटुकीतुम काहेको देह जरावतीहौ। इन नयननसों नहिंफौजचढ़ै तुम काहेको नैन दिखावतीहौ २०॥

तथा। सुनिकै मनमोहन बैनतबै यहदेतजवावसबै व्रजबाला। जानिअकेलि हमें मनमोहन काहेको येते वजावत गाला॥ सांझकोआजचलोघरलौं जवमैया सों जाय कहौं सबहाला। मारिकैखूब लगोदिनसों तब लौटिकै पांउपरो नँदलाला २१॥

तथा। कालिहहीकंसको होत विध्वंस कहौ जिनके रसमें रसवानी। आपतिहारदईउनको तुमताहीसेकंस विभवभरुहानी॥ देतिहौ दान लली वृषभान किधौं मटुकी पटकीमनभानी। जाउललातुम्हैंछांड़िदियेनतो आजुहीतेरोउतारतीपानी २२॥

तथा। कालिहपरेपलँगापर झूलतआजुउगाहनदानल- गेहौ। कंसकीयादिनहींतुमकोजिनकेडरलालउहांतेभगे हौ॥ पावैंसुनेतोबिसाहिकहापुनिवादिपरेपितुमातुसगेहौ। सोअवछांड़ियेमेरीगलीइनवातनकेलकलागठगेहौ २३

क०। यमुनाकेतीरकौन पावतनहानचीर चुपही चुराइलेहु रुखनिधरतुहौ। कहैकविछैलकेतजानतहौ चन्दछन्द सन्दकहाकहौं नन्दहूकोनिदरतुहौ॥ हमवै नहौहिं येतीवातकी सहनवारी विनाफलपाय तुमकैसे गुदरतुहौ। पाईखोइभीरी चटछोरिलेहि वीरी अवयहां कारीपीरी आंखें कौनपैकरतुहौ २४॥

तथा। छैल ब्रजचन्द यतो छलकरिरहैगैल राधिका नवेली बनी चम्पेकी कलीनई। ताहीखोरि आवैंहरि हरखि निरखिभूले आजुभेंटकैहै कविजीवनभलीभई॥ ताहीमग आवत अचानकही परीदीठि मुरिमुसक्याइ उनदाहिनी गलीलई। कहिरहे कान्हनेकठाढ़ीहोहु सुने जाउसुनीजूहै सुनीजू है कहतहि चलीगई २५ ॥

स०। खेलत एकसमय ब्रजबालसों नन्दलला रस-माहँ रुसाई। गई थकि आवति जाति सखी पर एकहू भांति न जातिमनाई॥ आपुनहीं पिय आतुरकै हँसिकै जगजीवनि कण्ठलगाई। अधिक बातकही तुतरातपै आधिकमें अँखिया भरि आई २६ ॥

क०। बोरीहै पिचक झकझोरीहै झटकि पट फोरीहै कलश इहांबसै कोईकोरीहै। जानौजानिभोरीहै कहूंको कोऊ छोरीहै न थोरीहै ढिठाई जाकी बहियां मरोरीहै॥ नन्दजू कहत कवि गोरीहैतौ काकोकहा जानतहौ कहू काके कुलकी किशोरीहै। गोपगन धोरीहै जनकजाको एहोकान्हप्यारे हरिहोरीहै तौ कहाबरजोरीहै २७ ॥

तथा। कीनोतुमपान मैं कियोहै कबमान अब कीजै सनमान अपमान कीनो कबमैं। प्यारीहँसिबोलु और बोलै कैसे बुद्धराज हँसिहँसिबोलु हँसि बोलिहौंजू अब मैं॥ दगकरि सोहैंको रिसोहैं करि जानत है अबकरि सोहैं अनसोहैंकीने कबमैं। लीजैभरि अंकजहां आय भरि अंकहौं नकाइभरिअंकउरअंकदेखे अबमैं २८॥

तथा। उतैउयो तारन समेत तारापति इतै मोतिन

जटित लट आननपै अरीहै। उतै अङ्कसोहत कलङ्क दिन पनोके उतैआड़ अंजनकी वैसीछविकरीहै॥बिंदा-दत्तकहै इतै लखत चकोरइतै चहूंओर सखिनकीदीठि सुखभरीहै। आजुनन्दलाल पासप्यारीको बिलोको चलि चन्द्रमुखी चन्द्रमासों कैसीहोड़परीहै २६॥

स०। चोरकी चोर छिनार छिनारकी साहकी साह वलीकी बली।ठगकी ठगकामुक कामुककी अरुछैलकी छैल छलीकीछली॥ कचलंपटकी कचलंपटगातिमति-रामनजानै कहांधौं चली। उनफेरिदई नथकी मुकुता उन फेरिकै फूंकी गुलाबकली ३०॥

क०। उतैआई नायका नबेलिन विहाय मन इतैकढे बेलिनतेश्यामयहि धाकरी। जुरिगे दुहूंके दृग लालची लचीलेलोल ललितरसीले लोकलाजकोअदाकरी॥मु-रिमुसक्याइकै छवीली पिकवैनी नेक करति उचार मुख बोलनको बांकरी। ताकरी कुचनबीच कांकरी गोपाल मारी सांकरी गलीमें प्यारी हांकरी न नाकरी ३१॥

स०। हौं यमुनाजलजात अचानक बानकसों नँद-लालठई। तबदौरिधस्यो करसों करको उरलाय लई जनु निद्रपई॥ शिवसिंह जहीं परस्यो कुचको तुतराय कह्यो अवछोंडुबई। भुजते निसुकाई गुपालके गालमें आँगुरि ग्वारिगड़ायगई ३२॥

तथा। दम्पति नेहसों रंगभरे लसैं कुंजनि में लिये कोई सखीनहै। सुन्दरताइनमें छलसों मुरलीलईकान्ह के हाथसोंछीनहै॥ शम्भुप्रसादकहैलखिकैधरेपीनपयो-

धरपयसों प्रवीनहै। मांग्योजबै मुसक्याइकहो सुनो बांसुरीहै कियोबीन नवीनहै ३३॥

तथा। एक समय मिलि सूनीगली हरि राधिका शंकर भाग भरेभर। साहससों उनहेरिदियो उनशंक निशंकसों अंकलईभर॥ सोंहैं अनेककरी सजनीशिर हाथ दियोनाहिं मानीइतेपर। कहि हेरी एरी सुनु मेरी भटू उनछातीछुई उनछोंड़िदियोकर ३४॥

क०। मेरे नयन अंजन तिहारे अधरनपर शोभा देखिगुमर बढ़ायोसबसखियां। मेरेअधरनपै ललाई पीकलालतैसे रावरीकपोलगोल नोखीलीक लखियां॥ कबिहरिजनि मेरेउरगुणमालतेरे बिनगुणमाल रेखशेष देखभाखियां। देखौले मुकुर द्युतिकौनकी अधिकलाल मेरीलाल चुनरी तिहारीलाल आँखियां ३५॥

स०। हौंतौतिहारेदिखाइबेकोहित जागतहीरहीरैनि उजारसी। आयेनराति पियाहरिचन्द लियेकरभोरलौं हौंरही भारसी॥ हैयहहीरनसोंजड़ी रंगनतापै करीकछु चित्र चितारसी। देखोजूलालन कैसीबनीहै नईयहसुन्दर कञ्चनआरसी ३६॥

तथा। रोंकहिं जोतो अमंगलहोय औ प्रेमनशै जो कहैं पियजाइये। जो कहैंजाहुनतो प्रभुताजै कछूनकहैं तो सनेह नशाइये॥ जो हरिचन्द कहैंतुम्हरेबिनु जीहैं नतो यहक्यों पतिआइये। तासोंपयान समय तुम्हरे हमको कहैंआपै हमैंसमझाइये ३७॥

क०। आजु कुंजमन्दिर अनन्द भरिबैठेश्यामश्यामा

संगरंगन उमंग अनुरागेहैं । घनघहरात बरसातहोत जात ज्यों ज्यों त्योंहींत्यों अधिकदोऊप्रेम पुंजपागेहैं॥ हरीचन्द अलकें कपालपै सिसिटिरहीं बारिबुन्दचुअत अतिहि नीकलागेहैं । भीजि भीजि लपटि लपटि सत-राइदोऊ नीलपीत मिलिभये एकैरंग बागे हैं ३८ ॥

स० । ब्रजके सबनामधरैं मिलि ज्योंज्यों बढ़ावकै त्यों दोउचावकरैं । हरिचन्द हँसैं जितनो सबही तितनो दृढ़ दोऊ निभावकरैं ॥ सुनिकैचहुँघा चरचा रिस सों परत्यक्ष पै प्रेमप्रभावकरैं । इत दोऊ निशंकमिलैंबहुरैं उतचौगुनोलोग चवावकरैं ३९ ॥

तथा । मिलिगांवके नांवधरौ सबही चहुँघा लखि चौगुनोचावकरौ । सबभांतिहमैं बदनामकरौ काढ़िको-टिनकोटि कुदावकरौ ॥ हरिचन्द जू जीवनकोफलपाय चुकी अबलाख उपायकरौ । हम सोवत हैं पियअंक निशंक चवाइनैआवो चवावकरौ ४० ॥

क० । कौलसे करन नवदलन सँभारी सेज सुखद सहेलिन सुगन्धसों समोई है । करिकैटहल गईं आपने महल मेट चहल पहल हठी दूसरो न कोईहै ॥ सुखन सँजोई औ वियोग तापखोई प्रीति सखियनगोई मैन मंत्रनसों भोईहै । प्याराभरैअंक और प्यारीगलबाहीं करै ऐसे भानुनन्दिनी गोविंदसँग सोईहै ४१ ॥

तथा । लाखनहैंगैयागेह तेरहेत हे कन्हैया चाहिये जितेकुतेतो माखनकोखायरे । चोरिनवनीताकितभाजत गोपालपरै डरैजनि लाललानेमेरेढिगआयरे ॥ पालन

में भूलिघरै खेलि प्रिय बालन में लालन अजिरतजि बाहिरै न जायरे। तापितमहीहैहाय तपिहैं सरोज पाय माय बलिजाय ऐसीधूप में न धायरे ४२ ॥
तथा। चारुचकईलै घुनघुनालटू कंचनको खेलिघरै लाल बालसखन बुलायरे। पूरिअभिलाखनको चाखन कै माखनलैदाखनमधुरधरे महरमँगायरे ॥ बाजतीधौं कैसी यह बांसुरी बजाय गाय मोदकोबढ़ाय धाय मेरी गोद आयरे। आयो ब्रजबीचहाऊबूभि बलदाऊ जाय माय बलिजाय कान्ह बाहिरै न जायरे ४३ ॥
स०। राधेसखीनसों खेलनको कबिराजकहैं शतरंज पसारी। जानेन आवत आयगये मिलिबैठिके खेलन लागेबिहारी॥ काहूकह्यो अकिआययशोमति आवतथी कोऊ गोपकी नारी। श्यामचले दुरिबेकोतहां मुखमोरि हँसी वृषभानुदुलारी ४४ ॥
तथा। देखेविना वृषभानुदुलारीके भावैहरीकोघरी को घरौना। कामचढ़े कबिराज कछू ब्रजराज समाजमें आय डरौना॥ राधे बिलोकि सखीनमों श्यामसों भौंहन में कह्यो ऐसी करौना। प्यारेगह्यो बनमालगरेतर प्यारी गह्यो करकान तरौना ४५ ॥
तथा। पांयनको परिबो अपमान अनेकसों केशव मानसनैबो। सीठीतमूरखवायबो खैबो बिशेषचहूं दिशि चौंकि चितैबो॥ चीरकुचीरनऊपरपौढ़िबोपातहुकेखरके भगि ऐबो। आंखिनमूंदिके सीखतराधिका कुंजनतेप्रति कुंजन जैबो ४६ ॥

क०। करिकी चुराई चालु सिंधुको चुरायो लंक शशिकोचुरायो मुखनासा चोरीकीरकी। पिककोचुरायो बैन मृगको चुरायोनैन दशनअनारहँसी बीजरीगँभीर की॥ कहैकबिबेनीबेनी व्यालकीचुराय लीन्ही रतीरती शोभा सबरतिके शरीरकी। अबतो कन्हैयाजूकोचित्तहू चुरायलीन्हों छोरटीहै गोरटी या चोरटीअहीरकी ४७॥

स०। नन्दललला लखि वादिशिपै जहांजाती नवेलिन की अवलीहै। अंगविभूषित भूषणते सबरंग रँगेपटसों भसलीहै॥ ताविचनीलपटीपहिरे रसरंगरले गलेचंप-कलीहै। जातचली मुसक्यातगली में सबैबिधिसोंवृष-भानुललीहै ४८॥

क०। एहो ब्रजराजएककौतुक विलोको आजभानुके उदयमें वृषभानुके महलपर। बिनु जलधर बिनुपावस गगनधुनिचपलाचमकै चारुगनसार थलपर॥श्रीपति सुजान मनमोहतमुनीशनको सोहै एकफूल चारुचंचला अचलपर। तामें एककीरचोंचदाबेहै नखतयुगशोभित है फूल श्यामलोभित कमलपर ४९॥

स०। हमसों करि नाहक रारिनिते तुम आपुहि आप दहाकरौगी। भुवनेश नहीं परवाह हमैं इन बातन में जो रहाकरौगी॥ यहजानिपरीहमकोअबतो अपनीकर-तूति उहा करौगी। तुम वादकी बातैं कहा करौगी तो बताओ हमारो कहा करौगी ५०॥

तथा। रूपरचोहरि राधिकाको उनहूं हरिरूप रचो छबिछावत। गावत तानतरंगदुहूं दुहूंभावततायदुहून

रिझावत॥ त्योंभुवनेशदुहूंनकेनैनदुहूंनकेआननपैटक-
लावत। छायरहीछबिवैसियेरीजोसुनीहुती चन्दचकोर
कहावत ५१॥

तथा। चंदिकाचन्दसे आननकी अवलोकिसरोज
सबैसकुचाने। बानसीबंकबिलोकनिजानिकै त्योंमृग
काननमांहिं छिपाने॥ प्राणसबैब्रजकीबनितानिके आ-
निकेरावरे हाथबिकाने। सांचीकहोभुवनेशअबै किनपै
फिरोभौंहशरासनताने ५२॥

क०। यमुनाकेतीरचीर ब्रजकीकुमारीराखि मज्जन
करनसब पैठिगईनीररी। भनतादिवाकर तमालओट
देईदेइ लेइचीरकदमपैचढ़ोदोऊबीररी॥ गोपीकरजोरि
जोरि बिनतीकरतिहाहा जलमेंजुड़ानीदेर कांपतशरी-
ररी। राधिकासहितपीर सोऊनादरदहोत मोकोकादर-
दतोकोअन्ततोअहीररी ५३॥

तथा। सखिनसमूहसंग बैठीवृषभानुसुता चूनरदे-
खाईरंगरेजिनलै आयकै। हाथेहाथपरत उलटिकेनि-
हारिसब कहीइन्हलायकहै प्यारीकोसुनायकै॥ चुनि
चुनिनीबीनिज हाथेपहिरायकर देखोगेबहारश्यामगोद
मेंसुतायकै। नैननननचाय निहुरायसतरायतब सैनन
बतायमुखफेरीमुसक्यायकै ५४॥

तथा। कहैयदुबीरसुनो सखामममधीरऊधो हरोब्रज
पीरजाय योगहिजगायजू। बीततअलपपल कलप
समानजिन्हैं तिन्हैंज्ञानकोविधानआइयेसिखायजू॥ की
जियेउऋणहमैं गोपिनकेऋणबाढ़े आपबिनगाढ़ेदिन

करैको सहायजू । चलेशिरनायश्यामसूरति बनायरथ पथहरपायगये जहांनन्दरायजू ५५ ॥

तथा। रहियोअनन्दमाहिं गुनियेअँदेशनाहिं सुनियेसँदेश नन्दनिजप्राणधनको । कह्योपांयलागन बड़ेई अनुरागनसों भूलियोकन्हैया बलभैयाकोनछनको ॥ कोऊनवलैयालेत मैयाबिनुमोहिंइतै होहिंदूबरीनगैया कीजियो यतनको । माखनाकियोहैनाहिं चाखतहौंजबहींते तबहींतेआयोतजि आपनेबतनको ५६ ॥

स०। लाईलेवायसखीनवलै गहेहाथसोंहाथ गहायदईत्यों। छूटिगईकरलालतेबाल बिशालगईफिरिकै भजिकैयों ॥ आरसीकेघरजायदुरी प्रतिबिम्बन देखि छकेहरिहूज्यों । आवतीजोनसुहावतीबास तौभावती को पहिचानतेजूक्यों ५७ ॥

तथा। येइतघूंघुट घालिचलैं उतवे जब बांसुरीकी धुनिखोलैं। त्योंपदमाकर येइतेगोरस लैनिकसैं वेचुकावतमोलैं ॥ प्रेमकेफन्दे सुप्रीतिकी पैठमें पैठतही है दशायहजोलैं । राधामईभई श्यामकीसूरत श्याममई भई राधिकाडोलैं ५८ ॥

क०। ज्योंज्योंजातबाढ़त बिभावरीबिलास त्योंत्यों चन्द्रिकाप्रकास जगजाहिरैकरतुहौ । द्विजदेवकीसोंकछुआननअनूपओप आछेअरबिन्दनकी आभानिदरतु हौ ॥ कीबेहैंसुरसतुम्हैं कौनबरहीकोहियो सांचीबूझिबे में कहामौनताधरतुहौ। आजकौननारीसोंमिलापकरिबे केकाज चन्दसेगुपालइतै भांवरीभरतुहौ ५९ ॥

तथा। कमलसोंबदनकुम्हिलानोकाहेश्रमबिन्दुग्री-षमदुपहरीपनसरसाईहै। पीतपटकैसोतेरेकंतवकसीस दीन्होंधीरेक्यों बचन मोहिं मोहनबकाईहै॥ बार क्यों लगीरीतेरेप्रेमकीकहानीकही अरुण कपोलकाहेकेसरि लगाईहै। याहीकोपठाई भलो कामकरिआई लीन्हो रससरसाई मोहिं बातन उड़ाईहै ६०॥

तथा। बैसहीकिथोरी पैनभोरीहै किशोरीयहयाकी चित चाहराहऔरकीमझैयेजिन। कहैपदमाकर सुजान रूपखान आगे आन वान आनकीसुआनकै लगैयो जिन॥ जैसेअबतैसे सुधिसोहनि मनायल्याईतुमएक मेरीबात एतीबिसरैयोजिन। आजकीघरीतेलै सुभूलि हूं भुलैयो श्यामललिताको लैके नाम बांसुरी बजैयो जिन ६१॥

स०। मैंहितकी कहियो समुझोमन आपनेश्यामन रोषभरोजू। होंतुमहीं तुमहीं हरिहौयहप्रीतिकीरीति न मानधरोजू॥ काचिकली नखिलैशिवनाथ सुधारस शोच उपायकरोजू। चलिकै मिलियेवृषभानुललीफिर कुंजनकुंजन राजकरोजू ६२॥

क०। बकिबकिजकिजकिदूतीहारिफिरिआईरूपम-दमातीबैठीमाररसरसाइगो। हँसिहँसि हरिहेरफेरिदृग सखिनसों मिसमिसराधेकेनिकटहारिआइगो॥ कह्यो उरलीजे प्यारीहार यहमालतीको तेरेकुचपरसि न केहूंकुम्हिलाइगो। आलीहौंअचभोरहीआवतनबैन कहीआपनी पियारीलीन्हीं आपहीमनाइगो ६३॥

तथा। नेकहँसिबोलोकरजोरिकैकहतलाल मैंतो तकसीरप्यारी तेरीकछुनाकरी। कालिकाकोपूजि रक्त चन्दनचढ़ायोभाल जावकके धोखे सतरानीहौकहाक-री॥ हँसिहँसिहँसायदीन्हो मुखमोरि शिवनाथसखी सों सहादीदै दैसांवरी हहाकरी। भूलिगईरिसमुसकान लागीमानतजिकरीसोकरीअबआयोजोक्षमाकरी ६४॥

स०। बोऊरही हठि रूठिलला अबक्योंबनिहैदुहुँ ओरको मामिलो। हौंतौथकी जकिकै बकिकै हरिकौन करै यह रावरो भामिलो॥ मोलल्येते न बोलियेबोल जैसे तुमबोलतहौ बलिकामिलो। आजुमिलो वृषभानु दुलारिहि कालिहचहोमिलियेचहो नामिलो ६५॥

तथा। गागरलै चली सागरते वहिकुंजन श्याम-हिभेंटभईजू। प्यासलगीकहिकै मुसकाइगये ढिग त्यों तिरछे चितईजू॥ नैननैन मिलाइलियामनलालभुजा गहि अङ्कलईजू। पूरिमनोरथ योंमिलिकै हरिकुंजनसों निजधामगईजू ६६॥

तथा। श्यामकेसंगगईबनमें तनसेंतनकोनहिं शङ्क भईहै। बाल करीलके कुंजनऊपरफैलितमाल लताउ-नईहै॥ देखतदौरिलगी पदकांकरी नाकरीमोरिसिसी-कलईहै। धाइधरीगहीअङ्कलगाइ अली यहप्रीतिकी रीतिनईहै ६७॥

तथा। एकसखीहरिसंगबिहाइकै फूलनकारणबाग गईरी। कण्टकबेधिगयो पदआंगुरी हेहरिहाय पुकारि दईरी। काननसों सुनिकाननमेंधुनिधाइकै कन्धचढ़ाइ

लईरी। शोणितप्रोंछिलियो पटपीत अली यहप्रीतिकी रीति नईरी ६८॥

तथा। छूटिगयो गुरुलोगनकोडर टूटिगई प्रियबंधु सगाई। भूलिगयो सगरो गृहकाजन लाजन आवत साजनताई॥ आठहु याम लिये सँग डोलत बोल न काहुकि बातसोहाई। नेकहु मानकरै अबलाजबतो कर जोरिरहै शिरनाई ६९॥

तथा। श्रीपति औवृषभानुललीन मिले डर लाजन प्रेमअगाधिका। तैसी गुलाबगली चटकारिन डारी मरोरि मनोजकी बाधिका॥ बेलिनसों उरझी सुरझी सुरझीसी समीर सुगन्धन साधिका। राधेपरीकहिमाधव माधव माधव टेरत राधिका राधिका ७०॥

क०। हिमकरबैरीऔर हाथी औहरिनहरिखंजरीट बैरीतेरोमीन औमरालरी। कदलीकपूर फेर कोकिलकी बैरिनि तू दाड़िम बन्धूक बिम्बबैरीहै सेवाररी॥ चंपा सम्पा चंचरीक कीरकम्बु हीरालाल यमुना औ सौति बैरी कुंदन औब्यालरी। एतेसबै बैरी तेरे एकहितूश्याम तेरे श्यामहूते बैर तेरोकैहै कौन हालरी ७१॥

तथा। गोरीकीगोराई थोरीथोरीसी जरदहोत शरद समीरनते पीरतनआधिका। भूलिगयो असनबसनदृग नीरभरे कोपनलौं बिरहतरंगिन अगाधिका॥ सूखिगो रकत मास भरत उसासनहीं तापसीतपतकीन्हीं मदन असाधिका। कबिशिवनाथ दोऊ ब्याकुल से फरफरात राधाकहैं हरि हरि हरिकहैं राधिका ७२॥

स०। क्योंहरिसों हँसि बोलत काहेन कौन सुभाव पस्यो अलबेली। हौंसमरैं सजनी सगरी ब्रज प्रीतम सों बतराइनबेली॥ ज्यों चुपचापरहौ गहिमौन अली मुरझात सोहागकी बेली। आंखिनसों नहिं देखन देत रही उरमें गड़िलाज सुबेली ७३॥

तथा। बोलत नाहिं सखीके सकोचसोंत्यों वृषभानु कुमारिगईजू। सीखदई समुझाइ उराहनो फूलनमालन मारिदईजू॥ लाइ सुगन्ध लगाइ लियो उरहै इतहीन अधीन भईजू। उत्तरदेत न नन्द कुमारनवाहि बिलोचन लाज छईजू ७४॥

क०। हँसत खेलनखेललोचन चलाइबालरद चमकाइ गाइ भौंह मटकावती। श्याम करबांसुरी छिनाइ छ्वायो अधरसों खैंचिखैंचिपीतपट माल झटकावती॥ देनकहैं नटजात हाहा खात अठिलात कुशलसिंहबार बार तृणचटकावती। मोहनके मोहिबे को सांची कहौं मेरी बीरकौन ब्रतसाधे राधेलाल भटकावती ७५॥

स०। आजुदिवारिकिरातिजुवा मिलि खेलतदंपति हैं रजधानी। दाऊकेलेतभयो झगरो पियपांसाको छीनि लियो गहिपानी॥ क्रोधउठी भय कम्प उठ्यो तनस्वेद छुट्यो अंखियां सरसानी। लाल लगाय लियो उर सों मुसकाय दियो शिवनाथ सयानी ७६॥

तथा। दैदृधिदीन्हौंदिखावतका चपकाछलियांतनियांतनहेरो। हेरो कहूं बछरानको जाइसो नाहकक्योंबनितानकोघेरो। घेरोकियोघरिचारिलौंमोहनमोतिनहार

छुवोजनिमेरो। मेरोकह्यो करि जाहु नतौ लुटिजायगो सांवरेगांवरे तेरो ७७॥

तथा। तातन भ्रातन पुत्रन बित्त रहैतनयोबन रूप गुमानमें। राजनसाजसमाज किते गजराज गये परि काल दहानमें॥ बाग-तड़ाग बिभूतिन बीरता धीरता धामन आवे कहानमें। हरिनामचलै सँगहीं शिवनाथ सोनेकी बदी रहिजाल जहानमें ७८॥

क०। नंदयशोदाकी कथासुनिये अथाह प्रभु नैननतें चल्यो नदकोप्रवाह बहिकै। ठहरैं न धीरतरु लहरैं उठे हैं शोचहहरैं हियेमें हाय कान्ह कान्हकाहिकै॥ चाखनन कीन्हों आज माखन मलाई लाल लाई है अबार को नख्यालबीचराहिकै। या बिधि प्रलाप के कलाप करैं आपसमें आपके मिलापआसरहे श्वास गाहिकै ७९॥

तथा। खेलत सखानमेंसों आये आधीराति प्यारे मेरेलियेऐसीभारीकरीआँधियारीमें। स्वेदबिन्दुइन्दुमुख ऊपर बिराजिरहे लसैलाललोचनएनींदकी खुमारीमें॥ लटपटे केश मनमोहन सवांरोनेक एतीबार आवन सो जानी अति प्यारीमें। कहां लों निहारी जाय मोपर बिहारी आज बानिकातिहारी मतवारीपरवारीमें ८०॥

तथा। लोचनलुनाई चारुचन्द्रसोंबदनज्योति अंग अंग झलक मनोजकी प्रभामई। आवती अकेली अलबेलीसी बिहालकुंजमगमें मिलाप नंदलालसों नई भई॥ रञ्चकरि सोहैं बिहसोहैं वे कपोल गोल लोचन नचाय लायगतिसों नई नई। कहिरहे कान्हनेक ठाढ़ी

होउ सुनेजाउमुनीहैजूसुनीहैजू कहतहीचलीगई ८१॥

स० ।आजुगई सांतिभाइचली यशुदाके निकेतमिले बनवारी। पीतपटाधरदैकै चटा तहँलैगयो मोहिं अटा की अटारी ॥ योंनँदराम सुधाते सिरे करि बातैं भली करनी यहसारी । दौरिअचानक अंकभरी शठता करि के शठ कंचुकी फारी ८२ ॥

तथा।खेलनकेमिसलैगईआलीनईदुलहीरतिमंदिरकाहीं॥त्योंनँदरामसचीशतरंजलगींमिलिखेलनआपुसमाहीं॥आइकेवैठिगयेनँदलालउठीबरबालगहीहरिबाहीं। कंपतगातकढ़ैनहिंबातसरूकरिआईगरेलगिनाहीं८३॥

तथा । पाईकहूंतबतौकलमैनसुनाई कितीमोहिंमैन की बाधा ।त्यों नँदरामजू बीतिनिशा अब बाकी रह्यो निशिको दल आधा ॥ पायँपरैं कबके बिनतीकरैं हौंहूं तुम्हैं कबकी अवराधा । गोरे गोपाल गरेसों लगाइ ले दांवरीहै अब सांवरीराधा ८४ ॥

तथा । सोहतहैं सुख सेजदोऊसुखसासे भरे सुख के सुखदायन । त्योंनँदरामजूअंकभरे परयंकपरैंचितचौगुनोचायन ॥ चूमतहैं कलकंज कपोलरचैं रसख्यालन शीलसुभायन । सांवरीराधा गुमानकरैं तब गोरे गोविन्दपरैं उठिपायन ८५ ॥

क० । तुमतौगवाँरहौ गवारनकी बातै करो बाभिबे परीहै कहाकाहेभौंहतानीहै। धूरिलागिजैहै नेकदूरि हटि वैठोलालनन्दराम बातैंयोगयोगमैंबखानीहै ॥ भूषणको हालगुंजमालहीसो जानोजात दामरीकी बातकामरीते

पहिंचानीहै। आपकहवावैमहराजतौ अहीरनतेबापकी ये बातैंकहौ केतीराजधानी है ८६ ॥

स० । चीरगहेनहिंडोलनदेत ललावृषभानुसुता अकुलानी । मैयानयाहिबोलायोकरो इनकीनँदराम सबैहमजानी ॥ कंचुकमेरचोरायदुवो अँगियाबिच देतनग्वालिगुमानी । लालनकी लरिकाईभरी बतियां सुनि ठाढ़ी हतीनँदरानी ८७ ॥

बांसुरी विषयके कवित्व व सवैया १५ ॥

तथा । घनश्यामघटासी छटासीदुकूल प्रकाशत ओधबिराजतही । बिनदेखेछमासीछमासीपला उपहांसीकिनासीनकाजतही ॥ मृदुहांसीकिफांसीमेंफांसी फिरै सुखमासीउदासीनसाजतही । विषबांसीयेगांसी सिखासीहिये लगैबन्शी बिसासीके बाजतही १ ॥

क० । कुंजनमेंबांसुरी बजाईनँदनन्दनजू धुनिसुनि सबकेहियोकोहोशहरिगो । कहैंगिरिधारी कुलनारिनकी भीरभईनिपटअधीर पैनधीर नेककरिगो ॥ बिकसीकलीसीचलि निकसीनिकेतनते नहींब्रतनेमको बिचार कछुकरिगो । लाजकोरसाला तजिदौरी ब्रजबालासब आजुकुलमालाको दिवालासोनिकरिगो २ ॥

स० । बाजीहती मनमोहनकेमुख तादिनते मनमोहिलईहै। घायलसीघुमरैघरमें अहवादिनतेमेरीसुद्धि गईहै ॥ कासोंपुकारिकहौंसजनी सिगरेब्रजमेंबेपीरभई है। यहिबांसकीबंशीकोनासकरौं ज्यहिबांसकीबांसुरी गाजबईहै ३ ॥

तथा। वशह्वैमुरलीस्वरलीनकिधौं किधौंकूलकालि-दीकेटोहनगो। किधौंपीतपटालखियालकुटी किधौंमोर पखाछविजोहनगो॥ किधौंलालकेमालके मध्यफँस्यो किधौंकामकमानसी भौंहनगो। हमकासोंगदाधर योग करैं मनतोमनमोहनगोहनगो ४॥

क०। भूल्योखानपानभूल्यो पटपरधानसबै लोगन कोभूलिगयोवांसु औनिवांसुरी। चकिरहींगैयाचारुचों-चनचिरैयादावि चितवनिञ्चलचखु चेतुचितुनासुरी॥ हैघरीभरीसीहै परीसीवृषभानुजाई जीवतजनावैदेग आवैदृगआंसुरी। कान्हरसकैसेकैछड़ाईमेरीबीरकवि कविकी विस्वासनि वगारैविषवांसुरी ५॥

तथा। बांसुरीकेबीचएक भौंरडारिल्याईसखि ढांकि पटपल्लवसों महाबुद्धिभारीसों। भनतपुराणयामें आ-पहीते ध्वनिहोत कानदैकैकह्योसुनो राधासुकुमारीसों॥ रीझिरीझिवारीताहि आपहीमगनभई नभतनाचितै मुखमूंद्योश्यामसारीसों। आंचरमेंगांठिदैविहँसिउठि चलीआलीप्यारीकहीआजुह्याहींरहोनहमारीसों ६॥

स०। कहुंकाहअली रसरासिरली मुरलीमधुराधर बाजतिहै। हरिबोलनिमोलनिलैचितको चलकुण्डल डोलनिछाजतिहै॥ वहदीनदयाल विशालप्रभाअजहूं मनमन्दिरराजतिहै। लखिमोहनिमूरतिको अतिशै रतिकेपतिकीद्युतिलाजतिहै ७॥

क०। किधौंहै वशीकरकीसीकरकरतिकैद जान नहिंदेति कहूंमनकेमतंगको। किधौंहैउचाट न भुलावै

घाटबाटनते हाटनते धावैंबधूछांड़िसबसंगको । किधौं-नेहघटाछीजै दन्तछन छटाछोर एरीबीरबरषै सरसरस रङ्गको । किधौंयहमोहनकी बांसुरीबिमोहनहै सोहन लगतिलिये गोहनअनङ्गको ८ ॥

तथा । भईहैबियोगीबालभोगीहोतहौंबिहालतारस के भोगीभये योगीतजिकैतुरी । तपन सुताकोरीलगो हैज्यों तपनतीर भूलिकै अपनपौको गतिबेगते मुरी ॥ शारद बिशारद की भारदभईहैसुनि बीनको दुरायकै प्रबीन दुरीमें दुरी । भूलैसब बांसुरी सुनैहैं जब बांसुरी को आंसुरी न रोकि सकै आंसुरीहूंआंसुरी ९ ॥

तथा । जनीजड़ बंसते अधर अवतंस बनीहै अ-सारनमेंहोहियेकीखालीरी । हरैमनधनको करैहै माधुरी सों बात उठैंउतपात याके कुलते दवालीरी ॥ छिद्रनको लियेहिये गांठिते भरीकठोर बोलै मुंहजोर बरजोरएकु-चालीरी । कालीके दमन कहुकैसे प्रीतिपाली यातेकहैं बनमाली जगमें प्रबीन आलीरी १० ॥

तथा । सहीशीत भीतबरषा तपकी उतपाति राति दिनयाने बहुभांति तपकोकिया । जनमते बाढ़ी प्रीति एकपगठाढ़ीरहीडाढ़ीगईगाढ़ी नहिंनेकुकसक्योहिया ॥ कीजै नहिं रोष यापै दीजै नहिं दोषबीर देहको सुखाय धीर नेहूं ब्रतको लिया । परखि सुलाखि ताय लीन्हीं ब्रजराय याको ताते यह बंशी आय भई श्याम की प्रिया ११ ॥

स० । पीतपटीकटिपैलपटी छुटेकुंचितकेशाविराजत

चन्दन । राजि रह्योगरेमेंगजरा गज गौहरको छलकै छविछन्दन ॥ त्योंभुवनेश भलीविधिसों सुबजावत बांसुरी आनँद कन्दन । कौन येहैं अवलोकु अली चले ध्यावतहैं गति मत्त गयन्दन १२॥

क० । वंशीने कियो अधीन गह्यो श्यामसनमीन रखैं वसुयामलीनलखैं भले भायेरी । अङ्गको त्रिभङ्ग करे एक पगसवें खरे अतिसे उमङ्गभरेजासु सङ्गपायेरी ॥ रीझैहैंकलापैं याकीललापैं न रह्यो जाय तपके कलापैंयाकीकापैं कहिजायेरी । सेज अधरानपैसो आय कैसनेह लाय नितहीपलोटैं पांयजाकेयदुरायेरी १३॥

तथा । वादिनगईती ब्रजदेखन करील वन झूंकमें जुपरी आय वंशीकेअन्यासुरी । ताक्षणते आली फिरों बावरीसी रावरीसों द्विजदेव नेकहू रुकीनपर सांसुरी ॥ आजुकछु आईहिय सूरति समानीहुती रंचक विहानी रैनि घरकत पांसुरी । कीजैकहा रामअवजैये केहिठाम येरी फेरिवन बैरिनि बजीरी बन बांसुरी १४॥

जादिनते वंशीअवतंशी यह गोकुलमें तादिन ते कीन्हों श्याम अधर निवासुरी । कुंजकुंज डोलैं याहि संगमों किलोलैं किधे लीन्ह्यो सौति राग भाग सुखसों विलासुरी । वन्दीदीन दीन कैरही हैं हम मोहनबिन एकछिन पावत न बोलिबो सुपासुरी । बांसुरी सुनत नैन आंसु आय जात पीर पांसुरी समात औ पिरात गांसु गांसुरी १५॥

तथा । खोइकैसुवंशवंशीऐसेहीकछुकदिनमारीफिरी

ऐसेही कछुकदिन नागीरी । छेदकरवाय निजछातीमें छसातगई कारीगर हाथनअनेक बिधिदागीरी ॥ ताही मनमोहन कितेदिनते राखीसंग द्विजदेवकीसोंहैसुराग अनुरागीरी । ढीठह्वैकै क्यों न ब्रजबालन सतावै सोई बांसुरी सुन्योमैं अबहरि मुख लागीरी १६ ॥

तथा । वाहीकेरँगीहै रँगवाहीकेपगीहैमग वाहीकेलगीहैसँगआनँदअगाधाको । कहैपदमाकर न चाहतजिनेकुदृग तारनते न्यारोकियो एकपलआधाको ॥ ताहूपै गोपालकछु ऐसेख्याल खेलत हैं मानमोरिबेकी देखिबेकीकरि साधाको । काहूपै चलायचष प्रथम खिझावै फेरि बांसुरी बजायकै रिझायलेत राधाको १७ ॥

तथा । सांझसमै मतिराम कमावसको बंशीधरबंशी बटतटमें बजाईजब बांसुरी । सुमिरि सहेठ वृषभानुकी कुमारिउर दुखअधिकानोभयो सुखकोबिनासुरी ॥ शर सोंसमीरलाग्यो शूलसी सहेलीसब बिषसोंबिनोद लाग्यो बनसोंबनीबांसुरी । तापचढ़िआईतनु पीरचढ़ि आईमुख आंखिनके ऊपर उमँगिआये आंसुरी १८ ॥

स० । कौनठगोरी भरीहरिआज बजाई है बांसुरी यारसभीनी । तानसुनी जिनहीं जिनहीं तिनहीं तिन लाजबिदा करिदीनी ॥ घूमैंखरी खरीनन्दके द्वारन बीनीकहा अरुबाल प्रबीनी । याब्रज मण्डलमें रसखानिसों कौनभटू सुलटूनहिंकीनी १९ ॥

तथा । मोहनकी मुरलीकीअली जबते मधुरीध्वनि कान परीहै । बालभई तबहींतेलटू गृहकाजसमाजसबै

त्रिसरीहै ॥ कानन कानन ओरकियेरहैं कामखरीकुल-कानिकरीहै । वातसोहात न होतकछू सुनिबेकी मनो मन आनिखरीहै २० ॥

तथा । आजलखो वृषभानुलली मनमोहनसों रस खेलटरीहै । वातनकेचसकै सुरलो मुरलीहरिके दबका-यधरीहै ॥ ज्योंज्योंहहाकरि मांगैलला वह त्योंत्योंकछू अठिलात खरीहै । देनकहै मुकरैहँसै मोंहन सौंहकरैरस भायभरीहै २१ ॥

तथा । सांझसमै यमुनातटबीच खड़ेतरुटेक कदम्ब किछांई । मन्दसुगन्धसमीरबहै यमुनाजल उज्ज्वलसी-रसोहाई ॥ शारदमास विलास विलोकिनई उरआनँद कीछविछाई । सोनकहीलहिजातप्रताप जबैवंसुरी व्रज-राजबजाई २२ ॥

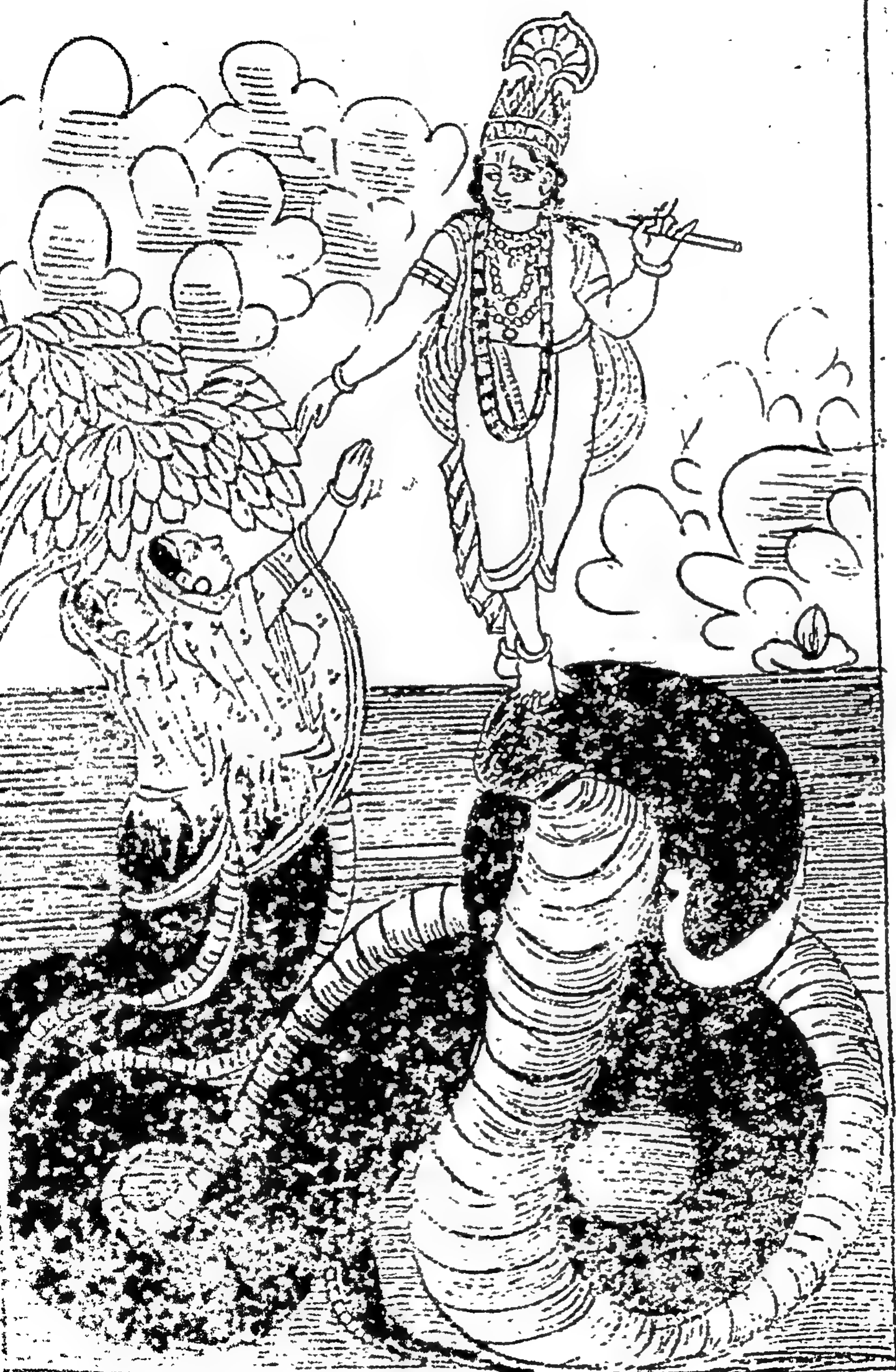
तथा । शब्दअचानककानपस्यो सरपुंजप्रताप खरी अकुलाई । गोकुलकी कुलकोनगिनी अपनेअपनेगृहते उठिधाई ॥ स्वेदितगोलकपोललसेकलकुण्डलडोलनि मेंछविछाई । जायमिलींललनातजिलाज जबैबँसुरी व्रजराजबजाई २३ ॥

तथा । वंशीप्रताप बजैगीजबै सुधिनेकभटू तनकी नरहैगी । डोलोगि कुंजन वावरीसी मुसुक्यान तरङ्गमें कान वहैगी ॥ घूंघट मारचलो कितनो मतिमायकेकी-न इहांउमहैगी । आइहोबीरजोयाव्रजतौ व्रजराज सों लाज़कहां निबहैगी २४ ॥

क० । येहोनन्दलाल तुम वंशी न बजाया करो



…चन्द्रका यमुनाजीमें कूदके कालीनागके सिरपर नाचना व गायना।



लैलैमेरोनाम नेह रावरो छपाउहै। नन्दरामफेरिफेरि आवतहौ याहीगैल सैलब्रजठाकुर अठाइनकोठाउँहै॥ हाथ जोरिजोरिकै बोलावतहौ कुंजबन लालरोजरोज मिलिबेको तौनदाउँहै। मेरेजूचरणचीन्ह धूरिदृगला वतहौ जानि जैहैंचातुर चवाई ब्रजगाउँहै २५॥

तथा। बैठीमृगनैनी खोलिबेनीसुखदैनीऐन सजन शृङ्गारलागी अंगनादिवारीमें। नन्दराम तौलौंमन मोहन बिहारी कहूं मधुरबजाईफूंकिबांसुरीकियारीमें॥ खटकी करेजेतान अटकीअनेखेनेह चटकीचलीदैताल पटकी पछारीमें। सेजगिरीजेहरी अंगूठी देहरीकेद्वार मारगमेंबाजूबन्दबांकफुलवारीमें २६॥

तथा। आजुमिल्योमगमेंमनमोहनजाकोलगैमकर- ध्वजदूतरी। त्यों नँदरामजू बीन बजावत गावत मेघ मलार सँयूतरी॥ पांसुरीपांसुरीशालतहै असिबांसुरी तानगड़ी मजबूतरी। नैननपूतरीतेनकढ़ै वहसांवरोबी रअहीर कोपूतरी २७॥

नागलीला के कवित्व व सवैया॥

क०। बेनी सी बखानै कवि ब्याली काली कीन्ह आली तिन सबहू को प्रतिपाली अहोकालीहै। ताहीसों उतालनन्दलाल बालकूदि जल नाथ्योजाय ताहिचा- हिउपमा न चालीहै॥ तहां हरिचन्दसबै गांवकेतमाशे लगे तिनके अछत तू कीनीखूब ख्याली है। ज्योंही

देखोतसवीरनम्बर १२॥

ज्योंनचतप्यारी राधे तेरेदृगदोय त्योंहीत्यों नचत फन परवनमालीहै १ ॥
तथा। गोपीग्वालमालीजुरे आपुस में कहैं आली कोऊ यशुदाको अवतस्यो इन्द्र जालीहै। कहै पदमाकर करैको यों उताली जापै रहन न पावै कहूं एको फन खाली है ॥ देखै देवतालीभई विधिकेखुशालीकूदि विलकत कालीहेरि हँसतकपाली है। जनमकोचालो येरी अद्भुत दै ख्याली आज कालीकी फनालीपै नचत वनमालीहै २ ॥
स०। एकसमै प्रभु खेलहिं गेंद गिरो यमुनाजल मध्यहिमाहीं। कूदि पस्यो हरिताही के हेतु गयोधँसि पैठि पतालहि जाहीं ॥ बाल सखा बहु रोदनकै हिय शोचवड़ोगये माहरिपाहीं। कृष्णतिहारो बुड़ो यमुना विच ढूँढ़िथके हमपावतनाहीं ३ ॥
तथा। हाहाकारभयो ब्रजमण्डल नन्दकि रानी न देह सँभारी। शोचके वश्य कहैं असवैनवसो मेरोभौन धौं कौन उजारी ॥ लोटहिं केश परे धरणीहिले बाल सखा वहिघाट सिधारी। ब्रजनारिन शोच को कौन कहै मनु कृप्पण द्रव्य जुआवहुहारी ४॥
तथा। कृष्ण तलातल कीन प्रवेश निवास भुजङ्गम तेज अपारा। जाय समीप जगावतभे तब नागिनि कृष्ण सों बैन उचारा ॥ बालक तू किहि हेतु शरीरहि खोय चले यहँवां पगुधारा। नाहक नाग जगावत हौ फुफुकार तिहूं पुरहोयउजारा ५ ॥

तथा। बोले कृष्ण सुनो अहि नारि बसै ब्रजमों यककन्स भुवाला। मांगत फूल अहीपुरके मोहिं डाटि नरेश ने कीन बिहाला॥ लादिकै फूल चलौ तिहिद्वार वृथानहिं बैनसुनौ अहिबाला। काली को तेजसुनावतु हौं मैं कोटिन कालन केर कराला ६॥

तथा। यहजाहि अहारसो बाहनहै परिवार समेत सो ताहि खवावों। पतिहीन करौं त्वहिको सुनुनारि औ नाथिकै कालिहि देश पठावों॥ हाहाकार पताल परै लैगोकुल मण्डल माहँनचावों। देय जगाय न बार करौ मोहिंहोइ बिलम्बकहाडरवावों ७॥

तथा। काली उठा रिसिआय तबै असकौन तिहूंपुर दूसरो मेरो। दृष्टिके सम्मुख जौनपरै तिहिभस्म करौं जिहिके तनुहेरो॥ जोकछु तेजकरौं हियमें क्षणएकमलौं मैं तिहूंपुर पेरो। आयुतुलानि क्यहीसुनु नागिनिकौन यहीपुरकीन बसेरो ८॥

तथा। दृष्टिपरी नँदलालकि ओरतबै बिषराशिछोड़ो फुफुकारा। पौन अगाध चलोअतिदुस्सह कौन कहै तिहि तेजअपारा॥ श्यामशरीर भयोअतिसांवरकृष्ण बिषंग तबै शिर धारा। करजोरि अनेकन थाकि गयो नहिं पावँ हिमाचलको पति टारा ९॥

तथा। चढ़ि मस्तक कृष्ण पयानकियो अहिलोकहि शून्यकियो क्षणमाहीं। पौनकेतेजचला सहसानन आय तुलानि कदम्ब किछाहीं॥ मुरलीधर बेणु बजावतभे सुनि गोपबधू गईं माहरिपाहीं। बन्शि कि तान

परी मेरे कान कहै हिय मोर मनो हरि आहीं १० ॥

तथा। जौ लगि शोच करै हियमें हरि तौलहि नन्द कुआरहि आये। शोर भयो सब गोकुलमें नर नारि कुमारहि देखन धाये ॥ नाह हरि गोद उठाय लियो मोरे लाल तू कालिहि कैसे बँधाये। साजिके आरति शीश उतारि निहारिके आनन प्रेम बढ़ाये ११ ॥

ब्रजकीप्रशंसाकेकवित्त व सवैया १७ ॥

क०। जौलौं तेरी आयु तौलौं हरिकी शरण आव करि कोउ पाव कृष्ण नामसें अटकिजा। बन्यो तेरो दांव चित्त चाव अतिभावहीसों गोवर्द्धननाथ रूपमाधुरी गटकिजा॥ समतें बिहाय आन कार्य करे दहाय प्रेम पन्थहीसें आय दुखदंदको पलकिजा। कहै ग्वालगनंदकाहे होति मति मंद अब छांड़ि सब फंद ब्रजभूमिको सटकिजा १ ॥

तथा। ग्वालसंग जैबो ब्रजगाइन चरैबो ऐबो अब कहा दाहिने ये नैन फरकतु है। मोतिनकी माला वारि डारौं गुंजमाला पर कुंजन की सुधि आये हियो धरकतु है ॥ गोबरको गारो रघुनाथ कछू याते भारो कहा भयो महलनि मणिमरकतु है। मंदिरहैं मंदरते ऊंचे मेरे द्वारका के ब्रजके खरिक तऊ हिये खरकतु है २ ॥

स०। मानुष होहुं वही रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गोप गुवारन। जो पशु होहुं कहा बश मेरो चरौं नित नंदकि धेनु मँझारन ॥ पाहन होहुं वहीगिरि को जो धर्यो करि छत्र पुरन्दर धारन। जो खग होहुं बसेरो करौं वहि कूल कलिन्दी कदम्बकी डारन ३ ॥

तथा। यालकुटी अरुकामरिया परराजतिहूं पुरको तजिडारौं। आठहूसिद्धिनवौनिधिको सुखनन्दकिगाय चराय बिसारौं॥ रसखानि कहै इनआंखिन सों ब्रजके बनबाग तड़ाग निहारौं। कोटिकरौं कलधौत के धाम करीलके कुंजन ऊपर वारौं ४॥

क०। एकरजरेणुकापै चिन्तामणि वारिडारों लोकन को वारों सेवाकुंजके बिहार पै। ललनके पातनपै कल्प वृक्ष वारिडारों रामहूंको वारिडारों गोपिनके द्वारपै॥ ब्रज पनिहारिनिपै शचीरचीवारिडारों बैकुंठहूको वारि डारों कालिन्दीके धारपै। कहै अभयराम एकराधाजी को जानतहौं देवनको वारिडारों नन्दके कुमारपै ५॥

तथा। राधेकीरहनिसुनि दहनिदहीहै देह नेह कैसे नीरद नयननीरबरसत। सांवरीसी मूरतिमें झांवरीसी परिगई तांवरीसीआइताहि श्रमबुन्दसरसत॥ श्वासन ते बाड़वकी ज्वालसी जरन लागी झरपि झरपि झूमि दावरीसी झरसत। आंखैं खोलि बोलि कह्यो ऊधोजी तिहारी सौंहमेरो ब्रज चलिबेको अंगअंगलरसत ६॥

स०। पैरि थकोहौं तृषाकी तरंगिनी जोजगदीश्वर पारलैजाही। लागिरही बलदेवजूलालसालायक लाभ लसी मनमाहीं॥ कूलकलिन्दी करीलके कानन कामद कुंज कदम्बकि छाहीं। लालचीकै पदनन्दके लाल के लोटोकरौं ब्रजकी रजमाहीं ७॥

सुदामा चरित्र के कवित्त व सवैया १८ ॥

स०। बूझतयों द्विजनारितहां पिय पांय परौं कहिये किनसोंहै। रावरोआननआनँदसोंलखिहोत इतैंहियमों सुखमोंहै॥ दूबरीदेहभई केहिकारण बाढ़्योचितैंदुचितै अरुजोंहै। शोध कँगूरनलौं पति पूरितै कौन सो भौन पुरन्दरकोंहै १॥

तथा। साथपढ़ेहम औव्रजनाथ जुपै तुमनाथ येबैन उचारो। तोअबशोच न मोचतक्यों पियलोचनजाइन नन्ददुखारो॥ काहेकोबैन उदासकहो अरुकाहेकोएतो सहोदुखभारो। जो ब्रजराजभये महराज तोक्यों द्विज राज न बेगि सिधारो २॥

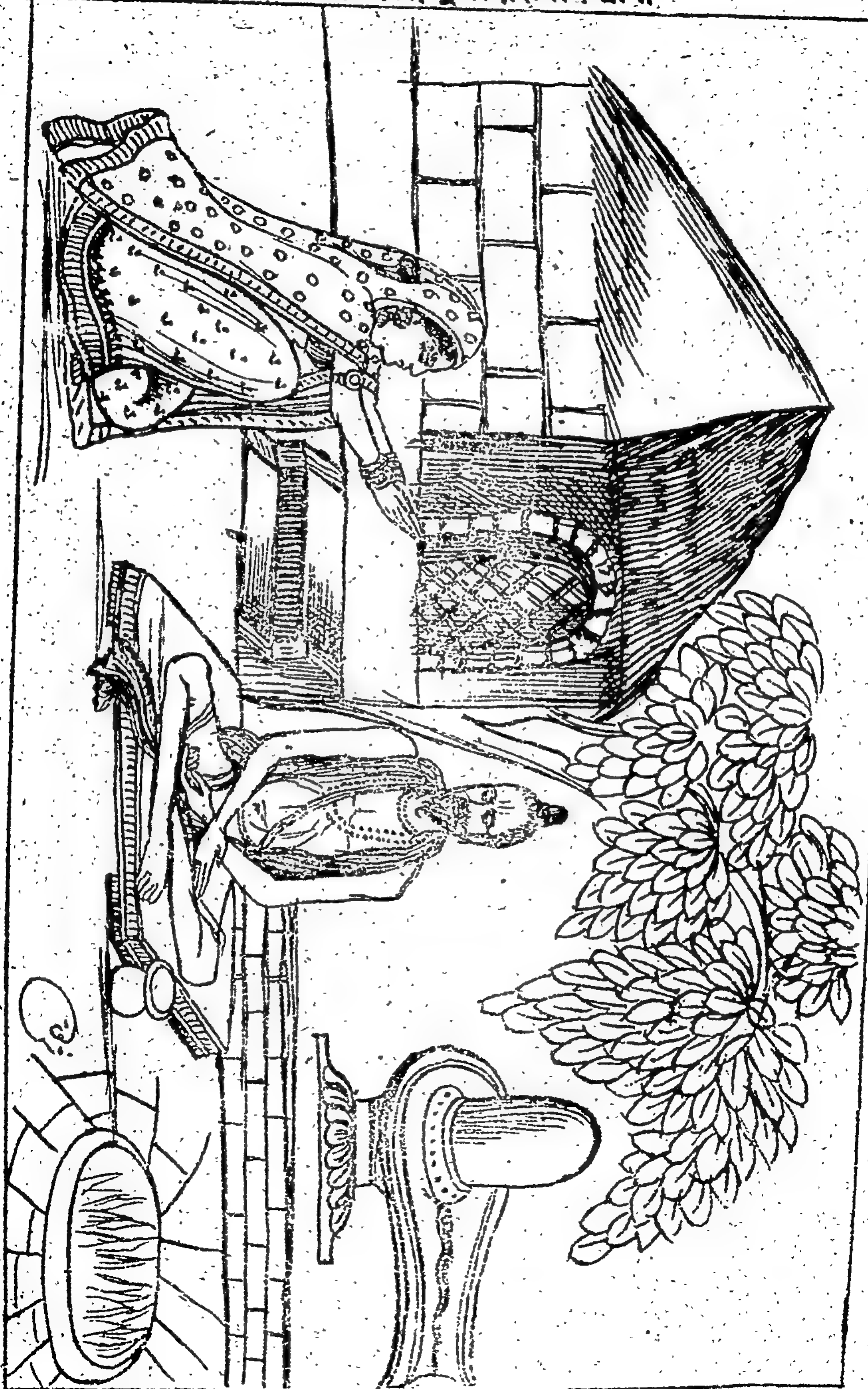
तथा। हरिपै कछुमांगनकाजपठावति जो यहि द्वार के जानकह्यो। सुनिप्रीतिपुरातनमेरीगोपालकीयाहीते मोहमहा उमह्यो॥ यहजानिनितन्ततिया मतिकन्तयही अभिमानको ग्रासगह्यो। सतराइन बोल्यो कछू द्विज-राजपै भौंहचढ़ाइकै बैठिरह्यो ३॥

तथा। अब जोप्रभुताई बलाई यती प्रभु तो अतिही वे दयाधरिहैं। यदुनन्दन शीलके सागरहैं करि आदर पाँवनहूंपरिहैं॥ यहगेहतिहारो तुरन्तही नेहकै श्रीपति सम्पति सों भरिहैं। पियबारिज नयननसों हरि हेरत रावरी दीनदशा हरिहैं ४॥

तथा। भेंटविना क्यहि भांति मिलौं यहिभांति जबै द्विजबैन सुनाये। बारहि बार निकेत निहार तियातब

देखोतसवीर नंबर १३॥

सुदामा दुर्बल ब्राह्मण का अपनीही स्त्री की शिक्षा से द्वारकापुरी में श्रीकृष्णचन्द्रजी के समीप आना.





कोटिबिचारनिठाये ॥ हेरतमन्दिर सूनो सबै बिललाइ गई हियमें दुखछाये । ढूंढ़त ढूंढ़त भौनके कोन बरि आइके चारिक चावरपाये ५ ॥

क०। सपनो सो भयोहैकैधौं वाईशीलगाईकहूं कैधौं गथहीन चितलोभते कहतरे। बैसहीन मांगे द्विज चाहतकहाहै कछु फेरिजानिभाषै जोभलाईको चहतरे॥ ऐसेमहराजातिन्है मीत कहि ऐसे छबि मनमेंनमेंने कहूं लाजहिगहतरे। जगतकेनाह जाकी हृदकैसगाहमाह कोटि नरनाह दिननाहसेरहतरे ६ ॥

तथा। होतजोप्रबीणतौनआवते कदापिइत ब्राह्मणीकेकहे भलिकरतेनगौनको। भलीभई जातिकेद्विजातिजोभयेहैंनातौ करतौकहाधौंह्यांफिरादतेधौंकौनको॥ कोहकैअवासो मोहिंतोहिं मघवासोंलागै सातौंपरिनेकयेरेठानआवा गौनको। द्वारिकामेंआइबड़ीदौलतकोपाइये अनूतर कहाइके अघाइचले भौनको ७॥

तथा। करतसहायपरेसंकट अनाथनको नाथनकेनाथब्रजनाथ श्रुतिगायेहैं। कमलाकेकन्तहैं अनन्तहैंअनन्तयशजूहसदा इनहीतेअनन्दनिपायेहैं॥यहैजानिठीकठीकठानिचितमेंबड़ीआशधरिदूरहीतेधायहमआयेहैं। दीनदेखिजोतुम मनमाहरोसो आनौतोकहौ हरिजू सों दीनबन्धु क्योंकहायेहैं ८॥

स०। मोहनप्यारेको यारकहावत लाजत नाद्विज ऐसीसबीसों। बोलतहै बिषसीमुखबात औहैसबगातभरोबिषहीसों॥ ब्राह्मण जानिकैतेरअनूतर ओढ़िलियेसब

श्रीपतिकीसों। होतोजुऔर पुरन्दरसोंकिनहोतो सुतौ-अवहीविनजीसों ९॥

क०। दीरघफुलायेनाकठाढ्योहै निशङ्कदेखो जरत खरीकद्विज खायोचहैखोपरा। मैलकोनिकेतहेतुकरिकै लपेटेपटवड़ेवड़ेदांतगातचीलरकोझोपरा॥वरषअसी-ककोभयोहैइनभांतिनसोंमांगतफिरतभीखलीन्हेंकरको परा। छोलिछोलिबोलिहरिमीत मुखभाषतुहै डोलतहै मूढ़ लिये दारिदकोटोकरा १०॥

स०। ब्राह्मणहै एकपौरिपै ठाढ़ो अपूरबनामसुदा-मासुनावतु। दीनमहाअतिक्षीणहैगातमलीनदशानाहिं सोकहिआवतु॥ हौंहीडराऊंलजाउँघनोपै कहौंअबजो वहसौंहदिवावतु।फाटियेधोतीफटीदुपटीपैइतेपरराबरो मीत कहावतु ११॥

क०। सुनतसुदामानाम छोड़िकै सकामधाम धाये घनश्यामइतमाम बिसराइकै। डहडहे बारिजसे नैनन मेंवारवारभरिभरिआवैवारिपुरहहरवाइकै॥ऐसेकछुआनँ दमेंमगनविहारीभे मोपैनाहिंतेवे कहेजाहिं गुणगाइकै। अनगने भोगरजधानी सबभूलिगई दीनबन्धुजूको तहँ दीनद्विज पाइकै १२॥

तथा। आवतगुपालइतमीत संगलीन्हेएकसुनिकै किशोरी हरषाइ सबधाई हैं। एकैलै कलश एकै आर-ती सँवारती हैं एक न जराई झारी नीरसों भराई हैं॥ अटनि अटनिहूते उतरि उतरि आई नूपुरकी झाई जोरचहूं ओरछाईहैं। मानहुंसमर सबजीतिकै मनोज

घरभांति भांति मङ्गल की बाजती बधाई हैं १३ ॥

स०। वैब्रजबासी चरावतगाइ पोशाकबड़ी जिनके कमरीकी। तेईअहीरनकेढोटियाजे करैंदधिबेंचिकेजीवनजीकी ॥ हरिशिशुताके संघातीसबै अरुनेहदशालखियेयहपीकी। नीकीलगैं हमकैसे इन्हें औलगै अब कैसेरजाइसिनीकी १४ ॥

क०। पढ़ेएकसाथएकसाथखेलेहमतुमअशनबसन सबै एकसाथकीन्हेहैं। एकसाथबासगुरुदेवकेसमीपकरिवेदनके भेदानिनितन्त करिलीन्हेहैं ॥ मोहिंतौनभूलतितिहारीप्रीति अनुदिनतुमतेन औरमित्र परमप्रबीने हैं। कीन्हींनिठुराईसुधिआपु बिसराई जोपैकबहूंनआई नेकुदरशहुदीन्हेहैं १५॥

स०। वादिनकीसुधिहै किनहीं जबआवतते बनते फललीने। ताहीसमै चहुँओरनिते बरषे जुपुरन्दरनीर प्रबीने ॥ देख्योसरोवरचारुतहांखगवृन्द लखेसबगातनभीने। रावरेओहम आनँदसेकांपुरइनिके पातनिछातनिकीने १६ ॥

तथा। वादिनकी सुधि आवतिमोहिं गुरूजबहेतुकै आयसुदीनो। काननकाननतेफलमूल बड़ेडरते हमऔ तुमलीनो ॥ ग्रीषमआतपके समयातप लागतअङ्गनि आयोपसीनो। छांहकदम्बकीमंजुलमाहँहरेतृणतोरि बिछावनकीनो १७ ॥

तथा। सावनकीबरषावननीर निपूरितकीन्हेनदीनदभारी। आनँददानिधरासुखानि बियोगतियानिहिये

दुखकारी ॥ पावसमेंहमरावरेवादिन जो उतकाननजा-
तनिहारी । टारीटरैनअजौंचिततें वहकारीपयोद घटा
छबिवारी १८ ॥

तथा। भांतिनभांतिनवातनसोंसमुझावतहीसबगा-
तपसीनो। कैसहूहारिनमानीगवांरिभवारिकरीअतिही
दुखदीनो ॥ ब्राह्मणीवैरिनसी हमसोंवहीपूरुववैर भली
विधिलीनो । चाउरचारिगोपालहिंभेंट पठाइके मोहिं
फजीहतकीनो १९ ॥

क०। निपटसयानेजाने औरहूकेमीततुमकामकेपरे
पैकामऐसहीकरतहौ। जानिबूझिछांड़ोरीतिमाड़ोअन-
रीतिद्विजलोक अपलोकनते नेकुनाडरतहौ॥हमहूंसहे-
तीसजुज्ञानीमानिएतीखोरि कहेनहिं यारअतिधीरको
धरतहौ। एतीजूपठाये बड़ीहेतुकरिल्याये भेंटदेत सो न
काहेकाहे बीचहीहरतहौ २० ॥

स०। सांवरेपैहमपै करिहेतहि विद्यागुरू इकसाथ
पढ़ाई। पाठबिचार समयकबहूं फिरिबीचपरोपलकोन
निभाई ॥ लोगनआइअचम्भोयहै अबपूछतयोंतेकिये-
हीढिठाई । मोहिंनचाहके आपुअकेलही मीतकहांते
सिखीठगहाई २१ ॥

तथा। तन्दुलएकमुठीलैगोपालसबैहरषाइकैआपुचबा-
ने।दौरिकेब्राह्मणभौनगई तबसम्पतिछोड़िकेऔरठिका-
ने॥ कांपनलागेसबैदिगपालपुरन्दरमन्दिरहीमें कँपाने।
शेषकेशीशहजारकँपे अरुकरसहूके हवासहिराने २२॥

तथा। चक्रितसेचकचौंधिगयो दिगपालदशोंदिशि

बुद्धिमलीनी। शेषकेशीश लगेहहरान औकूरमकोजेथ शूलनवीनी॥ देतनकाहूवे जानिपर्योकछुमोहन सत्वरताइमिकीनी। तंदुलएकमुठीमुखमेलिसकोलितिलोक की सम्पतिदीनी २३॥

क०। जैसे पारावारपर कुम्भजको कोपअरुदुरित पहारपैज्योंगंगाधारलेखिये। तमपैदिनेशजैसेब्रजपैसुरेशजैसे तारकपैशक्ति ज्योंकुमारककीपेखिये॥ पन्नगपै पन्नगारित्रिपुरपैत्रिपुरारि शम्बरपैशम्बरारि जैसेहूनिमेखिये। अर्जुनपै परशुरामऐसेदीहदारिदपै आनँदकी फौजमौज मोहन की देखिये २४॥

स०। एकदिनारजनीमहँमंजुलफूलनकीजबसेजबिछाई। तापरपोढ़तहीतेहिऊपरब्राह्मणकेमनमेंअसआई कीन्हीगोपाल दयाकरिकैइतकेवलआदरकीअधिकाई। पैचरचाकबहूं कछुदेनकी दीनकेबन्धुकछूनचलाई २५॥

तथा। ब्राह्मणीमोपथहेरतकैहै घनेगथलावत कैहैंसुदामा। हौंतोपरउँ इतफूलकीसेज किसेधौं वाहिबिहाइत्रिजामा॥ कौनदशाधौं लखौं अबजाइकरै क्यहि भांतिधौं जीवनबामा। छांड़िनआयो मैं एकहुबार की भौनमें भोजनकी कछुसामा २६॥

तथा। ब्राह्मणीयों पथहेरत कैहै कि कन्त घनेगथ सोयुतऐहैं। दूरिते मोहिं लखेपुरबासिहू आगमजाइ कै ताहि सुनैहैं॥ सोतासुने जबआगेकोऐहैं तबै मुख कौनदशा दरशैहैं। रैहैंकहां अरुजेहैंकहां अबआजुइ जाय कहां घरखैहैं २७॥

तथा। सौंतेहज़ारहज़ारतेलाख औलाखतेकोटिन-हूं अभिलाखै। नेहभरे सबहीसो जहानमें स्वारथही लगि बैननभाखै॥ सोवतहू सपनेहूंसमैकबहूं हरिप्रेम पियूषनचाखै। मोहनके पदपंकजनेकुकै श्रीमदवारेन चित्तमेंराखै २८॥

तथा। बाजतवैसेनिशानघने चहुंओरन वैसहीआ-नँदछाये। वैसहीदानविधानहैंहोत औवैसहीवेदनगान गनाये॥ हीरनके अतिउन्नतमेरुलैं वैसेचहूंकितभौन सोहाये। कैसीभई अबमारगतेधौं कहाहम भूलिकै द्वारिकै आये २९॥

तथा। कौनसेदेशते मेरहीठौरमें आयोहैकौननरेश है भारी। कंचनहीरजराइ जरीजै रुचीरुचिसों नगरी रुचिवारी॥ हैअविवेकी जुदीनहुकी यहनाहक तोरिकै झोपरीडारी। जानिपरै न बिषादभरी वहब्राह्मणी धौं केहिओर सिधारी ३०॥

क०। कुमुद कलानिधि कपूर करकानि कुन्दकास के विलासहासशरदजुन्हाईहै। मुकुतारजततहँसंगही-र भीरनकी वीरजैतवार ऐसी कीरतिसोछाईहै॥ सगरी नशोभा द्विज नगरी न भाषीअब अनुपमरूप ज्योति जगत सोहाईहै। मानहुं कुबेरजूसों मानकरि ऊपरते अलका उतरिआपु भूपरको आईहै ३१॥

स०। मेरीकही मनमानीनहीं अबजानि घनी मन मेरी सियानी। पैबिसरी सो सयानीसबै सो कहा यह भूलिकही पियबानी॥ हौंतुमहींनरनाहहमारे औ नाह

तिहारे येहौं निजरानी। सम्पतिपूरि अनन्द भई चलि सौंधलखो अपनी रजधानी ३२॥

तथा। कौनरज़ाइसी मेरीलही कबभूपकीभूमें बड़ाई धरीमें। जाइनकाहे घरे अपने सरजीधों कहाअरजी यों करीमें॥ तेरीकछूननशैहेतिया पै फजीहतिमेरीयह हैहै घरीमें। तोहूंसो मोसो भईकबभेंट धरातलमें किधों देवदरीमें ३३॥

तथा। हैहों बड़ेकुलकी उत बेटी इतै पुनि ब्याहि बड़ेकुल आई। रूपलोनाई नईउलही अँगअंगनिचातुरतातरुणाई॥ दौलतिदीन्हीइतैपैदई अबक्योंन कछूरी गहै गुरुआई। हैकै सयानी अयानी करै कत नाहक इज्जातिलेति पराई ३४॥

क०। हूल हियरामें अरु काननपरीहै टेर भेंटत सुदामेश्यामचबतनाअघातहीं। कहैकविनरोत्तमऋधि सिद्धिनमें शोरभयो ठाढ़ीथरहरै अरुशोचैकमलातहीं॥ नागलोक नाकलोक लोक लोक ठाढ़े थरहरै शोचै सूखे सूरे जात सब गातहीं। हालोपरो थोकनमें लालोपरो लोकनमें चालोपरो चकरनमें चावर चबातहीं ३५॥

स०। भौनभरे पकवान मिठाइन लोगकहैं निधि है सुखमाके। सांझ सकारेपिता अभिलाषत दाखनचाखत सिन्धुरमाके॥ ब्राह्मण एककोऊ दुखिया स्यरपावक चावर लायो सँवाके। प्रीतिकि रीति कहाकहिये त्यहि बैठे चबातहैं कन्तरमाके ३६॥

क०। सुन्दर महल मणिमाणिक जटित अति सुव-

रण सूरजप्रकाशमानो द्वैरह्यो। देखत सुदामा जू को नगरके लोगधाय भेंटे हरषायजोई सोईपगुछ्वैरह्यो॥ ब्राह्मणी को भूषणाविविध बिधि देखि कह्यो जैहौं हौं निकासो सो तमाशाजग ह्वैरह्यो। ऐसी दयाकरी जब हरिकेदरशपायद्वारिकातेसरिससुदामापुरह्वैरह्यो३७॥

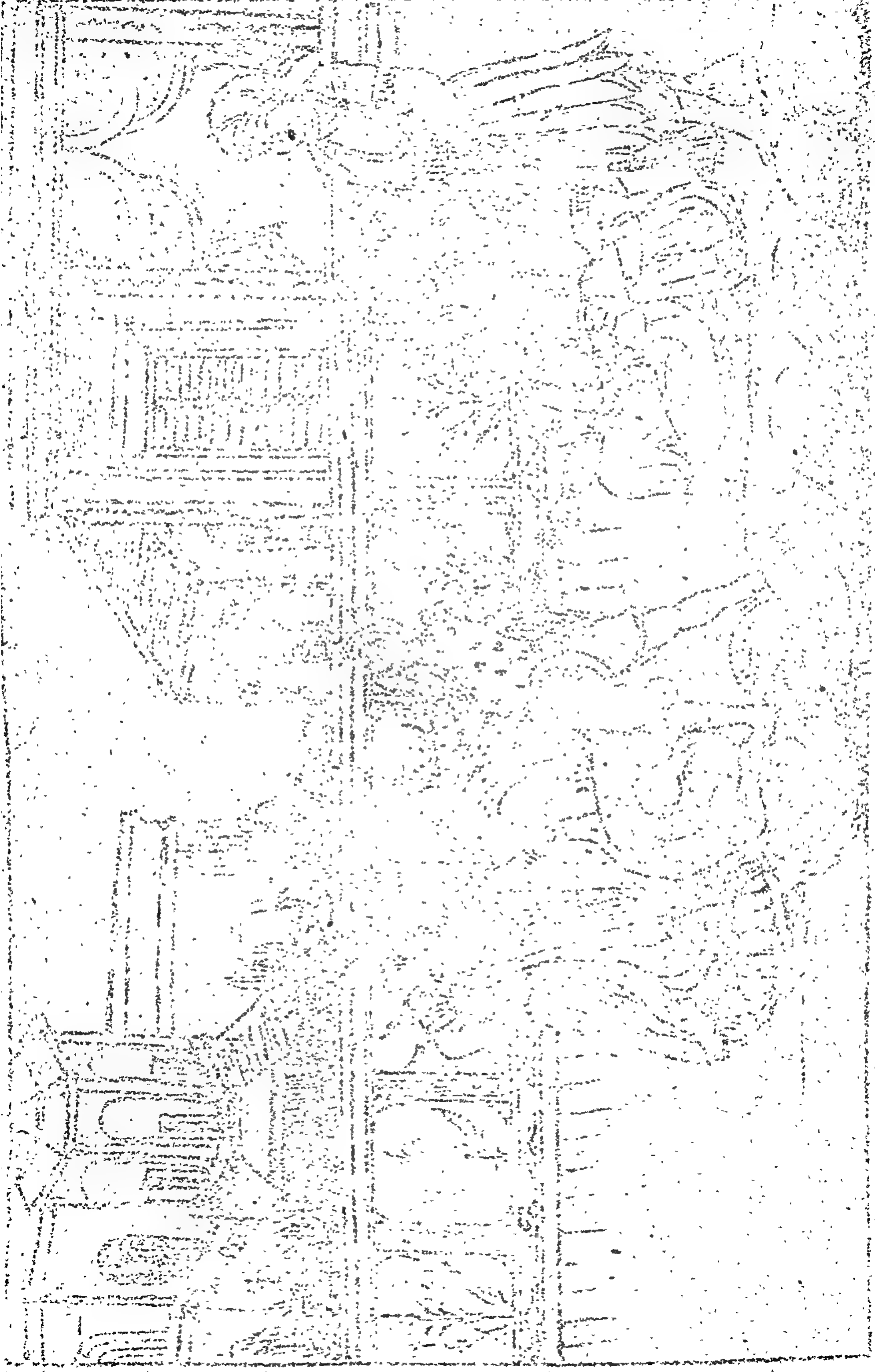
श्रीद्रौपदीनामके कवित्त व सवैया १६॥

क०। पाय अनुशासन दुशासनके कोप धायो द्रुपदसुताको चीरगहे भीरभारीहै। भीषमकरण द्रोण बैठेव्रतधारीतहां कामिनीकी ओर कहूंनेक न निहारी है॥ सुनिकै पुकारिधायो द्वारिकाते यदुराई बाढ़तदुकूल खैंचे भुजबलहारीहै। सारीबीचनारीहै कि नारी बीच सारीहैकि सारिहीकी नारीहै कि नारिहीकीसारीहै १॥

स०। द्रुपदी चहुँओर चितै जो रही चित जायरह्यो यदुनाथ जहांहै। भीषम द्रोण उताखभये सो दुशासन अम्बरलेनचहाहै॥ पांचौंपतीतनहेरिरही यदुनाथउबारहु देरकहाहै। मध्यसभा माहिं करतउचारि सो चारि भुजाको मुरारि कहांहै २॥

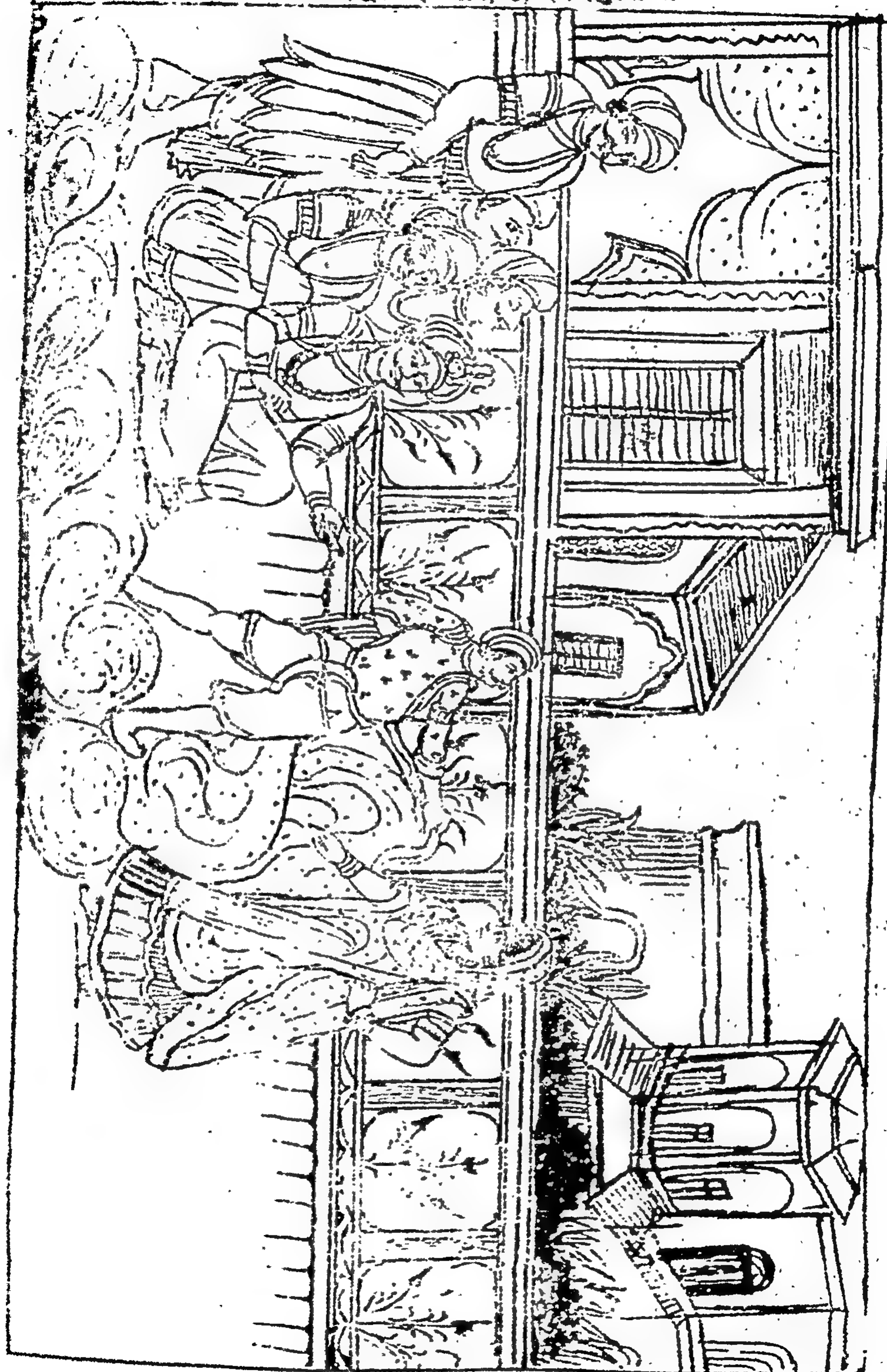
तथा। कंचनरूपी अटारीतजीहम औरलजीकुबिजा सीदासी। भोरहि भानुउदय जो भयो सतभामा तजी अरधंगरमासी॥ बंशीतजीअरुग्वालतजे हमधेनुतजी वनमांझ पियासी। वादिनद्रौपदी दौरभले जबतूनेकही चलौ द्वारिकावासी ३॥

क०। सटकी सभाकीमति लटकी कुलकी गतिहट-



मुताबिक़ तसवीर नं० २४ उत्तम अस्त्रि के सफ़ा २३०

कौरवसभा में दुर्योधन की आज्ञा से दुश्शासन करके द्रौपदी का चीर खेंचना और द्रौपदी कृत कृष्ण स्तुति ॥



कीनकाहू सबजीकी हटकी। मटकी दुशासन सूनुवाकी कलासी भई चटकी सी ह्वैकै तिय देखिये सो भटकी॥ तूही तूही रटकी सी तूहीजानै घटकीपै मटकीसी ह्वैकै आश चरण तटकी। जीवन निपटकीन्ही पटकीनदीनानाथ पतिलाज पटकी तौ तुम्हैं लाजपटकी ४॥

तथा। कबैआपगयेथेबिसाहनबजारबीचकबैबोलि जुलाहा बिनाये दरपटसे। नन्दजीकी कामरी न काहू वसुदेवजूकी तीनहाथ पटुका लपेटेरहेकटिसे॥ मोहन भनत यामें रावरे बड़ाई कहा राखिलीन्ही आनिबानि ऐसे नटखटसे। गोपिनकेलीन्हे तबचीरचोरिचोरि अब जोरि जोरि देनलागे द्रौपदीके पटसे ५॥

तथा। द्रुपदसुताकोगहिल्यायोहै सभाकेबीचनीच रंगी दुश्शासन कुमति मनसैंभरी। देखे भूपभीषमकरण द्रोण मौनगहि खैंचत बसन उरधीरकाहू ना धरी॥ दीननकेनाथ तुम ऋषिकाके नायनाथ अम्बर बढ़ायो है पुकारी जब हेहरी। नन्दके दुलारे रामकृष्ण जग तारे सुनौ पीतपटवारे देर मेरीबार क्योंकरी ६॥

स०। बूड़तबारिमें आगिदवारि उबारिलियो प्रहलाद मयाहर। वैरबिनाथ कियो जिन सेवक जाति भे खम्भसे बेगिहि बाहर॥ रूपधरे नरकेहरि को हरणाकुश मारिगये जबढाहर। आननदेखि डरीकमला हँसि बेनिगह्यो मृगनैनीकी नाहर ७॥

तथा। चैनपरैनाहिंमैनदहै दिन नैननमांझरहै जल छायो। भावै न भोजन भौनसोहाय नहाय हियेपरताप

तचायो ॥ एंचति औधदुशासन बीर जऊ बलकैतऊ अंतनपायो। वहकै विछुरे बिरहास बढ़्यो अबद्रौपदी के पट ज्यों अधिकायो ८॥

क०। आयुध अघटसाजै भटनकी भीरभारी चारों ओर विकट लियेई जात घेरिकै। नाहरकी गरज गरूरसों गरजियतु ताहीसमै पीछेसे सुनायो बोलटेरि कै॥ वाके अतिविक्रमको भाव जियजायोयह फिरैगो समर एक एकको निबेरिकै। अब चल मूकबीचबंदमें फँसीहै तऊउमँगिउछाहसी सबन तनहेरिकै ९॥

भक्तपक्ष व ज्ञान उपदेश आदि के कवित्त व सवैया २०॥

स०। भवजलमेंबहिजातहुते जिनकाढ़िलिये अपने करिआदू। बहुरिसंदेहमिटायदियेसबकाननटेरिसुनाय कैनादू॥ पूरणब्रह्मप्रकाशकियो पुनिछूटिगयो यहवाद विवादू। ऐसीकृपा जुकरी हम ऊपर सुन्दरके उरहै गुरुदादू १॥

तथा। योगीकहैं गुरुजैनकहैंगुरुबोधकहैं गुरुजंगम मानै। भक्तकहैं गुरुन्यासीकहैं वनबासीकहैं गुरुऔर बखानै॥शेषकहैंगुरुसोफ़ीकहैगुरुयाहीतेसुंदरहोतहरा- नै। वाहूकहैंगुरुवाहूकहैं गुरुहैगुरुसोई सबैभ्रमभानै२॥

तथा। सोगुरुदेवलियेन छिपै कहुँसत्तरजोतमताप निवारी। इन्द्रीदेहमृषाकरि जानत शीतलतासमता उरधारी॥ व्यापकब्रह्मविचारअखंडितद्वैतउपाधिसबै

देखो तसवीर नम्बर १५॥

महात्मा गुरु दादूजीकी मूर्त्ति ॥





जिनटारी। शब्दसुनाय संदेह मिटावत सुन्दरवागुरुकी बलिहारी ३ ॥

क०। गुरुबिनज्ञाननाहिं गुरुबिनध्याननाहिं गुरु बिनआत्मा बिचारनलहत्वहै। गुरुबिनप्रेमनाहिं गुरु बिनप्रीतिनाहिं गुरुबिनशीलहूसंतोषनगहत्वहै ॥ गुरु बिन बासनाहिं बुद्धिको प्रकाशनाहिं भ्रमहूको नाश नाहिं संशयही रहत्व है। गुरुबिन बाट नाहिं कौ-ड़ी बिन हाट नाहिं सुन्दर प्रकट लोक वेद यों कहत्वहै ४ ॥

तथा। बारबार कह्योताहि सावधानक्योंन होत म-मताकी पोटाशिर काहेकूं धरतुहै। मेरोधन मेरोधाममेरो सुत मेरोबाम मेरेपशु मेरेग्राम भूलोयों फिरतुहै ॥ तूतो भयोबावरो बिकायगई बुद्धितेरी ऐसोअन्धकूप गृहता-मेंतू परतुहै। सुन्दरकहत तोहिं नेकहू न आवैलाजकाज को बिगारके अकाजक्यों करतुहै ५ ॥

तथा। बारूके मँदिर माहिं बैठि रह्यो थिर होयरा-खत है जीवनकी आशा कोऊ दिनकी। पलपलछीजत घटतजात घरीघरी बिनशतबारकहाखबरिनाछिनकी॥ करतउपाय झूठे लेनदेन खानपान मसा इतउत फिरै ताकिरही मिनकी। सुन्दर कहतमेरी मेरी करि भूल्यो शठ चंचलचपलमाया भई किन किनकी ६ ॥

तथा। पायोहै मनुष्यदेहऔसर बन्योहै आय ऐसी देह बारबार कहाकहां पाइये। भूलतहै बावरे तू अबके सयानोहोय रतनअमोल यहकाहेकूंठगाइये ॥ समुझि

विचारकरि ठगनको संगत्यागि ठगबीजी देखकहूंमन नडुलाइये। सुन्दरकहततोहिं अबसावधानहोय हरिको भजनकरिहरिमें समाइये ७॥

तथा। करतप्रपंचियन पंचनीके वशपरयो परदारा रत भयनआवतबुराईको। परधनहरै परजीवकीकरत घातमदमांसखाय लवलेशनभलाईको॥ होयगोहिसाव तबमुखते न आवेज्वाब सुन्दरकहतलेखो लेत राई राईको। इहांतो किये विलास यमको न तोहिंत्रास उहां तो नहींहे कछू राजपोंपाबाईको ८॥

तथा। कीधौंपेटचूल्हा कीधौंभट्ठा कीधौंभार आय जोई कुछभोंकियेसो सबजारिजातहै। कीधौंपेटथल कीधौं बांबीकीधौं सागरहै जितोजल परैतितौसक लसमातहै॥ कीधौंपेटदैत्यकीधौं भूतप्रेत राक्षस हैं खावोंखावोंकरै कवौं नेकन अघात है। सुन्दर कहत प्रभु कौनपापलायो पेट जबते जनम भयो तबहीं ते खात है ९॥

स०। हाड़को पिंजर चाम मढ्यो सबमाहिं भरयो मल मूत्र विकारा। थूकरुलार परै मुखते पुनि ब्याधिबहै सबऔरहूद्वारा॥ मांसकीजीभसों खायसबैकुछ ताहीते ताकोहै कौनविचारा। ऐसेशरीरमें पैठिकेसुन्दर कैसेकै कीजिय शौचअचारा १०॥

क०। कामिनी कि देह मनो कहिये सघन बन तहां कोउ जाय सोतो भूलिकै परतुहै। कुंजर है गति कटिकेहरिको भयजामें बेनी कालीनागिनीहूं फन को

धरतुहै ॥ कुचहैं पहाड़जहांकामचोर बसैतहां साधिके कटाक्षबाण प्राणको हरतु है। सुन्दर कहत एक और डरअतिजामेंराक्षसी बदनखाउँ खाउँही करतुहै ११ ॥

तथा। कामिनीकोअङ्ग अतिमलिनमहाअशुद्धरोम रोम मलिन मलीन सब द्वारहैं। हाड़मांस मज्जा मेद चामसों लपेटिराखे ठौर ठौर रक्तके भरेही भंडारहैं ॥ मूत्रहू पुरीष आंत एकमेक मिलरहीं औरहूउदरमाहिं विविधविकारहैं। सुन्दरकहत नारी नखशिख निन्दा रूप ताहिजो सराहैं सोतो बड़ेही गँवार हैं १२ ॥

स०। सर्पडसेसुनहीं कछुतालुक बीछूलगे सुभलौ करिमानो। सिंहहुखायतौ नाहिंकछू डरजो गजमारत तौ नहिंहानो ॥ आगिजरौ जलबूड़िमरौ गिरिजाय गिरौ कछु भय मति आनो। सुन्दर और भले सबहीं दुखदुर्जन सङ्गभलो जनिजानो १३ ॥

क०। देखबेको दौरे तो अटकिजाय वाहीओर सुनिबे को दौरतोरासिक शिरताज है। सूंघिबेको दौरेतो अघाय ना सुगन्ध करि खायबेको दौरेतो न धापै महाराजहै ॥ भोगही को दौरेतो तृपतिहू न क्योंहीं होय सुंदर कहत याहि नेकहू न लाजहै। काहू को न कह्यो करै आपनीही टेकधरै मनसों न कोऊ हम देख्यो दगाबाजहै १४ ॥

तथा। योग करै यज्ञकरै वेदविधि त्याग करै जप करै तपकरै योंहीं आयु खूटिहै। यमकरै नेमकरै तीर्थहू व्रतादि करै पुहुमि अटन करै वृथा श्वास टूटिहै ॥

जीवेको यतनकरै मनमेंनबासधरै पचि पचि योहींमरै काल शिर कूटिहै। औरहू अनेकविधि कोटिन उपाय करै सुन्दर कहत विन ज्ञाननाहिं छूटिहै १५॥

तथा। कोईफिरै नांगेपांय गूदरी बनाय करि देह की दशादिखाय आयलोग पूट्योहै। कोईदूधाधारी होयकोईफलाहारीहोय कोईऔंधेमुख झूलिझूलि धूम घूंट्योहै॥ कोईनहींखायलोन कोईमुखगहिमौन सुंदर कहत योहीं वृथाभुसकूट्योहै। प्रभुसोंतो प्रीति नाहिं ज्ञानसों न परचैहोय देखोभाई आंधरे ने ज्यों बजार लूट्योहै १६॥

स०। गेहतज्यो अरुनेहतज्यो पुनिखेह लगायके देह सँवारी। मेघसहेशिर शीतसहे तनुधूपसमै जुपंचागिनिवारी॥ भूखसहेरहिरूखतरे परसुन्दरदाससहे दुखभारी। डासनछांड़िके कासनऊपर आसनमाख्यो पैआश न मारी १७॥

क०। आपहीकेघटमें प्रकट परमेश्वरहै ताहिछांड़ि भूलिनर दूरिदूरि जातहै। कोईदौरै द्वारकाकोकोईकाशीजगन्नाथ कोईदौरैमथुरा कोईहरद्वारन्हातहै॥ कोई दौरैबदरीको विषम पहाड़चढ़ै कोई तो केदारजातमन मेंसिहातहै। सुन्दरकहत गुरुदेव देय दिब्यनयन दूरहीकेदूरवीन निकट दिखातहै १८॥

स०। कोइक जातप्रयागबनारसकोईगया जगन्नाथहि धावै। कोईमथुराबद्रीहरद्वारसो कोई गंगा कुरुक्षेत्र नहावै॥ कोइक पुष्कर ह्वै पञ्च तीरथ दौरेही

दौरेजो द्वारकाआवै । सुन्दर बित्तगड्यो घरमाहिं सो बाहर ढूंढ़त क्योंकरिपावै १९ ॥

तथा। बैठतरामहिं ऊठतरामहिं बोलत रामहिंराम रयोहै। जीवतरामहिं पीवतरामहिं धामहिं रामहिं राम गयोहै ॥ जागतरामहिं सोवतरामहिं जोवत रामहिं राम लयोहै । देतहु रामहिं लेतहु रामहिं सुन्दर रामहिं रामदयो है २० ॥

तथा। श्रोत्रहु रामही नेत्रहू रामही बक्रहू रामही रामही गाजे । शीशहू रामही हाथहू रामही पांवहूरामही रामही छाजे ॥ पेटहूरामही पीठहू रामही रोमहू रामही रामही बाजे । अन्तरराम निरन्तररामही सुन्दररामही रामबिराजे २१ ॥

तथा। भूमिहू रामही आपहू रामही तेजहू रामही बायुही रामे । व्योमहू रामही चन्द्रहूरामही सूरहूरामही शीतहीघामे ॥ आदिहूरामही अन्तहूरामहीमध्यहूरामहीपुरुषही बामे । आजहू रामही कालिहूरामही सुन्दर रामही रामही थामे २२ ॥

तथा। देखहु राम अदेखहु रामही लेखहु राम अलेखहुरामे । एकहुराम अनेकहु रामहि शेषहुरामअशेषहुतामे ॥ मौनहुराम अमौनहु रामही गौतहू रामहि ठाम कुठामे । बाहिर रामहि भीतर रामहि सुन्दररामही है जगजामे २३ ॥

तथा। दूरहूराम समीपहुरामहि देशहू रामप्रदेश हू रामे । पूरबरामहि पश्चिम रामहि दक्षिण रामहि

उत्तरधामे॥ आगेहु रामहि पीछेहुरामहि व्यापक रा-
महिहै वनग्रामे। सुन्दरराम दशों दिशि पूरण स्वर्गहु
राम पतालहु तामे २४॥

क०। शूरवीर रिपुको नमूना देखि चोटकरै मारैतब
ताकिकरि तरवार पीरसों। साधुआठौयाम बैठो मनही
सोंयुद्धकरै जाकेमुहँमाथोनहींदेखियेशरीरसों॥ शूरवीर
भूमिपर दूरहीते दोरलगे साधुसुनि कोपकरिराखैधरि
धीरसों। सुन्दर कहत तहांकाहूको न पांवटिकै साधुको
संग्रामहै अधिक शूरवीरसों २५॥

तथा। खैंचिकरी कमान ज्ञानको लगायोबाण मा-
र्योमहाबली मनजगत जिनराग्योहै। ताकेअगवानी
पंचयोधाहू क़तलकिये और रह्योपरयो सब अरिदल
भाग्योहै॥ ऐसो कोऊ सुभटजगत में न देखियत जाके
आगेकालहू सोकाम्पिके पराग्योहै। सुन्दर कहतताकी
शोभा तिहुँलोकमाहिं साधुसों न शूरबीर कोऊ हम
जान्योहै २६॥

स०। प्रीतिप्रचण्डलगै परब्रह्महिं और सबै कछु
लागतफीको। शुद्धहृदयमनहोय सो निर्मल द्वैतप्रभाव
मिटैसब जीको॥ गोष्ठिरुज्ञानअनन्तचलैजहँ सुन्दरजै-
सेप्रवाह नदीको। ताहिते जानिकरो निशिवासर सा-
धुकोसङ्ग सदा अतिनीको २७॥

तथा। कोउक निन्दतकोउक वन्दत कोउक देत हैं
आयके भक्षण। कोउक आय लगावत चन्दन कोउ-
कडारतधूरि ततक्षण॥ कोउकहै यहमूरख दीसत कोउ

कहै यह आय बिचक्षण। सुन्दर काहू सों राग न द्वेष सोई सब जानहु साधुके लक्षण २८॥

तथा। तातमिलैपुनिमातमिलै सुतभ्रातमिलैयुवती सुखदाई। राजमिलै गज बाजि मिलै सब साजमिलै मनबांछित पाई॥ यहलोक मिलै सुरलोकमिलै बिधि लोकमिलै बैकुंठहुजाई। सुन्दर और मिलै सबही सुख सन्त समागम दुर्लभ भाई २९॥

क०। आठोंयाम यम नेम आठोंयाम रहै प्रेम आठोंयाम योगयज्ञ कियो बहुदानजू। आठोंयाम जप तप आठोंयाम लियो ब्रत आठोंयाम तीरथमें करत सनानजू॥ आठोंयाम पूजाविधि आठोंयाम आरती-हू आठोंयाम दण्डवतसुमिरण ध्यानजू। सुन्दरकहत जिन कियो सब आठोंयाम सोई साधूजाके उर एक भगवानजू ३०॥

तथा। वही दगाबाज वही कुष्ठी जो कलङ्क भरचो वही महापापी वाके नखशिखकीचहै। वही गुरुद्रोही गो ब्राह्मण हननहार वही आतमाकोघाती हिंसा वाके बीचहै॥ वहीअघको समुद्र वही अघको पहार सुंदर कहतवाकी बुरीभांति नीचहै। वहीहै मलेच्छवही चा-ण्डाल बुरे ते बुरो सन्तन की निन्दाकरै सो तो महा नीचहै ३१॥

तथा। योग यज्ञ जपतप तीरथब्रतादिदान साधन-सकलनहीं याकी सरवरहै। और देवीदेवताउपासना अनेकभांति शङ्क सबदूरिकरि तिनते नडरहै॥ सबही

के शीशपर पांवदे मुकति होय सुन्दरकहत सोतौजन मे न मरहै । मन वचकायकरि अन्तर न राखै कछु सन्तन की सेवाकरै सोई निसतरहै ३२ ॥

स०। देखतब्रह्मसुने पुनिब्रह्मही बोलतहैसोइब्रह्महीबानी । भूमिहुनीरहु तेजहुबायहुव्योंनहुब्रह्म जहांलगप्रानी ॥ आदिहु अन्तहु मध्यहुब्रह्महीहै सबब्रह्म यहीमति ठानी। सुन्दर ज्ञानअरु ज्ञानहु ब्रह्महैआपहु ब्रह्महीजानतज्ञानी ३३ ॥

तथा। बैठत केवल ऊठलकेवल बोलत केवलबात कहीहै । जागतकेवल सोवत केवल जोवतकेवलदृष्टि लहीहै ॥ भूतहुकेवल भव्यहुकेवल बर्त्ततकेवल ब्रह्म सहीहै । हैसबही अध ऊरधकेवल सुन्दरकेवल ज्ञान वहीहै ३४ ॥

क०। कामीहै न यतीहै न सूमहै नसतीहै न राजाहै न रङ्कहै न तनहै न मनहै। सोवै है न जागैहै न पीछे है न आगे है न गृहीहै न त्यागीहै न घरहै न बनहै ॥ स्थिरहै नडोलैहै न मौनहै न बोलैहै न बंधैहै न खुलैहै न स्वामीहै न जनहै। ऐसोकोऊ होवै जबवाकी गति जानै तब सुन्दर कहत ज्ञानी ज्ञानशुधधन है ३५ ॥

तथा। प्रीतिसी न पाती कोऊप्रेमसों न फूल और चित्तसोंनचन्दन सनेहसोंनसेहरा। हृदयसों न आसन सहज सों न सिंहासन भावसीन सेज और सूनुसे न गेहरा ॥ शील सों स्नान नाहिं ध्यानसों न धूप और ज्ञानसों न दीपक अज्ञान तमकेहरा। मनसी न माला

कोऊ सोहसों न जाप और आतमासों देहनाहिं देह सों न देहरा ३६ ॥

तथा। आपकी प्रशंसा सुनि आपही खुशाल होय आपहीकी निन्दा सुनि आप मुरझाय है। आपही की सुखमानि आपसुखमानतहै आपहीकी दुखमानि आप दुख पायहै॥ आपही की रक्षा करि आपही को घात करै आपही हत्यारो होय गंगा जी नहायहै। सुंदर कहत ऐसे देहहीको आपमानि निजरूप भूलिकै करत हाय हाय है ३७॥

तथा। जैसे कोई पोस्तीकी पागपड़ी भूमिपर हाथ लैके कहै एकपागमैंतोपाईहै। जैसेशेखचिल्लीमनोरथन को कियोघर कहै मेरो घरगयो गागरी गिराई है॥ जैसे काहू भूतलग्यो बकतहै आकबाकसुधि सब दूरि भई और मति आईहै। तैसेही सुन्दर यह भ्रम करि भूल्यो आप भ्रमके गयेते यह आतमासदाईहै ३८॥

तथा। देहहीसो पुष्टिलगे देहही दुबरीलगे देहही को शीतलगे देहही को तावरो। देहही को तीरलगे देहहीको खड्गलगे देहहीको शक्तिलगे देहहीको घावरो॥ देहही स्वरूपलगे देहही कुरूपलगे देहही यौवन लगे देह वृद्धडावरो। देहहीसों बांधिहेत आप विषय मानिलेत सुन्दर कहत ऐसो बुद्धिहीन बावरो ३९॥

तथा। देहदुखपावै किधौं इन्द्रीदुखपावै किधौं प्राण दुखपावै किधौं लहतन अहारको। मन दुखपावै किधौं बुद्धि दुखपावै किधौं चित्त दुखपावै किधौं दुखअहं-

कारको ॥ गुण दुखपावै किधौं श्रोत्र दुखपावै किधौं प्रकृती दुखपावै किधौं पूरुषअधारको । सुन्दर पूछत कुछु जानि न परत ताते कौन दुखपावै गुरु कहो या बिचारको ४० ॥

सं० । एककेदोय न एक न दोय वहीकियही न वही न यहीहै। शून्य कि थूल न शून्य न थूल जहीं कि तहीं न जहीं न तहींहै ॥ मूल कि डाल न मूल न डाल वही कि महीं न वहीन महींहै। जीवकेब्रह्म न जीव न ब्रह्म तौ है कै नहीं कुछहै कै नहींहै ४१ ॥

क० । पांव जिनगह्यो सोतो कहतहै ऊखलसो पूंछ जिनगह्यो तिन लावसो सुनायोहै । शूंड़ जिनगहीतिन दुगलेकी बांहकही दन्त जिनगह्यो तिन मूसर दिखा-योहै ॥ कान जिनगह्यो तिन सूपसो बताय कह्यो पीठ जिनगही तिन बिठौरा बतायो है । जैसो है तैसो ताहि सुन्दर सुअक्षीजाने आंधरेने हाथी देखि झगरोमचा-योहै ४२ ॥

तथा । जीवतही देवलोक जीवतहीइन्द्रलोक जीव-तही जन तप सत्यलोक आयोहै । जीवतही विधिलोक जीवतहीशिवलोक जीवत वैकुण्ठलोकजो अकुण्ठगायो है ॥ जीवतहीसोभ्काशिलाजीवतहि भिस्तमाहिंजीवतही निकट परम पद पायोहै । आतमको अनुभव जिनको जीवत भयो सुन्दर कहत तिनसंशयमिटायोहै ४३ ॥

तथा । क्षितिभ्रमजलभ्रम पावक पवन भ्रम व्योम भ्रमातिनकोशरीरभ्रमजानिये । इन्द्रीदशतेहूभ्रम अन्तः-

करणभ्रम तिनहींकेदेवतासौं भ्रमतेबखानिये ॥ सतरज तम भ्रम पुनि अहङ्कार भ्रम महत्तत्त्व प्रकृति पुरुषभ्रम सानिये। जोई कछु कहिये सुसुन्दर कमलभ्रम अनुभव किये एकआतमाहींजानिये ४४ ॥

तथा। भावेदेह छूटिजावे काशी मही गंगातटभावे देह छूटिजावे क्षेत्र मगहरमें। भावेदेह छूटिजावे विप्र के सदन मध्य भावेदेह छूटिजावे श्वपचके घरमें॥ भावे देहछूटो देश आरज अनारजमें भावेदेह छूटिजावे बन में नगरमें। सुन्दर ज्ञानीके कछु संशयरहे जो नाहिं स्वरगनरक सबभाजिगयोभरमें ४५ ॥

स०। प्रीतिकीरीतिकछूनहिं राखत जाति न पांति नहीं कुलगारो। प्रेमके नेमकहूं नहिं दीसत लाज न कानि लग्यो सबखारो॥ लीनभयोहरिसों अभ्यन्तर आठहु याम रहै मतवारो। सुन्दर कोऊ न जानिसकै यह गोकुलगांवको पैंडोही न्यारो ४६ ॥

तथा। ज्ञानदियो गुरुदेव कृपाकरि दूरिकियो भ्रम खोलिकिवारो। और क्रियाकहि को न करै अब चित्त लग्यो परब्रह्म पियारो॥ पांवबिना चलिबो कहिठाहर पंगु भयो मनमित्र हमारो। सुन्दर कोऊ न जानि सकै यह गोकुलगांवकोपैंडोही न्यारो ४७ ॥

तथा। एक अखण्डित ज्यों नभव्यापक बाहिरभी-तरहै यकसारो। दृष्टि न मुष्टि न रूप न रेख न श्वेत न पीत न रक्त न कारो॥ चकृत होयरहे अनुभवबिन ज्यों लगि नाहिंन ज्ञान उचारो। सुन्दर कोऊ न

जानि सकै यह गोकुल गांवको पैंड़ोही न्यारो ४८ ॥

तथा । द्वन्दविना विचरैं वसुधा परिजा घट आतम ज्ञानअपारो । काम न क्रोध न लोभ न मोह न राग न द्वेष न म्हारो न थारो ॥ योग न भोग न त्याग न संग्रह देह दशा न ढक्यो न उघारो । सुन्दरकोऊ न जानि सकैयह गोकुलगांवको पैंड़ोही न्यारो ४९ ॥

तथा । लक्षअलक्ष अदक्ष न दक्ष न पक्ष अपक्ष न तूलनभारो । भूठनसांच अबाच न बाच नकंचनकांच न दीनउदारो ॥ जान अजान न मान अमान न सान गुमान न जीत न हारो । सुन्दरकोऊ न जानिसकै यह गोकुलगांवकोपैंड़ोहीन्यारो ५० ॥

तथा । हौतुम कौनहौ ब्रह्मअखण्डित देहमें क्यों नहिं देहकेनेरे । बोलत कैसे कहौंनहिं बोलत जानिये कैसे अज्ञानहैतेरे ॥ दूरिकरो भ्रम निश्चय धारिकहैं गुरुदेव कहौंनितटेरे । हौ तुम ऐसे तुहूं पुनि ऐसेहि होयनहीं अवद्वैतहैतेरे ५१ ॥

तथा । हूंकछु और कि तू कछुऔर कि है कछुऔर कि सो कछुऔरे । हं नहीं तू नहींहै कछूसोनहीं बूझे विना जितहीतितदौरे ॥ हूं अरु तू यहहै कछुसो पुनि वुद्धि विलास भयो झकझोरै । हं पुनि तू पुनि हैकछु सो पुनिसुन्दर व्यापिरह्यो सबठौरै ५२ ॥

तथा । एकअखण्डितब्रह्म विराजत नामजुदोकरि विश्व कहावै । एकहिग्रन्थ पुराण बखानत एकहि दत्त वशिष्ठ सुनावै ॥ एकहि अर्जुनउद्धवसों कहिकृष्णकृपा

करिकै समुझावै। सुन्दर द्वैत कछूमति जानहु एकहि व्यापक वेद बतावै ५३ ॥

क०। जैसे एकलोहके हथ्यार नानाभांति किये आदि अन्तमध्य एक लोहही प्रमानिये। जैसे एक कंचन के भूषण अनेक भये आदि अन्तमध्य एककंचनहीजानिये॥ जैसे एकमैनके सँभारे नर हाथीहय आदिअंत मध्यएक मैनही बखानिये। तैसेही सुन्दर यह जगत सोब्रह्ममय ब्रह्मसोजगतमय निश्चयकरिमानिये ५४॥

स०। ब्रह्महीमाहिं बिराजतब्रह्महि ब्रह्मबिना जिनि औरहि जानो। ब्रह्महीकुंजरकीटहूब्रह्महीं ब्रह्महीरंकरु ब्रह्महीरानो ॥ कालहुब्रह्म स्वभावहुब्रह्महीं कर्महु जीवहुब्रह्म बखानो। सुन्दर ब्रह्म बिना कछु नाहिंन ब्रह्महि जानि सबै भ्रमभानो ५५ ॥

क०। श्रोत्रकछूऔर नाहिं नेत्रकछू और नाहिंनासा कछूऔरनाहिंरसनान औरहै। त्वककछूऔरनाहिंबाक्य कछूऔर नाहिं हाथ कछूऔर नाहिं पांवनकी दौरहै॥ मन कछूऔरनाहिं बुद्धिकछू और नाहिं चित्तकछू और नाहिं अहंकार तौरहै। सुन्दर कहत एकब्रह्मबिन और नाहिं आपहीमें आप ब्यापरह्यो सबठौरहै ५६ ॥

स०। पापनपुण्यनथूलनशून्यनबोलनमौननसोवैनजागै। एकनदोयनपूरुषजोयकहैकहाकोयजोपीछेनआगै॥ वृद्धनबालनकर्मनकाल नहर्षबिलासनसूझैनभागै। बंधनमोक्ष अप्रोक्षनप्रोक्षन सुन्दरहै नअसुन्दरलागै ५७॥

तथा। तत्त्वअतत्त्व कह्यो नहिं जातजोशून्य अशुन्य

डरैन परैहै। ज्योति अज्योति न जानिसकै कोउ आदिन अन्तन जीवै मरैहै॥ रूपअरूप कछूनाहिं दीसत भेद अभेदकरै न हरैहै। शुद्ध अशुद्धकहै पुनि कौनजोसुन्दर वोलै न मौनधरै है ५८॥

तथा। खोजतखोजत खोजिगये अरु खोजतहैं पुनि खोजहैं आने। नाचत गावत गायगये बहुगायतहैं अरु गायहैं मान॥ देखत देखत देखिरहे सबदीसे नहीं कछु ठौर ठिकाने। बूझत बूझत बूझिकै सुन्दर हेरत हेरत हेरि हिराने ५९॥

तथा। पिण्डमेंहै पुनि पिण्डमिलै नहिं पिण्डपरेपुनि त्योंहीं रहावै। श्रोत्रमेंहै पर श्रोत्र सुनै नहिं दृष्टिमेंहै पर दृष्टि नआवै॥ बुद्धिमेंहै परबुद्धि न जानत चित्तमेंहै पर चित्तन पावै। शब्दमें है पर शब्द थक्यो कहि शब्दहू सुन्दर दूरवतावै ६०॥

तथा। भूमिहु तैसही आपहु तैसही तेजहु तैसही तैसही पौना। व्योमहु तैसही आपअखण्डित तैसहीब्रह्मरह्यो भरि भौना॥ देह संयोग वियोगभयो जबआयोसे कौन गयो केहि कौना। जो कहिये तो कहै न बनै कछु सुंदर जानि गही मुखमौना ६१॥

तथा।एकहीब्रह्मरह्योभरिपूरितौदूसरोकौनबतावन-हारो। जो कोउ जीवकरै जो प्रणाम तौ जीवकह्यो कछु ब्रह्मतेन्यारो॥जोकहैजीवभयो जगदीशीते तौरबिमाहिं कहांको अँध्यारो। सुन्दर मौनगही यह जानिकै कौनहूं भांतिन कै निरधारो ६२॥

तथा। नैनन बैनन चैनन आसन बासन इवासन प्यासन याते। शीतनघामन ठौरनठामन पुन्सनबामन मातन ताते॥ रूपन रेखनशेष अशेषन श्वेतन पीतन इयामन राते। सुन्दरमौनगही सिधसाधक कौन कहै उसकी मुखबाते ६३॥

तथा। वेदथकेकहितंत्रथकेकहिग्रंथथके निशिवासर गातें। शेषथके शिवइन्द्रथके पुनिखोजकियोबहु भांति बिथातें॥ पीरथके अरुमीरथके पुनिधीरथके बहुबोलि गिरातें। सुन्दर मौनगही सिधसाधक कौनकहैउसकी मुखबातें ६४॥

तथा। योगीथकेकहि जैनथके ऋषितापसथाकिरहे फलखाते। न्यासीथके बनबासीथके जोउदासीथके बहुफेरि फिराते॥ शेष मसायक और उलायक थाकि रहे मनमें मुसक्याते। सुन्दरमौनगहीसिघसाधककौन कहे उसकी मुखबाते ६५॥

क०। आइके जगतबीच काहूसोंनकरैबैर कोऊकछू काम करै इच्छाजौनजोइकी। ब्राह्मण की क्षत्रिनकी वैश्यनशूद्रनकी अन्त्यजम्लेच्छकीनग्वालकीन भोईकी॥ भलेकी बुरेकी हरिचन्दसे पतितहूकी थोरेकीबहुतकी न एककी न दोईकी। चाहेजो चुनिन्दाभयो जगबीच मेरेमन तौनतू कबहुंकहुं निन्दाकरुकोईकी ६६॥

स०। बेदकोबेदगुणीकोगुणीठगकोठगठूमककोमन भावै। कागकोकागमरालमरालकोकांधगधाकोगधा खजुलावै॥ कृष्णमनैबुधको बुधत्यों अरुरागीकोरागी

मिलै स्वर गावै। ज्ञानी सों ज्ञानीकरै चरचा लबरा
ढिगालबरासुखपावै ६७॥

क०। फूटगये हीराकी बिकानी कनी हाटहाट का
घाट मोल काहूबाढ़ मोलकोलयो। टूटिगईलङ्काफू
मिल्यो जो बिभीषणहै रावण समेत बंश आसमानक
गयो॥ कहैं कवि गंग दुर्योधनसे छत्रधारी तनक
फूटेते गुमानवाको नैगयो। फूटेते नरदउठिजातबाज़
चौपरकी आपुसके फूटेकहोकौनकोभलोभयो ६८॥

तथा। ईशके भजनमें नभूसुरकेतनमेंनरंकधामअ
नमें कहूं न वृन्दावनमें। ज्ञाति गुरुजनमें न धोखेपि
गनमेंनउठे कबितनमें नवेदउचरनमें॥ कहैंकविराम
बसत प्रेमतनमेंबिचारिदेखोछिनमें दयानजाके तनमे
कहा परगनमें बनायधनीगनमें नलागे हरिजनमें
थूकऐसेधनमें ६९॥

तथा। सत्यतेप्रतीतहोय जाकी सबदेशनमें सत्य
सचाई औ सत्यते भलाईहै। सत्यही सों सुख पा
यश औधरमबढ़े सत्यहीते लेवादेवा सत्यतेबड़ाईहै
साधलाल कहैं होय आदर बहुतयातें मुक्तिहोतअ
माहिं पुन्यफलदाई है। सत्यबिना मानुषके दरजारह
नाहिंयातें चतुरनने सुसत्यउपजाईहै ७०॥

तथा। जार पर जोर जात जन्नपर भूमिजातभू
जातयोवन अनङ्ग रसरसहै। गढ़ढहिजातगरुवाई
गरबजात जातसुखसाहिबी समूहसरबसहै॥ कहैहै
नाथ धन सम्पति बिपति जातजात दुखदारिददरु



एक बीर की मूर्त्ति॥



दरबसहै। बाग़ कटिजात कुवांताल पटिजात नदीनद घटिजात पै नजात जग यसहै ७१ ॥

स०। भूलपरे पछितैहैं कहा लगरेनरदेहको अवसर आजहै। तू बलदेवगहै बिनही श्रम चारिफलैतोभलै सुख साजहै॥ लाभ लहो जगजीवनको तबऔरकछू करिबे को न काजहै। जो भजतो यदुनन्दनके पद सो सबराजनके महाराजहै ७२ ॥

तथा। कामनक्रोधन मोहनलोभ सदा सतसंगको लालचलागत। आनँददेतसबैबलदेव बिलोकतजे तिनकेअघभागत॥ पुंजप्रभाजगकेप्रियप्रानसेप्रेमभरे न प्रपंचमेंपागत। जेभजतेयदुनन्दनके पग तेजगहैं जनजानिये जागत ७३ ॥

तथा। मंगलहोतसबैबलदेव सदाअणिमादिकमोद बढ़ावत। पावन औरनहू कोकरैं प्रियसन्तसभा धनि-बादको छावत॥ शुद्धहितै नितयुक्तचितै कारिकर्मबितैके इतै नहिं आवत। जोभजतो यशुदासुतको सोइजन्म पदारथको फलपावत ७४ ॥

बीररसके कवित्त व सवैया॥

स०। कीजै न कोप कृपानिधि रामजो तौ गढ़ लङ्क उठाय मैं लाऊं। कोउको भय अरु शङ्क न मानिके रावणरानिपै पानिभराऊं॥ लच्छकहै कविराजसमच्छ बिपच्छजसोनित सिद्धिचलाऊं। माथेमरोरि धरौंदश-कन्धके नाथके हाथका पान जो पाऊं १॥

देखोतसबीर नंबर १६॥

क० । गोपीनाथ नन्दन प्रभंजनको लङ्काबीच कूदो देखिसाहस सरासरके सरके । तालदेत जाके काल कालकोकराल भयो छूटिगे हथ्यार जे कराकरके कर के ॥ खलभलहलङ्क खलनके दहल कमलके बराबर केथरके । डरि डरि ढरिगये अडरडराय ढह ढरढरढर के धराधरके धरके २ ॥

तथा । वारिटारिडारौं कुम्भकरणहि बिदारिडारौं मारौंमेघनादै आजुयों बलअनन्तहौं । कहै पदमाकर त्रिकूटहीको ढाहिडारौं डारतकरेईयातुधाननको अन्त हौं ॥ अच्छहिनिरच्छ कपिरिच्छहि उचारौं इमि तोत्र तिच्छ तुच्छन को कछुवै न गन्तहौं । जारिडारौं लङ्कहि उजारि डारौं उपबन फारि डारौं रावणको तो मैं हनुमन्तहौं ३ ॥

तथा । सोहैंअत्रओढ़े जेनछोड़ेशीशसंगरके लंगर लँगूर उच्चओजके अतंकामें । कहैपदमाकरत्योंहुंकरत फुंकरत फैलत फुलत फाल बांधत फलंकामें ॥ आगे रघुवीरके समीरके तनयके संग तारीदै तड़ातड़के तड़के तमंकामें । शंकादै दशाननको हंकादै सबंकानीर डंकादैबिजय को कपि कूदिपर्‌योलंकामें ४ ॥

स० । कुम्भकरण्ण हन्यो रणराम दल्यो दशकन्धर कन्धरतोरे । भूषणवंश विभूषणभूषण तेजप्रताप गरे अरिओरे ॥ देव निशानबजावत गावत धावतगे मन-भावत मोरे । नाचत बानर भालु सबै तुलसी कहि हारे हहाभैहोरे ५ ॥

तथा। हनुमान हठीलो रँगीलो बली ज्यहि मान मथ्यो गढ़ लंकपतीको। लैकरि मुन्दर कूदि समुन्दर शोक हरो जाय सीय सतीको॥ उखारि पहार सकेलि सजीवन तेजगयोक्षणमें शंकतीको। तुलसी संकट क्यों न कटै जब ध्यानधरो हनुमान यतीको ६॥

तथा। बालिबँध्यो बलिरावबँध्यो करशूली के शूल कपाल थलीहै। काम रच्यो जर काल पस्यो बंधसेतु धस्यो विष हाल हलीहै॥ सिन्धुमथ्यो कलकालीनथ्यो कहि केशवचन्द्र कुचालि चली है। रामहूं की हरी रावणवाम चहूंदिशि एक अदृष्ट बलीहै ७॥

तथा। कोशलराजके काजहौं आजु त्रिकूट उपारि कै बारिनिबोरौं। द्वौ भुजदण्ड दै अण्डकटाह चपेटके चोट चटाकके फोरौं॥ आयसु भंगको जो न डरौं तौ मींजि सभासद शोणित बोरौं। बालि को बालक तौ तुलसी दशहू मुखके रणमें रदतोरौं ८॥

तथा। गहिमन्दरबन्दर भालुचलेसोमनोउमड़े घन सावनकोतुलसीउतभुण्डप्रचंडभुकेभपटेभटजेसुरदा-वनके॥बिरुझेबिरदैतजेखेतअरेनटरेहाठिबैरबढ़ावनके। रणमारुमचीउपरीउपरा भलेबीररघूपति रावनके ९॥

तथा। रामशरासनते चले तीर रहे न शरीर हड़ा-वड़ फूटी। रावण धीर न पीर गली लखिलैकर खप्पर योगिनि जूटी॥ शोणित छीट छटानपरी तुलसी प्रभु सोहै महाछबि छूटी। मानहुंमर्कत शैल बिशालमें फैलि चली जनु बीरबहूटी १०॥

क०। देखि चण्ड मुण्डको प्रचण्ड उग्र बोली शिवा अवल अरक्षण की रक्ष पक्ष पालीहौं। कहैं कालीदीन देव कौतुक विलोको नभ चारौं दिग दन्तिबे को आजु दुरातालीहौं ॥ फोरि डारौं बसुधा मरोरि डारौं मेरु-गिरि कालचक्र तोरिडारौं आजुमैं बहालीहौं। काली करौं अतिदल सब बिकरालीकरौं जंगभूमि लालीकरौं तौमैं महाकालीहौं ११ ॥

तथा। हनूमन्तकी लपेटदे लँगूरकी झपेटदल दुष्ट को दपेटिचरपेट चाखलान। बजैं नख चटाचट्ट दन्त होत खटाखट्ट गिरैं सैन घटाघट्ट फूटि फूटि पारजान ॥ कपिकूह किलकार खलजूह झिलकार परीपटपिलकार कटै राकस निदान। तहँ तेजको कुमार करिकोप बेशु-मार बीर लक्षण कुंवर झुकिझारी किरबान १२ ॥

स०। तीर कमान गही बल मण्डक मारमचीघम-सान मचायो। योगिनी रज्जके मारी भई शिवशङ्कर मुण्डके माल लैआयो ॥ भीम समानको युद्धकियोकवि जैतकहैं जगमेंयशपायो। शाहकेकाजपै शूरलड्योशिर टूटिपर्‌यो धड़ धाउके धायो १३ ॥

क०। लगीसों लगाईलंक खेहनि खराबकरौं मारि करौं मोरनि अहार मारजारेको। सोकाविनिधान कान आंगुरी न मूंदिदहौं सुनिहौं न घोर शोर झिल्ली झन-कारेको ॥ भेकन की भीड़ सहसानन मिटाय डारौं मेटि डारौंगरबगरूरघनकारेको। पाऊंजो पकरिकहूंजलसों जकरितन फीहा फीहाकरौं या पपीहा दैमारेको १४ ॥

तथा। गरदके झुंडढक्यो मारतण्ड मण्डललै बाने फहराने जबढिग आनि अरिके। तमकितमकि तब राजेकर जिलैबीर बिरुझाने खरुझानेजैसेबाघथरिके॥ मण्डन विरचिललीनीघोरिनकी बागदीनी दौरिकै दरेरे जैसे भादौं की लरिके। जित तित बिजली सलोह लगे लहकन बरसन बाणलगे जैसे बूंद झरिके १५॥

तथा। अभय कठोर बाणीसुनिलक्ष्मणजूको मारिबे को चाही जो सुधारो खल तलवारि। यार हनुमन्त तेहि गरजि हहासकरि डपटि पकरि ग्रीव भूमि लै परे पछारि॥ पुच्छन लपेटि फेरिदन्तन दरदराय नखन बकोटि चोथिदेत माहि डारि डारि। उदरविदारिमारि लुत्थन लुटारि बीर जैसे मृगराज गजराज डारै फारि फारि १६॥

तथा। आवै बीर बिक्रमप्रचारै जो समरबीच तिन-हूंको झपटि दपटिनेक हारैना। जाहिर है जम्बूद्वीप श्रीप्रताप रुद्रसिंह दान सनमानसमय शोच उर धारै ना॥ द्विज बलदेवकहैं बकसि बितुण्डदेत झुण्ड झुण्ड गुड़िनको लखिकै बिचारैना। हल्लाहै कुबेरकेमहल्लामें त्रासितमेरु कोविद कविनहित मोहूंकोउपारैना १७॥

स०। अंजनी तातदई जबलात गिरयो हहरातनगात सँभारो। फेरिसचेत उठ्यो रणधीर भई अति पीर शरीरनटारो॥ कहैं कृष्णप्रशंसि कह्यो मनुजात इजा-दहै पौरुष कीशतिहारो। देखि हृदय सकुचे हनुमान न प्रानगयोधृगमानहमारो १८॥

तथा। मण्डितजे रविरूप किरीटनमाणिक मोतिन सों झलकारे। पूजितफूलसुगन्धनसों नभबालनके तन में महकारे॥ काहू लचेन लचावत औरन चन्दन ऐसे महा अहकारे। तेशिर रावणके रणमें हनुमान बली चढ़िलातन मारे १९॥

तथा। इंद्रकेवज्रसे जे न डरे न टरेहैं जलेशके फांस प्रहारे। शम्भुत्रिशूलगह्यो नहिंनेकन बिष्णुके चक्रसों चक्रनहारे॥ ब्रह्मकी शक्तिन शालेहिये रण आयतेरावण केललकारे। कालदपेटनजेनटरे हनुमान बलीतेचपेटन मारे २०॥

क०। नाचिनाचि कूदिकूदि किलकिकिलकि कपि उछरिउछरि राहलेत आसमानकी। बलकिबलकिबलु करि करि छरिदरि छरतछरेद भेदकृतगति भान की॥ रुण्डनसों रुण्ड अरु मुण्डनसों मुण्ड करि मारिभट झुण्डनघुमण्ड मारुघालकी। शाबशकहत रामहिये हरषात जात देखोवीरलषण लड़ानि हनुमानकी २१।

स०। अतिकोप सों रोप्योहै पाउँ सभासब लङ्कस शङ्कित शोर मचा। तमके घननादसेबीर प्रचारिकैहारि निशाचर सैनपचा॥ नटरै पग मेरुहुसों गुरुओभो सो मनोमहिसङ्गबिरञ्चिरचा। तुलसीसबशूर सराहतहैं जग में बलशालिहै बालिबचा २२॥

क०। आयो आयो आयो सोई बानर बहोरिभयो शोर चहुँओर लंकाआये युवराजके। एककाढ़ेसोंजएव धौंजकरें कहाँकैहै पोचभई महाशोच सुभटसमाजके।

गाज्यों कपिराज रघुराजकी शपथकरि मूंदे कानयातु-धान मानों गाजेगाजके । सहमिसुखाति वातजालकी सुरतिकरिलवा ज्यों लुकात तुलसीझपेटबाजके २३॥

स०। तोसों कहौं दशकन्धररे रघुबीर बिरोधनकीजिये बौरे । बालिबली खरदूषण औरअनेक गिरेजेते भीतमेंदौरे ॥ ऐसियहालभई त्वहिंकौन तोलैमिलुसीय चहैसुखजौरे । रामके रोषनराखिसकै तुलसी विधिश्री पति शङ्करसौरे २४ ॥

क०। लोथिन से लोहू के प्रबाहचले जहां तहां मानहुगिरिन्ह गेरु झरनाझरतहैं । शोणित सहतघोर कुंजरकरारे भारे कूलते समूह बाजि बिटप परत हैं ॥ सुभट शरीर नीरचारी भारीभारीतहां शूरन उछाहकूर कादर डरतहैं । फेकरि फेकरि फेरुफारिफारि पेटखात काककङ्क बालक कोलाहल करतहैं २५ ॥

तथा। जाकी बांकी बीरता सुनतसहमतशूर जाकी आंचअबहूं लसत लङ्कालाहसी । सोईहनुमान बल-वान बांकोबानइतजोहै यातुधानसेना चले लेत थाह सी ॥ कम्पतअकम्पन सुखायअति कांपकांप कुम्भक-करणआइरह्यो पायआहसी । देखे गजराजमृगराज ज्योंगरजधायोबीररघुबीरकोसमीरसूनुसाहसी २६ ॥

इति॥



हफ़ीजुल्लाहखाँका ॥

हज़ारा

दूसरा भाग

विशेष रसके चुहचुहाते हुये कवित्त व सवैया ॥

स०। बनमें वृषभान कुमारिमुरारि रमे रुचिसों रस रूपपिये। कलकूजतपूजतकामकला बिपरीतरची रति केलहिये॥ मणि सोहत श्यामजरायजरी अति चौकी चलै चलचारुहिये। मखतूलके झूल झुलावत केशव भानुमनों शनि अङ्कलिये १॥

क०। आली ऐंड़दारबैठी ज्वानी के तखत पर नैन फ़ौजदारखड़ेलखैं चहूंओराहैं। द्वादशहूभूषणके द्वादश वज़ीरखड़े सोरह शिंगार भूपलखैं हगकोराहैं॥ रूपको गुमान शीश मुकुटहै छत्र और ज़ेवरकी नौबति बजति सांझ भोराहै। कहैकवि केशवदासआली बरणीनजाति जोबनकी जोरामानो बादशाही तोराहैं २॥

तथा। सुकनि कुमार भोरहींते करआरसी लैसाजती शिंगारबारबासती सुवासहौ। बातैं मनभावतीवतावती नसखिहूंसों रातिरातिरंगपतिसंगपरिहासहौ॥ मृदुमुस-

क्याती प्रेमराति रिस ठानती हौ आनती हौ रिसब
जानतीविलासहौ। प्रीतिमदमातीन समाती फूलिअङ्ग
निहौ काहेकोलजाती क्यों न जाती पियपासहौ ३ ॥
तथा। बड़ेबड़ेमोतिनकी लसत नथूनीनाक बड़ेब
नैनपगे प्रेमके नसनसों। रूपऐसी बोलिनमें सुन्दरन
वेलीवाल सखिन समूह मध्यसोहत जसनसों॥ कांकर
चलायोहै तहां दुरिकै करन कान्ह मुरकि तिरीछी चि
ओटदै बसनसों। नेकअनखानी सतरानी मुसुक्यान
भौंहवदन कँपायो दाबि रसना दसनसों ४ ॥
स०। मिलिये उड़िकै किमिपङ्ख नहीं लखिये किरि
नाहिंकला शशिकी। हरिके श्रुतिसे श्रुतिजोलहते सुन
तेहीसुबोलनि वामुखकी॥ मुखशेषहूकेलहतेकहतेकम
लेशकथा गुनऔ यशकी। मिलिबो बिछुरो बिछुरोब
मिलौ अपने बसना बिधना बसकी ५ ॥
तथा। भूषण सेत महा छबि सुन्दर सानि सुवार
रचीसब सौनें। गोरेसेअङ्ग गरूरभरी कवि खेमकहैं ज
गईतहँ गौने॥ चन्द मुखी कटिक्षीनखरी दृग मीनहु
अतिचंचलदौने। ऐसीजो आयके अङ्कलगै तो कलङ्क
लग्यो अरुहोउ सोहोने ६ ॥
तथा। लखिपायन पायल पायलहै पुनिलंकते दौ
निशंक गयो। तवरूप नदी त्रिबली तरिकै करिकै मति
साहस पारभयो॥ कुचदोऊ सुमेरुके बीचमेरी मनमेर
मुसाफिर लूटिलयो। कविगंग कहैंवटपारमनोज रुमा
वलीते ठगसङ्ग ठयो ७॥

तथा। तूरत फूल कलीन नवीन गिरो मुंदरी को कहूंनगमेरो। संगकी हारी हेराइगोपाल गईअलसाइ डेराइ अँधेरो॥ सांसति सासुकीजाय सकौंन अहोछिन एकनगैयन फेरो। कुंजबिहारी तिहारी थली यह जात उज्यारी दया करि हेरो ८॥

तथा। यहबन्धुइहैबड़वानलको नथमोतायाज्वाल सो जागतहै। यहशीशको फूलहु ताप करै तनु नागन मों बिष पागतहै॥ मृदुहाराहिये कसकै गुरदत्त कठोर उरोजन लागतहै। यह दाग कपोलनमें शितलान को दागकरेजे मों दागतहै ९॥

तथा। सधिचितौनि चितौनिसकै औ सकैनतिरीछी चितौनि चितै। गुड़ियानको खेलिबो फीकोलगै अरु काम कलाको बिलासकितै॥ लरिकापन यौवन सन्धि भई दुहुँबैसको भाव मिलै नहितै। बिबि चुम्बकबीचको लोहो भयो मन जाइसकै न इतै न उतै १०॥

क०। अमलकमलवारौं चन्द सुकविआगे कमला कीपांयनकी मृदुअरुणईके छीनीभईकटि अतिनिकसि नितम्बआये छपिगई छाती बड़ेकुचतरुणईके॥ आनन प्रकाशसोम सूनो सो निहारियतु सौतिनको जोम गयो भई करुणईके। गई लरिकाई दबि घूमडेमनोज ओज उमड़ेपरत अंगतंग तरुणईके ११॥

स०। ज्ञानी उपासिक ध्यानी बड़े नितनेम निबाहि सुदान दये हैं। जाने सुने गुण ज्ञानै गुणौगुण गाहक साधक सिद्ध भयेहैं॥ योगबिचार बिरागक्षेमकरके-

तिकु तीरथ पन्थ गयेहैं । सन्तपुरातन हैं तौ भले पर जौलौं नयेनहिं तौलौं नयेहैं १२॥

तथा। अम्बुजकंज़से सोहत हैं अरु कंजन कुम्भ थपेसे धये हैं। बारेखरेगदकारेमहा बटपारेलसैंअरुमैन छयेहैं॥ ऊंचे उजागरनागरहैं औ पीयके चित्तके मित्त भयेहैं। हैंतो नयेकुचये सजनी परजौलौं नयेनहिं तौलौं नयेहैं १३॥

तथा। हेरो तोहेरो न जात भटूहरिहेरो बिना नहिं लागतनीको। नैनजुरैं न मुरैं न भलीबिधि कौतुककासों कहौं यहजीको ॥ को समुझैयशवन्तइसै हौंताकोकरो वलिपौरिजनीको । जीवकली कहेलाज तुरंग कहौकहि-बोकरो लाजकै जीको १४॥

क०। वैसतरुणाई रूपराजतअरुणाई तैसी सुन्दर-ता पाईशोभा समसचकी । रतितोरतीसीरम्भा लंकको नशंकजाक कहै जगदेव जू रहैसो देखभचकी ॥ सावन सुहावन मनभावनके तंगपटपटलीपैपगदैकै लेनलागी मचकी। झूलाकोझुकायदई झोकएकबारनसों बारनके भारकई बारनारलचकी १५॥

स०। एकहीसों चित चाहिये और लौं बीचदगाको परैनहीं टांको।माणिकसों चित बेचिकै जू अबफेरिकहां परखावनोताको॥ ठाकुरकामनहीं सबको इक लाखन में परवीनहै जाको । प्रीति कहा करिवेमें लगै करिकै इकओर निवाहनो वाको १६॥

क०। सुथरीसुशीली सुयशीलीसुरसीली अतिलंक

लचकीलीकाम धनुष हलाकासी। कहैकवितोषहोती सारीतेनिनारी जबकारीबदरीतेन्नढैचन्द्रकेकलाकासी॥ लोने लोनेलोयनपैखंजनभ्रमकवारोंदन्तनचमकचारु चंचलाचलाकासी। सांवरेसुजान कान्हतुमसे छपाऊं कहा सेजपैसोवाऊं आनि सोनीकीशलाकासी १७॥

स०। अरीजाकोलगीतनुसोंशुभ वैकहाजाने प्रसूतविथावभ्झरी। हरिनी होय भूमिमें क्योंनगिरी सरसादर सारभई मभ्झरी॥ निधितोषतूक्यों समुहेभईरी नबचाइ कटाक्षनकीनजरी। बरजोरी बिहारीकेनयनननसों करवाईकरे कहिकै भ्झगरी १८॥

तथा। लहिजीवन भूरिको लाहुअली वे भली युग चारिलौंजीवोकरें। द्विजदेवजू त्यों हरषायहिये बरबैन सुधामधुपीवोकरें॥ कछुघूंघुटखोलि चितै हरिओर न चौथिशशीद्युतिलीवोकरें। हमतोब्रजकोबसिवोईतजो अबचावचवाइनें कीवोकरें १९॥

तथा। आनन है अरबिन्दन फूल्यो अलीगणभूले कहामड़रातहै। कीरकहा तोहिं बाइ भई भ्रम बिम्बके ओंठनको ललचात है॥ दासजू ब्याली नवेलीवनाइये पापीकलापीकहाहरषातहै। बाजतबीन नबोलतबाल कहासिगरेमृगघेरतजातहै २०॥

क०। आजुचन्द्रभागा वाहिचन्द्रवदनीकेतीरनिरत करत आई मोरके परनको। तबवे कहाधौं कहावेनी गहिरही तब वोहूदरशायोरी बधूपके दरनको॥ तब वै कहाधौं परस्यो धौं उरजात यह परस्यो कहाधौं कहा

आपन करनको। नागरि गुणागरि चलतिभईताहीक्षण गागरि लैरीती यमुनाजलभरनको २१ ॥

तथा । नखतसेमोतीनथबाँदियां जड़ायजड़ी तरल तय्योननकी आभा मुखफूटीहै । देवकीनन्दनकहैतैसी चारुचम्पकली पचलरी मंत्रमोहनीकीगति लूटीहै ॥ चूनरीकुसुम्भीरङ्ग ऊनरी परततनु कलितकिनारी सो ललितरसलूटीहै । वालतेरी छातीमें हमेल छबि छूटी मनोलालदरियाईबीच बेलदारबूटीहै २२ ॥

तथा । कुंजनतेआवतिनबेलीअलबेलीचलीशोभा अंगअंगकेरी जागतउदैभई। देवकीनन्दनमुखछबिकी निकाईलसैचारोंओरचांदनीप्रकाशकरिकैगई ॥ श्याम मुखभाषीतुमकोहौ कित जैहौ सुनिबैनमगथाकी फिरि वाहीठौरठैगई । लालनकीओर दृगजोरिकसिकोरितनु तोरिझकझोरि चितचोरि करिलैगई २३ ॥

तथा। गुड़हर गेंदागुलसब्बोसीबिशाल छबि लाल कचनारसीअनारसम मानीहै। सूरजमुखीसीगुलपेचा सीजपासी सोहै देवकीनन्दनगुललालासमजानी है ॥ चम्पासीचमेलीसीजुहीसी सोनजूहीसम सेवतीगुलाब गुलदावदी प्रमानीहै । कलपतरोवरसे फूलेलसै नन्द लाल चारोंओरललनालतासीलपटानीहै २४ ॥

तथा । डोलैपौन परासिपरासि जलबूंदन सों बोलै मोरचातकचकितउठिडरिमैं । कहांलौंबराऊं दई मारे मैन वाणनसों थकिरहीकेतिकौ उपाय करि करि मैं ॥ दत्तकवि प्यारे मनमोहन नपाऊंकहौमनसमुझाऊंरी

कहांलौं धीरधरिमैं। छायेमेघ मगनसुहाये नभमण्डल में आये मनभावन नसावनकी झरिमैं २५॥

तथा। बदन बिसूरै सुधारसअवलोकै कंज बिकच निहारै नैन चारुसमता ठये। चांदनीकी तेरीहांसीसम कहिगानै बिम्ब ओंठन बखानै बैन कहतनयेनये॥ धनी रामअंग उपमानयों बिलोकिलाल होतहैं निहालबाल बावरीसे ह्वैगये। दूतीके बचनसुनि चातुरी सों सानै कछूमरम नजानै नैना अरुणकहाभये २६॥

स०। पीठिदै पौढ़िदुरायकपोलको मानै न कोटि पियाउतपोढ़त। बाहँनबीच हियेकुचदोऊ गहे रसना मनहींमनशोचत॥ सोवतिजानि निवाजपियाकरसोंकर दै निजओर करोंटत। नींबी बिमोचत चौंकिपरी मृग-छौनासिबालबिछौना पलोटत२७॥

तथा। भोरहिते वहकौनसी पाहुनि आइतिहारेही न्योतिबुलाये। छोटीसिछाती छवानीलौं बेनीनरोत्तम रूपकी लूटिसीपाये॥ सारीहरीअँगिया घनिबेलिको घमाति सोलहँगा थिरकाये। कंजसों आनन खंजसों नैननि एड़िन ईंगुरसोलपिटाये २८॥

तथा। गांसगसीली येबातैंछिपाइये इश्क न गाइये गाइयेहोलियां। गेंदबहाने नबीरचलाइयेसधै गुलाल उड़ाइयोकोलियां॥ लोगबुरे चतुरे लखि पांवै गे दावे रहो दिलप्रीति कलोलियां। पायँपरों जीडरों दुक नागरहाइकरौंजिनि बोलियांठोलियां २९॥

क०। ढरि ढरि ढुरेवेनी बिपुल नितम्बनपैघेरिघेरि

घुमड़त घांघरो घनेरोहै। फेरि फेरि फिरत निपटलच-कीलीलंक फेरि फेरि दृगफेरि फेरि मुखफेरोहै ॥ भुजकी डुलनि औखुलनिकुचकोरनि की चाहि चाहि परमेश भयोचित्त चेरोहै। झुकिझुकि झुकनिभरतिघट ज्योंज्यों त्यों त्यों मैनके भभूकनि भरतघट मेरोहै ३० ॥

तथा। चांदनी चटकचारुचौतरामेंचन्द्रमुखीचांदनी बिलोकिबेको बैठी सुकुमारहै। फैलिरही चांदनी चटक तैसीअंगनकी चहूंओरचन्दनसुगन्धनकीसारहै॥बिन्दा दत्तकहैं हैंहुहारे मानिवारे न्यार शोभासों सँवारे जल सूघरसुठारहै। मोतिनकी मालधरे सुमन बिशाल हाल लालचलि देखौआजुबालकी बहारहै ३१ ॥

तथा। गेहदेह मेहकोन क्षोभ लोभ प्राणलघुलाज परलोकलोक तीन्यों ज्यों न गनमें। उन्नतउरोजभार चपल चमक चासलपटि लपटिजात नागहूपगनमें ॥ वेनीकविकहै कछुकहतनअनैऐसी लगनि लगाई हाइ कौनसीलगनिमें। भूमि हरियारी हरियारीते सिधारी प्यारी निशिअँधियारी अँधियारीसी दृगनिमें ३२॥

क०। रैनिमें जगाई कल करन न पाई इमिललनि सताई परयंक आंकमहियां। ससकिअसकिकरहतिही व्यतीतीनिशामसकिप्रवीनीवेनी कीन्हीचितचहियां ॥ भीर भयो भौनके ससोन लागि गई सोय सखिन जगाइवेको आनिगही वहियां। चौंकि परी चकिपरी औचक उचाकि परी वाकि परी जाकि परी साकि परी नहियां ३३ ॥

स०। कुंजगलीन अलीगनमें चलीआवती ती वृष-भानु दुलारी। ताहि बिलोकिकै रंगभरे छल सों छिपि कै रहे कुंज बिहारी ॥ कुमकुमा घालो उरोजनि को तकि पाणि सरोज सों ताहि निवारी । जानि है बीरदशा उर आनि बजीवह एकहीहाथकी तारी ३४ ॥

तथा। मेरोतुम्हारो मिल्योजियरा सुचढ्यो रस रंग अनंगकेजागे । गाउँ निगोड़ो चवाई बुरोहै कहां लगि छूटिये बातन भागे ॥ फैलिपरै कहूं बातसगेनमें जाइ चुके तिये पायन मांगे । काह हमैं औ तुम्हैं बिगरैगी जुटीकोगे भूलिहुं काहुके आगे ३५ ॥

क०। कबके बिहारी बलि करत हहारी तूतौ करति कहारी समय सरसबिचारिये । जगकी जियारी दया देखिघटाकारी उठिआय बनवारी तू कहैतौपांइपारिये ॥ जिन्हैंदेखिहारी मृगचारी मृगनारीसारी कामकीकरारी सबै प्रेममतवारिये। कारीकजरारी उजियारीअनियारी भपकारी रतनारीप्यारी आंखैंइतढारिये ३६ ॥

स०। आंखैंगुलाबसी खासीलसैं मुखनासिकाबिम्ब धराअवलीको । भारी नितम्बनि जंघनि पीन बनो कटिछीन बनाव ललीको ॥ मंचित भीजो लसै उरचीर उरोजनिओप सरोजकलीको । बांधिकै जूरो कसै अँगि-या मनपूरोकरै तिया छैलछलीको ३७॥

क०। कान्हकैबांकी चितौनिचुभी चितकलिहतूझांकी रीबालगवाछन । देखिहैनोखीसी चोखीसीकोरनि आछे फिरै उभरे जित जाछन ॥ मारचोसँभारिहियेमों मुवा-

रक हैसहजेकजरारे मृगाछन। काजरदेरी न एरीसुहा-
गिल आंगुरीकेरी कटैगीकटाछन ३८ ॥

तथा। कनक वरणवाल नगनलसतमाल मोतिनके
मालउर सोहैंभलीभांति हैं। चन्दनचढ़ायचारु चन्द्र-
मुखी मोहिनीसी प्रातहीं अन्हाइपगुधारेमुसुकाति हैं॥
चूनरी बिचित्रश्याम सजिकैमुबारकजू ढांकिनखशिख
ते निपट सकुचातिहैं। चन्द्रमें लपेटिके समेटिकैनखत
मानों दिनको प्रणाम किये रातिचलीजातिहैं ३९ ॥

स०। गईसांझसमैकीबदीबदिकै बड़ीबेरभई निशा
जानलगी। कविमन्य जुजानि दगैलन घैलन छैलकी
छातीनिदानलगी ॥ अबकौनको कीजै भरोसो भटूनिज
वारिये खेतीये खानलगी। अतिसूधे बुलाइबेकी वतियां
नहिं जानिये काधौं बतानलगी ४० ॥

क०। उठेघनजालदेखि दामिनिकलापदेखिदेवराज
चाप देखि त्रास अतिपावतो। बुन्द बून्द पात देखिसूर्य
अप्रकाशदेखि दिनहू को अन्त देखि चैनहू न पावतो॥
नभको बितार देखि वायुसुखचार देखिअतिअंधकार
देखि मोमेंमनलावतो। होतोवहां पावस तो एरीसखी
वातसुनो बीसबिसे अजहूं हमारोकन्तआवतो ४१ ॥

स०। आयेहैं भावेभरे नँदलालसुभावकरैं घरकाज
से भावै। झांकीदैनैनकी सैनकर्‌यो हँसिरायजुकुंजन
खेलखेलावै॥ जोवरुनी बरुनीनपरैं पल घूंघुट खैंचत
सासुसिखावै। ताहिमें लाजसों काजकछू जरिजायसो
लाज जो काज न आवै ४२ ॥

तथा । रसिकैरससरीतिकी गैलनि माहिं अनीतिको पंथन गाहियेजू। अबतौ छलछन्द कि बानितजौ हँसि बोलिकैंचित्त उमाहियेजू॥ रसियाकरजोरि करौंविनती कछूऔरहमैं नहिं चाहियेजू। यहप्रेमाकिआंखें लगीसों लगी पैकुलीनयो ओर निबाहियेजू ४३ ॥

क० । प्यारे हितकाज प्यारी प्यारी हितकाजप्यारे दुहुँनि शिंगारेतनुनीक चटमटसों । यमुनाके नीरतीर हँसि हँसि बातेंकरें मनअटकायो कल कोकिलाके रट सों॥ एतेरघुराई घन घटा घहराईआई बरषनलाग्यो नान्हीं बूंदनके ठटसों । जौलौंप्यारो प्यारीको उठायो चाहै पीतपट तौलौं प्यारी प्यारें ढांपिलियो नील पटसों ४४ ॥

तथा । भैरोंस्वर गावै कोल्हूआपसों चलतमालको-सके अलापे होत पाहनदरारैंरी । श्रीशब्द सुनेतेसखे तरुहरेहोत जलकी कनूकैंझरें मेघकीमलारैंरी॥ चढ़िके हिंडोले जबगावत हिंडोलराग फिरकी सी डोलैं पाय मारुतकेरारैंरी । दीपक उचारें दिया हाथसों न बारैं मनओरे करि डारैं येकदम्बनकीडारैंरी ४५ ॥

स० । लावतमैन सुगन्ध लखौ सब सौरभको तन देत दसीहै । अंजनरंजनहू बिन श्याम बड़ेबड़े नैनन रेखलसीहै॥ ऐसीदशारघुनाथलखे यहिआचरजै मनि मेरीफसीहै । लाली नबेली कि ओठनमें बिन पान कहांतेधों आनि बसीहै ४६ ॥

तथा । सबरैनिजगी हरिकेसँगराधिकावासरवास

उतारतिहै। अतिआलसवन्त जँभाति तिया अँगरा
भुजानिपसारतिहै ॥ सरकीअँगिया जुहरेरँगकी मु
तीफ़ महाछबि पारतिहै । मनुहै जो पुरैनिको पातन
उरभो चकवातेहिटारतिहै ४७ ॥

क०। दमई कोयलमगनके करतकूकें जलमयीम
पग परते न मगमें। विज्जु नाचै घनमें बिरह हियबी
नाचै मीचु नाचै ब्रजमें मयूर नाचें नगमें ॥ श्रीप
सुकविकहैं सावन सुहावनमें आवन पथिक ल
आनँदभो अंगमें। देह छायो मदन अछेह तम छि
छायो मेहछायो गगन सनेह छायो जगमें ४८ ॥

स०। लरिकाईके खेलकटेनबनाईअजोंनमनोज
बाणलगे। तरुणापनआयोनहीं सजनी तरुणीनकेचै
सुहानलगे ॥ हरिकोह कहांके हैं कौनकेहैं येबखानक
मुंहआनलगे। अबतो तिरछे चलिजानलगे दृगका
लगे ललचानलगे ४९ ॥

तथा। मन्दमन्दचलिकैअनन्दनन्दनन्दपासअँगि
केवन्द बारबार तरकतहैं । पतियांरसालबरबाल हाँ
हँसि कहैं हीराहोत जातलालपन्नामरकतहैं ॥ कहैंशि
कवि ऐसेताकिकै तमाशेतानि कौतुक सखीनके हिये
सरकतहैं। जहांजहां मगमाहिं पगदेत तहां तहां
च्चिर कुसुम्भकैसे कुम्भढरकतहैं ५० ॥

तथा। समयकोन जानै सीख काहूकी नमानै रा
कठिनकोठानै सोकठिनभईजातिहै । पीछेपाछितैहैघा
ऐसीनाहिंपैहै टेक तेरीरहिजैहैकहा टेढ़ीभई जाति है

सङ्गम मनावै तोहिं हितकी सिखावै सीख जा बिन न भावै भौन ताहीसों रिसातिहै। मोसों अठिलाति बिन कामको हठाति प्यारी तूतो इतराति उतराति बीती जाति है ५१॥

तथा। बड़ेक्षेमसोंक्षेमकरी मड़रातउड़ात क्योंमण्डल दैघरके। ममसेवक बाहु त्रिलोचन त्योंतजिदाहिन बाम दोऊ फरके॥ कहिये हितकै हित मेरीहितू करके कत कंकनहूं करके। दरकेकुचकेपट कंचुकीके तरकेबँद आजु कहा तरके ५२॥

तथा। प्यारी सुआनि अचानक आलिन प्रीतमकी कहिदीनी अवाई। भूरिभरी पुलकावलि यों सबअङ्गन में सुखमा सरसाई॥ बाल उताल सुबंशकहै नँदलाल को देखनको उठिधाई। भार नितम्बनको न गयो करि टूटनकी मनशङ्कन आई ५३॥

क०। करत कलोल कीर कोकिल कपोत केकी चन्द की बधाई बाजे जानैं जनिघन धुनि। सुकविसुमेरुमीन मृगज मराल मन मुदित मधुपन्योते कोकिला सकल सुनि॥ केहरि कंदूरी कीक कदली कमल फूले सौतिन सजेहैं तनु चीर चारु चुनिचुनि। कहापटतानि प्यारी पौढ़ीहै विलोकौ आनि चारों ओर चौचँदमच्योहैतुम्हैं रूसेसुनि ५४॥

स०। तुमचालेकीबातैं चलावतिहौ सुनिकै अतिही तनुछीजतहै। क्षणनेकहून्यारी जोहोतिकहूं थलमीनन कीगतिलीजतहै॥जबलौं सुलतानन आवैघरै तबलौंतो

त्रिद्वानहिं कीजतहै । वहप्रीतमकी अनुहारि सखी नँ-नदी मुखदेखिकै जीजतहै ५५ ॥

तथा। बातें बनावती क्यों इतनी हमहूंसों छिपा नहिं आजरहाहै। मोहनकी बनमालको दाग देखाय रह्यो उरतेरे अहाहै॥ तूडरपै करैसोंहैं सुमेरे अरीसुनु सांचको आंचकहाहै। अङ्कलगी तौकलङ्क लग्यो जोन अङ्कलगी तौ कलङ्क कहाहै ५६ ॥

तथा। भीतर ते उठि आवत देखिकबैवह बालभुजा भरिलैहैं। शेखर कण्ठलगाय कै पीछेते आनँदकेअँशु-वानि अन्हैहैं॥ कंतभले भले बोलके सांचेकह्यो तुमहीं हम वादिन ऐहैं। औधिगये योंभिया घरजाय कबैहम हाय ओराहनोपैहैं ५७ ॥

तथा। राखत नैननमें हियमें भरि दूरभये क्षणहोत सचेतहैं। सौतिन की कहै कौनकथा तसवीरहूंसों सत-राति सहेतहैं॥ लागभरी अनुराग भरी हरिचन्दसबै रस आपुही लेतहैं। रूपसुधा इकलीही पियै पियहूको नआरसी देखन देतहैं ५८ ॥

तथा। सोईतिया अरसायकै सेजपै सोछबि लाल विचारतही रहे। पोंछि रुमालनसों श्रमसीकरभौंरनको निरुवारतहीरहे॥ त्योंछबि देखिबेकोमुखते अलकैंहरि-चन्दजू टारतही रहे। द्वैकघरीलौं जकेसे खरे वृषभानु कुमारि निहारतही रहे ५९

क०। बोल्योकरै नूपुरश्रवणके निकट सदा पद तल लालमन मेरे बिहर्‍यो करै। बाजीकरै बंशी धुनि

पूरिरोस मुखमन मुसुकानि मंदमनहि हस्योकरै ॥ हरी-चन्द चलनि मुरनि बतरानि चित छाई रहै छबि युग दृगनभरयोकरै। प्राणहूंतेप्यारीरहै प्यारीतूसदाईतेरो पीरोपट सदाजियबीच फहरयो करै ६० ॥

स०। ब्रजमें अबकौन कला बसिये बिनु बातही चौगुनो चावकरैं। अपराध बिना हरिचन्दजू हाय च-वाइनै घात कुदाव करैं॥ पौनमों गौन करैहीं लरी परैं हायबड़ोई हियावकरैं। जोसपनेहू मिलैं नँदलाल तौ सौतुकमें ये चवाव करैं ६१ ॥

तथा। बैठेसबै गुरुलोग जहां तहां आई बधूलखि सासभई खरी। देन उराहनोलागीतबै निशिको अति भोरी न जानत रीतरी॥ डीठ तिहारो बड़ो हरिचंद न देखतमेरी सुएसीदशा करी। आंचरदीनो सखी मुखमें कहिसारी फटीतो बनाइहै दूसरी ६२ ॥

तथा। प्राण पियारे तिहारेलिये सखिबैठे हैं दैरसों मालतीके तर। भोरही बातें बनाय बनायमिलै न वृथा गहिकैकरसों कर ॥ तोहिं घरी छिन बीततहै हरिचन्द उतैयुगसो पलहूभर। तोरी तो हांसी उतै नाहिं धीरज नौघरीभद्रा घरीमें जरैघर ६३ ॥

तथा। क्योंइनकोमल गोलकपोलन देखिगुलाबको फूल लजायो। त्यों हरिचन्दजू पंकजकेदलसों सुकुमार सबैअँगभायो ॥ अमृतसे युग ओठलसे नवपल्लवसों कर क्योंहै सुहायो। पाहनसों मनहोत सबै अँगकोमल क्यों करतार बनायो ६४॥

तथा। तुम्हरेतुम्हरेसबकोऊकहैं तुम्हैंसोकहाप्यारे सुनात नहीं। विरदावलि आपनी राखो मिलौ मोहिं शोचिवेकी कछू बातनहीं॥ हरिचन्दजू होनीहुती सो भई इनबातन सों कछु होतनहीं। अपनावते शोच विचारि अबै जलपानकै पूछनि जातिनहीं ६५॥

तथा। केहिपापसों पापी न प्राणचलैं अटके कित कौन विचार लयो। नहिंजानिपरै हरिचन्दकछू विधिने हमसों हठकौनठयो॥ निशिआजहूकीगई हायविहाय विनापिय कैसे न जीवगयो। हतभागिनी आंखिनको नितते दुख देखिवेको फिर भोरभयो ६६॥

क०। हमतो तिहारे सबभांति सों कहावैं सदा हम सों दुराव कौन सोहैसो सुनाइदै। द्वारपै खड़े हैं बड़ी देरसों अड़ेहैंयहै आशाहै हमारीताहि नेकतो पुराइदै॥ हरिचन्द जोरिकर विनती बखानैयही देखिमेरी ओर नेकमृदु मुसुकाइदै। एरी प्राणप्यारी बारबारबलिहारी नेक घूंघट उघारि मोहिं बदन दिखाइदै ६७॥

तथा। लाईकेलिमन्दिर तमाशाकोबताइ छलबाला शशिरूपके कलापैंकिये दावासी। धाइताहिगहन चहत हरिचन्दजूके घूमिरही घरमें चहूंधा करि कावासी॥ धोखादैकैअंकनभरत अकुलानो अतिचंचलचखनसों लखानीमृगछावासी। आहिकरि सिसकिसकोरितन मोहिंपियैकरतेछटाकि छूटीछलाकि छलावासी ६८॥

स०। तूँरंगीरंगपियाकेसखीकछूबातन तेरीलखाइ परीहै। यद्यपिहौंनित पासरहौं तऊमेरीयहै मतिशोच

भरीहै॥जानोअहो हरिचन्दअबैयहप्रीतिप्रतीतितिहा-रीखरीहै।श्यामबसैं उरमेंनिततांहि सों पीतहू कंचुकी होत हरी है ६९॥

क०।आजुकेलिमन्दिरसोंनिकसिनवेली ठाढ़ी भौंर चारोंओररहे गन्धलोभिवारके।नैनअलसानेघूमैं पट-हूपरेहैंभूमैं उरसेंप्रकट चिह्नपिये कण्ठहारके॥हरीचन्द सखिनसों केलिकीकहानीकहै रसमेंमसूसीरही आलस निवारके। सांचेमें खरीसीपरी सीसी उतरीसी खरी बाजूबन्दबांधे बाजूपकरिकेंवारके ७०॥

तथा।साज्योसाजगांवामिलितीजकेहिंडोरनाकोता-निकैबितान खासोफ़रश बिछायोरी ।आवैंमिलिगोपी तापैभीजि झुण्डझुण्डकाम छापसीलगावैंगावैं गीतमन भायोरी॥मोहिंजानि पाछेपरी देरीपै दयाकै हरिचन्द अंकलैकैलालछिपिपहुँचायोरी।जानिगईताहूपैचवाइन मेंगजबदेखे पांयबिनुपंकके कलंकमोहिं लायोरी ७१॥

तथा।गौनेके सुदिनगुन गौरितेरेसासुरेते शुभघरी शोधिकैसँदेशोलिखिआयोहै।हालऐसे कालसोनिहा-लकरुणाहैजाइचाहै सुनिसुनिकैचतुर चैनपायोहै॥ का-लिहीही उघारेशीशफिरत सखीनमध्यमनतकवीन्द्रआ-जऔरैरँगछायोहै। आँचरको करिबो अचानकहीमेरी आली मैंनहींसिखायो तोहिंमैंनहीं सिखायोहै ७२॥

स०।कौनको प्राणहरैहमयों दृगकानन लागिमतो चहैंबूझन। त्योंकछुआपुसहीमें उरोज कसाकसी कैकै चहैंबढ़िजूझन॥ऐसेदुराजदुहूंवथकेसबहीकोलग्यो अब

चौचँदसूभन। लूटनलागी प्रभाकढ़िकैबढ़िकेश छवान सोंलागे अरूभन ७३॥

तथा। लखिठोढ़ीरसाल रसालनकोफरपीरोपरोलर-कोतोकहा। द्विजदेवजू आछेकटाक्षचितैक्षणजोन्हहियो धरकोतो कहा॥ द्युतिदन्तनकी यकबारलखेउरदाड़िम कोदरकोतो कहा। अँग अंगकी ऐसी प्रभाअवलोकि अनंग फिरैं फरकोतो कहा ७४॥

तथा। मंजुसलोनी औबारीलता हरियारीकछूप्रति यानिलईहै। पूगसेवै फल श्रीफलकी सुखमालहि राज-तरागमईहै॥ बातनतेअबहोतप्रफुल्लितपासचहूंअलि औछलईहै। हौबनमालीउतालीचलो तितवंजुलकुंजल प्यारीनई है ७५॥

तथा। यहकाहभयो नहिंजानिपरैकुचपैकासिकंचुकि-यादरकै। भुवनेशजत्योंहीं लचैकरिहांसबभांतिनघांघ-रियासरकै॥ कनखैयनताकतहैलबहूं उनसौतिनकीअं-खियांकरकै। धरकैंछतियां छरकैंकचकुंचित देखति है देहियांफरकै ७६॥

तथा। सुनरीसजनी करिहैंवे कहा अपनीसीसबैजु-पैकैरहैंगी। भुवनेशजू सांचीकहौंतुमसों बतियांछतियां निजधैरहैंगी॥मिलिहैंहमजायअबै उनसों तबतोअपनो मुखलैरहैंगी। अबबीसाबिस्वेयहीहोनो अहै करमींजि कपालन देरहैंगी ७७॥

तथा।उनसोंकछुबातैंकरीजबतेतबहींतेअहैंबिषबोने लगीं।नहिंजानिपरैइन्हैंलाभकहाफुसकातिरहैंकोनेकोने

लगीं ॥ भुवनेशनमानातिहैंतनिकोडरबातमैंबातमिलोने लगीं। मुखखोनेलगीं दुखरोनेलगीं अबचावैंचहूंदिशि होने लगीं ७८ ॥

तथा। साजेअभूषणश्वेतसबैअँगअंगनमेंरसमैनको भीजत। छाइरही कछुयों मुखकी छबि छैलबिहीनछपा-करछीजत ॥ त्योंभुवनेशजू औरोछटा कहिजायसुक्यों मननमैनकामींजत। दामिनीसीद्युतिदैरहीहैचलिक्यों घनश्यामनअंकमें लीजत ७९ ॥

तथा। अबकाहमकोसमझावतिहौ कहिहौ जोकछू नहिंमाखिहौमैं। भुवनेशजू बैरिनिलाजभई तो सोऊ अबतोनहिं राखिहौमैं ॥ सबऔगुण देहिंभुलायअबै उनसों चितचायनभाखिहौंमैं। अपनेनित नैनचकोरन तै मुखचन्दसुधारसचाखिहौंमैं ८० ॥

तथा। अवलोकतक्योंनअलीअबधौंअँगियानिके बन्दयेतंगभये। भुवनेशजू त्योंहींतिहारेनितम्बउरोज-निसंगउतंगभये ॥ सुनिकैबरबैन सुधासेसबैसुरसोकल कोकिलदंगभये। तन दीपति देखि भलीविधिसों मन सौतिनहूंके पतंगभये ८१ ॥

तथा। सखिकौनदशाअपनीमैंभनोंबनगौनअजान-पने ते कियो। मदमाते मलिन्दन वृन्दघनेअरबिन्दन नैननि घेरिलियो ॥ भुवनेशकदम्बन कुंजनमेंभजीकोऊ उपावन आयोहियो। तनचम्पकसों जोहुतो अलिसों अलिवृन्ददुरायबचायोजियो ८२ ॥

तथा। एकसमैमेंकालिन्दजाकूलपैठाढोहुतोकहुंकुंज-

विहारी। ताहीसमै मिलिग्वालिनिमैं कहुँआइपरीउत राधिकाप्यारी॥ देखतहीहरिआनिगह्योकरऔझककही झझकीसुकुमारी। होनचहोमनो बिज्जुछटाकरिफन्द कछूवनअङ्कतेन्यारी ८३॥
तथा। जातीजहांई जहांसखिमैं मगमाहींमजीठसी क्योंढरकीपरै। कंचुकी तो कसीजातिसी है परघांघरी लंककतैंक्यों लरकीपरै॥ ह्वैगयेहैं पुखराजसे क्यों गरेके मुकताछतियां धरकीपरै। जानिपरै नहमैं भुवनेशसु क्यों यह रोमवली फरकीपरै ८४॥
क०। देखिपरे सुखबोनदेखिपरै दृगमुख ऐसेअबि-दित वेद मुकुतिजनावते। कोऊ जड़सैन कोऊ तीरथ अटनकरे मेरेसो न कहरेनहाल कोबतावते॥ भनतदि-वाकर हमारे जान यहीसांच आपजाने पांचकहेप्रगट दिखावते। नीवीगुनछोरिकुचकरसे मरोरिनारि सुरति के फलततकाल नरपावते ८५॥
तथा। बेलापात कनक चढ़ाय पूजिमंत्रजपि ध्यान धरि निकट करत त्रिपुरारीके। बीतेकछुदेरजो प्रसन्न जनजानिकरदेतबरदान सुखदानध्यानधारीके॥ भन-तदिवाकर भुजंग गरगंगाशिर नायकाके बेनीहार गंग अनुहारीके। वोतो मारजारे दृगएतो उजियारेमृगखरे सरे पुजेते उरोज ओज प्यारीके ८६॥
तथा। भरत निशंक अंकपति परयंक पर लचकत लंक हचकत कुचदूनोहै। भालते पसीना ह्वैके आयो मुखमण्डलमेंनखतसमेत कैसोसोहैचन्द्रपूनोहै॥ दिवा-

करकहै उहिआंहिके करतरवसुरतसमै में मानो झरत प्रसूनोहै। बचन विचित्र मित्रमनको उछाह हेत देति सिसकारी चाहहोत चवगूनोहै ८७ ॥

स०। जातिरही यमुनाजललेनको मारगमें हमसों बतराना। लालनिहारि सुमाल नवीन उरोजन खैंचि कहेबड़दाना॥ तादिनतेचगरोहैं चवावने गांवकेलोगने मारतताना। देखी न ऐसी जहान दिवाकर गोकुलके अस बौरेजनाना ८८ ॥

तथा। हमहींका अकेली रहीं उनकेसँग जोपैहमैंदृग तानातिहौ। भुवनेश हितूजेबनीयेअहैं इनकी गतिनाहीं पिछानतिहौ॥ अलिकौनसी बात अहैतुम्हरी हमको हक नाहक सानातिहौ। तुमतौ रसचाख्यो कहौंकिनको बनी ऐसी कि मानौ न जानातिहौ ८९ ॥

तथा। जबहींइतैआवातिहैं तबहीं हमको तुमआनि निहारतुहौ। भुवनेशजू जातीरहैकुलकानि सोई अबबैन उचारतुहौ॥ ब्रजमैंतुम्हें लोगकहा कहिहैं तुमतो लटी बात बिचारतुहौ। यहबात सयानपनेकी नहीं बदनामी को धागे जो धारतुहौ ९० ॥

क०। हंसकहंसबंस सरनलोभायेभायेखंजनलुभाये पन्थ पथिकचलायेरी। अमलसलिलकोश कमलकुमुद छाये अलिमकरंद पाये भूमताभुमायेरी॥ क्वारमें न आये बिरमायेबैरसाल कौन सेतघनछाये स्वाति बुन्द बरसायेरी। तायेतन अतन गँवायेप्रानलेत लाजदेत बिसराये अंगअंग अकुलायेरी ९१ ॥

तथा। आली केलिमन्दिर में ल्याई छलबल करि प्यारेपेखि पकरीउछरिपर्यंकते। भणतकबीन्द्र कैसे थिररहै थोरीबैस पारदकी रदकीचपलताई शंकते॥ नीबी करवारिरही मुकनबगारिरही छलकपसारिरही बदन मयंकते। लालभुजभरी बाल ऐसी तरफरीहाल जाल कैसी सफरी उछारिपरी अंकते ६२॥

तथा। मुखसो लगत मुखसोहे न करति रुखलाज कामसमता बपुषमें पगीरहै। रतिकेबिलास उर अन्तर बसावै पै प्रकाशन करतिरंग प्रेमकेखगीरहै॥ केलिकथाकन्थकहैं उतरुन देतिताको मूठेनैनमूंदेहौस सुनेकी लगीरहै। प्यारेकोजगोहैजानिओढ़ैपट तानितानिलगीरहै उरजोलोपलकलगीरहै ६३॥

तथा। अरसोहै नैनाकरिकरिसोहै मुसकात त्योंत्यों अकुलात ज्योंज्योंहोतहेलेप्रातरी। दोऊबेपररूपरपीवत अधररस चूमिचूमि चटकीलेमुखजलजातरी॥ भणत कवीन्द्रभरिभरिअंकके निशंक नेहभरेदोऊ फिरिफिरि बतरातरी। बिछुरनकाजरी दुहूंकेगात बीतेदोऊलपटि लपटि जातनेकुन अघातरी ६४॥

स०। मंजुलकुंजते आयेहौआजु बिलोकिलतानकी वेषबहारैं। भौंरनिकेभरेभारनिहार चहूंदिशिचारुसुगन्धपसारैं॥ भागभले तिनके सुकवीन्द्रजे रावरेकी रस रीति निहारैं। योंकहिकैतिय नैननिते तरराइचलीअँशुवानकी धारैं ६५॥

तथा। गंगलसैमुकताहलमालकला शशिकीनखरे-

खसोहाई। कंचुकीबन्द जटाभलकै मिलिचन्दनलेप बिभूतिरुहाई॥ आनबधू अभिधानकेमानमें जोमुरि ऐंठतिठानिकुहाई। आपनेतौ कुचशम्भुकेशीशमें हाथ धराइकराइदोहाई ९६॥

क०। ननँदरिसानीरहैसासुअरसानीरहैऐंठीसीजेठानीरहैकासोंकहैबातरी। जरकेअजारमिसपलकापर परीआनिबरौबिरहानल अखिलवाकेगातरी॥ अंशुवा छुटैनकुलकानितेदृगनश्वासपरीजातपातरीमनोजउतपातरी। सोऊतैविदेशबस्यो सोऊतौ लखीनबाम रैनि चारौंयाम वाकोरोवतै बिहातरी ९७॥

तथा। पौढ़ीपटताने अबहोत पछिताने कहा मानस बिथानेकरि मानस दिखाईहै। भनतकवीन्द्र सखियांन सोंनभनैभेद भूलीखानपानैतन आनैछबिछाईहै॥ जाल कीबिरहकी गिरहपरीवाके हियेजानिकै इलाजखोलिबे में चतुराईहै। जानत मुरारिकैतो जानै वहनारि कैतो जानै वहनारि जौनरारि करिआई है ९८॥

तथा। भृकुटीचढ़ी कमानचलत कटाक्षबान चमकनिचौकाकी चमक खड्गधारहै। अंचलनिशानफहरात कुच कुम्भनपैआगेकोपरतपगबीरताकोबारहै॥ भनत कवीन्द्र खूब सौतिन केमनसूबा मारे जात जहां ऐसे मारको अगारहै। नन्दकेकुमारकी सौंराधेजैतवारयह समरको सार कैधौंतेरो अभिसारहै ९९॥

तथा। जादिनते चाह सुनीनाहकेगवन बारी तबहीं तेसुधि खान पानकी बिसारीहै। भनत कवीन्द्रवैशिंगार

आभरण डारे सखिन सों बोलनि हँसनि डारी न्यारी
है। कज्जलकलितवाकेदृगनमें आंशफिरैंपेरीमनोमीन-
निकलिन्दीधार कारी है। कौनसो मरम कहै परम ल-
जीलीबालमौन तपसीलो खड़ीभौनमेंनिहारीहै १००।

तथा। देतलाललालदेतमोतिनकीमालदेत उपमा
विशालदेत कण्ठलपटातहै। चलनकहत प्यारीचलन
नदेतप्यारी चलन अनोखे अङ्गअङ्गनिरखातहै॥ नैन
कंचनासा कीर ओठबिम्ब भौंहैंधनु भाल इन्दुखंडको
उमेठे अधिकातहै। वाकी सुन्दराई मनु बांध्यो है लल
को आली हेरि हेरिमुख फेरि फेरि रहिजातहै १०१।

तथा। फलीवनबेली अलिकुलकरैं केलीएककोकि
ला अकेली वै रसालनसों रागीहैं। दक्षिणतकरैं गौन
सुरभित वहैपौन मौनीतजैमौन देहजिनकीअरागीहैं।
तुम्हैं बिन देखे बिलखत बाल हाल ऐसेभनत कवीन्द्र
करी तुमहीं दुजागीहैं। रातिवाकी तुमबिनपलौनापल
कलागी रावरेअनोखे लालआंखैंकितलागीहैं १०२।

तथा। सांझको समैहै रमनीय रससमैहै तमकह्यो
समैहै सूझि परतनगातहै। घन घहरात तरुपात थह
रात हहरानी कारीवात सुनी परत नबातहै॥ भनतक
विन्द्र लखिबेको लाल अकुलात अतनतरंगी त्यों त्यो
चौगुनो लखातहै। उठि चलु आलीबनमालीके मिल
नहेतु आजकैसी और नहीं मिलबेकी घातहै १०३।

स०। अबलापन योवन वीरबली दोउजंग जुरेमि
लियुद्धको ठानो। शोरपरो सब देशनमें नृपयौवनजो

ध्वजाफहरानो ॥ कौनकि जीतिको हारपरै सोमनो गजभ्भुएडन सिंहसमानो । हाय हजारन घाय कटाक्ष मनोअबलापनहारिपरानो १०४ ॥

तथा । नैननवायेरहौसजनी गृहकाहुकेजाहुनमेरी गोसायनि । मन्दचलौ गतिचाल छपायके शीलसनेह सिखो ठकुरायनि ॥ कीरति सों कहिहौंसुधिकै तोहिंनन्दकुमारहि ब्याहउछायनि । सुनिकै सकुचीतिरछीकरिभौंह ललीदृग खंजनसे सुखदायनि १०५॥

तथा। गौनेकीरातिकी सेजसँवारि सखीन बोलाई लईदुलही । साबिलासकरीनिजुप्रीतमसों सिखदेइचलोरसरीतियही ॥ तब लालन आई लई उरलाइगई अकुलाइ उसास वही । चौंकिपरी परियङ्कते बेग हहा करिसुन्दरिभूमिगही १०६ ॥

तथा । सोवतहैलाडिलीदुलही पतिसङ्गवियाकुलही मुखमोरी । करसे कुचझांपिकै चापिचुरीन बजैपग पायल कंपित गोरी ॥ सेजपरी झझकै उचकै कटि किङ्किनि शोरपरो चहुँओरी । हाहाकरौं उतजागत हैं ननदी बहियां न गहौपियमोरी १०७ ॥

तथा। केलि बिलास अघानेनहीं निशिबासर बाल बोलाइलईजू । आई यसकै अटापरबालसों धामकी देहरी ठाढ़ी भईजू ॥ प्यारे कह्यो ढिगबैठियसुन्दरि बोलतबैनसोंलाजभईजू।जानतहौंशिवनाथअबैआँखियान में कामकी छांहछईजू १०८ ॥

तथा । काहूसखीसिखयो नवलाकहैं मानकी रीति

सयानसों काची। बोली न वाल बोलावत लाल भरी गति मान विलोकत नाची॥ प्रातपयान बन्योपरदेश कोबात बनाइ कह्यो यहजांची। यौंहरुये हँसिबोलि दियो अकुलाइकह्योपिव झूंठ कि सांची १०९॥

तथा। आयेपिया अनतै बसिकै लखिभालमेंबन्दन दाग दगेहैं। बोली रिसाय उठीझहरायसों रावरे कौनके रंगरँगेहैं॥ काहेको सौंह हजारन खात लगे न लगातछपात पगेहैं। भावै जितै तितैही रहिये बरजोर नकाहूके नैनलगेहैं ११०॥

तथा। गोकुलको बसिबो नभलो अनदेखेही लोग कलङ्क लगावत। मैंनसुन्यो हरिकौनस्वरूप कहैं सब तेरे लियेइतआवत॥ जोयहसांचकरी सबहीमिलितौ शिवनाथ सबै बनिआवत। रीवहअम्बुजसे मुखकी मधुरी मुसुकानि सोकाहि न भावत १११॥

तथा। भोरहिकालिका पूजनको घरकी घरहाइनि पेल पठैहौं। तू मतिजैयो सोहागिनसांवरी सांवरे रङ्ग मेंरङ्ग मिलैहौं॥ कानमेंआनितहीं समुझाइबिनोदन छाइहियोहुलसैहौं। फूलिगई मनहींमननागरि नागर नन्दसुहागरिझैहौं ११२॥

क०। आजु दीपमालिका को पूजनगईहैं सबरैनि अँधियारी हौं अकेली कहा कीजिये। प्रेत औ पिशाचनकी नारी डोलैं घर घर धर धर करेजो होत ताते भयभीजिये॥ श्यामहि सुनाइ कै कहतगोपी बारबार दीपहुबुझाये मैन तानेसर छीजिये। जौलौं घरहाई

आवै मन्दिरलौंहाहातौलौं आउरी परोसिन बलायतेरी लीजिये ११३ ॥

स०। चन्द्रसोंआनन खंजनके दृगबैठिबनाइशृंगार करै। आइगये मनमोहन ताछिन देखनको चितचाह भरै॥ आरसी में करिश्यामकीमूरति औ निज मूरति लाइ गरै। शिवनाथ मनो रविजाजल में सुमनो रति-नार बिहार करै ११४॥

क०। नेकचढ़िगईहौं अटालौं सुनमेरीबीर पायँनमें छालनकीकली भलकातहै। चंचरीक लपटि गयेरीसब अंगनमें हांकिहांकि हाथनकीअंगुरीपिरातहै॥ निरखि उरोजन सरोजसकुचान लगे दृगन बिलोकिमृगखंजन लजातहै। औरहौंचकोरनकी कहाकहौंशिवनाथ चन्द्रहू के धोखे धोखे मुखमड़रातहै ११५॥

तथा। नितउठि रूठिबेकी कौनरीति शिवनाथ कौ-नेधौं सिखायो एरी कहांको सयानरी। आये मनभावन मनावन पलटिगये तासों मुखमोरिरही कैसोतेरो ज्ञान री॥ वाहि रटलागीराधेराधेतू निठुरभई कबलौं रहैगो तेरोकठिनगुमानरी। उठिचलुप्यारेनन्दनन्दपैमयङ्क मुखी मानतजि करिअली जोबनकोदानरी ११६॥

स०। उबटैशुचिअङ्गसुमज्जनजावक केशसँवारिसो अंजनदीन्हों। मुखरागतबोलअभूषणभूषिसु आरसीलै अवलोकनकीन्हों॥ बालहँसी चितचातुरीचारु सुगन्ध उरोज लगाइकैलीन्हों। मन्दचलै प्रिय प्रेम कि मूरति बालकटाक्षनघायलकीन्हों ११७॥

क०। गतिमातिनैननकी सैननकीचञ्चलाई कहांलौं गनाऊंगुणहिसिहसिहनकी। शिवनाथ चातुरीचितौनि चारुचित्तचोरि चित्रिनी चपत चुप चौकनि चलनिकी॥ कालिहहीते कामकी कथामेंमनदेनलागी चरचानचालौं दिनचारिकचलनकी॥ ऐसीअलबेलीप्यारीयौबनकीमत वाली कान्हचलिदेखोहाली सुताएकग्वालकी ११८॥

तथा। दूरिहीतेदुरिदुरिदेखतहगनमोरिनेरेनेकचलौ मैंदिखाऊंघनश्यामरी। आंखिन बिलोकेबीरकाह्नकीभ-जतभूख पानीकीकहानी क्योंसिरात प्यासतापरी॥ ब-नबनमालीआलीगोकुलकीगैलनिमें छैलनछबीलोछबि चारीकोरमाकरी। एरीभटूबावरीअयानी तैंनजानी यह छैलैतेरो बीनमेंबजावै नितनामरी ११९॥

स० पीयविदेशको नामनलीजिये कैसेकै यामिनि नींदपरैगी। क्योंतनुप्राणरहैं बिननाथ हियाबिरहानल ज्योतिजरैगी॥ह्वैहैतोसोईजोलिलाटकेअङ्कमें कोटिकरौ नहिं रेखटरैगी। मारिमरोरिवसन्तकी मारुत कोयल कूकनघाहकरैगी १२०॥

तथा। नामधरौ जोचहौसो कहौ कछु सूझोहमैं सुतौ कैचुकीहैं। लखिलाजत मैन जिन्हैं तिनसों बलदेवसने-हहिवैचुकीहैं॥ अबकामनहींसमुझावनको मनभावनको मनदैचुकीहैं। अपनेमग आपचलैंहमतौ निजजीवनको फललैचुकीहैं १२१॥

तथा। आखिरकोअफ़सोसहीहाथरहैगोअबैहठधा-रिरजाकी। क्योंनहिये हँसिलावतहै अरीबीतिहीजाती

घड़ीहैमजाकी॥ नकहींहेरनिमें बलदेव कहाकहिये दृग फेरिसजाकी। प्रेमकोबान लगोनहिये तबलौंकरिलेयहि भांतिकज़ाकी १२२॥

क०। कामवतीनायकानवेली अलबेलीखेली नैहर तेपीतमकेभौनगौन आईरी। रंगमहलभीतर पलंगपर-संगहोत अंगअंगसोंअनंगढंगसरसाईरी॥ लङ्कलच-काइ परयङ्कमचकाइ भरिअङ्कहचकाइ लिपिटाइ छप-टाईरी। पकरिपियाको चाहचौगुनी बढ़ाइबेको रतिमें करति आहि आहि अरे माईरी १२३॥

तथा।बासपियपास जाको अतिहीहुलास ताको भोगनरसालरासरससरसायोहै। चकचौंध देखि देखि चकितचकोरचाहै शशिकेसमानसरशीतलसोहायोहै॥ वहवहतसमीर सिरीदहत हमारोअंग रहतनधीर यों अनंगउमगायोहै। छलसोंधस्योनाम अगहनगहनसम बिरहीगहन प्राणअगहन आयोहै १२४॥

तथा। बेली रसरेली अलबेलीनवलानसंग मुदित मनोजतरु तरुनबिहारेहैं। मंजुमंजुसुमनरसाल मंजरी-ननपै पुंजपुंज गुंजतमलिन्द मतवारेहैं॥ मीनगतिछीन दीनपियबिन अंगअंगअधिकअधीनहीनाबिकलनिहारे हैं। राखतनचेत बिरहीननकोचित्त चैतचैत चन्दचांदनी अचेतकरिडारे हैं १२५॥

तथा। औरनको सुखद भयो हमकोदुखद तूहै अदभु-तगति तेरी कही नपरातिहै। औरनको पोषै तोषै बास मकरन्दनसों रोषैहमहींको अरेमोहींसोअरातिहै॥ अफु-

लित रसाल तापैंहोतजातकासोंकहों कांपै अंगअंगमेरे
चिक्कलकरतिहै ।मानतनसाखियाते भयो बैसाख सब
कोऊ नामतेरो वेसाखही धरतिहै १२६ ॥

तथा।विकल सकल जलथलनके जीवहोत जेठकी
जलाकनमें पुहुमीतपतिहै ।सरितासरोवररसाल जल
विन हीन सूखतरुपशुहू पखेरुन बिपतिहै॥ ग्रीषम तप-
निदूजे विरहतपनिबाढ़ी तापै यह लपटि झपटिलपटति
है।सीरेउपचारनते जारत अनंग अंग पियबिन मान
याको कैसेकैरहतिहै १२७॥

स०।चूनरीचारुचुईसीपरै चटकीली हरी अँगिया
ललचावै।जोबनभार नईसीपरै वनईखिरकीमों नईछ
विछावै॥ ऊंचे अटापर चन्द्रमुखी काबिशम्भुकहैं झुकि
पीकचलावै।दैविधुवीच मनोबिधिसों विधना रँगरेज
कुसुम्भ चुआवै १२८॥

क०।लरकीलरकपरभौंहकी फरकपर नैनकी ढरक
पर भरिभरिढारिये।हरिकेश अमलकपोल बिहँसनि
पर छातीउकसनिपर बेशकनिहारिये॥ गहिरीही गति
पर गहिरीही नाभिपर हौंनवरजतप्यारे नेक निरवारि-
ये।एकप्राणप्यारीजूकी कटिलचकीलीपर ढीलीढीली
नजरि सँभारेलालडारिये १२९॥

तथा।आजमणिमन्दिरमनोज मदचाखेदोऊ लग-
निलगालगीके मगनमजेजपर।द्विजदेव ताहूपै दुहूंके
अतिआननकी दूती दूतिदै रहीतमीपतिके तेजपर।
नेसुकसँभारि छलबलनछराकोबन्द पौढ़िरहे पाणिधरि

कमलमलेजपर। छूटेरति समर छपाको सुखलूटिदोऊ नींदेरतिमदन उनींदेपरेसेजपर १३०॥

क०। आयोएकप्रथमहिंपरभृतभावकरि ताकोगुण तोहिं यशुदाहूसोंसुनाइहौं। दूजे चढ़िधायोक्रूरकुटिल अक्रूरबनि ताकोयशयुगहूनगावतसिराइहौं॥ अबयह आयो ऊधो सूधोसो दिखाति आलि कालिहींतोयाहू कोकुसंगफलपाइहौं।होयजोसोहोयकोटिसमुझावैकोय माथुरानआलीअबकाहू न पत्याइहौं १३१॥

तथा। लागिगयेनैनचैन आवतनरैनादिन मेरीजान ऐन मैन मैनकी छुरीहती। कहैंनन्दराम जोम जोबन जलूसभरे जेवरजड़ाऊनखशिखलौं जड़ीहती॥ फूलन के हारतामें हारहरेहीरनके ताहूमें बहारदारचौलड़ी पड़ीहती। शिरकीसुरंगसारी छिरकीसुगन्धसों खिरकी के बीचबाल हिरकीखड़ीहती १३२॥

तथा। पैन्हे पीतसारी दरदामन कनारी लगी मोतियों सँवारी मांग खड़ी बड़ेबारकी। कंचुकी कसत शोभा चौगुनीलसततन जोबन के बीच माल हीरनकेहारकी॥ भृकुटीमरोरैकछुनासिका सिकोरैमन्द मन्द मुसुक्यायकै मरोरकरै मारकी। एहो प्राणप्यारी क्यहिकारण तू ठाढ़ी बाजूबन्दबांधेबाजू बाजू पकरे किवांरकी १३३॥

स०। उठिप्रातहि धेनुलैनन्दलला नितमेरी गली-नमें आइयोना। आइयोतो कढ़िजाइयोवैसहि बांसुरी नेक बजाइयोना॥ बजाइयोतौनजगाइयो मैनहिनैनन

सैन चलाइयोना । मुखलाय सुधारस प्याइ हिये मैं
लगाइ हमैं बिलगाइयोना १३४॥
तथा। कुचमूलमें तूलकी लाय किनारी हमैं नित
प्यारीदिखाइयोना। दिखाइयोतौन छिपाइयोफेरिलटै
मुखपैलटकाइयोना॥ लटकाइयो तौ मटकायके भौंह
कटाक्ष कै नैनचलाइयोना ।मुसक्याय मया सरसाय
दया दरशायहमैं तरसाइयोना १३५॥
तथा। फलअमृतसे उपजे उरमें बरदान भये सम
ईशनके ।मुखजोरबढ़ेहैं कठोरमहा जितबैइस सिद्धि
दिगीशनके॥ सदा कंचुकी बीचकसेईरहैं खुलेखूनकौं
दशबीशनके। लखिऊंचेउरोजनपैअँचला मचलामन
होतमुनीशनके १३६॥
तथा। कन्दुकसेकरिकुम्भसेकुम्भसे कुन्दकलीसम
टीकटियेहैं । श्रीफलदाड़िमसेदरसे परसेसेनिहालनि
हालभयेहैं ॥ ऊंचेउजागरनागरिके कुचप्यारीपियाके
समीप ठयेहैं। हैंतोनये सुनुये सजनी परजौलौंनयेनहि
तौलौंनयेहैं १३७॥
तथा। तुवखंजननैन चकोर बने तियनाहकअंजन
देमरिहैं। जकरेगजमस्त जँजीरनते तिनकोमदप्याय
कहाकरिहैं ॥ मतवारेनको कोऊ देतकमानलगायके
तीरहिये मरिहैं। यहआसोंतो ऐसेकटाक्षकरैं परुलौंत
सखीपरलैकरिहैं १३८॥
तथा । वारीसीबैसफिरैसबही दिनघेरुकरैं बिरह
घरिहैं। शशिमंडलदेखिससैससके तवअम्बुजकीछवि

ताहरिहैं॥ जबयोबनरूपप्रकाशभयो तबसाधनकीमन-
साटरि हैं। यह आसौं तो ऐसी कटाक्षकरैं परुलौं तो
सखी परलै करि हैं१३६॥

क०। आतुरनहूजे नेकचातुर चपलललालजघनवि-
शालपरजंघन जरेरहो। नूपुर मैं जेहरीमें नेकहू नलागे
पांव मूरे जोकपोलपै कपोलको करेरहो॥ कंचुकीनछो-
रो अंग नेकहू नमोरोकहैनन्दराम करको उरोजपै करे
रहो। जौलौं घरजागतीहै ननदजेठानीमेरीतौलौंकही
मानो चुप्पचापही परेरहो १४०॥

स०। घूंघुट ओट कहाकरुसुन्दरि घूंघुटसे कछु तो-
रिनलैहैं। जोतोहिरूप दियोकरतारन दूरिखरी हम
दूरिचितैहैं॥ जानिकै गर्ब्ब कहाकरसुन्दरि कालिहपरों
दिन येऊनरै हैं। याजिय जानिभजोभगवान कितोरे
छुये बैकुण्ठ न जैहैं १४१॥

क०। लटपटी पागशिरसाजत उनींदअंग द्विजदेव
ज्यों त्यों कै सँभारत सबै बदन। खुलिखुलिजातपट
बायुकेभकोर भुजा डुलिहलिजाती अतिआतुरी सो
छिनछिन॥ ह्वैकैअसवार मनोरथहीकेरथपर द्विजदेव
होत अति आनँद मगनमन। सूनेभये तनकछु सुनेईं
सुमनलखिसूनीसीदिशानलख्योसूनेईटगनवन १४२॥

तथा। पूरअंशुयानको रह्यो जो पूरिआखिन में
चाहत बह्योपैबढ़ि बाहिरो बहै नहीं। कहै पदमाकरसु
धोखेहूं तमालतरु चाहतगह्योपै गहवरह्वै गहैनहीं॥
कांपि कदलीलौंया अलीकोअवलम्बकहूं चाहतलह्यो

पै लोकलाजनि लहै नहीं। कन्तन मिलेको दुखदारुण अनन्तपै चाहत कह्योपै कछूकाहूसोंकहैनहीं १४३॥

स०। झांकतहै का झरोखालगीलग लागिबे को यहांझेलनहीं फिर। त्यों पदमाकर तीखे कटाक्षन की सरको सरसेल नहींफिर॥ नैनंनहींकीघलाघलकै घन घावनकोकछूतेलनहींफिर। प्रीतिपयोनिधिमें धुसिकै हँसिकैकढ़िबो हँसी खेलनहीं फिर १४४॥

क०। सोने कीसी वेली अति सुन्दर नवेली बाल ठाढ़ीही अकेली अलबेली द्वार महियां। मतिराम आंखिनसुधाकीवरषासीभई गईतबदीठवाकेमुखचन्द पहियां॥ नेकनेरेजायकरिबातनलगायकरि कछूमनपाय करिआइगहीवहियां। सैननिमेंचरचिलईगातनथकित भई नैननमें चाहकरै वैनन में नहियां १४५॥

तथा। जाने भेद कविताहि गौरव गहेरहत परम प्रसन्नमुखहास छवि छ्वै रह्यो। द्विजबलदेवकहैंकंचन लतासी चारुचन्दज्यों उदित भरिरूप रस च्वै रह्यो॥ आलस कछुक अँगियार झोलिसीकरत वलितवसीरन वीजवर ज्वैरह्यो। आईहै तरुणताईयाहिते उँचोहैं कुच सुबुधिसुगन्धकोप्रकाश अङ्ककैरह्यो १४६॥

तथा। मृदुमखतूल तूल कमलगुलाबफूल मखमल सेजपै सँभारेपायँ धरती। कचकुचभारनसों दरचल हारोवेग धारतमें कज्जल महावरको डरती॥ भनैरघुनाथहे स्वरूपसुखशोभाधाम निजमृदुतासोंरतिरम्भा कोनिदरती। अति सुकुमारी प्राण प्यारी रति रंग

समय कैसे प्राणप्यारे को निशंकअंकभरती १४७ ॥

तथा । सोरह कलाको चन्द पूरण मुखारबिन्द सोरह शृँगार किये सोरहबरस की । आभरन बारह कनकबानी बारह की बारहो चरणचूमे चोप कंजरस की ॥ आठोदन्त चौकनसों आठो अङ्ग हीराहार आठहूबरङ्गना सो बिधिनासरसकी । चार खग चार मृग चार फल कीसी छबि चारभुज आरत निकाई है दरसकी १४८ ॥

तथा । लहलही लहरैं लुनाईकीउदित अङ्ग उचके कुचन कैसीकंचुकीहै गचकी । मन्द पग धरति मरूकरि गयंद गति चन्द्रमुखी चांदनी चकित चाह सचकी ॥ कैसे घनश्यामवहबाम बनधामआवै घामकेलगेतेकाम लताजाति पचकी। अतिसुकुमार सिसकत भारहारन के बारनके भार कईबारलंक लचकी १४९ ॥

तथा । चरणधरै न भूमि बिहरै जहांहीं तहां फूले फूल फूलन बिछाई परयङ्कहै । भारकेडरन सुकुमार चारुअङ्गनमें अङ्ग ना लगावै राज केसरको पङ्क है ॥ कवि मतिराम लखि बालापनबीच मुख आतप मलीन होत बदन मयङ्कहै । कैसे सुकुमारि वह बाहिर बिजन आवै बिजन बयारिलागे लचकत लङ्कहै १५० ॥

तथा । छूटतलपट लपटत फिरि छूटिछूटि थकत न दोऊ बिहरत बड़ीबेरके । लंकलचकत अंकभरत निशंक परयंकपर राखे मुकतानकर ढेरके ॥ तासमै कहत शम्भु गोरीकेगरेतेटूट छूट चलो सुरत करत फेरफेरके । कुच

बीच अटको बिराजतहै हार मानो धसी गंगधार फेर शिखर सुमेरके १५१ ॥

तथा। बाम अलबेली श्यामसंग केलिमन्दिर में ठानी बिपरीत रीत सुखद इकन्त पाय। छूटे बार टूटे हार बिलुलित भो शृँगारतनकीनहै सँभार छाकीरति रंग छाय ॥ रसिक बिहारी प्राणप्यारीछबि प्यारी लगै चन्दनकी बेंदी मिली गोरे मुखना लखाय। मैन मद मत्तभुजभरतअनंगजंग ज्योंज्योंमद लालीचढ़ै त्योंत्यों उघरतजाय १५२॥

तथा। आयो परदेशते पियारो पढ़िकाममन्त्र कैधौं यन्त्रतन्त्रनिको पैन्हिआयो छल्लाहै। कैधौं काहू देवता दियोहै वरदान कैधौं खाई अकसीर कैधौं पारदइकल्ला है॥ ग्वाल कवि करै कूदि कूदि केलिकौतूहल हल हल हूलै पलपलमें उछल्लाहै। द्वैद्वैघड़ीदोय बेर चौचौघड़ी चारबेर फेरकियो नौघड़ीको जरनैलीहल्लाहै १५३ ॥

तथा।साजितपलंगपैउसंगभरीअंगअंग रंगरंसबसन सँवार पैन्हे सुचपै। मोतिनके छेडेपड़ेकाननमें सानदार हीरनकेहार बनाबन्दनी सरुचपै॥ ग्वालकबिकहै तहां राजत रसिकलाल ख्याल में बिशालमन आयो अति उचपै। नैन लगे प्यारी ओर ओठलगे प्यालेकोर जीय लग्यो रतिजोर हाथलग्यो कुचपै १५४॥

तथा। आये प्राणप्यारे पाये रहसि रसीली बाम दौरिसाहिकीनी जाम जंगकी झपटसी। रसिक बिहारी मुखचूमि गलबांहडारी पिय हिय लागीलोह चुम्बक

चपटसी॥ परसि कपोलप्यारी करिकरि प्यारहेरै कसि भुजभरै सहिमैनके दपटसी। ज्योंज्यों सियराति गुला-बनकी छुहीसीछाती त्यों त्यों लपटाति तिय पावक लपटसी १५५॥

तथा। कुन्दनकीछरी आवनूसकी छरीसीलगी सोन-जुहीमिली कैधौं कुबलय हारसों। कैधौं बन्धु कलिका कलंकसों कलितभई कैधौं रति ललित बलित भईमार सों॥ कालीदासकादम्बिनी दामिनीमिलीहै कैधौं अनल की ज्वाल मिलिगई धूमधारसों। केलिसमय कामिनी कन्हैया सों लपटि गई कैधौं लपटानीहै जुन्हैया अंध-कारसों १५६॥

तथा। आलीकेलिमन्दिरमें ल्याईछलबलकरि प्यारे पेखिपकरी उछरि परयंकते। भनतकबिन्द्र कैसे थीर रहै थोरी बैस पारदकी रदकै चपलताई शंकते॥ नीवी करधारिरही झनक बगारिरही झनक पसारिरही बदन मयंकते। लाल भुजभरी बाल ऐसी तरफरी हाल जाल कीसी सफरी उछरिपरी अंकते १५७॥

तथा। ल्याई केलिभवन भोराइ भोरी भामिनी को फूलगन्धकै परसकीनी पौनरुखते। कलितबसन्न कृश-तन कुचकमनीय लीनी गहि पीतम प्रसून सेजमुखते॥ कबिपजनेश भुज भरत हहाके हिय सीहकै समेट सांस नीवीदाबि दुखते। आहकरि उछरी सचोट पन्नगीसी ऐंठ उमठअरीरी मैंनरीरीकढ़ीमुखते १५८॥

तथा। ल्याईकेलिमन्दिरतमाशाकोबतायछलबाला-

शशिसूरके कलापै कियेदावासी। धाइताहि गहनचहत हरिचन्दजूके घूमि रही घरमें चहूंघा करि कावासी॥ धोखादैकै अंकमेंभरत अकुलानीअति चंचलचपलसी लखानी मृगछावासी। आहिकरि सिसकि सकोरि तन मोरि पिय करतें भटकिछूटी छलकिछलावासी १५९॥

तथा। साटनके सुरुखबिछौना बिछेसेजपर रंगमेज मेज मनमौजकी निसाकरैं। अतरबिनाहीं तिय तन में अतरभासे सतरउरोजनपै गोठनकी सांकरैं॥ ग्वाल कविप्यारेलाल नीबीको बढ़ायो कर सरकि चलीसी आगे आवनचहाकरैं। आंगुरीतेनाकरैं जुभौंहतेमना करैं सुनैननमें हां करैं पै मुखतें न हां करैं १६०॥

तथा। अंचलके ऐंचचलकरति दृगंचलकोचंचलाते चंचलचलैन भजिद्वारेको। कहै पद्माकरपरैसी चौंक चुम्बनमें छलन छपामें कुचकुंभनाकिनारेको॥ छातीके छुयेपैपरै रातीसी रिसाय गलबाहींकिकियेपै करैनाहियें उचारेको। हीकरति शीतलतमाशे तुङ्तीकरति सीक- रतिरतिमें वशीकरति प्यारेको १६१॥

तथा। अधखुलीकंचुकीउरोज अध आधेखुले अधखु- लेवेषनखेरखनकेछलकें। कहैपद्माकरनवीन अधनीबी खुली अधखुले छहरिछराके छोर छलकें॥ भोर जगी प्यारीअधऊरधइतैकी ओर भाषीखीभीभिरिफिउचा- रिअधपलकें। आंखेंअधखुली खुलीखिरकीहूहैखुली अधखुले आननपै अधखुलीअलकें १६२॥

तथा। विकसत जातजाको वारिजवदनवैसाविविध

बिनोदवारे भावनिभरातिहैं। निरखिनखक्षतउरोजनपै लागेपरिहासकेसकोचनिचलतिपछरातिहैं॥ कहैहनुमाननमनभावनिसुलोचनीकेजागेकीखुमारीअँखियानबिहरतिहैं। प्यारीकीउनींदी वाअटारीउतरानिआज चढ़िरहीचितनाउतारीउतरातिहैं १६३॥

तथा। करिरति रंग पति संगते अलोनीप्रात उठिअँगरातओपैउलहीअपारहैं। भनतकबिन्द्रछूटेसकलशृँगारहैन सौतमुखतारहै निहारटूटेहारहैं॥ फलरहीकलित कपोलनपै पीकलीकें बलित नखक्षत उरोजनअगारहैं। मुररहीबेसर सिकुर रही सारीअङ्ग फुररहीआलस बिथुरि रहे बारहैं १६४॥

तथा। अन्धकारधूमधारसमरसछूटेबार बिथुरेबिथुरि रतिअन्त सेजपरमें। कालीदासश्यामसंगसोईरसबशबामकामकीसनीनीकीबाम कामकेलिघरमें॥ नवलकी नाभीकेहुनींदैकान्हकुचगहि सोयजोयेरतनअँगूठीसोहैकरमें। मेरेजान कारोनाग बामीते निकारिफनराख्योमणिमण्डित सुमेरुके शिखरमें १६५॥

तथा। चहचहीचुभके चुभीहैं चौकचुम्बनकी लहलहीलांबीलटें लपटीसुलंकपर। कहैपदमाकरमज़ानिमरगजीमंजुमसकीसुआंगीहैउरोजनकेअंगपर॥ सोहैंसरसारयों सुगन्धनसमोइसेज शीतलसुलोनेकोनेबदनमयंकपर। किन्नरी नरीहै कैपरीहैछबिदारपरी टूटिसीपरीहै कैपरीहै परयंकपर १६६॥

तथा। गोकुलमेंगोपिनगोबिन्द संगखेली फागरात

भर प्रातसमयऐसीछबिछलकैं। देहैंभरीआलसकपोल रसरोरी भरे नींदभरे नैनन कछूकछूपै छलकैं॥ लाली भरे अधर बहालीभरे मुखवर कविपदमाकर विलोके कौनललकैं। भागभरेलाल औ सोहागभरे सबअङ्ग पीकभरी पलकैं अबीरभरी अलकैं १६७॥

तथा। छुवननदेतिछातीछबिसोंछबीलीनारि कौतक अनेककरै नींदमें ससोईहै। कहैकवि दूलहत्यों परसैन पावेपीयकुकि छहराय पटतानिदेहगोईहै॥ बैकीकलेश सहैपैना रतिरंगचहै तियके चरित्र मित्रजानत न कोई है। पहिलेअनूढ़ाभई ब्याहेपरऊढ़ाभई गौने नवोढ़ाह्वै के पीकेसाथसोई है १६८॥

तथा। आरससोंआरत सँभारतन शीशपट गजब गुजाराति गरीबनके धारपर। कहै पदमाकर सुगन्धसरसावैशुचि बिथुरि बिराजैंबार हीरनके हारपर॥ छाजत छबीले क्षिति छहरिछराकी छोर भोर उठि आई केलिमन्दिरके द्वारपर। एकपगभीतर सुएकदेहरीपै धरे एककरकंजएककरहै किंवारपर १६९॥

स०। आली कहायहव्याधिभई छतियांउमँगीमनौं भ्रावतहैं। निशिबासर नेकसोहातकछू नहिंनैननिलख बढ़ावतहैं॥ कौन इलाजकरों सजनी ताहिं पूंछतलाज लजावतहैं। जियशंकबढ़ीकटिखीनहिदेखि सखीतोहिं औषधआवतहैं १७०॥

तथा। देखेबिना वृषभानु दुलारी के भावैहरी को घरीकीघरौंना। कामचढ़े कविराजकछू ब्रजराजसमाज

में आयइरौना॥ राधे बिलोकि सखीन मों श्यामस
भौंहनमेंकही ऐसीकरौना। प्यारे गह्यो बनमालगरे त
प्यारीगह्यो करकानतरौना १७१॥

तथा। अबका समुझावतको समुझे बदनामीके
बीजतो बोचुकीरी। तबतो इतनो न बिचारकियो यहि
जालपरे कहो कैचुकीरी॥ कबिठाकुरयों रसरीतिरँगी
सबभांतिपातिब्रतखोचुकीरी। अरी नेकी बदी जो बदी
हुतीभालमें होनीहुती सोतो ह्वैचुकीरी १७२॥

तथा। रूप अनूप दई दियो तोहिं तुमान किये न
सयानकहावै। और सुनोयह रूपजवाहिर भाग्यबड़े
बिरले कोउपावै॥ होत न सूमकेजात कोऊ जो उदार
सुनै सबहीउठिधावै। दीजिये ताहि देखाय कृपाकरि
जो चलिदूरते देखनआवै १७३॥

क०। छातीलागी उचन सकोचनि सकानलागी
खानलागी पानकी उनान रसबतियां। कटि लागी
घटनि गटनि चढ़िजानलागी बैन लागी रटनि जगन
लागी रतियां॥ चारुलागी चलन सुधारनअलकला-
गी जेवलागी जगन पगनलागीगतियां। नैनलागी
फेरनि निहोरनि सखिनलागी मनलागीचोरनि पढ़न
लागी पतियां १७४॥

तथा। आजआली माथेते सुबेंदी गिरै बार बार
मुखपर मोतिनकी लरी लरकतिहै। धरतहीं पगकील
चूरकी निकरिजाति जबतबगांठिजुरेहूकी भरकति है॥
जानिनपरत प्रहलाद परदेशपिउ शशिउ उरोजनसों

आंगीदरकतिहै। तनी तरकति करचूरीचरकति अंग
सारीसरकति आंखिबाईं फरकतिहै १७५ ॥

स०। जाकेलगेसोइजानैव्यथा परपीरमेंकोउउपहा
सकैना। सागर जो घुभिजातहै चित्ततो कोटिउपाय
करैपैटरैना॥ नेकसीकंकरी जाकेपरै सोइपीरकेमारे पै
धीरधरैना। कैसेपरै कलएरीभटू जब आंखिमें आंखिपरै
निकरैना १७६ ॥

तथा। जाकेलिये कुलकानतजी नसिखी सखियान
में सीखकीबाता। लोगचवाइनैलाजगमाय रहीयक
सांवरेके रँगराता॥ सोसबनेकमें नोखेबिसार प्रताप
चले तजिनेहकोनाता। मेरेतोचित्तकी चित्तहीजाने पर
मित्रकेचित्तकी जानैबिधाता १७७॥

तथा। काहेलिखीपतियांबहुभांतिन नेहकीरीतिहमैं
दरशाई। काहकहीतुमलीजोनिबाहजुप्रीतिकरीहमढोल
बजाई॥ काहकही हमछोड़िहैंनाहिं तुम्हैं जबलौं तनु
प्राणसमाई। काहभई वहबातअरी जगमोहन काहे
दयोबिसराई १७८॥

तथा। धरियेकिमिधीरकरैंसुधिवादिन जादिनसंग
मसारकरै। मिलिबैठेयकन्तलियोमुखचूमिगरेलपिटा
यकेशोकहरै॥ जगमोहनपीयसुधारसको भुजमेंभुजको
उरभायपरै। जिनबीचन हारपरेनहते तिनबीचनमें
जपहारपरै १७९॥

तथा। गुणगाहकसोंबिनतीइतनी हकनाहकनाहि
ठगावनोहै। यहप्रेमबज़ारकीचांदनीचौकमें नैनदलाल

अकावनोहै॥ गुणठाकुररूप येजौहरहै परबीननकोपर-
खावनो है। अबदेखु बिचारि सँभारिकेमाल जमापर
दामलगावनोहै १८०॥

क०। त्योंत्योंके पियारीको पियाकेपरयङ्कपर स्वाइ
गईसखियांसोकेलिकेमहरमें। आइकैनिहारीपिय चांद-
नीसीसेजपर सोवत मरालबाल मानौमानसरमें॥ कहैं
नंदराम नेकअङ्कमेंलगावतहीं चौंकिपरीसावकी कुरङ्ग
कैसीथरमें। सूतसीसुरतमें छुरतचपलासीबाम कंजकै-
सोपानी रानीआवतनकरमें १८१॥

तथा। धारैलागीअंबर सुधारैलागी आभरण भारै
लागीकुंतल निहारैलागीचालको। मोरैलागीअंगनम-
रोरैलागीभौंहनको तोरैलागीतिनुकाबिलोकिभलेभाल
को॥कहैंनंदरामकलकंचुकीशिंगारैलागीटारैलागीघूंघ-
टनिहारैलागीसालको। मंदमुसुकानलागी चांदनीसो-
हानलागी हेरिहरषानलागीआननगोपालको १८२॥

तथा।काहेमेरेओंठआपआपहीमिठानलागे काहेते
समीरलागे रोमहरषातहै। काहेअंगअंगिरात आँगियां
समातनाहीं क्षणक्षणकाहेकटिछीनपरीजातहै॥ नंदराम
काहेते नितंबनमेंभारभयो काहेगति पांयनकी मन्दसी
लखातिहै। कहाकरौंमाई निशिनींद नेकनाई यह देखि
कै भोड़ाई मेरो जियरा डेरातहै १८३॥

तथा। पौढ़ै लगी सखियन संग रंग भौन जाइ
अंगनाअङ्कैसी सोवतजगाऊसी। कहैंनंदरामकाम
कथा वारैलागी कान बातैंकरैलागी प्रियप्रेममें पगाऊ

सी ॥ जब तब ठाढ़ी होनलागी पानदान लैकै पीतम
पास कछू दूरिसे भगाऊसी। सोहैंकरै लागी अलसौं
करै लागी भाल भौंहैं करै लागी नन्दलाल सों लग
ऊसी १८४ ॥

तथा। दुतिया के चन्द्र को बिलोकनको चन्दमुख
आपुही अकेली गई कोठेपर मोद छाई। कहैंनन्दरा
घनश्याम चित्त चोपिचले जीवनकी मूरि आजुगोशे
पकरिपाई ॥ बाल बिललानी दूजे मारगही जानी हि
हिय हरषानी हँसि हालकरी चातुराई। सीढ़ी के डग
जौलौं लालगये ऊंचेपर जीनाके डगर तौलौं नीचेव
उतरि आई १८५ ॥

स०। आनँदसों मनमोहन मोहनी केलिकरैं रतिव
रतिवारौ। प्यारी न खोलत नयनतऊ नँदरामकहौ अ
चरा उलटारौ ॥ बोलिसकोचसोंओटकियो मुखनेक ल
लाज लला उरधारौ। राखेरहौ कर कंचुकीपै पियपाँ
परों आँगिया न उघारौ १८६ ॥

क०। गाढ़े अंक अंक में भरत परयंक पर दम्पति
निशंक शंक नेकना धरतहैं। फारिडारैं कंचुकी उता
डारैं अम्बरको नन्दराम रतिरातिमारानिदरातिहैं ॥ चूम
त अधर अधरात पछरात जात जात ना पियास पि
घातन करातिहैं। टूटि टूटि हारनते छूटि छूटि बारन
फूटि फूटि मुकुता हज़ारन परातिहैं १८७ ॥

तथा। काहूसोंकहैआली अन्तरकीबातहमदुखभ
ग्रोस कौलौं सासुरे गुजाराकरैं। सासु दृग फेरेहैं नँन

नरेरेरहैं टेरेरहैं तापर परोसिन पँवारा करैं॥ नन्दराम नीकेहू निहारे ते कलंक लगै देवर जिठानी नित ईजति उतारा करैं। पावस व्यतीतभये नैहरको जातिरहै बीस-बिस्वेमैयासबै शीश दैदैमारा करैं १८८॥

तथा। मोहींको पठौती नित सुरभी दुहावनको कोई मानो राज काज इनहीं को दैगयो। नन्दजी को बछा मोहिंमारिबेको दौरो देखि भागी मैं कटीले बन जान्यो प्राणलैगयो॥ फाटिगयो अंग अंग भंग अँगियाहू भई टूटिगयो हार बार छूटिक्षीर नैगयो। आजु ते न जैहौं कोई केतो कहै नन्दराम देखु मेरेतनुको हवाल कौन ह्वैगयो १८९॥

स०। जैसीकही हँसिमोसोंभटूतुमतैसी कहीवे तुम्हैं नचहाहै। आईहुती यमुनाजलकोलगो कंटकपांयनहा-शैरहाहै॥ आइगयो दुखिया नँदराम बिलोकत हाल हमार लहाहै। बैठिकै कांट निकारैलगो सखियामें कहौ कि कलंक कहाहै १९०॥

क०। आलीएकस्वपनो बिलोकती हौं रोज़रोज़ तोहूंसोकहत मेराजीवसकुचतहै। गाउँ के चवाइनकी मण्डलीसें धामधाम रोरी कलंकभरी चौचँद मचतहै॥ कहैं नन्दराम याकोबेगिही उपायकरो नाहीं तो हमारो ब्रज छूटिबो रचतहै। वोधामेरो स्वपनो नझूठहोतमाई हाय ताते मोहिं खान पानकछूना पचत है १९१॥

तथा। कौने या कपोलनमें पीकपंक पारिदई टारि दई कौने यहबेंदी भलेभालकी। फारिदई सुन्दर दुकूल

कौने फूलनमें झारिदियेफूलकौनेबनी झोलझालकी
कहैंनन्दरामकौने मोतीमाल तोरिदई बोरिदईचूनरत्यो
घांघरीविहालकी। गातगातकौनेनखघातदै आलीसन
आलीवतलातयह रचनागोपालकी १६२॥

तथा। येहो बटूबाटके चलैयानेक ठाढ़े होउ हमे
गारज़की अरज़ श्रौणधारोजू। बैद्यकपढ़ेहौकीनजूमकै
निसारतहौ कविताकरत कि समुद्रिक सचारौजू॥ औ
पथ बतैये सासुनयनकानते विहीन पियपरदेशताकै
आगम विचारौजू। नींदना परत निशिअंगऔगिरात
अतिनन्दरामभेरीनेक रेखातौनिहारौजू १६३॥

स०। बैठीहती गुरुमंडलीमें मनते मनमोहनको
विसारत। त्योंनँदरामजु आइगये वनते तहँ मोरपख
शिरधारत॥ लाजतेपीठिदैबैठीबहू पतिमातुकिआंखि
ते आंखिनटारत। सासुकी नयनकी पूतरीमें निज पी
तमको प्रतिबिम्बनिहारत १६४॥

क०। आपुहीसुनार घरजाइके जराऊदार जेव
ज़लूसके बनावने बतावती। भीतरबुलायदरजीकोमर
जीकोबास वेशाकलकंचुकीकेतंगनतनावती॥ कहैंनन्द
रामत्यों अगार छोड़िकैशिंगार छावतीबहारहारहा
हेरिआवती। यारइहजारके दुलारेते नबोधकरैकुलके
अटन तातेकुलटाकहावती १६५॥

स०। आंजेरहैंदृगअंजनसों तनुमांजेरहैं घिसिधूरि
कपूरकै। त्योंनँदरामजू वेंदीतरे करि कारी लकीर
ऊंचे सिंदुरकै॥ छोड़िदई कुलकानि भटू निशिचा

उतानकरैजागिदूरकै। श्वानहुजोखटकावैकहू तियआवै केवांरकेतीरज़रूरकै १६६॥

क०। फाटिगयो हियरा हमारोऐसे बैनसुनि जाइ हैं बिदेश ताहि लाखल्लाइलाखजाउ। पौढ़ि परयङ्कपै उठाइमोहिंपीतपट मेरे अधरानको पियूष नेक चाखे जाउ॥ नन्दराम जातहौ बसन्तकन्त आवतहै मानिहौं न अवधिकोअधारधाम भाषेजाउ। रावरे बियोगमें बिहालह्वैहौंनन्दलाल प्राणराखिबेकोमणिमाल लाल राखेजाउ १९७॥

तथा। आयेहैंबिदेशतेबिहारीबने बानिकसे बैठिगये अंगनअनंग छबिभलकी। दौरिआई देखनकोकुटुम्बवारिनारिसब भांकिभांकि हेरतहठीलो त्योंमहलकी॥ कहै नन्दरामकुचकंचुकीकेरेरपरे नैननचटापटी निहारिबे बिकलकी। ओढ़नीगिरन्तबारिभीतरउतारिधरी ओढ़िकै निकसिआई सारीमखमलकी १६८॥

तथा। लायहौंमनाइ मैंज़रूरनँदनन्दनको आपने सुचित्त परयङ्कपै परीरहौ। एकद्वैघरीमेंहदचारिछैघरी के बीच आवैनाप्रतीताहिये ताकतघरीरहौ॥ कहैंनन्दरामप्यारीतेरे मुखचन्द्रपररीभैवनवारी दोनों एकहिशरीरहौ। पांयलागतीहौ ताते देतिसैं अशीशतुम्हैं भाग औसोहाग अनुरागसों भरीरहौ १६६॥

तथा। घरघर घूमिघूमि हमकोलजावतहौ आवत बतावत नजानौंकछुजानहीं। लोककीनलाजनाअकाज परलोकहुकोमानत कुचालिआली कहांलौबखानहीं॥

एककीहज़ार कहिथाकी नन्दरामकहा कहैमेरीकहीनेक
उरमेंनआनहीं । वन्दकरूंकोठरीमें लङ्गरलवारको त
लातनको देवनहीं बातनसो मानहीं २०० ॥

तथा । लागिगईनैनचैन आवतनरैनादिन मेरी
जानऐनमैनमैनकी छड़ीहती । कहैंनन्दरामजोमजोबन
जलूसभरी जेवरजड़ाऊनखशिखलौंजड़ीहती ॥ फूलन
केहारनमें हारहरे हीरनके ताहूमेंबहारदारचौलरीपरी
हती । शिरकीसुरंगसारी छिरकीसुगन्धनसों खिरकी
केबीच बालहिरकीखड़ीहती २०१ ॥

तथा। मन्दमन्दएरीतू गयन्दनकी अन्दनसों नन्द
रामधामधाम भूमतिफिरतिहै । बोलिबोलि आलिनके
संगमगडोलिडोलि खोलिखोलिअंग मुखचूमत फिर
तिहै ॥ मानिहैंनमेरीकही जानीमैंतिहारीबात मेरेकहे
तेरीकछुमतिना फिरतिहै। परिजैहौजारकेरेजारमेंबजा
कहूं वाटपरीबाटबाटघूमति फिरतिहै २०२ ॥

तथा । काहूकह्यो आयेघनश्यामघर घायलसी दौ
रिगईमुदित अटारीकेअटानपै । झांकिकेझरोखेतें
चन्दद्युतिवारिवाम देखीभीरगोपनकीनन्दकेमकानपै ।
नन्दराम पलटी उताहिल अनोखीनारि खिरकीसमी
गई मिलिवेकसानपै । तालाबिनबालाकरि आलाखि
रकीकेपट पीछेकोविलोकैगई प्रानकेप्रानपै २०३ ।

स० । वोऊभलेतुमकोतुमहूं उनको बहुभांतिनसों
सुखदैबो । त्योंनँदरामजूबेरकुवेरभलोनभटूपरभौनको
जैबो ॥ लाईजोआजुमनाइतौं लाजतैवांहगहे फिरको

पछितैबो। मोहिंगवारनकैसबहीं नित ऐसेगवारनको समुझैबो २०४॥

क०। एकसैतमाशादेखिआईआजुकुंजनमैंललजैना सहेलीसंगएरीचन्द्रआगासी। नागरिनबलीअलबेली वृषभानुजूकीचलियेअकेलीबनबेलीमैंनबागासी॥ कहैंनन्ददासयोहीं सोहनैंमिलाइजाइ दम्पतिविहंगपारिबेकोलसलागासी। राधिकाकन्हाई दोऊकंजनके टूक जैसे ताघरीमैंतामैं तहांकैगईसोहागासी २०५॥

तथा। टूटी गुंजमाल अलकूटीपागपेचनसों अधर दलीतौ आजुदन्तनदलीगई। छातीमेंछबीलेकीहमारे कुचकुम्भनकीकोरनसोंपङ्कपरिमलकीमलीगई॥ वैतो अतुराने अलसानेअगसानेआति नन्ददास देखोमति मेरीहूछलीगई। पूछिहैं पियारी कावातहैं बनवारी यह चूक भईभारी संगप्यारीजोचलीगई २०६॥

स०। पीतमआगमकोसुनिबालक अंगनसैजुसनादिकसेपरैं। त्योंनँदरामजूहासबिलासन चांदनीचन्द्रसबैधिकसेपरैं॥ आननपै अँखियांछवि लसैं मनोबारिज बारिजमैं बिहँसेपरैं। तंगकैतंगतनीककेतोरिदोऊकुच कञ्चुकीते निकसेपरैं २०७॥

क०। परिकै अपारयों सकोचन सरोवरमें कहूं चहिपार उहिपारही तिराकैं। कहैंनन्ददास सरीभांतिन के भौंरनमैंभूलिभूलिअनभवराजन मिराकैं॥ घूंघट तौखोलुबालिबोलतौ बिलोलनैनी बोलकैंनबोल कान मरिये गिराकैं। आज ब्रजराजको निहारलेरी नी

के नैनलाज के जहाज पै बहीबही फिराकरैं २०८

तथा। आनँदकेऐनहौसुचैनकेअनूपघर रूपअनु
रूपरतिभूपभनियेनहीं। कहैंनन्दरामत्योंपपीहनकेप्राण
पतिप्राणदपुरैनिकेप्रपंचठनियेनहीं॥ जादिनतेनन्दला
लकीन्होपरदेशगौनतादिनतेरावरेस्वभावजानियेनही
चञ्चलाकृपापालै कतलविरहीनकरौ जलदकहाइकै
जलदादबनियेनहीं २०९॥

स०। दम्पतिराजिरहेपरयङ्क सुगन्धनकीजहांकै
हीधूमैं। यौवनकेमदमाते दोऊ नँदरामभुकै उभकै
भुकिभूमैं॥ मोहनकोमनमोहनीमें मनमोहनीकोमन
मोहनहूमें। पीकभरी पलकैं अलकैं लखिलाल हियेल
लकैंमुखचूमैं २१०॥

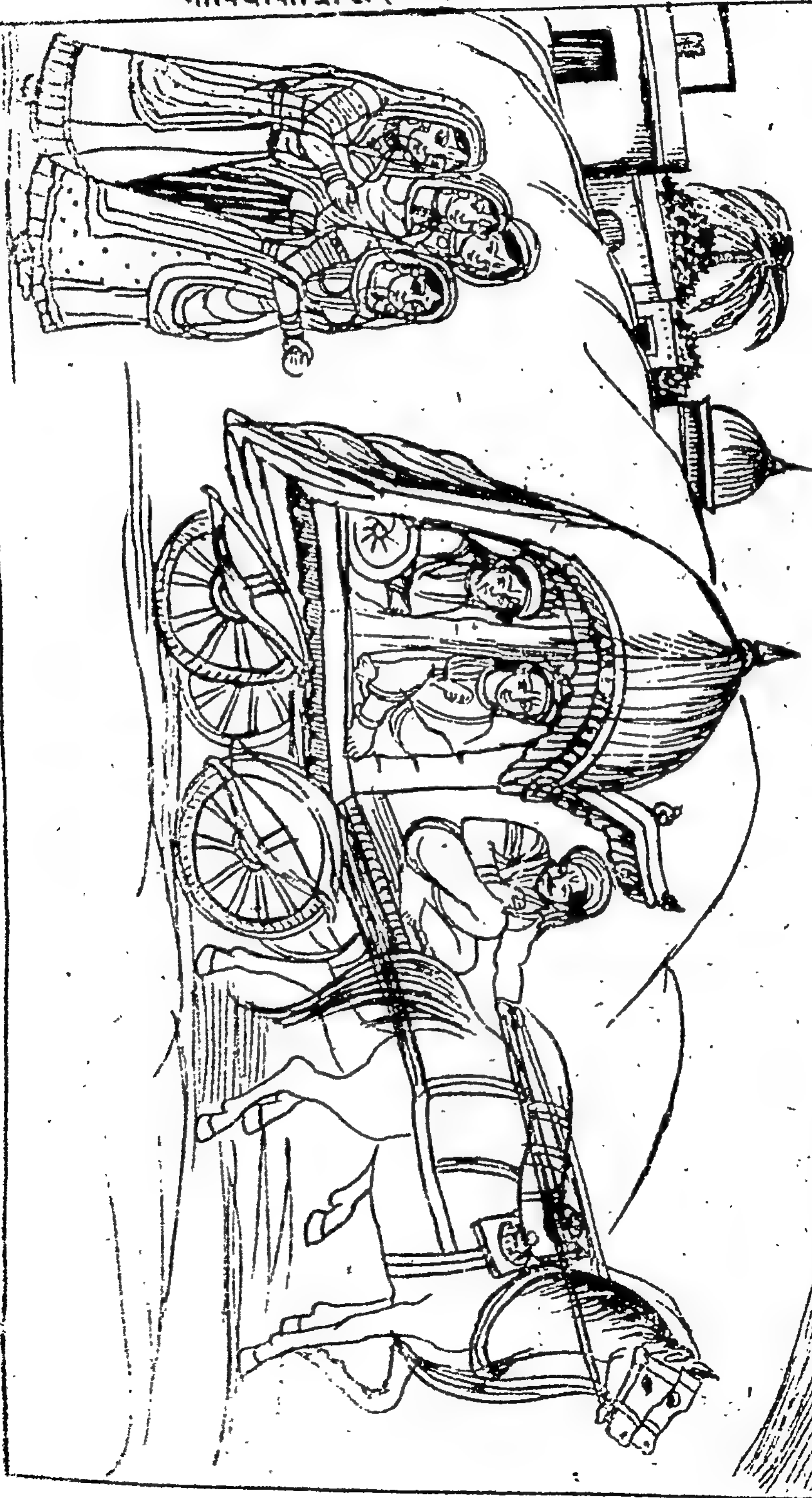
तथा। नाहकहीसमुभावतीहैं मनमेरो तौ मेरीकह
नाहिं मानै। कोईकहैं कुलकानिकरौ अरुवेदऋचानव
कोईवखानै॥ जो नँदराम निहारती मोहनैतौ फिरन
उपदेशतीज्ञानै। कोऊकितीकौबकैतौकहा सखिपीरजे
कीजरैसोइजानै २११॥

तथा। कामहुते कमनीय महा सखिजादिनते व
रूपनिहारो। तादिनतेमनमानतना नँदरामबहैदृगनी
पनारो॥ क्योंतकछूबनिआवैनहीं बलकैंसेदिखैयेकर
किनारो। कासोंविथाकिकथाकहिये मनतौ हमरोकहि
को हमारो २१२॥

तथा। चितमेंबसीसांवरीसूरतिवा अब और क
पहिंचाननना। करिथाकी सबै उपचारनको पचिपञ्



अक्रूरजी का श्रीकृष्णचन्द्रजी को रथ में सवार करा के मथुरापुरी में ले जाना तथा-
गोपियों को श्री कृष्णचन्द्रजी की ओर देख २ के शोच करना.



प्रपञ्चप्रमानतना॥नँदरामजूलाजकेअंकुशकोमनमेरो मतंगजमानतना । हमकासोंबिथाकहिये मनकी कोउ पीरपराई को जानतना २१३ ॥

क०। द्वारेउठिजात घूमिदेहरीपै बैठिजात नैनअकुलातपर भ्काये परभ्कैनहीं। घरमेंरह्योनजात बाहरेबह्यो नजात अंकुरबिथाके हियेबीचमुर भ्कैनहीं ॥ कहैं नन्दरामऐसे हालमें बिहालभई कीजैकहाराम कोटिभांति सुरभ्कैनहीं। चारिमुखचारोचहैं चारिलखदेवैदुख येदई विचारिचारिआँखैं सुरभ्कैनहीं २१४॥

बिरह विषयके कवित्त व सवैया २ ॥

क०। कानन समीरसबैंभृकुटी अपांग अंग आसन अजिनमृग अंजन अनाधाके। अरुणबिभागकोर विशद बिभूतिअंग त्यागेनींद बिषयनिमेष विषबाधाके॥ कृष्णसिंहकामकला विविध कटाक्षध्यान धारणासमाधिमनमथसिद्धि साधाके। प्रेमके प्रयोगी सुखसम्पति सँयोगीअति श्यामकेवियोगीभये योगीनैनराधाके १॥

तथा । इतहरिफेरिपीठि उतकरिटेढ़ीडीठि तबहीं सो पंचशरबैठ्योबांधिबरकस। छिनछिनछीनभई बिथा नितनितनई दुखमांभ्कनईनई कौनधरेधरकस ॥ गंगापतिइहै उरबढ़तअँदेशएक पठयो सँदेशहून ऐसे हरि करकस । इतनेपैभाउकरि लोन सुरकावतहौ हमको बिभूति ऊधोकुबिजाको जरकस २ ॥

तथा। बिरह बिहारीके विकल बिलखातबाल बैरी

देखो तसवीर नम्बर १॥

सीखगति दुखअतिशय मलानकी। चण्डीदत्तआ
धरैहै पगइत उत धूमिकै गिरीहै ज्योंधरीहै देह
की॥ सांसना भरतपै शिथिलसी दिखाईदेत होनी
मिटाय मिटै बिधि बलवानकी । अतर लपेटी का
कुंजनमेंभेंटीआजु धूरिमें धुरेटी लेटीबेटीवृषभानकी
तथा। बोलिगयो काग बड़े भोर आजु आंगनमें
गनि उमँगिअनुराग सरसतिहै । बाहन बहालीबढ़े
जूबन्द टूटिजात कूदिजातजरा शिर सारी सरकति
नीवीनिबिकाय अधिकायसुखदाकुन त्यों आतुरअ
फेउरोज थरकतिहै। आनन अनन्द की लखाई अ
खाई चाही आवै आज साईं आंखिबाईं फरकतिहै
तथा। भोरहीचलत परदेश प्राणप्यारे सुनि
दुखधाइआइ गगनघनछायेहैं। बूंदजनछूटै लालच
वेको उठै त्योंत्योंमेरोप्राणछूटै अबक्यों न आरिलाखे
कहै घनसिंहमहाबारिदसे देखियत बारितनुदेलतो
बारिधि कहायेहैं। संकटसहाय कामएकऊ नआये
गरजन आये मेरी गरजन आयेहैं ५॥
तथा। नायकनवल लीको नेहतेसुआये गेह त
तकिनेह कियो मोंमति उतावरी। हाहाकै नरायन
होरिकरजोरिहारे तऊ मोंकठोर हियेदरद न आवरी
हायअबसोतेगयो हितूजो हमारोवहशोचनि धरति
आंशू वहि आवरी । कौनसुनै कासोंकहौं अबनाह
रोकोऊ मेरीभटू मोहिंघनश्यामहिं मिलावरी ६॥
तथा। सोई मेरी बीर जोइ लावै बलबीरताहि

दोऊबीर मेरो बिरह बँटाइले। भंजन छपाकीपीर छपैना छपायेपीरछपाकर छपैतौ छपाकर छपाइले ॥ मदनल- गोहै धाय धायसोंकहौरीधाय घेरी मेरीधाय नेक मोहूं तनचाइले। देहमेरी थरथराइ देहरीचढो न जाइदेहरी तनकहाथ देहरी नँघाइले ७ ॥

तथा । आजुमहादीननको सखिगो दयाको सिन्धु आजुहीगरीबनकोसबगाथलूटिगो।आजुद्विजराजनको सकलअकाजभयोआजुमहाधीरजकोधीरजहुछूटिगो॥ मल्लकहैं आजुसबमंगन अनाथभये आजुही अनाथ- न को करमसों फूटिगो । भूप भगवन्त सुरलोक को गोपालभयो आजु कबितान को कल्पतरु टूटिगो ८ ॥

तथा । कालिही सहेलिन में जातिहुती यमुना को इतही ते कान्ह कछुतान अनुराग्यो है। सुनिकै श्रवण लखि नैनन सरूप वाको चपल चितौनि मानों मैनशर लाग्यो है ॥ भावत न और कोऊ जाइनहो तीरकछु सु- धिना शरीरकेहूं किथों मंत्र जाग्योहै। अनैकविरामदी- न मनमें बिचारिदेखो भूत वाहि लाग्यो याहि नन्दपूत लाग्यो है ९ ॥

तथा। जबते गोपालमधुबनको सिधारेआली मधु- बनभयो मधुदावनबिषमसों। सैनकहै सारिका शिख- एडीखँजरीट शुक मिलिकै कलेश कीनो कालिन्दी कद- मसों ॥ यामिनी वरण यह यामिनीमें यामयाम वधिक को युगती जनावै टेरि तमसों। देह करै करज करेजो लियो चाहतिहैं कागभईकोइल कगायोकरैहमसों १० ॥

स०। ब्रजवासी बियोगिनि के घरमें जगछांड़ि कै
क्यों जनमाईहमैं। मिलिबो बड़ीदूर रह्योहरिचन्द दुः
इकनाम धराई हमैं॥ जगके सगरे सुखसों ठगिकै स
हिवेकोयहीहै जिवाई हमैं। केहिबैर सोहाय दईबिधिन
दुख देखिबेही को बनाई हमैं ११॥

तथा। कुबिजा जगके कहा बाहरहै नँदलालने ज
उरहाथ धस्यो। मथुरा कहा भूमिकी भूमिनहीं जहँजाय
कैप्यारे निवास कस्यो॥ हरिचन्द न काहूको दोष कहू
मिलिहैं सोइ भागसे जो उतस्यो। सब को जहां भोग
मिल्यो तहांहाय बियोग हमारेही बांटेपस्यो १२॥

क०। तबतो बखानी निज बीरता प्रमानी कैकै प्रेम
केनिवाह भार गरब गरूरेहौं। जानसों पियाके कह्यो
प्रथम पयान हरिचन्द अबबैठे कित दुरिदुरि दूरे हौं।
हायप्राणनाथबिनु भोगत अनेकबिथा खोईसुखआश
लागि अबलैंमजूरेहौं। आजोंतन तजिकै नजाओलज
वाओ मोहिं हाहामेरेप्राणनिरलज्जतुम परेहौं १३॥

स०। जानतहौं नहींऐसी सखी इनमोहन जैसी
करी हमसोंदई। होतन आपनेपीया पराये कबौं कह
बोलनिसांची अरीभई॥ हाहाकहा हरिचन्दकरौं बिप
रीत सबैविधिनै हम सों ठई। मोहनह्वै निरमोही मह
भये नेहबढ़ाइकै हाय दगादई १४॥

तथा। जानिकै मोहन के निरमोहहि नाहक बै
बिसाहि बरेपरी। त्यों हरिचन्दबिगारिकै लोक सो
वेदकीलीकभलैंनिदरेपरी॥ आपुनीहीकरनीकोमिल्यो

फलतासों सबै सहतेही सरेपरी। यामें न और को दोष कछू सखिचूक हमारी हमारे गरेपरी १५॥

तथा। नेहलगाय लुभायलई पहिले ब्रजकीसबही सुकुमारियां। बेणुबजाय बुलाय रमाय हँसाय खिलाये करी मनुहारियां॥ सोहरिचन्द जुदाह्वै बसे बधिकै छल सों ब्रजबाल बिचारियां। वाहजू प्रेमनिबाह्यो भलो बलिहारियां लालन वे बलिहारियां १६॥

क०। घटाघहरातहै पौन हहरातहै बुंद झहरात है गातहै कांपिनी। कोकिला कूकते हूकहिय होतहै राम चरितकहकेनसो आपनी॥ पीयाबिन योगिनीसीबनीभौ-नमें मौनसी विरह जप जापिनी। फूलसब शूलभे कली कांटाभई रातिरकासिनि भई सेजभई सांपिनी १७॥

तथा। नैनलाल कुसुम पलाश से रहेहैं फूल माल गरे बनमाल झालरिसों लाईहै। भँवरगुंजार हरिनामको उचारतिमि कोकिला सों कुहुकि बियोग रागगाई है॥ हरीचन्द तजिपतझार घरबारसबै बौरी बनिदौरीचारु पौनऐसी धाईहै। तेरे बिछुरे ते प्राणकन्तकै हिमन्त अन्त तेरी प्रेमयोगिनी बसन्त बनिआईहै १८॥

तथा। पीरोतन पर्‍यो फूलो सरसों सरससोई मन मुरझानोपतझारमानोलाईहै। सीरीश्वासत्रिबिधसमीर सी बहति सदा आँखियां बरसिमधुझारसी लगाई है॥ हारीचन्द फूलमन मौनके मसूसनसों ताहीसों रसाल बाल बादिकै बौराईहै। तेरे बिछुरते प्राणकन्तकै हिम-न्तअन्त तेरी प्रेम योगिनी बसन्त बनिआई है १९॥

स०। जियसूधी चितौन की साधैरही सदाबातन मैं अनखाय रहे। हँसिकैहरिचन्द न बोलेकबौं मनदूर हीलोंललचाय रहे॥ नहिंनेक दयाउरआवत क्योंकि कैकहा ऐसे सुभायरहे। सुखकौनसो प्यारेदियो पहिले जेहिके बदले यों सताय रहे २०॥

तथा। जानत कौनहै प्रेमबिथा केहिसों चरचा य वियोगकी कीजिये। कोकही मानै कहासमझै कोउ क्यों बिनबातकी रारहि लीजिये॥ कूरचवाइनमें पड़िकै हरिचन्दजू क्यों इन बातन छीजिये। पूछत सौत क्य बैठिरही सबप्यारेकहा इन्हें उत्तर दीजिये २१॥

तथा। सबआशलौ छूटी पिया मिलबेकी न जा मनोरथकौलसजें। हरिचन्दजूदुःख अनेकसहैं पै आड़े टरैंना कहूंकोभजें॥ अबसोंनिरशंकह्वै बैठिरहैं सोनिर दरहूं सोंकछूनलजें। नहिंजानीपरै कछुयातनको कोि मोहते पापीनप्राणतजें २२॥

तथा। मोहनसों जबै नैनलगे तबतो मिलिकै सम् आवन धाई। प्रीतिकी रीति औ नीति कही मिलिबोि अनेकनबातसुनाई॥ येऊदगादेजुदाह्वैगई हरिचन्द पकहु कानन आई। हायमैं कौन उपाय करौं सखिय आपुनी ह्वैगई जु पराई २३॥

तथा। कितको ढरिगो वह प्यार सबै क्यों रुखा नईयह साजत हौ। हरिचन्द भयेहो कहाके कहा अ नबोलिबे ते नाहिं लाजतहौ॥ नितको मिलनो तो कि नारे रह्यो मुख देखतही ढुरिभाजत हौ। पहिले अप

नाय बढ़ाय कै नेहनरूठिबे में अब लाजत हौ २४ ॥
तथा। पहिलेमुसुकाइ लजाइकछू क्योंचितैमुरिमो-तन छामाकियो। पुनिनैनलगाइबढ़ाइकैप्रीति निबाहन को क्यों कलामकियो॥ हरिचन्दकहाके कहा कै गये कपटानसों क्योंयहकामाकियो। मनमाहिंजो छोड़नही कीहती अपनाइकै क्योंबदनाम कियो २५ ॥
तथा। हायदशायहकासों कहौं कोउनाहीं सुनै जो करेहूं निहोरन। कोऊ बचावनहारोनहीं हरिचन्दजूयों-तोहितूहैं करोरन॥ सोसुधिकै गिरिधारनकी अबधाइ कै दूरिकरो इनचोरन। प्यारे तिहारे निवासकीठौरको बोरतहैं अँशुवाबरजोरन २६ ॥
तथा। हितकी हमसों सब बात कहौ सुखमूलसबै बतरावतीहौ। पैपिया हरिचन्दसों नैनलगे केहिहेतुये बातैं बनावतीहौ॥ यहां कौनजो मानैतिहारोकह्यो हमैं बातनक्योंबहलावतीहौ। सजनी मन पास नहीं हमरे तुम कौनको का समभावतीहौ २७ ॥
तथा। जबसों हम नेहकियो उनसों तबसों तुमबातैं सुनावतीहौ। हमऔरनके बशमें हैं परे हरिचन्दकहा समभावतीहौ॥ कोउ आपुन भूलिहैबूझहुतो तुमक्यों इतनो बतरावतीहौ। इन नैननको सखी दोषसबै हमैं झूठहि दोष लगावतीहौ २८ ॥
तथा। जिनकेहित त्यागिकै लोककीलाजको संगही संगमें फेराकियो। हरिचन्दजू त्योंमग आवत जातमें साथघरीघरी घेराकियो॥ जिनके हितमैं बदनाम भई

तिन नेकुकह्यो नहिं मेरो कियो। हमैंव्याकुल छोड़ि
हायसखी कोउ औरके जाइ बसेराकियो २६ ॥
तथा। धाइकै आगेमिलीं पहिले तुमकौनसोंपूछि
मोहिंसोंभाखो। त्योंतुमने सबलाजतजी कोहिकेकहे
तो कियो अभिलाखो॥ काजबिगारि सबैअपनोहरि
न्दजूधीरज क्यों नहिंराखो। क्योंअबरोइकै प्राणत
अपुने कियेकोफल क्योंनहिं चाखो ३० ॥
तथा। पहिले बिनजाने पिछाने बिना मिलीधाइ
आगे विचारे बिना। अपुनेसों जुदा ह्वैगई तुरतै नि
लाभओ हानि सँभारेबिना॥ हरिचन्दजूदोषसबै इ
को जोकियोसबपूछे हमारेबिना। बरिआईलखोइन
उलटी अबरोवहिं आपुनिहारे बिना ३१ ॥
क०। इनदुखियानकोनचैन सपनेहूंमिल्यो ता
सदाव्याकुल बिकल अकुलायँगी। प्यारेहरिचन्दजू
बीतीजानिऔधिप्राण चाहतचलेपैयेतो सङ्गनासम
गी॥देख्योएकबारहू ननैनभरितोहिंयाते जौनजौनलो
जैहैं तहांपछतायँगी। बिनाप्राणप्यारेभयेदरशतुम्ह
हाय मरेहूपैआंखैं येखुलीही रहिजायँगी ३२ ॥
स०। मैं वृषभानुपुराकी निवासिनि मेरीरहै ब्रज
थिनभावरी। एकसँदेशोकहौं तुमसों पैसुनोजोकरो क
ताको उपावरी॥ जो हरिचन्दजू कुंजनमें मिलिजा
करी लखिकै तुमबावरी। बूझोहै याने दया करिकै
हिये परसों कबहोयगी रावरी ३३ ॥
तथा। आजुलों जोनमिले तोकहा हमतोतुम्हरेस

भांति कहावै। मेरो उराहनोहै कछुनाहिं सबैफल आ-
पुने भागकोपावै ॥ जोहरिचन्दभई सो भई अब प्राण
चलेचहैं तासोंसुनावै। प्यारेजुहै जगकी यहरीति बिदा
की समय सबकण्ठलगावै ३४ ॥

क०। जानदेरी जानदे बिचार कुलकानहूंको गाव-
नदे मेरकुलटापनके गाथको। मैंतो रहीभूलि बिनबात
को बिचारेजौन प्रेमकोबिगारे छांडु ऐसे सब साथको ॥
देखो हरिचन्दकौनलाभपायो यामें पछिताय रहिगई
धनपाय खोये हाथको । जारौ ऐसी लाज आवै कौन
काजजानै आज लखन न दीनों भरि नैन प्राणनाथ
को ३५ ॥

स०। सदाव्याकुलहीरहैं आपुबिना इन कीहू कछू
कहिजाइयेतो । इकबारहूंतोहिंनदेख्यो कभूं तिनको
मुखचन्ददिखाइयेतो ॥ हरिचन्दजुये आँखियां नितकीहैं
बियोगिनि इन्हें समुझाइयेतो । दुखियानको प्रीतम
प्यारेकवौं चहराइके धीरधराइयेतो ३६ ॥

तथा। रोवैंसदानितकीदुखियांबानि ये आँखियां जि-
हिव्योससोंलागी। रूपदिखाओ इन्हें कबहूं हरिचन्दजू
जानि महाअनुरागी ॥ मानिहैं औरनसों नहिं ये तुव
रङ्गरँगीकुललाजहित्यागी। आंशुनको अपनेअँचरान
सों लालनपोंछिकरौ बड़भागी ३७ ॥

तथा। घरबाहरकेनको कामकछू नहिं कोयहरारि
निवारिसकै। हरिचन्दजू जो बिगरीबदिकैं तिन्हैंकोनहै
जौन सँवारिसकै ॥ समुझाइप्रवोधिकै नीतिकथा इन्हैं

धीरज कोऊनपारिसकै । तुम्हरेबिनु लालनकौनहै जे
यह प्रेमकेआंशू निवारिसकै ३८ ॥

तथा। संगमें जेनिशिबासरहीं जिनतेकछुबातैंनमें
छिपाई । जेहितकारिनीमेरीहुतीं हरिचन्दजू हायगई
सोपराई ॥ सोसबनेह गयोकितको मिलिबेकी न एकहू
वातबताई। और चवावकरै उलटो हरिहायएकहू कारै
न आई ३९ ॥

तथा । हौं कुलटाहौं कलङ्किनीहौं हमने सब छांडि
दयो कहाखोलौ । आछीरहौ अपनेघरमें तुमक्यों यह
आइ करेजहिछोलौ ॥ लागिनजाइ कलङ्कतुम्हें कहूंदू
रहौ सँगलागीनडोलौ । बावरीहौं जोभईसजनी तोहटौ
हमसों मति आइके बोलौ ४० ॥

क० । आयो सखीसावन बिदेशमनभावनजू कैसे
करि मेरोचित हायधीर धारिहैं । ऐहैंकौन झूलनहिंडो
बैठि संगमेरे कौनमनुहारिकरि भुजाकंठपारिहैं ॥ हरी
चन्दभींजतबचैहैकौनभीजिआयकौनउरलाइकामता
निरवारिहैं । मानसमयपगपरिकौन समुझैहै हाय कौन
मेरीप्राणप्यारी कहिके पुकारिहैं ४१ ॥

तथा । आईआजाकितअकुलाईअलसाईप्रात रीति
मतिपूछेबात रंगकितढरिगो । सोनेसेयागातछूके सोन
भयो आप कैवाआतप परभातहीको प्रगट पसरिगो ।
हरिचन्दसौतिनकी मुखद्युतिछीनीकैया अपनीबरनक
पायधाय ररिगो । नीलपट तेरोआज औरैरँगभयोका
मेरजान विछुरि पियाते पीरो परिगो ४२ ॥

स०। जानतही नहींहौ जगमें किहिको सबरे मिलि भाषतहैंमुख। चौंकत चैनको नामसुने सपनेहून जानत भोगनकोरुख॥ ऐसन सों हरिचन्दजू दूरही बैठने का लखनो न भलोमुख। मोंदुखियाके न पासरहो उड़िकै न लगै तुमहूं को कहूंदुख ४३॥

तथा। गरजेघन दौरिरहैं लपटाइ भुजाभरिकै सुख पागीरहैं। हरिचन्दजू भीजिरहैं हियमें मिलिपौन चले मदजागीरहैं॥ नभदामिनी के दमके सतराई छिपी पिय अंगसुहागीरहैं। बड़भागिनी वेई अहैं बरसातमें जे पिय कंठसों लागीरहैं ४४॥

तथा। ऊधोजू सूधोगहो वहमारग ज्ञानकी तेरेजहां गुदरीहै। कोऊनहीं सिखमानिहै ह्यां इकश्यामकी प्रीति प्रतीति खरी है॥ ये ब्रजबाला सबै एकसी हरिचन्दजू मण्डलीही बिगरी है। एक जो होय तो ज्ञान सिखाइय कूपहीमें यहां भांग परीहै ४५॥

क०। कबहूंक बारिनमें कुंजन निवारिन में इत उत बेलिनको चौंकि चितवन है। कासन कपासन पै फिरत उदासकवैं पल्लवन बैठि बैरिदिन रितवतहै॥ हरीचन्द बागन कछारन पहारनमें जिततित पर्‌यो गुनि नेहहित-वतहै। सूखे सूखे फूलनपै तरुगनमूलनपै मालती विरह भौंरि दिन वितवतहै ४६॥

तथा। कालेपरे कोस चलिचालि थकगये पाय सुखके कसालेपरे तालेपरे नसके। रोय रोय नैननमें ह्वालेपरे जालेपरे मदनकेपालेपरे प्राणपरवसके॥ हरीचन्द अग

हहवालेपरे रोगनके सोगनके भालेपरे तनबल खसके
पगनमें छालेपरे नांघिबेको नालेपरे तऊलाल लालेप
रावरे दरसके ४७॥

तथा। थाकीगति अंगन की मतिपरिगई मन्द मु
झांझरीसी ह्वैकैदेहलागी पियरान। बावरीसी बुद्धिभ
हँसीकाहू छीनलई सुखके समाज जितातितलागे दु
जान॥ हरीचन्द रावरे बिरह जग दुखमयो भयो क
औरहोनहारलागेदिखरान। नैनकुम्हिलानलागे बैन
अथानलागेआओप्राणनाथअबप्राणलागेमुरझान४

तथा। चौंकपरी सुखन समोई लेतसासनको आं
ढारकहै सुनसखी अभिरामरी। उतही बिसासी ब्र
वासी कान्हभेंटोभट सारिका सुवाकेशोरकीने काककाम
री॥ एकहीं निहारी हेम पूतरी स्वपनमाहँ चारयो
सिन्धुशोभाललितललामरी। कितवहठामकितमणि
के धामआय किते सुखयामकिते गयेघनश्यामरी ४

स०। वनगेलनि छैल लख्यो इकमैं तिहिकी घु
मोहिये हूलतिहै। दियेदीनदयाल तिहूँपुरकी उपमा ल
ह्वै नहिं तूलतिहै॥ कलनाहिंपरै बिनुदेखेअभा मति
पलनाकरि झूलतिहै। जबहींजब वासुधिहोयहिये त
हीं सबहीं सुधि भूलति है ५०॥

क०। हे अशोक शोकहारि हारिको मिलाय मोहिले
हि को शपथ करि सांचो निज नामको। हे पलाश
श पूरि दूरिकरि निजनाम अहेपारिजात करि पूरो म
काम को॥ हे रसाल लाल को लखाय ये रसाल र

प हे तमालधरेहो स्वरूप तुमश्यामको । ताते तुम्हें जानिये गुपाल मिले दीनद्याल काहेको बिहाल हाल देखियत बामको ५१ ॥

तथा । बदरी तू बदरी बिलोक्यो कहूं घनश्याम काहेको बतावैसांचो नामयाको बेरीहै । कहिरी निवारी तोहिं कान्हने निवारी कहा देति न दिखाय अबकाहेकरैदेरीहै ॥ येहोकरबीर करबीरउपकारधीर हमैं करबीर को बतायआशतेरीहै । करन कुसुम हेकरन करिदीन बच हरिके जतायकै हरनपीर मेरीहै ५२ ॥

स० । तजिकै कुलकी कुलकानिसबै तुमसों हम आनिकै प्रीतिकरी । भुवनेशअहो भईहौंब्रजमैं बदनाम सोऊमनमैंनधरी ॥ निबही न सोई अबतो तुमसों लगी तोरिबे मैं नहिं एकोघरी । परमेश्वरई अबजानत हैं कहिते न बनै हमपै जोपरी ५३ ॥

क० । भई हौं बिहालबाल लालके बिछोह काल सांवरेसनेह देहदशा भूलिगई है । जागि मुरुभातेकरै बातें घनश्यामहीकी पियापिया चातकोसी हिया रटलईहै ॥ अहोप्राणनाथ हाथदीजिये हमारेमाथ साथतेन तजो बिरहागि तापतईहै । दुरतिनक्योंप्रभा फुरतिहियेमैं नई श्यामकी सुरति करि भई श्याममई है ५४ ॥

तथा । अलक अँधेरी मैंलियाहै मन धनचोरी अब तोहमारे कान्ह तरफै बिकलप्रान । लीजे न कलङ्कहमैं बिधिकै बियोगअनी बनीहैनिशङ्कबङ्क भृकुटी तनी कमान ॥ अनल उचाट रूपलाटमैं तचाईभारी कारी-

गर कामने सुधारी अभिरामसान । चाहसों चितौनि
कोर चुभी चितबीच मेरे एरे चितचोर तेरे लोचने
अचूकवान ५५ ॥
तथा। मुनिनकेमनअलि पुंजजहँ गुंजत हैं सोईपद
कंजमंजु हमैं परसाइये। नीलकण्ठसुखधाम एहोघन
श्याम देव मन्द मन्द मुसुकानि बूंद बरसाइये ॥ गोप
की किशोरीभोरी चितवैं चकोरीचारु ताको तिनओरै
नाहँ नाहिं तरसाइये। छांड़िछलछन्द ब्रजचन्दानि
जानिहमें आनँदको कन्द मुखचन्द दरसाइये ५६
स०। विरहानल ज्वालकेभारनतें भुवनेश निरे
मुरभानिपरे। अँगअंगमलीन भयेहैं सबै अबनेकुनहि
पहिंचानिपरे ॥ कसकैउरअन्तर ऐसीबढ़ी हमसों क
नाहीं बखानिपरे। कहिकै तुमसों हमजानिचलीं अ
कीजिये जो जियजानिपरे ५७ ॥
क०। विरह पयोधितें कृपाके सिन्धु दीनबन्धु कीजे
पार निराधार हियके जहाजको । प्रेमनेम तोषधी
पथीहवै अधीररहे एहो बलबीर लखो बिकल समाज
को ॥ गोकुल के गोकुलको ब्याकुल उबारेप्यारे हु
जबबारेधारे धराधरराजको। स्वामी शिरताजमेरे टे
किनसुनोआज ऐसेब्रजराजतेरेकाजतजीलाजको ५८
तथा। तकितकिचहूंओर जकिसी रहीहै थकि बा
चकिउठैछकि छैलकीलगनमें। हाहाबलबीरको बता
मेरीबीरएरी धायधायबूझतिहै कुंजकेमगनमें ॥ नन्द
किशोर चितचोर कित खड़ेह्वैहैं गड़ेह्वैहैं कहूं कुशाकण्ट

कपगनमें। अजहूं न आये बनमाली कितगयेआली बोली चटकालीलाली लहकीगगनमें ५९ ॥

तथा। प्राण के अधारे मेरेबारे येपधारेचहैं भूपके अखारे जहां भारे सजे शूर मैं। पीरबढ़ी शरीर बढ़ति वियोग नीर धीरधरौं कैसेकरौं आंखिनके दूरमैं॥ डारो बरु कन्स कारागारमैं ज़ंजीर भरि एरी बीरजाउ ज़र धन धाम धूर मैं। जोपै ये कन्हैया बलभैया दोऊ लालमेरे खेलैं कहिमैया बैन नैनके हजूरमैं ६० ॥

तथा। जाय जानि प्राणकेपियूषमोहिं मांगन दै कौन अनुराग सों आंगन बिहारि हैं। अरिकै मथानी धरिमाखनको खैहैं कौन भौनबीच लाखन खिलौनको सुधारिहैं॥ एरे मेरे छैया तू कन्हैया मैं बलैया जाउँ मैया मैया टेरिकौन मोहिं को पुकारिहैं। कन्सधूत दूत को सँदेशो सुनि चले पूत कौन पुरुहूत धार धराधरधारिहैं ६१ ॥

तथा। कहियेमहरबात शहरतजेपैप्रात कहाकह्यो तातजब तुमकोबिदाकियो। आईसुधिनाहिं तुम्हैंकोशलेशहूकीकछु पविते कठोरबरजोरकै रह्योहियो॥ जियै नहिंएकपल जलमेंविहीनमीन क्योंप्रवीनहोय खोय प्राणप्रियाकोजियो। धन्य तुमनाथ कहाकहों मैं तिहारी गाथ आपनो अमोललाल औरहाथमैंदियो ६२ ॥

तथा। पीवपीव पातकी पपीहा येपुकारैंनित सहज सुभायनहीं पावक पसारैंहैं। पादप पलाश के प्रसूनन अँगारनसों लसिलसिडारन अँगारनसों झारैंहैं॥ मुर-

नेश ऐसियेपरीती बिरहानलमैं बावरे अनङ्गअङ्गवि
क्यों बगारै हैं। आपुतोजरेकोदुख जानत भलीहीभां
काहे जरे अंगनको फेरिअबजारैहैं ६३॥

तथा। नन्दघिलखात कहिसुनिरी सहरिबात ना
लिये जातहमभूले न कृपालको। अजहूं कहावें गि
धारी बनवारी उत जानैंहैं हमारी सुधि देवकीके ला
को॥ भूपनिको सभामैं सिखावै वृद्धराज नीति सेवै
वनातआप गोकुलकी चालको। मोती मणि लालन
सोहत बिशालजऊ तऊ न कृपाल तजैं गुंजन
मालको ६४॥

स०। कूरअक्रूर लिवायगये भयोताद्दिनतेअँखि
येदुखारी। नीरपगारते धारबहै बिरहानल ज्वाल
सबनारी॥ गाढ़सोंजोजो बचाये दिवाकर सोबहुरेस
बैरसँबारी। ऊधौकिधे उरपाहनसे रहैजानतमैं रसि
गिरिधारी ६५॥

क०। सुन्दरसुखारेअनियारेकारेकारेघन धारेबहु
धामधारे बरसतुहैं। तरुणतरारेन्यारेन्यारे उदगारेप
दादुरदरारे धुनिधारे दरसतुहैं॥ पीपीकैपुकारेपपीह
प्यारेप्यारेसारदुन्दुभि धुधुकारेअनंगसरसतुहैं।अच
जयामैं कहुँ कौनभुवनेश जापै श्यामामिलबेको मन
तरसतुहैं ६६॥

स०। दादुरबोल मचै चहुँओर सुनै बिरही वि
ताप बढ़ावत। पावसकी झमकी रतियां पतिकी छ
यां बिनकौन बितावत॥ बोलहिंगे अलिकुंजनमें

कैसुरवा धुनिटेर सुनावत । काह कहौं सखि नाह बि-
ना अब ये बदरा बदराहबतावत ६७॥

क०। जादिनतेप्यारे पियप्रीतम सिधारेकहूं जानि
ब्रजमण्डल घनेईघने उतपात। द्विजदेवतादिनतेबैठी
दूरिमन्दिरमें सुसुखि सखीनहूं की नेकहूं सुनीनबा-
त॥ बूढ़ो बिनदांतकोविचारि शठतोको तातआजयहि
आंगनमें निकारिदेखायो गात। अबला अबल जानि
तुहूंइतरात अरे नीरद बिसासी कहा करत बिसास-
घात ६८॥

तथा। भूले भूले भौंर बन भांवरैं भरावैं कोक बर-
बसहीतो कियो चाहैं परबसुरे। द्विजदेव तापरअलापैं
ये कलापिनकी भरिभरिदेइँ गोद नितअपयसुरे॥ ताहू
पै सुतेरे खनतीखन संतापनते नेकहूं बचावहोतमायके
न ससुरे। तियनै निकारिभले पायन पसारि अरेबावरे
अनंग अब तूही ब्रजबसुरे ६९॥

तथा। अब अतिदेशी कानकान्ह की बसीठिनिपै
झूंठे झूंठे प्रेमके पतौवनको फारिदे। उरझि रहीरी जो
अनेक पुरबातैं सोऊ नातेकी गिरह मूंदि नैनन निवारि
दे॥ मरन चहत काहू छैलपै छबीली कोऊ हाथनउठा-
य ब्रजबीथिनमें टेरिदे। नेहरी कहांको जरिखेहरी
भईतो अब देहरी उठाय वाके देहरी पै गेरिदे ७०॥

तथा। आये अलिऊधो प्रेम पथको करन रूंधो रूं-
धो निज श्वासबासतजोरी घरानिको। जासु नाम
रूपरेख अलख अलेखभेव भजो सोई देव सेवकरोक-

दरनिको॥ कीजिये उपास न सखीरी गुणहीनही
सासन शरीर करो आसन धरनि को। जटाकी बन
घटा योगी कनफटा होय राधेज्ञान छटा साधो क
मुंदरिनको ७१॥

तथा। जनमको पत्रहै हमारेकर प्यारे ऊधो ज
नैंहम यशुदाके वार गुननामको। लाखन उपाय द
माखनचुराय प्रात चाखनकै माजिजात हुते नन्द
मको॥ सोदर हलीके वेद मोदर कहाय इत आठोंय
मानि हित पूजैं तिहि दामको। अगुणअनामी अ
कहो किमि वार वार अहोहो लबार कहां बचो अ
वामको ७२॥

तथा। पारसै परसिलोह सोहतभे हेमहोय त
फिरि चुम्बक सो जायलपटावहीं। जाकीमनवीन
लीनह्वै प्रवीनभयो सोन सुनि कींगरीकी धुनि हरषा
हीं॥ सुधासिन्धु रागि जासु क्षुधातृषागई भागि सो
मृगवारिलागि नहीं मुधाधावहीं। श्यामकी सँयो
हम गोरसकी भोगी ऊधो कैसे बनियोगी योगम
मनलावहीं ७३॥

तथा। मिल्योआय हृदयसिन्धु सांवरो सलोनो
कीजिये उपाय दायकाढ़े फिरि कढ़ैना। कहो किन
हमें वृढ़प्रेम कान्हरसो ह्वैरह्यो अरूढ़ औरऔर बूढ़
ढ़ैना॥ बालपनकोपढ़ायोसुआजो पढ़ोसोढढ़ो फेरिको
करैतो आनकछू पढ़ैना। काहेविनु काम कहो योग
प्रगटऊधो श्यामरङ्गरङ्गी तापै और रङ्गचढ़ैना ७४

तथा। श्यामके पठाये आये सखाहो सुहाये ऊधो लागेमनतोलन तो आछीविधि तोलिये। प्रेमधार मैं ठिकान ज्ञानको न है सुजान लैहैं कोऊयसी वारागसी बीच डोलिये॥ जानैंहमकहा भोली बसीहैं बियोगटोली सीखो तुमयोग ऐसी बोली मति बोलिये। होहु जनि दाहक सिखावो योग चाहकको गाहकके बिनानगनाहक न खोलिये ७५॥

तथा। दरदबिदारनि शरद चांदनीकोत्यागि करैकौन मन्दहै पसन्द जेठधूपको। गंगजल तजिकोन मारुथल थकै धाय कोनखायं खरीनिज पाणिपाय पूपको॥ सूधो पथ छोड़ि ऊधो अभै कौन कपटकमैं भजैकोकलंकीरंक छांड़ि भारि भूपको। बासर बिभावरीहूं सांवरी सुरति रसै झांकै कौनि बावरी अँधेरे योगकूपको ७६॥

तथा। साधिकै समाधिछोऊ कन्दरा अगाधि पैठि बैठिरहो योगीबनि शीशचढ़िप्रानहै। संयमादि साधन अराधन करतरहो कोऊ गहो ज्ञान कोऊतपको बिधान है॥ राचीगुण गोबिंदके सांची कहैं ऊधो तुम्हैं निरगुणतेनकहू हमैं पहिंचानहै। कोऊकिन ध्यानधरै ज्योति वानिरंजनकी हैरहेहमारेश्याम अंजनसमानहै ७७॥

तथा। रासको बिलास मृदुहासकी सुरति जब ऐहै तब मोहनसों क्योंन मन उचाटिहैं। चांदनी शरदकी बढ़ायहै दरददेह सुधिकी करद लगे क्योंनउरफाटिहैं॥ बैठि बनबेलीबीच मेली भुजलताताहि श्यामताहिकं ठहेली कहो सेली किमि ठाटि हैं। धारि जपमाला को

बिसारि नंदलाल ऊधो वालामृगछालाओढ़ि कैसेदिन काटिहैं ७८ ॥

तथा। उठै गुण गायगाय भरै सांसहायहाय करै न सोहाय कछुवरियपतितुहै। सुधिबुधि दीन्ह मै न ऐसी निथाकरी मैन चित्ततो रमैनसो बिकल भयो आतिहै ॥ सुमिरि सुमिरिकविराज सुख गोकुलके को कहि सकतु लौकै ऐसीभईगतिहै। रहौन परातिभौन भावतनपानी पौन आधौपल माधौको न राधे बिसरतिहै ७९ ॥

तथा। आधीलै उसासमुखआंसुनसोंधोवैकहूं जोवै आधे आधे पलन पसारिकै। नींदभूख प्यासताहि आधीहू रहीन तन आधेहून आखरसकत अनुसारिकै॥ द्विजदेवकीसों ऐसीआधिअधिकानी जासों नेकहुनतन मनराखत सँभारिकै। जादिनते जोरि मनमोहनललापै दीठि राधेआधे नैननतें आई तू निहारिकै ८० ॥

तथा। लीबेको चलीतीबहुभांतिनकोचैनबन ऊंचीकै भुजानभरि अंचल छिपाईलाज। छीबेको चलीती वह पानिपभरोइतन छ्वायछ्वायआईहियो पावक बियोग साज ॥ भभारिरहीसी अभिलाषा मनहीकीसन द्विज-देवकीसोंकछु भूलिहू भयो न काज। पीबेको चलीती ब्रजचन्दको अमन्दहास पायचली प्यारो बिष बिरह बिथाको आज ८१ ॥

तथा। तुमचारियाम रजनीके जागौआनसाथ हम बिरहानलकी ज्वालनसों जागती। कै घर बसी जे तिहारे घरबसी प्यारे हम परबसी कैहैं तिनकीधौं कहा

गती ॥ भनत कवीन्द्र देखैं भालमें महाउरकी मोरहीं निहारि औरभोरलगि जागती। आंखैं जेहमारी लागीं तुम सों अनोखे लाल तिन अब आंखिन की पलकैं न लागतीं ८२ ॥

तथा। सिसकिसिसकि हियोकसकिकसकिउठै ताके अबसोंसन न कढ्यो भौन कोनेसों। एकता न लागै मुकुतानके अनेकहार बकसे दराज काजरूपेसोनसोने सों ॥ भनतकबीन्द्र ऐसे नाहसों गुनाहबिन कियो मैं बिगार धारटैर कहाटोनेसों। एरीतू कुमतिमोसों कलह करायो अब सुलह करावैकौन सांवरे सलोने सों ८३॥

तथा। आयोहै अक्रूरक्रूरकरनीसुनीहैवाकी गोकुल कोछांडि श्याममथुरासिधारिहैं। जाकेलये पतिपारिवार लोकलाज छांडी ताहि हम छांडि धीर कैसे उर धारिहैं ॥ जल जैसे लोचन जलद से उमंगिआये गिरी मुरझाइवृषभानकी कुमारिहैं। सखिनउठाइ चारुचंदन लगाय तनभसम उदोत लाली बिरह दवारिहैं ८४ ॥

स०। कबहूं ब्रजकुंजके पुंज बिलोकत लेत उसास उदास ठढ़ी। कबहूंहरिके पदचिह्न निहारि बिलोचन बारिज वारिचढ़ी ॥ कबहूं यमुनातट बेणुबजायत धाइ कदम्बकी डारचढ़ी। कबहूंशिवनाथ निहारतधेनु मनो ब्रजनाथ के मोहमढ़ी ८५ ॥

तथा। आवैगो कुंजाबिहारीजबै नरनारि सबैमिलि मंगलगाइकै। बजैगी अनन्द बधाई तबै गुरुलोगसबै मिलिहैं उरलाइकै ॥ लोग बिदाकरि सांझहि श्याम

भुजागहि कोमल अंग लगाइकै। बहुरोकअहूंदि
भटू ब्रजआयोपिया कहिहैं कोउ आइकै ८६।
तथा। कुंजनको बसिबोसजनी उपचारअनेक
मनावते। करसों करग्रान्थि कपोलन छ्वै भरि
बहुरो उरलावते॥ सेरेलिये हरिचम्पककलीअव
हार हिये पहिरावते। नैनभरी भरि ग्वालि कहै
औधिगई पर कन्त न आवते ८७॥
तथा। कहियो वृषभानललीसों भटू हिये ते
मढ्यो बिसवासहै। प्यारीदया करती रहियो स
दियोरसको परिहासहै॥ तेरेईनैनप्रसूनसुये तुम
कन्द कियो उरबासहै। तेरोई रूपबस्यो शिवना
इन नैनन ज्योति प्रकासहै ८८॥
तथा। वैदिनभूलिगयेमनमोहन रंचककांक
आवते। पांयनसोंपरिकै बरजोर कतीमनुहारिवे
लगावते॥ गोधनसंगहुते बनते चुनिमालतीहा
कै लावते। आपभये रसियाशिवनाथ हमैंलिखि
योग पठावते ८९॥
तथा। सखीशर्मीसीअमीसीसवैरतिनायकशाय
सहीहै। नैनन सोतचले सरितानज्यों त्यों तनप
पुलहीहै॥ टाढ़ढरोपहुंचानलों आवतश्वासनकी
की उमहीहै। श्यामतिहारे बियोगनते जरिआधे
की राधे रहीहै ९०॥
क०। ढुरिढुरिपरत मोती मांगहूते बार बा
लुरिपरत बेनी जंघनलों आवती। सरकि सरि

कंचुकी कुचनपर थरकि थरकि गात भृंगन उड़ावती॥ छूटि छूटि जात बेंदीभालते फरकि अंग टूटिटूटि जात माल बिरह बटावती। गिरि गिरिजात कीलपायलकी शिवनाथ फिरि फिरि बिलोकैद्वार सगुनमनावती ६१॥

तथा। मानेकानिकाहूकी न आनतकछूकउरलाजकाज मानहुरसातल तलेगये। हारीहौं सिखाय तऊ ठानत न क्योंहूतोष ऐसेहीकछूक छलछन्दन छलेगये॥ द्विज-देव जादिनते दरशादिखाय कहूं अतिहीनिकट मनमो-हन चलेगये। होतेजोहमारे तो हमारी कही मानते री बीसबिसे आली मेरनैन बदलेगये ६२॥

तथा। कलित अमोलगोल ललितकपोलपर कुंडल चलितसोहैंमोहैंमुखचन्दसों। मोमतिचकोरीभईभोरी प्रीतिथोरीनाहिं ताकीरुचिजाचैंनहिं राचैंछलछन्दसों॥ युगुति नजानैं यदुपतिके मिलनकीसों जाउ जरि योग जग जानोजात फन्दसों। ताको हमजानैं परसूकरसमा-न ऊधो सूधोनाहिं नेह जिनकीनों नँदनन्दसों ६३॥

तथा। को कहैं सिधाये मथुराको यशुदा के जाये रहतलुभाय प्रतिकुंजके सदनहैं। कौनकरै योग सोग नितही संयोगहमैं वारैं कबिलोग जापैकोटिनमदनहैं॥ हरैं दुखफन्द मन्दमन्द मुसकानिसमय आनँदकोकन्द चारु चन्दसों बदनहैं। धेनुको चरावत बजावतहैं वेणु खड़े ऊधो लखिलीजे यह नन्दके नँदनहैं ६४॥

तथा। छाईनिठुराईहै कन्हाईकेहियमें अब लिखिके पठाई पाई योगमई पतियां। कैसे धरैं धीर बलबीरके

वियोग विषे मोचैं दृग नीर पीर शोचैं दिन रतियां॥ भीजत छपायेहमैं छोहसों छबीलोछैल कुंजनकीगैलमें बुलाय लायछातियां। मेलिगलबाहींकाहिंकदमकीछाहीं ऊधो भूलै हमपाहीं नाहीं श्यामकी सुबातियां ६५॥

तथा। जादिनते कान्ह मधुपुरको पयानकियो हियोके पषान नाहिं शोचबधूजनकी। तादिनते देखिये निहारि धीरधारि ऊधो लगीसी दवारि प्रभाभई कुंजबनकी॥ टूकटूकहोतदिलकूकसुनेकोकिलकीलागतअचूक हूक आये सुधि तनकी। कबहूं न भूलहिं बिलोकनि वेभ्रूसरोर करकैं करेजानिमैं कोर कटाक्षनकी ६६॥

तथा। जादिनतेमोहनगयेहैं तजिगोहनको तादिनते गोकुलकी गलीलगैंआरकै। चहूंओरचलतउसासकेसमीर जोर आईघेरिघेरि शोकलपटैंअपारकै॥ चिंतचिनगारी भारी झपटैंसहीनजाहिं पाहिपाहिकरैं गोपवधू निराधारकै। जौनहोती नैननीरधारये अपार ऊधो जातो विरहागि बीच ब्रज जरि छारकै ६७॥

तथा। सांचे सखाश्यामके जनैया उरधामकेहो काहे अभिराम उतरहे हठतानिकै। एहैं गिरिधारी कबहारी गिनतीकै दिन कहियो हमारी ऊधो बिनती बखानिकै॥ राधादृगते बहाहिं राधा नामको बिलोम बाधा भईचहै फिरि गोकुलमें आनिकै। करिये सहायआय नातोबहिजायघोष एहोवृजराज तोष कैसेरहै ठानिकै ६८॥

तथा। जबतेगयेहैं मधुसूदन मधुपुरीको कूदनलगोहै हियप्राण अतिलोलभे। उठैं ज्वालजालह्यां मयङ्कके

मयूखनतेदुःख न लगे हैं अंगभूषणअतोलभे ॥ कहिये कहांलोंकथादुखकी अथाहऊधोकीजै निरबाहअबकाह अनबोलभे। कीमतिघटीहै अतिह्यांतो फूलमालनकी लालनकी खोजते सरोजे बहुमोलभे ९९ ॥

तथा। दशाहरषाय ह्यांकी भलीभांतिसों बुझाय पाँयपरोंऊधो कहोजाय प्राणप्रियते। कहांगईबतियांवे छतियां सिरानवारी चीकनी लगै हैं प्यारी मनो सनी घियते ॥ दीन्हीं मतिदासी रतिलीन्हीं कठिनाई अति चीन्हींगईबातें घातैंकीन्ही ब्रजतियते। ह्वै हैं सुख ह्यां बिशाल ऐहैंजबहींगुपालजैहैंकाढ़कुबिजाकोशालजाल हियते १०० ॥

तथा। नीर बलबीर छबिहीन दृगमीन ऊधो कैसे जियैं दीनताके तापमें तपायकै। औरना उपाययदुराय सों कहोगे जाय चूकको बिहायममबिनती सुनायकै ॥ नन्दकेदुलारे ह्वैकैबैनकहैं चैनवारे प्राणनके प्यारे ह्यां हमारेढिग आयकै। मुरलीकोटेरिअधरानधरि हरिहमैं फ़ेरि एकबेरिजाहिं दरश दिखायकै १०१ ॥

तथा। एकतो गवांरीनारी जातिपांतितेविहीनलीन दोष कीचमाति ह्योंसबीच बासहै। बोधनहमारे कछुगो-धनको धनरंजशोधन करतिफिरैं बनबन घासहै ॥ ताहू परमानकरि रूसैं मनमोहनसों छोहनहमारे हरिकीनों निरासहै। आपनीकुचालकी कहांते कहैं हालऊधो दीनकेदयालुकी दयाकी एक आसहै १०२ ॥

तथा। शोचहै न माखन चोराइबेको शिवनाथशोच

हैन नीरभरी गागरीकेडारेको। शोचहैन दधिकेलुटाइबे कोगारिनकोशोचहैन मेरीबीर चीरफारिडारेको॥ शोच हैन मोतिनकी लरी चटकाइबेको शोचहैन काकाकीसों बालकके मारेको। शोचहैन रूखीरूखीसांवरे किबातन को शोचहै सखीरी एक औंचक सिधारेको १०३॥

तथा। छ्वैहैं नहिं इन्दीवर न्हैहैं ना कलिन्दीमाहिं नाहिं अबसखी श्याम बिन्दीहू लगायहैं। आनि जानि नीलमणि भूषणनिमेरीबीर दूरिकरि एरी मृगमदको नलायहैं॥ आली काकपालीकी न सुनिहैं रसाली कूक अवतो तमालनके कुंजमें नजायहैं। देखिहैं घटानकोन चढ़िकेअटानबामश्यामसंगबैरअबहमहूंचढ़ायहैं १०४

तथा। वेईग्वालबाल वेईगोधनके जाललखो मोय बिलखाय नन्दराय भयो चेरोरी। वही कालिन्दीकोतट वंशीवटछांह वही वही कुंजलता पुंजबनको बसेरोरी॥ होत न हुलासहीको क्योंहूंहमें हेरिव्रज नाहिं लगैनी- को फीको चन्द ज्यों सबेरोरी। चाली बारसाली हंस- चाली नाहिं भूलै क्षण आली बनमाली बिन खाली यह खेरोरी १०५॥

तथा। दई दई करिकेहों दुखीभईहाय दई सुनैनहीं दई यह कैसो निरदईहै। मेलिकै सँयोग हमैं केलिको करायभोग फेरिसोगहेतु याबियोग बेलिबईहै॥ ताम- रसजासु नैन कोटिमैन प्रभाऐन आलीअभिरामश्याम मणिछीनलईहै। पन्नगीसीपरी अधमरी अरीलोटैहम घरी घरी हरीकी बिथाते मतितईहै १०६॥

तथा। बीतेबहुदिनाफिरिमिलोनासँदेशआय चित्त में अँदेश पाय आंसूधार ढरकै । कहाकरों दई पीरदई यहमोहिंनई अवधिप्रतीत्तिरही सोऊलगीखरकै॥ रतियां न आवैनींद बतियां गुनेगुबिन्द आये सुधिबतियां मों बारबारकरकै। आवनचहत मनभावन भरोस एक आज अभिराम मेरी बामबाहु फरकै १०७॥

तथा। कोऊकहैं ग्वालबाल लियेसंगखेलैंलाल कोऊकहैं बैठिरहे बंशीबटठांवरी। कोऊकहैं चीरचोरिचढ़े हैं कदम्बजाय कोऊकहैंएरीअबहरिसोंमिलावरी॥ कोऊकहैं अघासुर उरकोबिदारिआये कोऊकहैं केशीमारि आये ब्रजगांवरी। ऊधोकहैं सुनोश्याम वेतो ब्रजबाम सब आठोंयाम हियधाम लखैंछबिरावरी १०८॥

तथा। कोऊकहैं आजब्रजराजकोगहोंगीजाय सखा केसमाज छांड़ि लाज भरो भांवरी। कोऊकहैं रासमें नचाय हों मचायधूम हियमेंलगायहोंरीसूरतिवसांवरी॥ देखियेकृपालु ब्रजबालनके जायहाल रावरेबियोगतेंबकैंहैंजिमि बावरी। ऊधो कहैं सुनो श्याम वेतोब्रजबाम सब आठोंयाम हियधाम लखैं छबि रावरी १०९॥

तथा। कोऊकहैं भलेचले जाहुले मुरारीदही सही ब्रजनारी तो बँधाओ तुम्हैं दावरी। कोऊकहैं गोहनेन जैहैंब्रजराजआज कोऊकहैंमोहनेमनायजायल्यावरी॥ कोऊकहैं मानधरिदेखिहैं न हरिओर कोऊकहैं नन्दके किशोरैमैं न भावरी। ऊधोकहैं सुनोश्याम वेतोब्रजबाम सब आठोंयाम हियधाम लखैं छबिरावरी ११०॥

तथा। कोऊकहैं कैसीलसी सोहतिचमेलीबेली मोहै महाहेली सजीशरदविभावरी। कोऊकहैंगयेकहांकुंजते प्रभाके पुंज एरीसखीयाही समैहमैं तू बतावरी॥ कोऊ कहैं कालीदह कूदेबनमालीजाय कोऊकहैं आयआली होयजनि धावरी। ऊधो कहैं सुनोश्याम वेतो बृजवाम सब आठोंयाम हियधाम लखैंछबि रावरी १११ ॥

तथा। कूजननपावैंपिकमोरबनबागनमेंठौरठौरगोपीगनको आदरैं। पथी मधुबनके नृपनके समान बृज सुंदरी करनकी विभूषण बनीगरैं॥ रावरी उपासी भई बावरीकलासीश्यामदक्षिणनिदरिबामबामकीबिनैकरैं। आचरज भारी एक सुनिये बिहारी अब वेदकीऋचाहू ज्योतिषीके पांयपै परैं ११२ ॥

तथा। ऊधोकहैं जैसोवृषभानुकीललीकोहाल सुनियेकृपालुवाकी छांज्योंबैकटतिहैं। कबहूंकैगायउठैंख्यालकैतिहारीचालकबहूंबजायबेणुबनमेंअटतिहैं॥ बूझै बिनबकैहमैंमाखन चुरायोनाहिं आलीह्वैकुचाली तुम झूठीयों नटतिहैं। जाय घनश्याम अब देखिये निकुंज धाम राधाराधाराधानाम आपनो रटतिहैं ११३ ॥

तथा। केसरिकीखौरिभालहियेबनमालवही वैसही अनूपरूपठाटकोठटतिहैं। ओढ़िपटपीतलैलकुटकालिन्दीकेतट रावरेसुभायनसोंगायनहटतिहैं॥ प्यारीचलि कुंजकहै सैनमेंबराखबैन खोलैंनाहिंनैनजबनींदउचटतिहैं। जायघनश्यामअबदेखिये निकुंजधाम राधाराधाराधानाम आपनो रटतिहैं ११४ ॥

तथा। कोऊब्रजबामाश्रीश्यामासमुभावैंखरीबिक-
लधरणिपरी धीरजनधारतीं। रतीहैंरतीकुजाकीसूरति
रतीकेआगे तिललोंतिलोत्तमाकोबारबारवारतीं॥ प्रभु
हितदेवनकी सेवनकराहिंठाढ़ी बाढ़ीप्रीतिगाढ़ी कोऊ
आरतीउतारतीं। तबहीं पपीहाधुनिसुनि धामधामनते
धायधाय गोपबधू धुरवा निहारतीं ११५॥

स०। गोपिनके अँशुवानकेनीर पनारेबहे बहिकेभ-
येनारे। नारेभये नदियांबहिके नदियांनद ह्वैगये काटि
करारे॥ बेगिचलौ तोचलौब्रजको कबितोषकहैंबहुप्रा-
णनप्यारे। वैनदचाहत सिन्धुभये अबसिन्धु ते ह्वैहैं
जलाहलसारे ११६॥

क०। विरह बिकलभई लागी पछितानबाल ढूंढ़त
फिरतबनबनप्राणप्यारेको। अतिअकुलानिभरीद्रुमनि
लतानिपूछैं कहोअहो देखेकहूं नन्दकेदुलारेको॥ शशि
काप्रकाशहुतौ जहांलगिहेरेहारि फिरि फिरि देखेकारि
अधिकअँध्यारेको। पुलिनमेंआयगुणगायमनमोहनके
बोलीं सुखदीजै आइ लोचन हमारेको ११७॥

स०। दीठिपरे जबलौं मनमोहन तौलौं निहारतहीं
रहीप्यारी। मोहनीमूरति मोहनीकेमन छाइ न कैसेहूं
जायबिसारी॥ क्षीणपरीतिय आननकीछबिहोतप्रभात
ज्योंचन्द उजारी। भारीबिथात्तसँभारीपरी तिहिबार
गिरी वृषभानुदुलारी ११८॥

तथा। तजिमोहिं बिदेशगये सजनी नहिं आयेकहौ
दिनकैसेभरौं। बहुकेलिकरी मनमोहन के सँगते मनते

कबहूं बिसरौं ॥ दुखदेन मनोजलग्योनिरदेहिरदे नपरै कलकैसीकरौं। बहिनीरजनैन निहारे बिना कहिबीरमैं धीरज कैसेधरौं ११९ ॥

क०। पातीमेंकहांलौं लिखौंकहियो पथिकजाय भायोसोई कियोरहै काहूके कहनहौं। जानिके अधीनतजी तलफतमीनलौन आनीउरदयाभरे कपटमैंऐनहौं ॥ सांवरेमें तरसत रावरेके गोहनको कहाकहौं मेरेमनमोहनको मौनहौं। कैसेधरौं धीरनैनदेखेबिन चैनहैन प्यारेसुखदैन हायलगे दुख दैनहौं १२० ॥

स०। सूरतितेरीबसैउरमें अरुतोसुधि जायनहींबिसराई। भामनमोहन होयरह्यो नित होतरहै हितकीसरसाई ॥ कागदमांझ कहांलौंलिखौं गुणजात लिखेनहिं तेरीनिकाई। तेरे बियोगते तातीहुती जबपाती पढ़ीतब छाती सिराई १२१ ॥

क०। फरकनलागीहैबांह आंखफरकनलागी प्यारे मनमोहनको मिलन जनावैहैं। आंगीदरकनलागीतनी तरकनलागी बोलिबोलिबायस हियेको हुलसावैहैं ॥ चन्दनसमीर चन्ददुखसरसावते हेतेवेमेरेमनमाहिंसुख सरसावैहैं। आजमोहिं होतसबसगुनसुहावनेहैं जानति हौंआलीबनमाली आजआवैहैं १२२ ॥

तथा। पथिकसँदेशोजाय कह्योमनमोहनसोंबहुरि कहनलाग्यो बिरहकहानीसी। रावरोई ध्यानधरैं गुणनिको गानकरैं रावरे बियोगसों रहत बिलखानीसी ॥ वाकोचित लागतनकहूं गृहकाजनिमें देहदूबरई सोन

जातपहचानीसी। बारबार बाँचिबाँचिछातीसों लगाव तिहै पातीप्रेम सानीजानि रावरी निशानीसी १२३॥

तथा। आवनसुनतलगीमारगबिलोकनकोनैननको चावभयो मुखदरशनको। नागरीके श्रौननको चौगुनो भयोहै चावप्रीतमकेमीठेमीठेबैननिसुननको॥ करनको चावभयोसरसपरसकोहै रसनाकोचावभयोबतियांकरनको। अधरनकोचाव रसपानको भयोहैनयो चावहैभयोमनमोहन मिलनको १२४॥

स०। राधिकाके मिलिबेको गोबिन्द कितेकदिनान लौंदेहहितासी। प्रीतिकरी रसरीतिकरीभरी नाहींमेंहां अरुहां हियनासी॥ योंकविग्वाल विशालबढ़ायकैछांड़ि गयो सिगरी गुणगासी। दासीकी फांसी फँसाय गरो अविनासीबन्यो यह आवतहांसी १२५॥

तथा। वहनाथहुतेतबसाथहुते मथुरापतिनाथकहावतई। कछुऔरके औरभयेसबतौररुखाई लईरसियाह्वै दई॥ कबिग्वाल अचम्भोयहीएकहै भलाऔर तोबात भईसोभई। सुधि केलनकी भुज मेलनकी वह खेलन की कहाभूलिगई १२६॥

क०। घटाघहरातहै पौन हहरातहै बुन्द भहरातहै गातहै कापिनी। कोकिला कूकते हूकहिये होतहै राम चरितरकहैकौनसों आपिनी॥ पीयबिनुसोगिनीयोगिनी सीबनी मौनमेंमौनसी बिरहजपजापिनी। फूलसबशूल भेकलीकांटाभईरातिरकासिनिभईसेजभईसांपिनी १२७

तथा। प्यारे जी वियोग में तिहारे चित चैन गयो

भरलो खानपान सबमुरझाईछाईहै। घूमिघूमि प्रेमसों निहारिवेकी गौनसमैं तेरेहायएकपल सुधिनाहिंजाईहै॥ पंखहून दीन्हें रामकैसेउड़ि मिलों जाय हाफ़िज़चलत अबकोऊना उपाईहै। मिलिबो बिछुरि और मिलि के बिछुरिजैबोविधनाकेवशजोहोतासोंकाबिसाईहै १२८॥

तथा। जाकेदेह रोगहोय औषध विचार करै जाको तन कंचन ताहिदवा कहादीजिये। अनतरपटभयेकोर खोजिबोअवश्यकह्यो लेरेनितरहें ताको खोजकहालीजिये॥ रामलाल अमृतके सागरको छोंड़ कौन पोखरन तटजाय खारी जल पीजिये। ऊधो तुम बार बार कहा ध्यान ध्यानकहोध्यान सूंनजाय ताहि ध्यानकहा कीजिये १२९॥

तथा। बूड़तसमुद्रदुख पोतभये ऊधोतुम प्रभुको सँदेशो पाय आनँदउलहियो। जायबेको तुमकोप्रताप कहो कैसेकै हमको तुम्हारोदर्श दुर्लभसुलहियो॥ चित मेंअपने आपआपही विचारिदेखोदेहलोंनातोनेकनेह को निबहियो।ऊधो कृपाकै बहुभांतिआपु पायन परि मेरीगुपालजूते जयगुपालकहियो १३०॥

तथा। प्यारे मनमोहन तिहारे बिछुरते वृषभानकी कुमारीभई खरीकलिकानहैं। जलबिनमीनज्यों बिकल तलफतअतिकहैकविकृपण ऐसीहोतआनबानहैं॥ ज्यों ज्योंकरियतउपचारनकीभरि त्योंत्यों बढ़त दूनी पीर रहे आंखिनहीप्रानहैं। बिरहकी ज्वालनि सोंजरिवे के लेख वाको मरिवेको वचन अशीशकेसमानहैं १३१॥

स०। नेकहीके बिछुरे सबही सुख साजभये दुख दायक भारे। नैनननीर झरीबरसैं तरसैंछतियांबिन प्राणपियारे॥ आलीबियोगबिथा ढरिबेतेभलोमरिबो-मनमान्योहमारे। एककोदुःख मरेमिटिजात बियोगमें होतहैं दोऊदुखारे १३२॥

तथा। लालतिहारेबियोगतेबालबिहालखड़ीतलफै सफरीसी। बातनतापके त्रासनते सखिकोउनजायसकै नियरीसी॥ ह्वैरहे जेठकीज्वालनिमेंजहँ जाड़ेकीराति तुषार भरीसी। ताही उसीरकेधाममें बाससो जाड़ेकी रातिमें जात बरीसी १३३॥

क०। बजी गुपाल बांसुरी परी परेम फांसुरी दृगन हुलास आंसुरी सुचित्त चारु तानमें। चलीगयन्दगा-मिनी मनो स्वरूप दामिनी मनोज पुंज कामिनीकला-निधानध्यानमें॥ परीश्रतापबेलजालपावतीननंदलाल भामिनी भई बेहाल मैनके व्यथान में। शरीर ना सँ-भारती सुनैन नीर ढारती हरी हरी पुकारती हरी हरी लतानमें १३४॥

तथा। जगमगतनरंग सोहति अतिचारुसंग भूषण मनअंगअंगकुण्डलछबिकानमें। जरकसीदुकूललाल बिरखसी लखातिबाल झरकसी झुकातचाल धूमसी सिखानमें॥ घरी घरी उठैकराहि बावरी बियोगनाह फैलिअंगअंगदाहकामकेकृशानमें। निमेषकोबिसारती इतेउतेंनिहारतीहरीहरीपुकारतीहरीहरीलतानमें १३५

तथा। कुसुमकलितकेश रात बैनामननभाल आजत

पूरिनप्रकाशपुंजवक्रचन्द्रमाननमें । चलीलपेट बस्त्रश्वेत शोभामतिजोन्हदेतज्योंतरंगछीरचलैछीरकेनिधानमें ॥ पाईप्राणविवशभावि रसनारहीदशन दाबिलोचनजल भरकिये प्रताप मान पानमें । महा मनोज आरती बिलोलपादधारतीहरीहरीपुकारतीहरीहरीलतानमें १३६

तथा । कुंजनतनरँगरसाल मंजुल बिधुबदन बाल जीतेहैं कोटि चन्द शारद प्रभानमें । गहे अन्योन करन कोल प्रमदाकुल काम नौल लौल रुचिरसुनत सुरनारद चित तानमें ॥ यमुनाके तीरतीर सुमिरत बलबीर धीर व्याकुल प्रतापभई कान्हअन्त्रध्यानमें । सुबासको बिसारती न आंसको सम्हारती हरी हरी पुकारती हरी हरी लतानमें १३७॥

तथा । आंखनते आंसुनकेप्रवाह नितव्यापेरहैं कारे भये शोभा प्रतापकुचपटकै । आहकेदाहमें दहतनिशि वासर देह कृशतकलेवरमें खालरह्योसटकै ॥ ऊधोकृपा कर कहियो सँदेशो एतो गहिके चरण सरोज वाहि नटके । ब्रजकी नवेलीयह बिरहाबिकलबशतजिहैं पिरान अब कान्ह कान्ह रटकै १३८॥

तथा । सींचि सींचि चन्दन सुगन्धन सों अंग ऊधो फूलनसों सांवरे समारे छबि लटके । कुंज कुंज बेलिन मेंनबेलीअलबेलिनकोलैलैप्रतापडोलैओटपीतपटके॥ तेई गातमेरे आवराख चढ़ायबेको सांवरेपठाई योग पातीजकटके । ऊधो उपाव अब दूसरो न आनि रह्यो तजिहैं पिरान अब कान्ह कान्ह रटके १३९ ॥

तथा। नेक नन्दबाबाजी के आंखिनतें सूझतनाहिं यशुदासों गईहैआश जीवनकीघटके। हूकिहूकिहारन में चरती न धेनुऊधो सूखिसूखिशाखारहे वृन्दाबनबट के॥ राधाजी की बाधा परतापहै कही न जात होयरही मुरदा तन क्लेश बीच नटके। बारएक कैसेहू मिलावो प्राणप्यारेनातौतजिहैंपरान अबकान्हकान्हरटके १४०॥

तथा। हँसरही सिगरी चवाई यागोकुलकी भटकी न नेक गुरुजनहू के हटके। लीनह्वै मुरलीके स्वर में आतापदीनीकुलकीकुलीनतानशाइकरनटके॥ तइपीव मेरे अब चेरेभये कुबरीके ऊधो नाहिं जानीही विधाता के घटके। तेहू नाहिं बिसरत बिसारे हिय हूक बान तजिहैं परान अब कान्ह कान्ह रटके १४१॥

तथा। अन्तरउरदाहकोप्रवाह अतिब्यापतहै देखिके प्रवाहब्यापैयमुनाकेतटके। सुनिसुनिकूकबनकोकिलक-पोतनकीहूकह्वैआवतअतासुधिनटके॥ चित्रसीठाढ़ी ह्वै शोचती बिलास ऊधो चितमें उचाटहोत बाटबेनु बटके। सही जाय कौनपै बिहारीकी बिरह शूल तजिहैं परान अब कान्ह कान्ह रटके १४२॥

तथा। होतिजो पषानकी हमारी यहछाती बीर टूटि जाती तेरे नैन बज्रकाविघातमैं। लोहेकी जोहोती चुभि जातीचुम्बचुम्बकमैं मानभरीहोतीछूटिजाती सौंहखात मैं॥ काठकी जोहोती जरिजाती बिरहानलमें कहैंनन्द-राम आहदाहसरसातमैं। हाइप्राणनाथहाथजोरिपायँ माथ धरों मैंनमान्यों तब अबकाह पछितातमैं १४३॥

तथा। अंगन अनंग रंग अंगना उमंगभरी जाइकै उमंगभरी भानुजाके ओखामैं। फूलिरहे फूलनके वृन्द मकरन्दयुत चौगुणीअनन्दत्योंमयूरनकेधोखामैं॥ नंद-राम कामिनी विराजत लतान तर चौंकि चौंकिपरै नंद नंदनके धोखामैं। दाविकैदुकूल ताकोमारिमैनशूलन को झारि झारि फूलनको झांकती झरोखामैं १४४॥

तथा। सोयगईनिशङ्कआजएरीपरयङ्कपर अङ्कभौंह चारो मोहिं अङ्क सों लगागयो। मुरली मुकुट कटि तट पीतपट तैसे अटपटीचाल चित्त मेरोउरझागयो॥ कहै नन्दराम मुरि मन्द मुसकाय नेक समुझिनपायों कछू कानमेंसुनागयो। आगयोअचानकदेखागयोमयंकमुख हागयो कितै कि मोहिं सोवत जगागयो १४५॥

स०। सीरेसमीरनकी वह झूकनि कैलियाकूकनिक्यों सहि जायगी। कैसीविहालपरीवहवाल तचीतनतापन सो दहिजायगी॥ हाथकछू फिरि लागिहै ना नँदराम हिये कि हियेरहि जायगी। हालमिलौ नँदलालनतौ अँशुवानकी धारही में वहिजायगी १४६॥

क०। आलीवहभूलतनचालवनमालीकी मरालहूं उताली ताल ताली ठानिवो करैं। हासके विकास चारु चन्द्रिका प्रकाश कहा वासके विलास बीजुरीन तनि-वोकरैं॥ कहै नन्दराम घनश्यामकी निकाई पर कोटि काम वारिनै विधान वनिवो करैं। वामसव कामछोड़ि श्याम अभिरामकेसु आठौंयाम वैठि गुणग्राम गानि-वो करैं १४७॥

तथा। आपनो हवाल कछूभाषत घन घोरन सों मोरन को शोर सुनि चौंकति चकतिहै। आगिआगि आगिकहि पौनकी झकोरनको नाचत गुलाबलैउसास उचकतिहै॥ कहैं नन्दरामधाम खम्भ परिरम्भन के रंभनकोदेखिआउबाउसोंबकतिहै। ऐसीमनभूतकरीबौ-रीमजबूतीकरीभूतनकोभूतकहिसूतनातकतिहै १४८॥

षटऋतु वर्णन॥

बसन्तऋतुके कवित्त व सवैया ३॥

क०। फूलेहैं रसालनवपल्लवबिशाल बनजूहीऔ पलाश मल्ली आदि बहुकोगनै। कूजत बिहंग पिक कोकिलादि एकसंग गुंजत मलिन्द बन बीथिकानि मैं घनै॥ बहत समीर मन्द शीतल सुरभि धीर रहत न योग युत मुनिगनकेसनै। एरेब्रजरंग ऐसेसमैरहोसंग नतु दहन अनंग सिसु गोपिकानकेतनै १॥

तथा। सुमनअनन्तफूले बिपिन लसन्तपौन सौरव बहत भौंरगुंजै रसमन्तहै। सुतरुफलन्त कूककोकिल कलन्त तजै ध्यान मुनिसन्त जहाँ कोलिकोअगन्तहै॥ सबैरसवन्त औ बियोगिनिको गन्तजहँ रतिहीकोतन्त तोष सुकबिमनन्तहै। बेधेरतिकन्त पायतरुणी यकन्त अब जाहु कितकन्त ऋतुभूपतिवसन्तहै २॥

तथा। संगकी सहेली रही पूजतअकेलीशिवा तीर यमुनाके बीर चमकचपाईहै। हौंतौ आई भागत डरत हियरातैं घेरैं तेरेशोचकरी मोहिं शोचित सवाई है॥ बंचिहै बियोगीयोगीजानि सरदारऐसी कण्ठतेकलित

कूककोकिल कढ़ाईहै । विपिन समाजमें दराज सी अवाजहोति आजुमहाराज ऋतुराजकी अवाईहै ३॥

तथा। सुखदसमीरऋखीकै चलनलागी घटिचली रैनि कछुशिशिरहिमन्तकी। फूलै लागे फूलफारिबौरैबन आम लागे कोकिलै कुहूकौ लागीं मातीं मदमन्त की॥ हरीचन्द कामकी दुहाईसों फिरन लागी आवै लागी क्षणक्षण सुधि प्यारे कन्तकी। जानी परै आजु विरहीन की लिरानी अब आयोचाहैं रातैं फेर दुःखद वसन्तकी ४॥

तथा। वनवनआगिसीलगाइकै पलाशफूले सरसों गुलाब गुल्लालाकचनारोहाय। आइगयोशिरपैचढाय मैनवाननिज विरहिन दौरिदौरि प्राणन सँभारोहाय॥ हरीचन्द कोइलैं कुहूकी फेर बन बन बाजैलाग्यो जग फेरि कामको नगारो हाय । दूर प्राण प्यारो काको लीजिये सहारो अब आयो फेरि शिरपै बसन्त बज्र-मारो हाय ५॥

स०। सखिआयो वसन्त ऋतूनकोकन्त चहूँदिशि फूलिरहीसरसों। वरशीतलमन्दसुगन्धसमीरसतावन-हार भयो गरसों॥ अब सुन्दर सांवरो नन्दकिशोरकहै हरिचन्द गयोघरसों। परसों को विताय दियो बरसों तरसों कब पांय पिया परसों ६॥

क०। आयो परवाना पात डार छांह तम्बू तानि कोकिला दिवान बोर तोर पतनावें चुनि । छड़ीदार कलिया पहारा देति आठोंयाम वायु फूलसे जियामजे-

जिया बिछावैतुनि॥झएडालालसेमर सुगन्धहारिकारा बर बाजत नगारा जो मलिन्दगन गावैधुनि। शबद दराजभो दिवाकरजू पक्षिनके दक्षिणके देश ऋतुराज आज आवै सुनि ७॥

तथा। बिरही दुखारी कामकीन्हो अधिकारी चञ्च-रीकगनजारिदेसु कियोहै दवारीसों। पेड़पत्तझारीकल कैलि बोलीभारी शुभ सौरभपसारी छीनछायो फूल-वारीसों॥ भनतदिवाकरजू छाकेभये कोकिल बसन्ती सारीयुवती शरीरपैन्हे प्यारीसों। फिरेलागे बिटपबेला केफूलफूलेलगे ब्यापेलगेसबमें बसन्तवायुदारीसों ८॥

तथा। पुनि सरसालक मरन्दनलपटिकर दक्षिणसे आइ शुभलागत शरीरमें। मन्दमन्द चालसे मरालके लजात तात बपुक्के पबित्रतानहाये गंग नीरमें॥ सुखद सोहावन सोहावन मुनीशमन नारीसों नवोढ़ागतिचलै अतिधीरमें। भनत दिवाकर सुधासों निशि सनीप्रीत जानी क्याबहारहै बसन्तके समीरमें ९॥

स०। आजसुभाय नहींगईबाग बिलोकि प्रसूनकी पांतिरही पगि। ताहिसमै तहँआयेगोपाल तिन्हैंलखि औरौगयो हियरो ठगि॥ पै द्विजदेव न जानिपरयो धौं कहांत्यहिकालपरे अँशुआजगि। तूजोकहै सखिलोनो स्वरूप सो मो अँखियानमें लोनी गईलागि १०॥

तथा। फूलनदे अबै टेसूकदम्बन अम्बनबौरन छा वनदेरी। रीमधुमत्तमधूकन पुंजनकुंजन शोरमचावन देरी॥ क्योंसहिहै सुकुमारि किशोरि अरी कलकोकिल

नावनदेरी । आवतही वनिहै घरकन्तहि वीर वसन्तहि आवन देरी ११ ॥

क० । कीधौं मोरशोर तजि गयोरीअनेकभांतिकीधौं उतदादुरनबोलतनयेदई। कीधौं पिकचातिकचकोर कहूंमारिडारयो कीधौं वकपांतिकहूं अन्त्रगतकै गई ॥ भींगुर भिंगारैं नाहिं कोकिलि विसारैंनाहिं वैनकहै जैसिंह दशों दिशहूं सोगई । जारिडारे मदन मरोरिडारे मोरसवजूभिगये मेघ कैधौं दामिनी सतीभई १२ ॥

स० । मदमाती रसालकीडारनपै चढी आनँद सों यों विराजतीहैं । कुलजानिकी कानिकरै न कछू मनहाथ परायहि मारतीहैं॥कोऊकैसीकरै द्विजतूहीकहै नहिंनेको दया उर धारतीहैं । अरी कैलियाकूकिकरे जनकी किरचैकिरचै कियै डारतीहैं १३ ॥

तथा । झूरसेकौनेलिये वनवागये कौनेजुआंवनकी हरिआई । कोयल काहे कराहतिहै वन कौने चहूंदिशि धूरि उड़ाई ॥ कैसीनरेश वयारिवहै यहकौनधौंकौनेसों माहुरनाई । हाय न कोउ तलाश करै ये पलाशनकौने दवारिलगाई १४ ॥

क० । कूलनमें केलिनकछारनमें कुंजनमें क्यारिनमें कलितकलीन किलकन्तहै । पढैपदमाकरपरागहूमेंपौनहूमें पातिनमें पीकन पलाशनपगन्तहै ॥ द्वारमें दिशानमेंदुनीमेंदेशदेशनमें देखोद्वीपद्वीपनमें दीपातिदिगन्तहै । वीथिनमें व्रजमें नवेलिनमें वेलिनमेंवननमेंवागनमें वगरयो वसन्तहै १५ ॥

स०। आयोबसन्त दहन्तसखीघर आयेनकन्त न आयेसँदेशन।शम्भुकहैपथिकाय सबैअरु कोऊबिदेशी रहेनबिदेशन॥चन्द्रमुखीदृगतेअँशुवा ढुरिआनि पड़ेकुचयाहीअँदेशन। मानोमयंकसरोजनमें मुक्ताहललैलै चढ़ावै महेशन १६॥

क०।जबतेहमारे प्राणप्यारेहैं पधारे उतधीर नहिं धारेजात पीरहियमेंजगैं। शीतलसमीरभयो तीरकालिन्दीकेतीरबीरबलबीरबिननीरदृगतेंडगैं॥ केशरीसमान जबबिरह परेहैंभान योगज्ञान येगयन्दयूथ तबहीभगैं। बोलीकोकिलानकीकरैहैं शूलहूलहमैंऊधोये कदम्बनके फूलगोली से लगैं १७॥

तथा। औरेभांति कुंजनमें गुंजरतभौंर भीरऔरडौरझौरनमें बौरनकेह्वैगये। कहैंपदमाकर सोऔरेभांति गलियानछलिया छबीलेछल औरछबि छ्वैगये॥ औरेभांतिबिहगसमाजमेंअवाजहोत ऐसोऋतुराजकेनआजदिन ह्वैगये। औरैरसऔरैरीति औरैराग औरैरंगऔरैतन औरैमन औरैबन ह्वैगये १८॥

तथा। पातबिनकीन्हें ऐसीभांति गणबेलिनके परत न चीन्हेंजेये लरजतलुंजहैं। कहैंपदमाकर बिसासीया बसन्तकैसो ऐसे उतपात गातगोपिनकेभुंजहैं॥ ऊधो यह माधोसों सँदेशोकहि दीजोभले हरिसों हमारेह्यांन फूलेबन कुंजहैं। किंशुकगुलाबकचनार औ अनारनकी डारनपै डोलतअँगारनके पुंजहैं १९॥

स०।बूझतुहौ कहावाकीदशा भुवनेशजूवातदृथा

बहिजायगी। सांचीकहेपतियाहुनहीं नहिंकांची कछूहम सोंकहिजायगी॥आशनहींत्रचिबेकी अबै परप्यारीजऊ रहते रहिजायगी। वीसाविसेवन फूलेपलाशन देखिअँ-गारनसों दहिजायगी २० ॥

तथा। कोकिलकूकि कलोलकरैं कलकोइल कूजैनि-कुंजनमें। कीरउदोतकपोतकेगोत छकेमद शोरवगुंजन में॥ किंशुककेतकीकुन्दजुही विकसो भुवनेशजूपुंजनमें। काहेनऐसीसमैअलितोहिं सोहातअहैरसभुंजनमें २१॥

क०। कलितकमण्डलकमलकलिकाके करिकिंशुक कुसुमवरअम्बर सुहायोहै। ठौरठौर भौंरनकी श्रेणीजप माल मौरसजेहैं रसालजटा जूटसोंबढ़ायोहै॥ शिष्यनके गीतकीरकोकिल कपोतसँग पढ़ै कै उमँगचहूं ओरशोर छायोहै। कंत वनमालीको पठायो लाली सों लसन्त आलीरी वसन्तभनिसन्त बनिआयोहै २२ ॥

तथा। गानकोकिलानके सुबांसुरीकीतानमनोसजैं वनमाल फूलजालयेअनन्तहैं। सोहतसमद अलिकोक नद पैंभ्रपातमुखपैं प्रभातजनुलोचन लसन्तहैं॥उड़त परागपट पीतफहरात सोई हियो हहरात बिरहिनिको तुरन्तहैं। आयोरी वसन्त श्यामाकन्तको बनायवेषदे-खोविलसन्त यहकैसो छविघन्तहै २३ ॥

तथा॥ललितलताके नवपल्लवपताकेसजैं बजैंकोकि लानकेसुकलगानके निशान। ठौरठौरमौरनपै भौंरभीर भोरकरैं दौरदौरगावत नकीवनकी तौरगान॥फूलनकी सेनमेन सैनसीकरैहैं चैनशीतलसुगन्धमन्दमारुतचल

तबान। सजिकैसमाजसाज बिरही बिकलकाजयहिब्र-
जराजऋतुराज आजहरैं प्रान २४॥

तथा। जामेंपंचसुरधुनि सुखमाबिराजिरहीदेईसुबि
नोदमेंसुबाससदागातिहै।कुन्दनकीकलाचहुंओरझला
मलैहोति मनोउमापातिकीउदोतिज्योतिआतिहै॥माध
वसेवैरसालबिकसेविशालबेला ठौरठौर जामेंशुकबानी
हुलसति है। किधौंसुखराशीहै वसन्त ऋतुदीनद्याल
किधौंअविनाशी पुरीकाशी बिलसतिहै २५॥

तथा। सबकुल यूथमिलिबन्धु जीवसोहतहैंकसरमें
अबरसुखग जनबासहै।करैंअलिगानफिरैंभौंरमुदभरी
सङ्गचहूं ओरआवत गुलाबकीसुबासहै॥सजेआतिमुक्त
द्युतिझालरति काननमें कुन्दनाकिकला फैलिरहीं आस
पासहै। मौरहैरसाल रटैशाखाद्विज दीनद्यालब्याहको
समाज धौंवसन्तको प्रकाशहै २६॥

तथा। सोहैशुकबानीचहुंओर मंजुकाननमें षटपदी
धुनिप्रात बेलाबिलसन्तहैं। केतकअशोकपर सेवतसु-
धीरद्विज बोलतरसाल सुमन सबिकसन्तहैं॥ तरुणीके
देखनको नैननचावैं जितमाधवीसुराते युतबातविक-
सन्तहैं। उपजैविशालरुचिदेखतहीदीनद्यालकिधौंसन्त
सभाकिधौं शोभितवसन्तहैं २७॥

तथा। झूले२भौंरबन भावरैंभरैंगेचहूं फूलि२किंशुक
जकोसोरहिजाथहैं॥द्विजदेवकीसोंवहकूजनिविशासिकूर
कोकिल कलंकीठौरठौरपछितायहैं॥आवतबसन्तकेनए
हैंजोपैश्याम तोपैबावरीबलायसों हमारेऊउपायहैं। पीहैं

पहिलेईसों हलाहल मँगाय याकलानिधिकी एकौकला चलनन पाइहैं २८ ॥

स० । नागरसैंहैं खड़ेतरुकोऊ लियेकरपल्लवमेंफल फूलन । पांवड़ेसाजिरहेहैंकोऊ कोउबीथिनबीचपरागदु कूलन ॥ फूलभरैं द्विजदेवकोऊपर काननमाहँ कलिंदि लाकूलन । आगममें ऋतुराजकेआजसबै बिधिखोय सबै निजशूलन २९ ॥

क० । औरभांतिकोकिलचकोरठौरठौरबोलैंऔरै भांति शबदपपीहनके व्वैगये । औरैभांतिपल्लवलिये हैं बृंद बृंदतरु औरैछबिपुंज कुंजकुंजनउनयगये ॥ औरै भांति शीतलसुगंध मंदडोलैपौन द्विजदेवदेखतनऐसे फल ह्वैगये । औरैरीति औरैरङ्गऔरै साज औरैसङ्ग औरैब-नऔरैछिनऔरै मन ह्वै गये ३० ॥

स० । देखतहीवनफूले पलाशविलोकतहीकछु भौंर की भीरन । बावरीसी मतिमेरी भई लखिबावरी कंज लिखे घटे नीरन ॥ आजिगयो कढ़ि ज्ञानहियेते नजा-निपरचो कबछोड़िके धीरन । कंधन कौनके लोचनहोयँ पराग सनेहरसात समीरन ३१ ॥

क० । फेरिवैसे सुरभिसमीर सरसानलागे फेरिवैसे बेलि मधु भारन उनैगई । फेरिवैसे चहाके चकोर चहुँ बोलेफेरि फेरिवैसे कैलियाकी कूकन चहूंभई । द्विजदे-वफेरिवैसे गुनीभौंर भीरैं फेरिवैसेही समय आयोआ-नँदसुधामई । फेरिवैसे अंगनउमंगअधिकाने फेरिवैसे चन्द्रक मतिमेरी भोरी ह्वैगई ३२ ॥

तथा। फेरिवैसे बेलिमंदडोलन चहूंघा लागी फेरि वैसे फूलन मंद झरिलागीहौन। फेरिवैसी भूमिभई बासित सुबासन सों फेरिवैसे पूरित परागन भयेहैं पौन॥ द्विजदेव फेरिवैसे सोहे तरु पुंजकुंज कुंजनमें फेरिवैसे मोरह्वैगयेहैंमौन। फेरिवैसे पलटि गई हैं गृहवापिकाऊ फेरिवैसे पलटि गये हैं चारोंओर भौन ३३॥

तथा। फेरिबनबौरेमन बौरेसे करनलागे फेरिमन्द सुरभि समीरह्वै कितन्तगो। फेरिधीर नाशन पलाशनमें लागी आगि बहुरिबिरहिजूह डरपि इकन्तगो॥ द्विजदेवदेखि इन भाइन धराते फेरि जानिये कहांधौं भाजि सोहिमंत अन्तगो। फेरिउरअन्तरते डगरि गयोईज्ञान फेरिबनबागनमें बगरि बसन्तगो ३४॥

स०। फूले निकुंजघने द्रुम मंजुल भृङ्गलतानिनतानकहे। अतिशीतल मन्दसुगन्ध घनेचहुं तीक्षण तीर समीरबहे॥ धुनिकोकिलकीरकपोतनकेभर काननकानन जातसहे। उरशालतशूलसमूह प्रतापवसन्तमेंकन्तवसन्तरहे ३५॥

तथा। नितहेरतबाटथकीं अंखियांदुहूं पावकसे अंशुवान बहे। दिनके गिनतेंघिसिछोरगये जियराअब धीर अधीरगहे॥ कहियो इतनोई सँदेशो भटू बिछुरेलै कैतव काहकहे। अब पाहन सो हियरोके प्रतापवसन्त मेंकन्त वसन्तरहे ३६॥

क०। डोलेहैं तमाल पत्र पांवड़े अवाईसुन गावतहैं गुनीजनइतउत छाहके। फूलिउठे कुन्दये मलिन्द वेग

चायउठे कूकिउठीं कोकिला कलापी चित्तचाहके ॥ प्यारे आमबौर उठेपक्षीगण दौरउठेचांदनी चँदोवाजबलागे नरनाहके। गिलमें गुलाबनकी गद्दीचारु चम्पकीबागन बीचडेरेहैं वसन्त बादशाहके ३७ ॥

तथा। तालनपैतालपैतमालनपै आलनपै लालमा लवालपै रसाल सरसो परै। पढ़ेकवि रामचन्द्रकुन्द कंद वंदनपै चंदनपै चंदपै मलिन्द दरसो परै ॥ केकी केलकेसर करंज केतकी पैकंज कारकूलकोकिलकदम्ब परसो परै। रंगरंग रागनपै संगही परागनपै वृंदावन बागनपै वसंत बरसोपरै ३८ ॥

तथा। सुमन समुद्रहूतेशीश मोरफंदहूते चारुमुख चंदते अनंद दरसो परै। पीतपटवसनहूते कुंद से दशनहूते मंद विहसनहूते रससरसो परै ॥ मंदरबितानहूते वंशी सुर गानहूते सैनपैनबानते पराग परसो परै। भूषण विलासहूते लाल गुंजमालहूते पौर बनमालते वसंत बरसो परै ३९ ॥

तथा। पीरीतन सारीशीश परतेउतारि डारी जबते वसंत ने आगम जनाई है। पीरा आभूषणतन पीर करन लागो सखीविना पीवप्यारे पियराई उरछाईहै ॥ ऋतुकीपियराई सभाइन्द्र मनभाईहमकोपियराई दुख दाईहो आईहै। जोई पियराई तनहूक होतमेरी आली सोईपीरे फूलसौति मालिन बीन लाई है ४० ॥

तथा। आयोहै वसंत बौरे बागन बसीहै धूमवेलिन परागपुंजअरुपीरो दरशानहैं। गुंजि रहें भौंर ठौर ठौर

फुलेफूलनमें फवतसमीरमैंसुगंधसरसानहें॥ नन्दराम देखौतो पपीहरापुकारत है पीउ पीउ प्यारीके पियूष अधरानहें। कैसे लाल चलिबेकी चरचा चलावत हौ ऐसे समै ऐसेबैनबानके समान हैं ४१॥

तथा। लोकनसवाँरो तौ सवाँरो ना बिगारो कछु लोकनसवाँरि नर नारिन सवाँरतो। कीन्हो नरनारि तौन्प्रेमको प्रचारदेतो प्रेम को प्रचारो तौ न मैन को प्रचारतो॥ मैनको प्रचारो तो प्रचारोना सँयोग देतो कीन्हो जो सँयोग तो बियोगना विचारतो। नन्दराम कीन्हो जो वियोग विधनातो भूलि बौरे बनबागन बसन्तनाबगारतो ४२॥

तथा। आसनमें आसन अकाशमें अवासनमें आलिनमें आलिनकी आलिनमें दौरिगो। कहैं नन्दराम त्यों विहंगनमें बागनमें बनमें बिनोदनमें बौरनमेंबौरिगो॥ क्षितिमें छबीलनमें छपामें छपाकर में छत्तिन में छातिनमेंछौकि छल छोरिगो। देखुरी बसन्त मैं बतावत हैकन्तमें नसारीसरसन्तमें अँगारन बिथोरिगो ४३॥

तथा। फेरिवैसे कुंजनमें गुंजरनलागेमौंर फेरिवैसे कैलिया कुबोलन रहैलगी। फेरिवैसे पातन पै पूरिगो पराग पीलफेरि त्यों पलाशन में आगिसी बरैलगी॥ फेरिवैसेपपिहा पुकारैलगे नन्दराम फेरि वैसे धाम धामसौरभ भरैलगी। फेरिवैसे उधमीवसन्त बिसवासी आयो फेरिवैसे डारनमें डाकसीपरैलगी ४४॥

तथा। आयोरी बसन्तकूकि कैलिया पुकारै लगी

हमसी गरीबिनीको गातगारिडारैगी। मन्दमन्द मारुतसुगन्धसरसान लगी ज्वालको जगाइकै जरूरजारिडारैगी॥ नंदरामबागनमें फूलैलगी बेलीबन करिकैअधीरिनी सुधीर टारिडारैगी। एरी तसवीर तौ देखा दै मोहिं मोहन की आखिर कदम्बन की डारैं मारिडारैगी ४५॥

तथा। जालिम जुलुमदारजाहिर जहानजौन डगर डगर विष बगर बगारिगो। कहैं नंदराम ब्रज गांव की गरीबिनिन रावरे की चेरिन पर बेरिनि को मारिगो॥ ऊधोजी हवालकहिदीजो नंदलालजूसों गोकुलकीगैल गैल गजबगुजारिगो। फूलैना पलाश येपलाशकैबसंत बाज काढ़िकैकरेजा डारडारनपै डारिगो ४६॥

तथा। नदिनमें नारनमें नारंगी अनारनमें नवल निवारनमें तौर बदले गये। नन्दराम ग्रीषम गुसामैंगरमीमेंगैल गहब गुलाबन सों अंग मसलेगये॥ ऊसर के अंगनमें नीर नदी रंगनमें तरलतरंगन में हरिण छलेगये। हेमगिरिमंदिर में हिमगिरि कंदर में अंदर के अंदरमें बंदर चलेगये ४७॥

तथा। गरजैं ना मेघ तोम तरजैं ना छूटिछटा लरजैं ना लौंगलता दादुर दरारैना। बोलै ना कलापी ये कदम्बनकी डारनपै कूकिकूकि कोकिला कुठारन सों मारैना॥ कहैं नंदराममेरी कहीमानु मेरीभटू बंदकरु झोरन सोंझीली झनकारैना। प्राणनकोप्यारोपरदेशमें परोहै पीयपावसमें पपिहाये पपीहरा पुकारैना ४८॥

तथा। आवै ना बलाक पियगावै ना विथाके गीत धावैना धरापै धौल धारा धधकारैना। छावैनाछराका क्षिति छोरलौंछबीलीछटा छन्दनछपामेंपौन डारडाहरारैना॥ कहैंनन्दरामहौं पछारीपरी ग्रीषमकी तीषनतहूं पै बुन्दबाणनसों मारैना। इन्द्रतेकहौकीमैंमरीहौंआपहीते धनुरकत चमोरी तरवारिसी निकारैना ४९॥

तथा। चंचलाकी चमक चहूंघा चोख चायनसों चाहिचाहि चित्तमें कृपाणचोटकैरहे। इन्द्रको शरासन शरासन सरसचाण बुंदके विधानन बिनोदनबितैरहे॥ कहैंनन्दराम तैसे चातकचकोरजोर बोलिबोलि बिरही बलाक बिषबैरहे। आदर कै राखौं प्राण कैसेहूक्यनादरलै यमके बिरादर ये बादर उनैरहे ५०॥

स०। जादिनते परदेशगये पिय तादिनतेतनुताप सी दौरत। आवते बेगि इतै नँदरामजू देखते बाग बसंतसमौरत॥ चंदउदोत न होतउतै अरबिंदमलिंद के वृन्दन भौरत। याहीअँदेशमहामनमें सखिकावहि देशनहीं बनबौरत ५१॥

ग्रीषमऋतुके कवित्त व सवैया ४॥

क०। ग्रीषमप्रचण्डघामचण्डकरमण्डलतेउमड्यो हैदेव भूमि मण्डल अखण्डधार। भौनते निकुंज भौन लहलहीडारनकै दुलही सिधारी उलही ज्योंलहलही डार॥ नूतन महल नूलपल्लवनछ्वै छ्वै सेद लवालि सुखावत पवन उपवन सार। तनक तनकमणिकनक नूपुरपाइ आयगई झनकझनक झनकाये वार १॥

स०। ग्रीषममें तपै भीषमभानु गई बनकुंजसखीन केमूलसों। घामते कामलता मुरझानी बयारकरैं घन-श्यामदुकूलसों॥ कम्पति औ प्रकटे परस्वेद उरोजन दत्तजू ठोढ़ीके मूलसों। ह्वै अरविंद कलीनपै मानों झरैं मकरंद गुलाबके फूलसों २॥

क०। भरियत गहरे गुलाब हद हौदन सुधरियत रजत फुहारे तदबीरके। ढरियत ढारनसुढारन नहर नीर दरियत घनसार शरद गँभीरके॥ करियत तर अतरनसों बिछौनाकवि शोभजूउघरियतबातायनतीर के। चन्दन पलँगअरबिंदनकीसेजपर सुंदरि सिधारी आजुमंदिर उशीरके ३॥

तथा। दोऊ अनुरागभरे आये रंगभौनभाग मघ-वाशचीकोलखिलागतसहलहै। बैठे एक आसनपैएकै संग एकैरंग चल्योना परतअंगकोमलकहलहै॥ एकन लै अतर लगायो देव दोउनके छिरक्यो गुलाबकीन्हों बिजन चहलहै। लैकै करबीनेपरबीने अलियां अलापैं मंजुसुरपुंजनसों गुंजत महलहै ४॥

तथा। शीतलमहल महाशीतल पटीर पंक शीतल कै लीप्यो भीति क्षितिछाति दहरैं। शीतल सलिलभरे शीतल बिमल कुण्ड शीतल अमल जल यंत्र धारा छहरैं॥ शीतलबिछौनन पै शीतलबिछाई सेज शीतल दुकूल पन्हि पौढ़ेहैंदुपहरैं। देव दोऊ शीतल आलिङ्ग-नन देत लेत शीतल सुगंध मन्द मारुतकी लहरैं ५॥

तथा। शीरेतहखाने तामें खासे खसखाने सोंधे

अतर गुलाबकी बयारैं रपटतहैं । भूधर सँवारे हौद छूटतफुहारे और बारे भारे तावदान धूप दपटत हैं ॥ ऐसे समै गौन कहु कैसेकै बनै तो प्यारे सुधाकेतरङ्ग प्यारो अङ्ग लपटत हैं । चन्दन किवांर घनसार की पगार दई तऊ आनि ग्रीषमकी झार झपटत हैं ६ ॥

तथा। शीतलगुलाब जलभरिचहबच्चनमें डारिकेकमलदलन्हायबेको धसिये । अङ्कभरि प्यारीनेहनादिन सुदिनभरि बारिके बिहारते नबाहिरनिकसिये ॥ कालिदासअङ्गअङ्ग अगरअतरसंग केसरसमीरनीरघनसार घसिये । जेठमेंगोबिंदलाल चंदनकेचहलन भरिभरि गोकुलके महलन बसिये ७ ॥

तथा। खासे खसखाने खासेखानेतहखानेनल छूटतसरोजकी सुगंध रपटीरहै । अतरअरगजेसों केसर गुलाबनीर छिरके किवांर द्वार झारझपटीरहै ॥ कृष्ण लाल जेठमें गमनकैसेकीजे प्यारे चंदनमलैकैपंक अंक दपटी रहै । ज्वाल उदभटी कुचवटी कामगटी तटी हटी मरहटी नटी लटी लपटीरहै ८ ॥

तथा । जीवनको त्रासकर ज्वाला को प्रकास कर भोरहीं ते भासकर आसमान छायो है । धमका धमक धूप सूखत तलाव कूप पौनको न गौन भौन आगीमें तचायोहै ॥ तकिथकिरहे जगसकलबिहालहालग्रीषम अचरचर खचरसतायोहै । मेरेजान काहूवृषभानुजग मोचनको तीसरो त्रिलोचनको लोचन खोलायोहै९ ॥

तथा।उछरिउछरिभेकीछपटैंउरगपैउरगपगकेकिनके

लपटें लहकि है। केकिन की सुरति हियेकी ना कछूहै भये एकीकरी केहरन बोलत चहाकिहै॥ कहै कवि ब्रह्म चारिहेरत हरिन फिरैं वैहरि बहति बड़ेजोरसों जहकि है। तरनिके तवन तवासीभई भूमिरही दशहूंदिशान मेंदवासी यों दहकि है १० ॥

तथा। जेयेबिना जीरण सों जलकी जिकिर जीभ जखो जात जगत जलाकनकेजोरते। कूपसर सरिता सुखायसिकतातेभई धाईधूरिधौरन धराधरकेओरते॥ चेनीकवि कहत अनातप चहतसब अगिनसों आतप प्रकाशचहूंओरते। तावासोंतपतधरा मण्डलअखण्ड ल सुमारतण्ड मण्डल दवासों होतभोरते ११ ॥

तथा। अमल अटारी चित्रसारी वारी रावटी में चारहदुवारी में किवांरी गन्धसारकी। कामानल छायरह्यो चांदनीबिछौना पर छविफविरही क्षीरसागर कुमारकी॥ श्रीपतिगुलाववारे छूटतफुहारेप्यारे लपटैं चलत तरअतरबयारकी। भूषणनेवारी घनसारभीजि सारीभार तऊना बुझानीनेक ग्रीषमकेझारकी १२ ॥

तथा। चंडकर झारन झकोरत सरोष पौन तोरत तमाल गन मन्ददिनभारोसो। घर्षके धरणि गिरितम के प्रतापजाके देखत मजेजरेज जगतनिदारोसो॥तरु क्षीणछायासरसूखतसमुद्रबनकरणविचारिदेखो आतप अँगारोसो। छावत गगनधूर धावत धधातआवैचाप चढो ग्रीषम गयन्द मतवारोसो १३ ॥

तथा। तपैइतजेठ जगजातहै जरतजासों तापकी

तरनि मानो भरनि करतहै। इतही असाढ़ उठे नूतन सघनघनशीतलसमीरहिय हीतलभरतहै॥ आधेअंग ज्वालन के जाल बिकराल आधे सुखद समोद हिय धीरज धरतहै। सेनापति ग्रीषम तपत ऋतु भीषमदै मानो बड़वानलसों बारिधि बरतहै १४॥

तथा। चलैलूकपवनलुकारीजनुसम्बतकेमानोभालु जुरे देह मुख जुरे बाघके। मारतंड तेजसे बिकल भये जल थल रावटी उशीर राजा जाने निशि माघके॥ पीये पीये करत जहान रहे रातौ दिन सरिता तलाव आवपीपी पोषेदाघके। भनतादिवाकर अनलतेअधिक आंच कांच चुपे कांकरी दुपहरी निदाघके १५॥

तथा। फहरें फुहारनीरनहरनदीसीबहैं छहरेंछबीन छाम छोटिन की छाटीहै। कहै पदमाकर त्यों जेठकी जलाकें तहां आवें क्यों प्रवेश वेष बेलिनकी बाटीहै॥ बारहूदरीन बीच चारहू तरफ़तैसो बरफ़ बिछाय तापै शीतल सुपाटीहै। गजक अँगूरकी अँगूरसे उँचाहै कुच आंसव अँगूरको अँगूरहीकी टाटीहै १६॥

स०। ऋतुग्रीषमकीप्रतिबासरकेशवखेलतहैंयमुना जलमें। इत गोपसुतावहिपार गोपाल बिराजतगोपि-नके गणमें॥ अतिबूड़तिहै गति मीननकी मिलिजाय उठैं अपने थलमें। यहिभांति मनोरथ पूरि दोऊ जन दूरि रहैं छबिसों छलमें १७॥

क०। चलतिउसासकीझकोरघोरचहूंओरनहींहैस-मीरज़ोरमूधाकहैंलोगहै।शोचनकीलहरैंनठहरैं सकोचन

तेरोबिकरहोयनहींइयामहैधुसोगहै॥ मृगनभ्रमतमेरेमन केमनोरथयेफेरेनहिंफिरैलगीप्रीतितृषाकोगहै। धीरधरौं धीर कैसे तपतउशीर भौन नाहींयह ग्रीषमरी भीषम बियोग है १८॥

तथा। पतितहुजनकोहै देतिसुमनैसुखायलगे अति काननमें बात तापमें वली। मित्र वृषकोहै जहां भारी दुखकारी बनो बोलैं दृगशाते बिनकाल वृथाही छली॥ जीवन जलावति है लावतिहै आगि मनो दीनबाल सारस न मिलै जलकीथली। देत नाहिं बसनसुबसन उतार बिन किधौंयहग्रीषमकैघोरखलमंडली १९॥

पावसऋतुके कवित्त व सवैया ५॥

क०। कण्टकित होत गात बिपिन समाज देखे हरी हरी भूमि हेरि हिया लरजतुहै। निपट चवाई भाई बन्धुजे बसतगांउ दांउपरे जाानिकै न कोऊ बरजतुहै॥ एते पै करणध्वनिपरतमयूरनकी चातकपुकारि तेहताप सरजतुहै। अरजो न मानी तू नगरजोचलाति वेर एरे घन वैरी अब काहे गरजतु है १॥

स०।बरसैंबनकुंजनपुंजलताासिकमंजुमयूरनकोसरसैं। मधुघोरकिशोरकरैं घनये चपलाचलचारु कलादरसैं॥ अलिहोवलतूचलवेगिहहाउततौबिनप्राणपियालरसैं। उमड़ैंघुमड़ैंघुमड़ैं घनआजमिहीबुंदियानमडोबरसैं २॥

क०। पौनहहराई बनवेली थहराई लहराई सौरभ कन्द बननकी सानते। झिल्ली झुननाई पिक चातक चिच्याई उठे बिज्जुछहराई छाई कठिनकृपानते॥ कहै

परमेश चमकतजुगनू नचाय मेरे मनआई ऐसीउक्ति अनुमान ते। विरही दुखारे तिन पर दई मारे मानो मेघ बरसतहैं अँगारे आसमानते ३॥

तथा। कारीघटाकामरूपकामकोदमामोबाज्योगाज्यो काबिग्वालदेखिदामिनि दफेरसी। लपाकिझपकिआयो दादुरसुनायोस्वर हमहूं बिरह सखि मदनकोरेरसी॥ बालम बिदेश बसे चातकके बोलकसे ज्योंज्योंतनुदहै त्यों त्यों औरैहरिवेरसी। बूंदन को द्वन्द सुनि आंखें मूंदि मूंदिलेत आयोसखिसावनसँभारेशमशेरसी ४॥

तथा। कूकिउठींकोकिलान गूंजिउठीभौंरभीरडोलि उठे सौरभ समीरसरसावने। फूलिउठींलतिकाहू लौं-गनकिलोनीलोनीझूलिउठींडालियांकदम्बसुखपावने॥ चहकि चकोर उठे कीरकरि शोरउठे टेरिउठींसारिका बिनोद उपजावने। चटकि गुलाब उठे लटकि सरोज पुंज खटकि मरालऋतुराज सुनि आवने ५॥

तथा। नीलपट तनुपै घटानसी घुमाईराखौ दंतकी चमकसों छटासीबिचरतिहौ। हीरनकी किरनैं लगाइ राखै जुगुनूसी कोकिलापपीहापिकबानी सों ढरतिहौ॥ कीच अंशुवान की मचाऊं कबि देवकहै प्रीतमबिदेश हैंसिधारिबोहरतिहौ। इन्द्रकैसोधनुसाजिवेसरिकसति आजु रहुरेबसन्त तोहिं पावसकरतिहौ ६॥

तथा। घनकी घमंक औ बनक बक पांतिनकी बी-जुरीचमकक्कर बालसीदेखातरी। ललितालतानलाखि-यतुहै नदान और कहै परमेश त्यों बहत वेसबातरी॥

मोरनको शोर चहूंओर होत ठौर ठौर दादुरकी दंदि घोर करें तनु घातरी। सुख सरसावन लगेरी लोग गावनको विना मनभावन नसावन सोहातरी ७॥

तथा। छोटेछोटे कैसे तृण अंकुरित भूमिभये जहां जहां फैलीं इंद्र बधू वसुधानमें। लहकि लहकि सीरी डोलति बयारिऔर बोलत मयूरमाते सबनि लतान में॥ धुरवाधुकारैं पिकदादुर पुकारैं बक बांधिके कतारैं उड़ें कारे बदरान में। अंशभुज डारे खरेसरयू किनारे प्रेम सखी वारिडारे देखि प्रावस वितानमें ८॥

स०। धावन कोऊ पठाऊं उतै उनतौंइहिऔसरमें कहे आवन। गावन एरीलगे मुरवा धुरवानभमंडलमें लगेधावन॥ छावन योगी लगे शिवलालसुभोगीलगे दशादरशावन। तावनलागोवियोगिनको तनुसावन घोरलगे वरसावन ९॥

क०। पौनके झकोरन कदम्ब झहरान लागे तुंग फहरान लागे मेघ मण्डलीनके। भनत कवींद्र धरा सारन भरन लागे कोश हीनलागे विकासितकन्दलीन के॥ उटजनिवासिनकोत्रासउपजनलागे सम्पुटखुलन लागेकुटज कलीनके। माचो विरहीनके अहीन स्वर झिल्लिनके दीनभये वदन मलीन विरहीनके १०॥

तथा। वियत बिलोकतहीमुनिमनडोलिउठे बोलि उठेविरही विनोदभरेवनवन। अकलविकलह्वैविकानेरे पथिकजनउर्ध्वमुखचातक अधोमुखमण्डलगन॥ बेनी कवि कहत महीके महा भाग भये सुखद सँयोगिनि

वियोगिनिके ताप तन। कंजपुंज गंजन सुखी दलके रंजन सोआयेमानभंजनपै अंजनबरण घन ११॥

तथा। घुमड़िघुमड़िआये बादर उमड़िधाये सांवरे बिदेश छाये औसर करारेमें। दादुर पपीहामोर शोर चहुंओर करैं मारतमरोरि उठिकाम ज्वार जारेमें॥घूम जल धारेकरैं उमंगिसलिलसरैं गाजकीगजौ मरैंबैस मतवारेमें।झूकैंझुकि जातोचढ़ो झूलिझूलिगातीदेखि फाटै बीर छाती हा कुठौर भयेभारेमें १२॥

तथा। ग्रीषमते तचिबचि पावस मरूकै पाई तामें फूकैंजुगुनूझबूकैं लागें पौनकी। हूकैंउठैं हियमें कनूकैं लखेंबूंन्दनकीझिल्लिहूनमूकैं यहबिसासीबैरी भौनकी॥ चपला चहूंकैंत्यों त्यों तनमें भभूकैं उठैं ऊकैंमारे मुरवा कहोंमें कौनकौनकी। दादुरकी हूकैं धायकरत अचूकैं उर कोकिलकीकूकैं तापै बूकैंदेतीनोनकी १३॥

स०। चहुंघाते घरीघरी घेरिघना घनकी घटाघोर घनीघहरै। छिनहीं छिनछीननको बरछी छितिलोछिन छाया छटा छहरै॥ चकवाचकई बक चातक चीरिनकी चिचियानि चहूं चहरै। बिलखाय बियोगिनि वेदन से बिजयानंद बैठरहे बहरैं १४॥

तथा। झूमिरहे घनघूमिघने बलि बोरत भूमि मनो चहुं घाघिरि। है अफसोस न रोषकरौंत्रिनहौंस लतारहि रूखनसों भिरि॥ बेनी पपीहनमोरनहूं हहरान न दूंदि करै बहुतेफिरि। ज्यांडरपै तड़पै बिजुरी परै काहू बियो-गिनि पै न कहुं गिरि १५॥

क०। कूकैलगींकोइलैं कदम्बनपै बैठिफेरि धोयेधोये पात हिलिहिलि सरसैलगे ।बोलैंलगे दादुरमयूरलगे नाचनफेरिदेखिकै संयोगीजन हियहरसैलगे॥ हरिभई भूमिसीरीपवन चलनलागी लखिहरिचंदफेरप्राणतरसै लगे।फेरिझूमिझूमिवरषाकी ऋतुआईफेरि बादरनिगोरे झुकिझुकि वरसैलगे १६ ॥

तथा।आयोऋतुपावसलों जोबनचढ़ाईकरि सैसब कोफंदबंद छोरन चहतहै। ग्रीषमसनान मिट्यो जात गुरुजनभीत पवनसुछन्दताझकोरन चहतहै॥कामको घनेरोघन वरसिसनेहवुंद तनमन प्राणसबै बोरनचहतहै।वयसनदीमें लालप्रेमको प्रवाहबाढ्यो लोकलाज सीमाहाय तोरन चहतहै १७॥

तथा। कूकैलगीं कोकिलैंकदम्बन पै रातोदिन मोर पिकशोरहू सुनातचहुंपासहै । मंदमंदगर्जतघनेरीघटा घूमिघूमिबहुतसमीरधीरसंयुतसुवासहै॥जिततितनारीनरगावैंसुखपावैंअति झूलताहिंडोरेलालबाढ़तहुलासहै। हिये झरसावनको काम सरसावनको बुंदबरसावनको सावनसुमासहै १८॥

तथा। कैधौंवहिदेश जहांप्रीतमपियारेबसै घोरेघटा नहिंघूमिघूमिघहरावैहै।कैधौंचमकतनाहिंचपलाचहूंघा तहां कैधौं नासुरेशकवौं बुंदझरलावैहै॥ कैधौंकामकुटिलनव्यापत करजेकैधौं कोऊनाहिं मेघऔ मलार राग गावैहै। कैधौंलाल पावसकीरातमें पपीहापापीबारबार पीपीकर कूकनासुनावैहै १९॥

तथा। कौन परी चूक मोसों एरी मेरी बीर जासों कीनीमनमोहनने ऐसी हायघातियां। छायेपरदेशपायों कछुनासँदेशयेही जियेमैंश्रँदेशकबहूं भेजतनापतियां॥ कामकीसताई दिनरोयकै बितावोंलाल कैसेकलपावों पीरहोतिअतिछातियां। तापैकलपावनकोबिरहबढ़ावन को आईदुखदायी फेरिसावनकी रतियां २०॥

तथा। आयोपुनिपावस अमावसनिशाभोदिनछिन विनप्यारे क्यहि भांतिन बितायहौं। किरचैंकरेजाहूकी कोकिलैंकरनलागीं मोरशोरसुनि किमिचितठहरायहौं॥ बेदरदीबैरीबदबदरा बडेईबुरे नितप्रति तासां प्राण कैसे कै बचायहौं। परत न एकौ पल कललाल क्योंहूं हाय काके गरे लागि कामतपनि मिटायहौं २१॥

स०। ऋतु पावस आइगो भागनते सँग लाल के कुंजनमें बिहरौं। नहिं पायहौ औसर औरयुवत्व कहा अबलाज लजाइमरौं॥ गुरु लोग औचौचँदहाइनसों बिरथै क्यहिकारणबीरडरौं। चलिचाखैंसुधाअभिलाखैं करौ यहि पाखै पतिव्रतताखैधरौ २२॥

क०। घनकोघमक औ बनकबकपांतिनकी बीजुरी चमककर बालसी दिखातरी। ललितलतान लखियत है नदानऔर कहे परमेशत्यों बहतबेसबातरी॥ मोरन को शोर चहुंओरहोत ठौरठौर दादुरकी द्वन्दघोर करैं तनुघातरी। सुखसरसावनलगेरी लोगगावनको विना मनभावन न सावन सुहातरी २३॥

तथा। डोलैपौन परसिपरसिजल बूंदनसोंबोलैमोर

चातक चकित उठी डरि मैं । कहांलौं बराऊं दई मारे मैनबाणनसों थकिरही केतिकौ उपायी करिकरिमैं॥दत्त कवि प्यारे मनमोहन न पाऊंकहौ मनसमभाऊंरीकहा लौं धीर धरिमैं। छाय मेघ मगन सुहाये नभमण्डलमें आये मनभावन न सावनकी भरिमैं २४ ॥

तथा। दूरियदुराई सेनापति सुखदाई देखो आई ऋतुपावस न पाई प्रेम पतियां। धीरजलधरकीसुनत धुनि भरकी सोदरकी सुहागिनकी छोहभरी छतियां॥ आईसुधिबरकी हियेमें आइखरकी सुमिरिप्राणप्यारी वह प्रीतमकीबतियां। भूलीअवध आवनकी लालमन भावनकी डगभई बावनकी सावनकी रतियां २५ ॥

तथा। मदमयीकोयल मगनह्वै करतकूकैं जल मयी मही पगपरते न मगमें। विज्जुनाचैं घनमें बिरह हिय बीचनाचैं मीचु नाचै व्रजमें मयूर नाचैनगमें॥श्रीपति सुकविकहै सावनसुहावनमें आवनपथिकलागे आनँद भो अंगमें। देहछायोमदन अछेह तमक्षितिछायो मेह छायो गगन सनेहछायो जगमें २६ ॥

तथा । भलीकिधौं ह्यांकीपीर बाढ़ीहै उहांकी भरै नैन भरनाकी सुधिआय उरवाकी है। चपला चलाकी करै नटकीकलाकीतैसी दौर बादराकी औधुकारधुरवा कीहै ॥ हैनकछुवाकी औधआसरा निशाकी तामेंआइ परै डांकी ये भकोर पुरवाकीहै। टेरपपिहाकीकरै सेल ममताकी डरै करै उरभांकीसे पुकार पुरवाकीहै २७॥

तथा। कण्ठ किन होतगात विपिनसमाज देखेहरी

हरीभूमि हेरि हियोलरजतुहै। निपट चवाई माई बन्धु जे बसत गांव दाउपरै जानिकै न कोऊबरजतुहै॥ एते पै करन धुनि परत मयूरनकी चातक पुकारि तेह ताप सरजतुहै। अरजो न मानी तू न गरजो चलतबेर एरे घन बैरी अब काहे गरजतुहै २८॥

तथा। पौनहहरायबनबेलीथहरायचारुलहरायसौरभ कदम्बनकीसानते। झिल्लीझननायपिकचातकाबिचार उठैं विज्जु छहराय छाय कठिन कृपानते॥ कहैकरनेश चमकत जुगुनूनचाय मेरेमनआइऐसीउक्तिअनुमानते। विरही दुखारे तिनपर दईमारे मानो मेघबरसतहैं अँगारे आसमानते २९॥

तथा। छायो नभ बरसत बारिद बिजय नन्द आनँदअथोरचारोओरउमड़तहै। पायोमुदमालतीकेकुंज कुंजगुंजतहै भृङ्गपुंजवृन्दगेह गेहतेभगतहै॥ धायोदेश देशते विदेशीसब कण्ठलायो निज निजकोभर्योमोद सों जगतहै। आयो सखी सावन सुहावनसहीपै मोहिं बिन मन भावन भयावन लगतहै ३०॥

स०। कर कागद लैकै बियोगिनिनारि लिखै इमि प्रीतम को पतियां। यहिपावसमें परदेशछये बलिहारी तुम्हारी शिलाछतियां॥ सखियांपियसंग हिंडोरेचढ़ीं कहैं गीतमेंगाभी भरी बतियां। अतिकारी डरावरीसांपिनिसी मोहिंशालति सावनकी रतियां ३१॥

तथा। सखियां कोउ झूंकते झूलन के डरिलागहिं प्रीतमकी छतियां। कोउडोरधरेकर एकत्योंएकते पीकी

चचावातिहं घातियां ॥ कोउगाइमलार रिझाइरहीं अरु कोउकरं रसकी चतियां। कव पीरनिवारिहौ मो हियकी पिय जातीहिं सावनकी रतियां ३२ ॥

क०। कीधौं उन बन घन घेरि न घुमड़आवे कीधौं काचभूतलमेंप्रकटीनहींनई। कीधौं दाबिदादुररहेडराइ व्यालके कीधौं पापी पापीहैं पियाकीटेरनादई ॥ घासीराम कीधौं बक बाजन की त्रासमान्यो कीधौं वहि देश वीर पावस नहींठई। कीधौं कामश्यामजू के तनुते निकसिगयो कीधौं मेवजूझे कीधौं बिजुरी सतीभई ३३ ॥

तथा। कीधौं वहि देश घन घुमडि न वरषत कीधौं मकरन्द नदी नद पथ भरिगे। कीधौं पिकचातक चतुर चक्रवाक बक कीधौंमत्त दादुरमधुर मोर मरिगे ॥ मेरे मन आवत न आली प्यारे आवतजो कामकूर निकरि महीतेधौंकि करिगे। कीधौं पंचशरहर फेरकेभसमकियो कीधौं पंच सरजके पांचोंशर सरिगे ३४ ॥

तथा। कीधौंमोरशोरतजिगयोरी अनेकभांतिकीधौं उतदादुर न बोलत नयेदई। कीधौं पिक चातकचकोर काहू मारिडाख्यो कीधौं बकपांतिकहूं अन्तर्हितह्वैगई ॥ बालनकहत घरआयेनाहिं लालनजोजेतीविपरीतिरीति मानहु उतै ठई। मदन महीपकी दुहाई मिटि देशतेधौं कीधौं मेघजूझे कीधौं दामिनी सतीभई ३५ ॥

तथा। धीरगयो हीकोसुनि शोर बरहीकोवीर नाम लैके पीको या पपीहा आनि पीकोहै। मेघ अवली को घोर पौन अवलीको वहै मार अवलीकोहाय मारअव

लीकोहै ॥ नाहसे पथीको कहूं आइबोनठीकोकहै देखि अवनीकोरंग लागत न नीकोहै। डारै अधजीकोमोहिं कीनेअधजीकोयहजानतनजीकोमेदहरतनजीकोहै ३६

तथा। पीउ पीउ करत मिले जो मोहिं आजपीउ सोनेचोंचचातकमढ़ाऊंअतिआदरन। कठिनकलापिन के कण्ठन कटाइडारौं देतदुख दादुर चिरायडारौंदाद-रन॥ मोतीराम भिल्लीगन मन्दिर मुँदाइडारौं बधिक बुलाइबांधौंबनकी बिरादरन। बिरहा की ज्वालन सों जिरहजराइडारौंश्वासनउड़ाऊंबैरीबेदरदबादरन ३७॥

तथा। लगीसो लगाय लंकखेहानिखराबकरौं मारि करौं मोरनअहारमारजारेको। सुकाबिनिधानकानआंगु-रिन मूंदिमूंदि सुनिहौं न घोर शोरभिल्लीभनकारेको॥ भेकनकी भीर सहसाननमिटाय डारौं मेटिडारौं गरब गरूरघनकारेको। पाऊंजो पकरिकहूं जाल सों जकरि तन फीहाफीहा करौं या पपीहा दईमारेको ३८॥

तथा। कैधौं वा बिदेश घनघुमड़ि नछावैंकहूं कैधौं वा बिदेश कहूं दामिनी न दरसै। कैधौं वा बिदेश मोर शोरनामचावैंजोर कैधौं वाबिदेश बगबोलिकै न हरसै॥ कैधौं वा बिदेशमें नझींगुरझनकझुण्ड कैधौं वाबिदेश न जुगुनूज्योति सरसै। कैधौं वा बिदेशमें न रामचरित रसै जो कैधौं वा बिदेशघटाघेरिकै नबरसै ३९॥

स०। निज नैननको बरषा वरषातरसातनआंशुन धोवतीहैं। कहुं रामचरित्रन रोवतीहैं दिलकी दिलही बिच गोवतीहैं॥ हमतो नित पावसकीनिशिमेंसखिसू-

नीसिज टकटोवतीहैं । धनिवै धनि पावसकीरतियांपति
कीछतियांलगि सोवतीहैं ४० ॥

तथा । धनिवै जिन प्रेमसने पियकेउरमें रसबीजन
बोवतीहैं । धनिवै जिन पावसमें पिसिकै मेहदीकरकंज
मलोवतीहैं ॥ धनिवैजिन सूरतिसाजिसजैं हमलाजकै
बोभको ढोवतीहैं । धनिवै धनिसावनकीरतियांपतिकी
छतियांलगिसोवतीहैं ४१ ॥

तथा । धनिवैजिनपावसकीऋतुमेंनितप्रीतमेंप्रीति
सँजोवती हैं । धनिवै जिन कारीघटामें अटा विच बि-
ज्जुछटा छबिछोवती हैं ॥ धनिवैजिन रामचरित्र हिये
हिलिहोंसनहर्षित होवतीहैं । धनि वै धनि पावसकी
रतियां पतिकीछतियां लगि सोवती हैं ४२ ॥

क० । पौनभकभोर घनघोरघने घटाअटा अटा
बिचबिरहकेतापतन तापिनी । कहूं कल नापरैकामिनी
काकरैदरै दुखदापतेदामिनी दापिनी ॥ दादुरौ भींगुरौ
मोरसब शोरतें रामचरित्तर बधे बोलि पिक पापिनी ।
भूतभूषणभयो चुरीचुरइलिभई राति रकसिनिभई से-
जभईसांपिनी ४३ ॥

स० । अब सावनमें इतनी गरमी भरमी मतिभोग
नभावतहै । ऋतुमेंअनरीतिभई सजनी रजनीदिनजो
उविआवतहै ॥ कवि रामचरित्रकहै किमिकै सुखसोइये
तापन तावतहै । बरसातमें वारि भरे बदरा बरसावत
ना तरसावतहै ४४ ॥

क० । लागे भरिजोर मोर कुहुकन कुंजनमें पपिहा

पियाको नामलैलै कै पुकारैरी। कहैं नृपराम परताप कारी कैलियाहू कूकदेतीहूकै अरु झिल्लीझनकारैरी॥ दादुर रटनि सुनि हियरा फटन लाग्यो जुगुनचमकि सुधि सकल बिसारैरी। हाय प्राणप्यारे बिनुघेरिघन आयेचहुं बिरहव्यथामें मारमारमारडारैरी ४५॥

तथा। उमाड़ि घुमाड़ि घन बरषनलागे चहूं दशहूंदिशामेंलागी दमकनदामिनी। पौनको झकोर अंगअंग को मशोरदेत सावनकीकारी अतिभारीलगै यामिनी॥ रामपरताप ऐसी समैजाके प्यारोढिग वाको अति आनँद वो धन्यधन्य भामिनी।मेरे प्राणप्यारे तो बिदेशमें बसतहाय परीसूनीसेजतलफातिह्यांमें कामिनी ४६॥

तथा। कैधौंवहि देशमें घुमाड़ि घनघेरैंनाहिं कैधौं वहिदेशदामिनीहूंनाहिं दमकै। कैधौंवहि देशमेंन बरसतबारिद रामपरताप कैधौंझिल्लीहू नाझमकै॥ कैधौं वहि देशमें नबहातिबयारि कहूं मन्दमन्द शीतल सुगन्धभरीरमकै। कैधौंवहि देशमें पपिहराहू पीउपीउ टेरदै दैपीउको चेतावे न उधमकै ४७॥

स०। प्यारे औ प्यारी अटापर बैठिकै देखत दोऊ घटाकोछ्वारी। बारहिं बार गराजतबादर दामिनियां करतीज्यों पटारी॥ बोलैप्रिया हँसिपीतमसों यहकारी घटा उनई हैअटारी। रामप्रताप संयोगीसुखीपैबियोगिनिको भईबूंद कटारी ४८॥

तथा। घेरीघटाघहराय रही दरकावतुहै बिनप्रीतम छाती। कामिनियां हियरातरसावत दामिनियां चहुंते

दरशाती ॥ रामप्रतापभकोरतपौन भईदुखदायिनिसा- घनराती । तापै वियोग बढ़ावतहै वहपीकहांबोलिपपी- हरा घाती ४९ ॥

तथा। कीवहिदेश बसै जहँ प्रीतम घेरि घटानकबूं घहरै हैं। कीवहि देश न दामिनि दीपतिवंदनमेह नहीं छहरै हैं ॥ कीवहि देशनरामप्रतापजू पौनभकोर चहूं लहरैहैं ।कीवहिदेशमें पापी पपीहा पियानकहै जोपिया वहरैहै ५० ॥

क०। पीउपीउ रटतपपीहा ऋतुपावसमें दादुर पु- कारसोन वांचीकुल चादरन। कोकिलकी बोलनमयूर मेरु नृत्यनसों भीली भनकार सुनिभयेजिवकादरन । होतोयहकाल आलीआल जो दिवाकरजू हावभावकर तोकलोलअतिसादरन। जाइवह देशको बसतहैहमार साईं रोजरोज विरह बढ़ावै बैरी बादरन ५१ ॥

तथा । आयोऋतुपावसमुरेरमेरुबोलेमोर धुरव धुंधार बुन्द वारिकेभरै लगी। भनतादिवाकर सुरेशचाप उगेव्योमदादुरदराजसीअवाजकरैलगी ॥ भाइभाइ वात घहरातघनघोरशोर चातककी शोरचहुँओरबगरै लगी । भिल्लीभनकार बकपांतीहहकारसुनि नेकुन सोहातआली अंग थहरै लगी ५२ ॥

तथा। पवन वजीर वीर दादुर सिपाहीसब पावस मुसाहब पयोद राखेतंवूतानि । भनत दिवाकर छिर शोरघोरघन चपलानिशानसाज धनुइन्द्र किरपानि बरहीसवार बकपांति हहकार पिक चारण पुकार बो

लेबीर रसजूहू बानि । बूभके बेहालबालआयोरतिना-
थसैन कादर कियोहै ब्रजनाथ बिन सूने जानि ५३ ॥

तथा । भमकि भमकिभूलिराग की सिखतिरीति
छहरि छहरि बुन्द गिरत अकासते । भनत दिवाकर
करत मोरशोरबन बिहरेबहूटी वीर मेदिनीहुलास ते ॥
चातक चवाईचाई सुरतिबढ़ावै चावचूनरसुरंगरंग बा-
सीहैसुबासते । सावन सिरायो मनभावन न आयो
आली कादरकरत कारी बादरप्रबासते ५४ ॥

तथा । पालोगे शचानपिक कोकिलहेवानहेतु बेनी
कोलुराइगाड़ दादुर लुकावोगे । भनतदिवाकर सुरज
शीशफूलज्योति आहरसुखाय जिवभूमिप्रकुलावोगे ॥
बिरह दवारिज्वाल पेड़पातजारिडारो बार बगराइके
अधार लजवावोगे । रूंधन उसाल लुक पावनप्रकाश
करि प्राविट प्रबलतो को ग्रीषमबनावोगे ५५ ॥

तथा । कैधौंवह देशशेष दादुरचबाइडारोकैधौंशैल
शिखर शिखीन बैठबोलेना । भनत दिवाकरकीइन्द्रके
न देशवह धारामें न धारजल गानवह टोलेना ॥ भरी
लोगन मूकभई शबद सुनावै नाहिं बिपिन बिहंग संग
करत कलोलेना । ऐसेसमय द्वन्द्व मोहिंबुन्दन उठाय
हाय पावस निरानो श्यामआवत अबोलेना ५६ ॥

तथा । सरिता कलोलकरे बनिता हिंडोलधरे चप-
लाचमक चहुँओर नभ दौड़ोना । लतालपटततरु मं-
गन चलतमरु मुरवारहतहरु नेकुसंगतोड़ोना ॥ भनत
दिवाकर समुद्र ग्राहमड़ो कच्छ अच्छत प्रतच्छप्रीति

गावत हैं थोड़ोना। सावन भयावन अँधेरी रैनिभादौं कान्ह रहैगी अकेली भौनराधे संगछोड़ोना ५७॥

तथा। भादौंकीअँधेरी धुरवाकीलटकेरीपाक सासनकेरेरीछिनछिन छोड़े बानरी। बोलत भयान भोगी वासना तजतयोगी पतिसे विहून ना सोहातखानपानरी॥ भनत दिवाकर करार दरियावछोड़ी नावके नवा ह्वादशाहछोड़े शानरी। पावसप्रवलमेरेपियको छोड़ायदीन्हों दोपन विदेशीकरै कैसे कै पयानरी ५८॥

तथा। बूढ़के बढ़तकाम पावस सुखदधाम मेघ अभिरामश्याम वक व्योम उसके। भनत दिवाकरविहंग चोंचा खोता लाइ करत वहार सुलहार लेत खुसके॥ देखिहरिआई भूमि गाइन हुलास होत रागकी प्रकास वोविकासकास कुसके। कुचसहरात घहरात घनछन छन धन धनआली यहकौन चालीरुसके ५६॥

स०। जाइकेद्वारकावैठिरहेजुलहेअबलाब्रजकीदुखभारी। आवतमेघनयेउनयेजुगुनूदरसेसरसोनिशिकारी॥ कोकिलकूककरे हियहूकउलूकसोबोलतपीकपुकारी। आंशु भरेंअँखियासेतिया छतियांकरकेबकेहायविहारी ६०॥

क०। श्यामसम वादर तड़ित पीत चादर से आदरसे वात लगे मीठी घनघोरसे। छातीबनमालसेलसे हैं धनु देवराज मोतिनकी पांति वकवंशीटेरमोरसे॥ भनत दिवाकर सु आनन निशाकर से हीरन सेजुगुनू धमारनके शोरसे। ऐरे पापी पावस अमावस केराति असकस अनुहारि पिय तोरे मन चोरसे ६१॥

स०। घहरानी वनै घनघोरघटा करिशोर उठै बहु मोरअटा। घनश्यामैंमिलेतियताहीसमै चलीदामिनीसी फहरै दुपटा॥ वाकेनैनघनेघनेघालैंकटाक्ष भनैभुवनेश सुकौनछटा। जनु विश्व फतै करिबेके हितै फरकावै मनोभवभूपपटा ६२॥

क०। घहरि घहरि घनघोरि चहुँओर छाये छहरि छहरि छबि शोभा सरसारैंरी। पवन झकोर जोर दादुरमयूरशोर चोपभरेचारोंओर झिल्लीझनकारैंरी॥ एरीमेरी बीरबनै धारत न धीर अब पातकी पपीहापीव पीवकै पुकारैंरी। यन्त्रको न धारैं अरु मन्त्रको उचारैं जाते तजिकै प्रवासमनमोहन पधारैंरी ६३॥

स०। बन बागनके प्रतिकुंजनमें घनीलोनीलवंग लतालहरैं। बसिकै नभमण्डलमें भुवनेश भले क्षण जोन्हहियो थहरैं॥ बरषैं घनआंशुन ब्याजन नीर तऊ पै अधीर भये घहरैं। पपिहाऊ पिया रटलायोकरैं मन मानुषको नहिंक्यों हहरैं ६४॥

तथा। चमकीसी फिरैं चपलाचहुँघा द्युतिदन्तनकी जबहीसरसै। सुनिकैभुवनेश जु बैनसुधा समकोकिल बोलनिको तरसै॥ यहमेरेही अंगनके परसादतेपावस की सुखमादरसै। लखिकै अलकैं घनआंशुन ब्याज बड़ेबड़े बूंदन सों बरसै ६५॥

क०। गरजैं चहूंघा घनघोर मोर शोरकरैं लरजैं लतानवृन्दशोभासरसाईहै। दामिनीदमाकैं जुरिजुगुनू चमाकैं कहुं कैलियादमाकैं भरीकूकैं सुखदाईहै॥ मनै

अनुरागै प्रीति रीति उरजागै लखि इन्दु भटूरागै ब
याग छहराईहै। अरज विहारीपै हमारी भुवनेश येत
मिलन योगुयेश पावसऋतुआईहै ६६॥

तथा। पवनभकोरै भकभोरै भोरै बुन्दबौरै घ
घनघोरै बौरै दौरै चहुँ ओरैरी। बिज्जुछटा कोरै बि
योरैजी रसालकोरै आवतअसाढ़ भारीठौरै ठौरैखो
री॥ जोरै प्रेमभोरैचित धीरज विथोरै नाहिं मान
निहोरै कान दादुरये फोरैरी। तोरैलाजछोरै कुलका
बरजोरैवीर मोरनकी शोरै मोरै मनहिं मरोरैरी ६७

स०। घूमिघने घुमरैं घनघोर चहूं चढ़ि नाचतमो
अटारी। त्यों द्विजदेव नई उनई दरशाति कदम्बनिक
छविन्यारी॥ चूनरिसीक्षितिमानोबिछीइमिसोहतिइन
वधूकीपत्यारी। काहिन भावति ऐसीसमयठकुराइनिय
हरियारी तिहारी ६८॥

क०। चूनरीसुरंग सजिसोहीअंग अंगनि उमंगा
अनंगअंगनालौ उमहतिहै। सौंधं बैठि भांकतीभ
रोखनिते कारीघटा चौहरेअटापै बिज्जुछटासीजगा
है॥ द्विजदेवसुनिसुनि शवदपपीहराके पुनिपुनिआनँ
पियूषमें पगातिहै। चावनचुभीसीमनभावनके अंकतिग
सावनकी बूंदै ये सुहावनी लगतिहै ६९॥

तथा। सावनके दिवससुहावनेसलोनेश्याम जी
रतिसमरविराजैश्यामाश्यामसंग। द्विजदेवकीसौंतनु
बाटिचहूं घारहोचुंवनकोचहलचुचातचूनरीकोरंग॥पी
पटतानेहरपानेलखैलपटानेउमाहिउमाहिघनश्यामद॥

नीको ढंग। रति रन भीजे पैन मैन मद छीजे अरु रस बश होतऊ तनक पसीजे अंग ७० ॥

तथा। कारो नभ कारीनिशि कारियै डरारी घटा झूकन बहत पौन आनँदको कन्दरी। द्विजदेवसांवरी सलोनी सजी श्यामजूपै कीने अभिसार लखि पावस अनन्दरी ॥ नागरीगुणागरी सुकैसेडरैरैनिउर जाकेसंग सोहैं ये सहायकअमन्दरी। बाहन मनोरथ उमाहैंसंग वारी सखी मैनमद सुभटमशाल मुखचन्दरी ७१ ॥

तथा। घहरि घहरि घन सघन चहूंघा घेरि छहरि छहरि विषबुन्दबरसावैना। द्विजदेवकीसों अबचूक मति दाबि अरे पातकी पपीहातू पियाकी धुनि गावैना ॥ फेरि ऐसो औसर न अइहै तेरे हाथ येरेमटकि मटकि मोर शोरतू मचावैना। हौंतो बिनप्राणदेहचाहततजोई अब कताहिमरिशिमतू अकाश बीचधावैना ७२ ॥

तथा। घूमिकैचहूंघा धाय आवैंजलधरधार तड़ित पताके बांके नभमें पसरिगे। द्विजदेव कालिन्दीसमीपनके नीपनके पात पात योगिनी जमातनतेभरिगे ॥ चातक चकोरमोर दादुरसुभटजोर निजनिजदांवठांव ठांव न सँभरिगे। बिन यदुराय अबकीजैकहामायहाय पावस महीपके चहूंघा घेरे परिगे ७३ ॥

तथा। उमड़िघुमड़िघनछांडत अखण्डधारअतिही प्रचण्ड पौन झूकन बहतुहै। द्विजदेव संथा कोलाहल चहूंघा नभ शैलते जलाहलको योग उमहतुहै ॥ बुधि बलयाको सोई प्रबल निशाको मेघ देखि ब्रजसूनोबै

आपनो गहतुहै । येहो गिरिधारी राखो शरण तिहारी अब फेरि यहि बारी ब्रज बूड़न चहतुहै ७४ ॥

तथा । जबते हमारे प्राणप्यारे हैं पधारे उत धीर नहिं धारेजात पीराहियमें जगैं । शीतलसमीरभयो तीर कालिन्दी के नीर बीर बलबीर बिनु नीर दृगते डगैं ॥ केशरी समान जब विरह परैहै आन योगज्ञानयेगयन्द यूथ तबहीं भगैं । बोली कोकिलानकी करैहैं शूल हूल हमें ऊधो ये कदम्बनके फूल गोलीसे लगैं ७५ ॥

तथा । दूबरीभईहैदेह कूबरी सनेह सुने ऊबरी न शोकसिन्धु पाय ज्ञानबोहिते । रहीं अकुलाय हायकरैं शिरको नवाय कहैं यदुरायरहे केतेदिनकोबिते ॥ गाढ़ये अषाढ़ देखि बढ़ति वियोग बिथा दामिनी दमक मोर शोरहैं जिते तिते । आये घनश्याम काहू बामनेसुनाई टेरि चौंकि चौंकि उठीं चन्दमुखी चहुंघा चिते ७६ ॥

तथा । सावन सोहावन या लागत भयावन सों आवन अवधि अब शोचैं गजगामिनी । ऐहैं कबहूंधौं बलबीरहयां किनाहिं ऊधो कैसे धीरधरैं ये अधीर ब्रज कामिनी ॥ जहां तहां योगनकी ज्योतिजगैं ज्वालजैसी यमकी जमाति सी जनाति जाति यामिनी । जारैहैप-पीहरा पुकारै पीउपीउ टेरि घेरिमारैंबादर दूरेरि मारै दामिनी ७७ ॥

तथा । लीने लेत ज्ञान कोऊ छीने लेत आनिबानि लूटेलेत कोऊहाठिलाजके समाजको । द्विजदेवकीसोंया अंध्यारीकी अँधा धुँधिमें लेत कोऊ कान्हसुखसम्पति

के साजको॥ येरीमोरी तोहिं जऊ मानि मानदोष तऊ समयबिचारि कीजै ऐसे ऐसे काजको। तोहिं इतमानक अनादरनघेरोउतआदरनघेरोजायजायब्रजराजको ७८

तथा। बरसतमेहनेह सरसत अंगअंग झुरसतदेह जैसे जरत जवासोहै। कहै पदमाकर कालिन्दीके कन्द बनपै मधुवनकीन्हो आय महत मवासोहै॥ ऊधो यह ऊधम जितायदीजो मोहनको ब्रजसों सुवासो भयो अगिन अवासोहै। पातकीपपीहा जलपानकोन प्यासो कहा व्यथित बियोगिनिकेप्राणनको प्यासोहै ७९॥

तथा। सोहत सुभगबैल बाहन बिमलआय बिशद बकालीशेषहार लपटायोहै। सादरसों लाय बर बादर बिभूति अंग दादुर उमंगधुनि डमरू बजायोहै॥ कारी घटा गजछालछधारा जटाहै बिशाल दामिनीछटात्रिशूल सुन्दर सुहायोहै। काटिहै कलेशसोद दैहैरी भट्ट बिशेष धरिकै महेशवेष सावन लखायोहै ८०॥

तथा। केकिनके नाचगान कुहूकूककोकिलकी रटनि पपीहराकी नामधुनि ठानीहै। बूंदनके पातअलिलोचन श्रवतजात जाततृणजातपुलकावलिनिशानीहै॥ माल हैं बिशाल बकपांतिनकी दीनद्याल वारिवाहनये वृन्द बन्दना बखानीहै। झलाझलझल चपलाकीद्युतिध्यान भई पावसन होय भक्तिकलाप्रकटानीहै ८१॥

तथा। घनकी घनकघनघटा घनकत आलीदामिनि दमक देत दीपक प्रकासहै। बूंदनके फूल जाल धनुलै बिशाल माल आय झुकिमेघसो प्रणामको हुलास है॥

मोरनके शोर चहुँओर विनय दीनद्याल पवन भकोर चोरकेरें आसपासहे। पूजन करत प्रीतिरीति प्रकटाय यह पावस न होय परमेश्वरको दासहै ८२॥

तथा। श्यामछविधरेफिरैं धुरवा धरणि छ्वैरी इन्द्र-धनु पीतपट चटक दिखायोहै। दामिनि दमक द्युतिदंत दंत वोर सोई कुण्डल अमोल लोल गतिचमकायोहै॥ विशद वलाकनकी पांति बनमाल अलि मन्द मन्दमेघ वांसुरीलो स्वर गायोहै। आवन अवधि रही प्यारे मन-भावनकी सावन सुहावन सों साजसजि आयोहै ८३॥

तथा। पावसमें जागि अनुरागिरी सरोज नैन रैनि दिनदेत उपदेशको मनोज मुनि। नन्दके किशोर बिन कैसे रहै जीवछिन पीउ पीउ होति पपिहाकी चहूं ओर धुनि॥ अंग थहरानलगे लता लहरान लखि सखिनहिं धीर पीतपट फहरानगुनि। घटा घहरानछिनछटा छह-रानलगी हियो हहरानलगो भरिभहरान सुनि ८४॥

तथा। आली प्राण गाहक बकाली ये वलाहकमें दाहकसी जगैंपीर इन्द्रगोप गनते। धीरधरै बीर किमि पेखि सुनासीर चाप उठतसमीरलै कलाप तपतनते॥ ठौर ठौर मोरनकी कोर चहुँ ओर चितै हिये बरजोर कै मेरोरछिन छनते। दामिनीदमकदेखिउठीबरि कुंजबाम लखि घनश्याम भरिलगीरी दृगनते ८५॥

तथा। पावसनप्यारीचढ़ो सैनसाजिमैनभारी कोकि-लानकीव नौलधौल धुजाबकमाल। बन्दीजनमोरगन वृंदजोर बानघन दादुर निशानदेतदीहदीहनदीताल॥

प्यारेके निरादरते कादर करानिहारे कारे कारे धूमधारे बादर द्विरद जाल। दामिनि दमकपर बालकी चमक शाल करति बिहाल हमैं बाल बिना नन्दलाल ८६॥

तथा। झूमत झुकत झूमि झूमि घूमि घूमि चले भूमिसों भिरत मनोबलके उमंगये। बारबारगरजसुनावैं बरजे न जाहिं नहीं हैं उदारधार मदके तरंगये॥ दन्त बकपांतिते डरावै बिन कन्त भारे अंकुश समीर हौन मानैं कारेरंग ये। करिये सहाय आय याछिनमें श्याम घन होहिं न सघनघन मदन मतंगये ८७॥

तथा। सांझहंसकारेझनकारेहोतनदीनारे पावसकेसांझझांझ झिल्लिन तजतये। दामिनिमशालकोदिखावैंतालदादुरदै मोर चहुँओरनाचनाटकोसजतये॥ धुरवामृदंगनकी धीर धुधुकारठान रातैनैन मातकलगान कोभजतये। शोकको जनम ब्रजओकमें भयोहैऊधो सांवरे बिरहते बधावरे बजतये ८८॥

तथा। सावन सुहावन विशेषि नभधनुलेखि यादि होति झटपटपीत अभिरामकी। तकि मृगपांती बिलपांती अकुलाती मति आवति सुरति वहमौलसिरीदाम की॥ मोरचहुंओरदेखि मुकुट सुरतिहोतिचपलाचमक देखि कुण्डलललामकी। ऊधो ब्रजवाम कैसे धीरधरैं सूनेधाम लखिघनश्याम सुधिआवैघनश्यामकी ८९॥

तथा। सांचीकहै रावरेसों झावरै लगे तमाल आवै जेहिकालसुधि सांवरे सुजानकी। फूल भार भरी डार जैसे यमजार ऊधो कालिन्दीकछारसजैधारज्यों कृपान

की ॥ चपला चमकलगैं लूककै अचूकहियेकोकिलकुहूक बरजोर कोरवानकी । कूकमोरवानकी करेजाटूकटूककरैं लागतिहै हूक सुनिधुनि धुरवानकी ९० ॥

तथा । पावसमैं नीरदैन छांडैं छिनदामिनिहू कामिनी रसिक मनमोहनको क्योंतजैं । अचलापुरानीपुलकावलीको आनीउर धाय रजवती सरिसिन्धु संगको तजैं ॥ नीरकोनपुंसक कहत कबिधीरसबै होयकैअधीर तेऊ नारी नारीको भजैं । कुसुमित लतालखो लपटी तमालनसों लालनसोंकहौऊधोक्योंनअजहूंलजैं ९१॥

तथा । कलनपराहिये कन्हैयाकीसुगैयालखे चखन समैयामैं ललनकह्यो आवनो । औधिआसस्वासरही प्यासअधराम्रतको आयोयह सावनो न आयोमनभावनो ॥ पीरेवादुकूलकीसुरतिआयेशूलउठै कूलकालिंदी को हूल लागत डरावनो । पावस रसमदेखि दहत असमवाण ऊधोक्योंखसमकह्यो भसमचढ़ावनो ९२॥

तथा । गयेकहि आवन न आये यहि सावनमैं ऊधो मनभावन भुलायरहे हैंतहीं । ह्वैरहीं बिहालबालव्रज कीगोपालबिनारैनिदिनानैनते अपारधारकैबहीं ॥ बैठि जन पुंजठाम यमुना निकुंजधाम छांडि श्यामपाहि ह्यां सुहातनाहिं हैकहीं । गरजैंहैं घनघोर लरभैंहैं बनमोर नन्दकै किशोर सुनि अरजैं अजौनहीं ९३ ॥

तथा । ऐहैं कबहूं धौं हरि कहौतुम सूधो ऊधो व्रज की बधूटी जूटी बूझतिहैं वेरि वेरि । देहको परस मृदु सरस सनेह यह होयगो दरस घनश्याम को किनाहिं

फेरि ॥ आयोयह सावन न आये मनभावनक्यों लगोहै डरावन मनोज जनु फौजघेरि । दूमैं द्रुमडारछोर भूमैं पिक बरज़ोर घूमैं घनघोरमोर जूमैं चहुँओरटेरि ९४ ॥

तथा । जादिनते प्राणरखवारेने पधारे ऊधो तबते हमारे उर भारेखद दैसबै । कोकिल कुहूकहूकलगै बिज्जुकलालूक टूकटूककरैं हियोमेघ गरजैंजबै ॥ घेरेदुख मैनमाति धीरजसकै नधरिआवत नचैनदिन रैनिमनमैं अबै । पैहैं सुख नैन ममलखे सुखमाके ऐन आये सुख दैन यहबैनसुनिहों कबै ९५ ॥

तथा । गुंजरनलागीं भौंर भीरैं केलिकुंजनमें कैलियाके मुखते कुहूकनि कढ़ैलगी । द्विजदेव तैसे कछु गहब गुलाबन तें चहकिचहूंघा चटकाहट बढ़ैलगी ॥ लागो सरसावन मनोज निज ओजरति बिरहीसतावन की बतिसांगढ़ैलगी । होनलागी प्रीति रीति बहुरिनई सी नवनेह उनईसी मतिमोहसों बढ़ैलगी ९६ ॥

तथा । होयरहीं हरी हरी ब्रजकीसकलभूमिफूलनके भारभूमिरहीं द्रुमडारीहैं । लहरैं कालिन्द नन्दनी की नीकीलसे नभउमड़ि घुमड़िरहीं घटाघुरवारीहैं ॥ प्यारी मनमोहनजू भूलत हिंडोरेजहां सुरभि समीर धीरचले सुखकारीहैं । प्रेमबश भींजत फिरतफेरि बरषामें बनमें बिहार करैं राधिका बिहारीहैं ९७ ॥

तथा । योबन प्रवेशमें बिदेश मधुसूदन जी निपट अँध्यारीकारी सावनकी यामिनी । यकटक रटत पपीहापिक नीलकंठ हियोचमकत दमकत ज्यों दामिनी ॥

सूनीसेजमन्दिरमें सुन्दरी विसूरैबैठि प्रीतमसुजानबिन कैसे जिये भामिनी । नैनभरिढरै मुखहरेहरे करै हाय उझरि उझरिदरै काममरी खड़ीकामिनी ९८ ॥

स० । घनघोर घटा चहुं ओर चली चिनगीजुगनू चमकावनोहै । मुरवानके कूकअचूकहिये सहि हूकमहा पछितावनोहै ॥ मनमाहिं सदामुददम्पतिके बिरहीजन ताप तपावनोहै । अलिसावनमें मनभावनतें रहि दूरि महा पछितावनोहै ९९ ॥

तथा । चाहचढ़ी चितमें हितकी उत कोनहुके रसमें अनुरागे । लेतनहीं सुधि देत महादुख ये धुरवा मिलि आय अभागे ॥ कौलौं रहौं धरि धीर कृपानिधि बोल उराहनके कढ़लागे । बेलीलगी गरवृक्षनके पियदक्षिण है परदेशमें पागे १०० ॥

क० । आयो ऋतुपावसप्रताप घनघोरभारी सघन हरीरी बनमण्डनबढ़ायेरी । कोकिल कपोतशुकचातक चकोर मोर ठौर ठौर कुंजनमें पक्षी सबछायेरी ॥ यमुना के कूलऔ कदम्बनकीडारनपै चारोंओर घोरशोरमोर-न मचायेरी । एरीमेरीबीरअबकैसेकैमें धीरधरों आये घनश्यामघनश्यामनहिं आयेरी १०१ ॥

तथा । श्वेत श्वेत बकके निशान फहरानलागे ईचि ईचिचपला कृपाण चमकायेरी । घहरन भुशुण्डी की अवाजसी करनलागे बुन्दनके झरनन झीने झरलाये री ॥ भनत प्रतापरतिनायक नरेशजूने धीरगढ़ तोरिबे को पावस पठायेरी । एरीमेरीबीर अबकैसेकै मैं धीर

धरों आयेघनश्याम घनश्यामनाहिं आयेरी १०२ ॥

स०। आसवमें चपला चषचूंधित चौंकि अचौंकि भुजान भरेंगे। साहसकैरसकै मुसकै सिसकैंवसहीतल तापहरैंगे॥ पीपरदेश करेहियपीर अधीरभयेहम हाय जरैंगे। पावस में पियप्यारी प्रमोदित कोऊ बिलासी बिलास करैंगे १०३॥

तथा। सोइगई पछिरातमें आजु तहीं मनमोहन आइगयोरी। तौलौं घनेरी घटा लखिकै इतमोरनशोर मचाइदयोरी॥ ऐसोबियोगदयोविधनासखिमापनेहून सँयोग भयोरी। कासों कहा कहिये नँदराम भयो उर सौगुनो शोच नयोरी १०४॥

शरदऋतुके कवित्व व सवैया ६॥

क०। अम्बर अमलहोत चन्दकी बढ़तज्योति खंजनकी गोतमानोपरी आइनाकते। भनतदिवाकरतरंगगंग स्वच्छभयोउग्योहैअगस्तजल सूखेजनुसाकते॥ जहँ तहँ पथिक चलन लागे चारोंओर शरदनरेशकियो तिय पिय छाकते। दिनतो बितसँगसखिनहितत सतरातिना कटत बिनुश्याम चन्दराकते १॥

तथा। दीपदान देवन दिवारीकोचढ़ाते सब जुआ खेलिदम्पति हियेमें हरषाती है। वेश्यागन रसिकरिझावेकैशिंगारदेह मुखमुसुकाति हेरराग वरषाती है॥ भनत दिवाकर अटापै घाट बाटगेह रोशनीतमामचहुंकोनदरशातीहै। प्यारोव्रजराजबिनपापीद्विजराजसखी रातिये दिवारीकी अरातिसम आतीहै २॥

स०। शीत समय परदेश को पीय पयान सुन्योवह रोवनलागी। याऋतुमेंहरिक्योंहूरहैं घर देवता पूजि मनावन लागी॥ और उपावतक्योंन कछू तवसाजिकै बीन वजावनलागी। प्यारी प्रवीण भरे स्वर मेघमलार अलापिकै गावनलागी ३॥

क०। फूले आसपासकासबिमल अकाश भयोरही न निशानीकहूं माहिमें गरदकी। गुंजतकमलदलऊपर मधुप मैन छापसी दिखाई आनि विरहफरदकी॥ श्रीपति रसिकलाल आली बनमाली बिन कछु न उपाय मेरेदिलके दरदकी। हरदसमानतनजरदभयो है अब गरद करत मोहिं चांदनी शरदकी ४॥

तथा। मन्दमुसुकानिचन्दज्योतिमेंउदोतिहोतिकुन्द में दिखावै द्युति दशन रसालकी। खंजन लखावैकान्ह नैनमन रंजनसे पानिलौंसुहावैकलाकंजनविशालकी॥ भौंरनकी गुंजपुंज मंजुलमंजीरनसींहंसानिचलावै गति श्यामके सुचालकी। आयोरी शरद कालदरदबढ़ावन को जरद करैहै हमैं शोभाधरि लालकी ५॥

तथा। तारागण भूषण सघन अंग अंगननें वसन मयूषनसों रहीलोनी लसिकै। दन्तकुमुदावली चमक चारु चोरैचित्त जोरैं मुखचंदको सुमन्दमन्द हँसिकै॥ मालती सुगंध सनी शालती हियमें साल रहैनँदलाल कहूंयाकेख्यालफँसिकै। शरदविभावरी न होय सुनि वावरी तू दांवरी लियेहै यह सौति श्यामबसिकै ६॥

तथा। डोलै नभ वीथिनमें वोलै धरि मौनब्रत भये

सित भूति लाये रहे तित छाजिकै। जीवन द्विजमक्कोदै जीवन मुकुटहोय बनेहैं विमलबाम चपलाको तजिकै॥ दीजैनहिं दोष एक ऐसेअलि ऊधवको श्यामभये बाम अबकरा जो गराजिकै। नीरद शरदके दरददलिदेश देश करैं उपदेश येऊ यतीवेष सजिकै ७॥

तथा। रतनजटित त्यों घटित घर चारों ओर दरन दिवारन किवारन मुदायेहैं। परदा पसम के असम के पड़ेहैं गोल गेंदवा गलीचन गिलम गुदवाये हैं॥ मंजु कवि आतश अँगीठी धूप घूम धूम धूम झूम झूम शुचि सौरभ सुहायेहैं। केलि कलक्रीड़ा ब्रीड़ा हँसन बसनद्युति दम्पति दिपातिदिव्य शीत सिसरायेहैं ८॥

तथा। चन्द्रमा प्रकासनमें चन्द्रमुखी हासनमें अवनि अकासन में कासन में छाईहै। नन्दराम तालन में इन्दी बनमालनमें चंचरीक जालनमें अधिकअमाई है॥ माइत्रकाकी डारिनमें मालती कियारिनमें फूली फुलवारिनमेंसौगुणीसोहाईहै। कामकेसीखेतिनमेंबालुकासमेतिनमें सुरसुता रेतिनमें शरद समाईहै ६॥

तथा। ह्वैरही तयारी महारानी रासमण्डलकी मल्लिका व मालती सो तहाँअमित अगारहैं। कहै नन्दरामगई सरी सेत सारी साजि गोपकी कुमारी हिये हीरनके हारहैं॥ षोडश कला सों आजु उदित कलाधरहै चांदनी के भारनसों छोंड़े अभिसारहैं चांदनीमें सेत चांदनीचँदोवा तने मानो परेपारा के पहार हैं १०॥

तथा। षोड़श हज़ार वाल षोड़श शृंगार साजि षोड़श वरषवैस मुदित विहारहै। बाहुन सों बाहु जोरि मोरि मोरि अंगनसों कीन्हों महामण्डल अखण्डल अपारहै॥ कहैनन्दराम तैसेतारऔ सितारमिलि चूरी खनकार स्वरपंचम उचारहै। भूतलदिशान विदिशान आसमानहूलों छम छम छाई घुंघुरूकी झनकारहै ११॥

हेमन्तऋतुके कवित्व व सवैया ७॥

क०। ओकऔकलोकसवकरत कलोलनिशिकोकिन कोशोकभो कलानिधि को काफांसो। मनतदिवाकर लशावत अतरअंग वारतहुताशन डरपकेवराफांसो॥ राजा औ अमीर पशमीनाके बहारलेत मोजरा बरंगना करावत इजाफांसो। आयोयेहेमन्तकन्तलहत अनन्त सुखसन्तजड़सैनलेत जगतजुराफांसो १॥

तथा। पलपलदिनदिनयामिनिघटनलागी भामिनी जगनलागी यामिनीएकन्तमें। भनतदिवाकर संयोगिनी सुखीनी कीनी दुखिनी वियोगिनी लगीनीहिंसहन्त में॥ घरघर घरघरवाजतकपाट फटसटपट सेजपैमजेज छविवन्तमें। सखीयह पाखमें जो आयोनाहमारोकन्त होंगे प्राणअन्त नहिंपायके हेमन्तमें २॥

तथा। अगरकीधूप मृगमदको सुगन्धवर वसन विशालजाल अंगढांकियतु हैं। कहैपदमाकर सुपौन कोनगौनजहांऐसे भौनउमंगिउमंगिछाकियतुहैं॥ भोग औसंयोगाहित सुरतहिमंतहीमें एतेसवसुखदसुहाथेबा-

कियतु हैं। तानकीतरङ्ग तरुणापनतरणितेज तेलतूल तरण तमूल ताकियतु है ३॥

तथा। छाई है हिमन्तबाततन्तकीबतायदेत अन्तको कराय जियअन्तको न जाइये। द्विजबलदेवकहै कसकहि दूरिकरि कामकीकलोलकान्ह कामदमचाइये॥ अतर तमोलतेलतूलनके तुंगसाजि तातीसीसोहातीसेजतापै इतआइये। करतहै आनतजि मानकोसमाननेक मान्कि-येप्रमाण निशिभानुउरलाइये ४॥

तथा। छाइशीतलाई मुरझाईकलाकुंजनकी मानो मनरंजनकी पाइकै जुदाईहै। कापैकहिजाई दिनहूंकी लघुताई जनुरही अलताई लखिप्रीतिसकुचाई॥ रैनि अधिकाईभयो बिरहसहाईतासु शीत चहुंघाईबिनुमीत भीतिधाईहै। पीरसरसाई फलेसरसों सरसभाई हेम-ऋतुआईनां कन्हाई सुधिपाईहै ५॥

तथा। तुलसीलसी सुअंगअतिसेउमंगदेतिजासुमैन बासयोगीजन बिलसन्तहैं। शीतलसँवारेउरकलादर-शायकरि जातन बिलोकिशोककोकाबिलपन्तहैं॥ जासु कीबिभावरी बिशाललखो दीनद्याल मित्ररूपसंघहीके सुखद बसन्तहैं। किधौं हैं हिमन्तकै सुतन्ताशित सन्त सभाकिधौं सुखमालसन्त कमलाकेकन्तहैं ६॥

तथा। सूरऐसेसूरको गरूरदूरि दूरिकियो पावक खिलौना करादियेहैसबनको। बातनकी मारहीते गात की भुलातसुधि कांपतजगत जाकीभय आनमनको॥ गिरिधरदास रातलागे कालरातकीसी नाहिंसोंलगत

भामराखत चरनको। आयोहै हिमन्तभूमिकन्त तेज-वन्तदीह दन्तनपिसावतो दिगन्तके नरनको ७॥

तथा। कंजनासुखाये ये सुखाये रंजमनहीके शीत नावढ़ाई नीतप्रकटीसमन्तहै। रातनाअधिककरी रति अधिकाईभाई दिननाघटायो कर्मत्रासनातुरन्तहै॥ गि-रिधरदासपौनशीतलअसहहैन प्रेमकेप्रबाहजगचलन टरन्तहै। राधिकाकेकन्तको भगत मतिमन्दहै किब्रज शीतवन्त ऋतुप्रकट हिमन्तहै ८॥

तथा॥ अतिहीअराम दैनऐनको अरामअभिराम आठोओर ओस्योऐशअवलनमें। आसनअनूपआप ईशहैअनीशजापै अच्छिअवलोकिहै उदासीअम्बुज-नमें॥ गिरिधरदास एको उपमा न आवतहै ईगुरसी आछी अरुणाईअधरनमें। अगधरइन्दुमुखीओजसों अमलऐसेलसेआननननसे अजवअगहनमें ९॥

तथा। भावनलगीहैअंशुपावनप्रभाकरकी छावन लगीहैगति शीतकी दिगन्तमें। रातअधिकानीदिन हानीत्योंप्रतक्षभई सृष्टिसियरानीहैगरमसलसन्तमें॥ कहै तोषहरिसजूसुहेरंगअंगपट चाहत उमंगकन्तका मिनीइकन्तमें। सेवै भाग्यवन्तमदमादकछकन्त सुख श्यामाकोअनन्त छविवन्त या हिमन्तमें १०॥

तथा। चारोंओरमोरबैठे दावचारोंओरनलोंज्यों मनमथराखोहिमनदुहाईमें। जावकअरगजाकेतिलक विराजरहे भागभरेभागनकीजगमगताईमें॥ अलकच-मरघनश्यामवाजेनूपुरादि बँटतहैंसनअवलोकन वधा-

ईमें। थिरचरऐमेंराजदेखोदेखोसखीआज दुहुँनरजाईपाई एकहीरजाईमें ११॥

स०। नवलनिकुंजबनोरसपुंजचहूं दिशिहेमवितान हैतानो। आछेवरे परदामखतूलकेतूलकोचारु बिछायो बिछानो॥ केलिकरेंगिरिधारनजूसँगलैतियकोमधआतशखानो। पावकहीकीशिखानकेसंग अनंगाहिपावक पूजतमानो १२॥

तथा। सेजसजाई रजाईसमेत जहांतहँ आई प्रिया जोसुअन्तकी। गाढ़सुराहैतुरन्तअँचीतबकीनीशुरूकछु बातइकन्तकी॥ त्योंहरितोषजूसोहँसकैरसकैवसकैसिसकैछबिवन्तकी। हूलैहियेभुकभूलैंसुमूरति भूलैनहीं हमैंकेलिहिमन्तकी १३॥

क०। आयोहैहेमन्तजोरजाड़ेकेप्रसंगनसों रेशमकैभंगनमें अंगनदुरायेदेत। कहैनन्दरामत्यों हमामहूं न कामसरै धामधाम आला पौन पालाको उसायेदेत॥ तूलपटपीठिन अँगीठिनमें डीठिलगी तरुनीविहीनतन कम्पसरसायेदेत। दोगुनोकहौतो चितचौगुनो चुरात हरिनौगुनो न सौगुनो समीर शीतनायेदेत १४॥

तथा। आसवनिरसलाभलभौनाकिनि कालादेतप्यालापरप्यालातौहूंशीत सरपेटलेत। कहैनन्दराम जरैदीपनकीमालालगेपंचियाविशालाधूमधालाअरपेटलेत॥ दोहरेदुशालाऊनशालाछौनशालापट्टशाला कीटशाला छींटशालागरपेटलेत। वंदकियेतालातोपैतूलकेमसाला उरलागैबेशबाला तौनपाला भरपेटलेत १५॥

शिशिरऋतुके कवित्त व सवैया ८॥

क०। गिरिव्योमबरफ़ झरफ़ कैसनाका चले मख-
मली गादीचाँदी पैंचुआ लगेरहे। भनतदिवाकरदुशा-
लावो विशाला आला हरतकशालारसख्यालात पगे
रहे॥छातीसेलगायछातीताती कुचथातीमिसिमैनमद-
माती करमातीमें जगेरहे। शिशिरकेशीतकेतभीतसम
शीतचीत जीतलेत पालाजो सुबालाके सँगेरहे १॥

तथा। सीरीभयो जलसुसमीर थलसीरीभयो सीरी
आसमान खानपान सीरी परिगे। भनत दिवाकर ब-
सनवो दसनसीरी वदन सदनयनसीरी सब करिगे॥
सुन्दरदुकूलसीरी तूल फूलमूलसीरी पूल धूलराहवाह
सीरीसमठरिगे। शिशिरके शीतयह कीन्हो है अनीत
इतथीतहैं उरोज एकसीर संगलरिगे २॥

तथा। गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं
चिकैं चिराकैंहैं चिरागनकी मालाहैं। कहै पदमाकर
हैंगजक गिज़ाहूसजी शय्याहै सुरा हैं सुराहीहैं सु-
प्याला हैं॥ शिशिरके पाला को न व्यापत कसाला
तिन्हैंजिनकेअधीनएतेउदितमसालाहैं। तानतुकताला
हैं विनोदके रसालाहैं सुबालाहैं दुशाला हैं बिशाला
चित्रशालाहैं ३॥

तथा। माणिकमहलमें प्रमाणिकबिछाये सेजहीरन
केहार तेजसेजपै धरेभले। द्विज बलदेव त्योंही कंचन
लतासी बालपूर मनमोद कै कंपरपंगमें मले॥ अमित
अरामैं भोगदेत वसुजामें अरुशीतके तमामैं ते समामैं

जायकै जले। शिशिरकी सीकरन सोई है बशीकरन हीकरनहेतु पियातोकरतहैं गले ४॥

तथा। पटुसों छपावे परछिद्रनको आठोंयाम अति अभिराम जगपूरैंजन कामरी। जासुसंगपायकै उमंग माहँराते सब माते गुणगावैं शुभरागरंगबामरी॥ लखो यासुमनरहे हरि अनुरागिरटै दुज शाखावर बागजासु धामरी। शीतलसुभाय चित्तयाकेमित्रहूकोध्याय सिमिरिभै सज्जनन सज्जनभे श्यामरी ५॥

तथा। सोहैंसरसोहैं सरसोहैंसरकारिडारैं नैनलगैं सरसोहैं बिरहीकोदिनरातिहै। अम्बरसुहावैआैप्रभावै बरहीकी बरसीकरपरत निशि सब को सिरातिहै॥ गावतहिंडोलैं गर नागरी गरीयगिरा कहूंकहूं कोकिल की काकली सुनाति है। चन्दन दिखात कहूं दीनद्याल बन्दनमें निन्दातिहैपावसके शिशिरसोहातिहै ६॥

तथा। बिश्वनाकँपावतहै कांपाति घनीसीआय सीसीना करावतीकरतआतिदीनाहै। रदनाबुलावतहैं रद निज पीसेसोई चन्दनाश्रवतमुखचन्दको पसीना है॥ गिरिधर दास पीरो खतना शरीर यह कंज मुरझायेना निगाहभूमि लीनाहै। लेतसीरीसांसेकरश्यामसोंप्रथम रति शिशिर न एरी यह नागरी नवीनाहै ७॥

तथा। बाहरगयेते घरआवनलगेहैंलोग घरकेवसैयन पयानकियो साफ़ासो। ज्ञानिनकोज्ञानअरुध्यानिनको ध्यानमान मानिनको मानफास्यो मृगमदनाफ़ासो॥ ग्वालकबि कहै प्यालाबालायेदुहूनहींमें सबहीने

जान्योठीकआनँदइजाफासो। जोमदारजीवनकोजोम
कोजगैयावड़ोआयाअबजाड़ोजगकरनजुराफासो ८॥

तथा। गालेअति अमल भराले तोशकोंमें फेर ऊ-
पर गलीचे जालडाले बिछवाले अब। सेजपर सेंज-
बन्द खूबखींचवाले खाले पानरसवाले औगजकसज-
वाले सब॥ ग्वालकवि प्यारीको लगालेलिपटालेअंग
ओढ़िकै दुशालेमेंमजाले सिसिकालेजब। मंजुलमसा-
लेमिले सुराके रसाले पीले प्याले परप्यालेमीठेशीत
के कसालेतब ९॥

तथा। आलेरंग रंगके तनालेदरवाजनमें परदेमु-
दाले वेभरोखेज्योंन आवैपौन। चारोंओरगरमगुदाले
बिछवालेगाले छालेधूप अगरअँगीठीदहकालेभौन॥
मंजुकवि खाले जरागजक चढ़ाले मद बीड़ियांचबाले
भरीविविध मसाले जौन। भुजनफँसाले तियउर लि-
पटालेअरेदुबकिदुशालेयेकसालेतूमिटालेक्योंन १०॥

तथा। सोनेकीअँगीठिनमें आगिनअधूमहोइ होइ
धूमधारहूतो मृगमद आलाकी। पौनको न गौनहोय
भरक्यो सुभौनहोय मेवनके खौनहोय डब्बियांमसा-
लाकी॥ ग्वालकविकहै हूरपरीसे सुरंगवारी नाचती
उमंग सो तरंग तान तालाकी। बालाकीबहार औदु-
शालाकी बहार आई पाला की बहार में बहार बड़ी
प्यालाकी ११॥

तथा। भरभरभांपेवड़ेदरदरढांपेतऊथरथरकांपैं
मुखबाजतबतीसीजात। फेरपशमीननके चौहरेगली-

चातापै सेज मखमली बिछीसोहू सरदीसीजात ॥ ग्वालकवि तैसे मृगमदसों धुकाये भौन ओढ़ि ओढ़ि छार भार आगहूछपीसी जात। छाकोसुरा सीसी तौलौंसीसीना मिटैगी जौलौं कुचउकसीसी छाती छाती सौंन मीसीजात १२॥

तथा। विविध बनातै कीमखाबकी कनातै तामें दीरघ दुचोबेहै सिचोबे हक हद्दीमें। चांदनीहै चोबनपै परदे दरीचनमें दोहरे दुलीचेहै गलीचे गोल गद्दीमें॥ ग्वालकवि भांतिभांति भोजनहैं भामिनीहै दीपहैदुशालाहैं मसाले मैनमद्दीमें। चापके चुहद्दीसाज सेज पै बिहद्दीवैसकसीतरद्दी तब डूब्योजाय नद्दीमें १३॥

तथा। सुघर सजाई कोठरीनमें बिछाई सेजछतपिछवाई छाई गमककहाकहों। मृगमद कुंकुम सिंचाई बीरी कीचभाई नशाकी पिलाई इनहूंते शीतना दहों॥ कहीं धधकाई कहीं मीठी अंगीठीकी आंचकहींतोउढ़ाई दुशालाते कसालालहों। कहैनाथ होइहै जाड़ाको भजाईजबै तेरी या रजाई में रजाई ते दबकिरहों १४॥

तथा। सुभगपलंगपै विराजैनाथ साथसब विविध शिंगारसाजि जेती पुरबालाहैं। ओढ़िकैदुशालाउरकंचुकी बिशाला ओढ़ि मोतिनकी मालाहीरहारहूबिशालाहैं॥ कंचनअँगीठीसों सुमीठीमीठीधूमउठैं मनुकाम श्यामहेत रच्योधूमजालाहैं। शोभन भनतयेतेउदितमसालाजामें तामें बिचकेलिकरें ओढ़के दुशालाहैं १५॥

तथा। शीशाकेमहलबीच कहलाहिमाचलकी पहल

दुलाई वर्फचहल कसालामें। चन्दन सों लागत कुरंग सार अंगनमें अनल अँगीठी जिमिवारिहौदशालामें। लागत गलीचा ऊनशीतल सिवारतूलदीपकनक्षत्रर-घुनाथ रसथालामें। बालाउरबीचजात मालासीजुड़ात जातपालासम लागत दुशाला शीतकालामें १६ ॥

तथा। चिड़िया चुहुचुहानी रजनीविहानीजानी प्रकटी प्रभात बानी गोपिनकेगीतमें। कालिदास औचक सी सेजतेउतरि प्यारी अनललगाईचलीचितैनवनीतमें॥ गातअँगरातअलसातअलबेलीभांत भावतोतजोन जातशिशिरके शीतमें। फेरपरयंकपर ओटभर ओढ़ि पटपीतमें लपटि लपिटायरही पीतमें १७ ॥

दोहरेकाफियेकेकवित्त व सवैया १ ॥

क०। कहाकहौं प्यारेजू वियोगमें तिहारेचित विरह अनललूक भरकि भरकिउठै। कैसेकै विताऊं दिन जो-यनके हाहाकाम करलै कमान मोपै तरकितरकि उठै॥ भलै नाहिं हँसनि तिहारी हरिचन्दतैसीवाकी चितवनि हिय फरकिफरकिउठै। वेधि वेधि उठत विशीले नैन बाणमेरे हियमैं कटीली भौंह करकि करकिउठै १॥

तथा। आजु कुंजमंदिरमें छकेरंग दोऊबैठे केलिकरै लाज छोड़ि रंगसों जहकिजहकि। सखी जन कहत कहानी हरिचन्दतहां नेहभरी केकीकीर पिकसी चहकि चहकि॥एकटकबदनानिहारे बलिहारलैलैगाढ़ेभुजभरि लेत नेहसों लहकि लहकि। गरे लपटाय प्यारीबारबार चूमिमुख प्रेमभरीबातैंकरै मदसों बहकि बहकि २ ॥

तथा। एरी प्राणप्यारी बिनदेखे मुखतेरो मेरे जिय मैं विरह घटा घहरि घहरि उठै। त्योंही हरिचन्द सुधि भूलत न क्योंहूं तेरी लाबो केश रैन दिन छहरि छहरि उठै। गड़ि गड़ि उठतकटीले कुचकोरतेरी सारी सो लहरदार लहरिलहरि उठै। सालिसालिजातआधे आधेनैन बानतेरेघूंघटकी फहरानिफहरिफहरिउठै ३॥

तथा। करकर आयो जब स्वरस्वरनीर बाढ़्यो भर भर बाज्यो ढोल घर घर जान्यो है। दरदरदौरयोजाय नर नर आगे दीन बर बरबकत न नेकअलसान्योहै॥ शर शरशोधेधन तरतर तोरैपातजरजरकाटत अधिक मोदमान्योहै। फरफर फूल्योफिरै डरडरपैन मूढ़ हरहर हँसत न सुन्दर सकान्योहै ४॥

तथा। जगमग पग तजिसाजि भजि रामनामकाम क्रोध तन मन घेरि घेरि मारिये। झूठ मूठ हठ त्यागि जाग भाग सुनिपुनिगुण ज्ञान आनिआनि बेरिबेरि डारिये॥ गाहिताहिजाहिशेष ईशशोधसुरनरऔरबात हेत तात फेरि फेरि जारिये। सुन्दर दरद खोय धोय धोय बारबार सारसंगरंग अंग हेरिहेरि धारिये ५॥

स०। कै यह देह जरायके छार किया किकिया कि कियाकिकियाहै। कैयहदेहजमीनमहँखोदादियाकिदिया किदियाकिदियाहै॥ कै यह देह रहैदिनचारि जियाकि जिया किजिया किजियाहै। सुन्दरकाल अचानकआय लिया कि लियाकि लिया कि लियाहै ६॥

तथा। भाजनआयगढ़्योजिननेभरिहैंभरिहैं भरिहैं

भरिहैं जू। गावतहै जिनके गुणको ढरिहैं ढरिहैं ढरिहैं ढरिहैंजू॥ आदिहु अंतहु मध्यसदा हरिहैं हरिहैं हरिहैं हरिहैंजू। सुन्दरदास सहायसही करिहैं करिहैं करिहैं करिहैंजू ७॥

क०। हटकि हटकि मन राखतजु क्षण क्षण सटकि सटकि चहुँ ओर अब जातहै। लटकि लटकि लल-चाय लोल बार बार गटकि गटकि करि विषफल खातहै॥ भटकि भटकि तार तोरतमहीनकर भटकिभटकि कहूं नेकनअघातहै। पटकिपटकिशिरसुन्दरयूगनहारि फटकिफटकि जायसुनो कौनबातहै ८॥

तथा। जोई जोई देखैकछुसोई सोई मन आय जोई जोई सुने सोई मनहीको भ्रमहै। जोई जोई सूंघे जोई खायजो सपर्श होय जोईजोई करैसोईमनहीकोकर्महै॥ जोई जोई ग्रह जोई सोईसोई त्यागीसोई सोईअनुरागी सोई मनहींकोभ्रमहै। जोईजोईकहै सोईसुन्दरसकल मनजोईजोई कलमेंसोईमनहीकोधर्महै ९॥

स०। सोवत सोवत सोयगयोशठ रोवत रोवत कै बेर रोयो। गोवत गोवत गोवधर्‌यो धनखोवत खोवत तें सबखोयो॥ जोवतजोवत बीतगये दिन बोवत बोवतलै विष बोयो। सुन्दर सुन्दर राम भज्यो नहिं ढोवत ढोवत बोझहि ढोयो १०॥

क०। उमड़िघुमड़ि घनआवतअटानचोट छन घन ज्योति छटा छटाकिछटाकि जाति। शोरकरैं चातकचकोर पिकचहुँओर मोरग्रीव मोरिमोरि मटाकि मटाकिजाति॥

सावनलौं आवन सुनोहै घनश्याम जूके आंगनलैआय पाये पटाकि पटाकि जाति । हिये बिरहानलकी तपनि अपार उरहार गजमोतिनकोचटाकिचटाकिजाति ११॥

तथा । बैठेहैं अमली सबपीसतहैंभांगकोई छानत हैं कोई तहांपीवैं मन पूरिपूरि । कहैं रस सिन्धु फेरि खातहैं अफीम कोई गालवाचुमावैं कोई ठाढ़े भये दूरि दूरि ॥ मलत तमाखू कोईपीवतहैं हुक्काऐंठि चाटैं मुख श्वान आयभये वह सूरि सूरि । कोईके चेहरापर भिनकैं हैं माखी आये भये सब नशामें जो देखो यह घूरिचूरि १२॥

तथा । लांबी लांबी लटैं लोनी लटकत लङ्कलौं लीकलागि लोचन उड़त झकझोरिझोरि । छूटि गये सकल शिंगार हार टूटिगये लूटि गये लपटि भुअंग अंग कोरिकोरि ॥ सकुचिसयानी अंगरानी प्राणप्यारे बाल प्यारे यशवंतके निकट तन तोरि तोरि । तोरि तोरि चितहित जोरिजोरि लाड़िलेसों छोरिछोरिकंचुकी जँभात मुख मोरि मोरि १३॥

तथा । आयो ऋतुराज आज देखत बनैसीआली मद छायो महामोद सों प्रमोद बन भूमि भूमि । नाचत मयरमद उन्मदमयूरनिको मधुरमनोजसुख चाखैं मुख चूमि चूमि ॥ पण्डित प्रवीण मधु लम्पट मधुप पुंज कुंजन में मंजरी को लेतरस घूमि घूमि । हेलीपौन प्रेरित नवेलीसी द्रुमन बेलिफैली फूलडोलनि में झूलि रहीझूमि झूमि १४॥

तथा। अमल अनार अरविंदनकोवृन्द वारविंबाफल विद्रुम निहारि रहे तूलितूलि। गेंदा औ गुलाब गुल-लालागुलाबास आवजामैंजौवजावकजपाकोजातभूलि भूलि॥ फेरन फवततैसीपांयन ललाईलोलईगुरभरेसे डोलउमडतझूलिझूलि। चांदनीसी चंदमुखीदेखौब्र-जचंदउठैंचांदनीबिछौनागुलचांदनीसीफूलिफूलि १५

स०। सुनिबोलसोहावन तेरेअटा यह टेकहियेमें धरौंपैधरौं। मढ़ि कंचनचोंचपखौवनमेंमुकताहलगूंदि भरौंपै भरौं॥ सुखपींजरपालि पढ़ाइघने गुणऔगुण कोटि हरौंपै हरौं। बिछुरे हरिमोहिं महेश मिलें तुहि कागसे हन्सकरौंपैकरौं १६॥

क०। छूटीशिवशीशतेप्रचण्डतेजधाराधसीकाटत अघ औघनके पातक हितैहितै। कहैंप्राणनाथगंगते-रीही तरंगदेखिगये स्वर्गलोक सब पातकबितै बितै॥ सुरसरि महरानीकी महिमा बखानै कौनवेद औपुराण यशगावत नितैनितै। यम आगे पाप रोवैं पाप आगे यमरोवैं चित्रगुप्त आप रोवैंकागज चितैचितै १७॥

स०। जबतेदरशेमनमोहनजू तबतेअँखियांयेलगीं सो लगीं। कुलकानि गई सखि वाहि घरी जब प्रेम के फन्द पगीं सोपगीं॥ कहैंठाकुरनेहके नेजनकीउरमें अनि आनि खगींसोखगीं। तुम गांवरेनावरेकोऊधरो हमसांवरे रंग रँगींसोरँगीं १८॥

क०। आश करि आयो हुतो मैया पास रावरे मैं गांठहूके पास दुखदुरि बुटि बुटिगे। कहै पदमाकर

कुरोगसे सँघातीतेऊ गैलमेंचलत घूमि घूमिघुटिघुटिगे॥ दगादार दोयदीह दरिद बिलाय गये फिकिरिके फन्दबिनछोरे छुटिछुटिगे। जौलौंआउआउतेरेतीरपर गंगा तौलौं बीचहीमें मेरे पापपुंज लुटिलुटिगे १९॥

तथा। जलभरेघूमैंमानो भूमैंपरसतआइदशहूदिशा-निघूमैं दामिनि लये लये। धूरिधार धूसरित धूमसे धुंधारे कारे धारे धुरवानि धावै छबिसौं छये छये॥ श्रीपति सुजानकहैं घरी घरीघहराइ तावतअतनतन तापसों तये तये। लालबिन कैसे लाज चादररहैगी अबकादर करत मोहिं बादर नयेनये २०॥

तथा। कियो जब क्रोध मातु चढ़िउहवै सिंहमाहिं असुरन फारयोहिय जियहोय धकधक। खैंचिकैकृपाण हस्त लीन्हों जब मातुकाली मारयो भटयोधनको पेट फारयो भक भक॥ लीयेखून खप्परहै बिन्दुनाहींजाय पावै पियैमातुकालिका औयुद्धकरै जकजक। रुंडअरु मुंड मरे लोटनी पसारे भूमि कहै रामलाल काली खून पिये चक चक २१॥

तथा। दमकेदशोंदिशादुनालीयोढ़दामिनिके घन के नगारे भारे उर उलभनके। भनके भनाक भुंड भींगुर बिगुर बाजे सनके समीरतीर शक्रशरासनके॥ सनके समरमद मेचक भिलमधारे ठनके नकीबदर्प दादुर दमनके। मनकै नदनके बिनकामिनि कदनकेये आये बीर बादर बहादुर मदनके २२॥

तथा। घहर घहर घहरात चहुँघाते घेरि सघन

सघनघनघुमड़िबरसतहै। छहरछहरछहरातक्षितिमंड-
लपै छूटिछूटिबुन्द छरांको छरतहै॥ भहरभहरभहरात
भौनभीति भारी भीतिभारी भारतीके भौनहूभरतहै।
थहरथहरथहरात मेरोगात आली प्यारो ब्रिजप्रानन्द
बिदेशमें बसतहै २३॥

तथा। न्यारी होहु नीरते तो देहिं चीर ऐसी सुनि
न्यारी भईं नीरहूतेतीरमें कढ़ेकढ़े। कहें गिरिधारीदेत
कसन बसनश्याम रसना पिरानीहाहाप्रविनती पढ़ेपढ़े॥
भीतजो महीके बीचनीचे करिपावतीतौ कौतुकदिखा-
वती विनोदनबढ़ेबढ़े। छीनिलेतीअम्बरपीतम्बरसमेत
अब कहौ कान्ह बातैंजू कदम्बपै चढ़े चढ़े २४॥

तथा। कारीअँधियारीरैनिबिजुलीचमकैऐन दादुर
केबैन मेघबरसतफुहूफुहू। पौनकीझकोरझोरझिल्लि-
नके शोरघोर चातक चकोरमोर कुहुकत कुहूकुहू॥
ताहिसमय सुधिकरि छातीसे लगायोप्यारे आंशू चले
लागे प्यारे नैननसे लुहूलुहू। मसकिमसकि प्यारी
ज्यों ज्यों लपिटात जात त्योंत्यों मुखमोरि मोरि करत
उहूं उहूं २५॥

तथा। लिपटि लतासी परयंकपटियामोरही डालै
ना डोलाय कर पांयन दुहूं दुहूं। केती केती बातनसों
हरिजू बुझाय हारे कोकिलाकि नाईं प्यारी कुहुकै कुहू
कुहू॥ मेरी ओर फेरमुखबीराहू न खात काहे उर से
लगायेकरबोलतमुहूंमुहूं। मसकिमसकिप्यारी ज्योंज्यों
लपिटातजात त्योंत्योंमुखमोरिमोरिकरत उहूंउहूं २६॥

तथा। जोरिजोरि जोरिदृग मोरिमोरि मोरि मुख चोरि चोरिचोरिचित चषनि चितै गई। झुकि झुकि झांकनिझरोखा झांकिझांकिजात ताकिताकितीछनसे तीर तन दैगई॥ सुमतिप्रवीण मुखचन्दसोंउदोतहोत मृदु मुसकानिमें चकोरचित्तकैगई। लुकि लुकिलोचन सकोचन सो हेरिहेरिलगीसीलगायके लपेटि मन लैगई २७॥

स०। यों अलबेली अकेलीकहूं सुकुमार सिंगारन कैचलै कैचलै। त्योंपदमाकर एकनके उरमेंरसबीजनि बैचलै बैचलै॥ एकनसों बतरायकछू छिनएकनकोमन लैचलै लैचलै। एकनकोताकि घूंघुटमें मुखमोरि कनै-खिन दैचलै दैचलै २८॥

तथा। तुम्हरेईलिये ब्रजबीथिनमें फिरिकैबिनदेखे तई तो तई। नहिंकाहूकि खोरिहैयामेंकछू दई मोहिं ब्यथाजो दई तो दई॥ हनुमानइती बिनती है सुनो चिकुरै निशिमेरी गई तो गई। उनहींकोलगाओलला छातियां हमको बदनामी भई तो भई २९॥

क०। लटकि लटकि मेघबारि झहरनलागे तड़पि तड़पि बिज्जु करै रव घोरि घोरि। फैली हरिआईनीर बिहरी बहूटीबीर पापी सर सरिता करार जलछोरि छोरि॥ भनत दिवाकर बरस बायु झांकिझांकि झांकि झांकि बिपिन बिटपदेत झोरिझोरि। वहीकालग्वाल ब्रजसांवरो प्रियाकेसेज कुचचुभुकाति मुसक्यातमुख मोरिमोरि ३०॥

स०। बिन भेदनभेदनजाने कछू मतिकीअनुसार लहीसोलही। नहिं वेदपुराणकी रीतिकछू अनरीतिकी टेक गहीसो गही॥ समुझाय नहीं समझै गुरुकेगुरु को अपमान लही सो लही। यहतामस ज्ञान अनन्यमनै पुनि मूरखगांठिगही सो गही ३१॥

क०। ब्रजमें बसंतराग बागमेंबसंत बनबेलिनबसंत सरसंत आमबौरमें। भनत दिवाकर समीरनीर तीरतीर वनिताबसन्तकर दीन्हें और तौरमें॥ ठौर ठौरकोकिलको बोलअनमोलभयो बगरोबसन्तहै मलिंदनके झौरमें। औरऔरलौरलौर घरघर जहँतहँ कियोहै वसन्त सलसन्तसबदौरमें ३२॥

तथा। चंचरीक चंचलकै गुंजत निकुंजजहां चहूं चारुचमकें चमेली फूलिफूलिकै। तहां एकदीनद्याल सांवरोलख्योरसाल आवत मतंगचालचलोभूलिभूलिकै॥मन्दमुसुकानिबीचएरीचितखींचिलियोनाहिंठहरात जातगात भूलिभूलिकै। इछन द्वैतीछन निरीछन कीकोर बांकी उठैबरजोरमेरेहिये हूलिहूलिकै ३३॥

तथा। जादिनते मोतनकालिन्दीतटजातछैलइन्दीवरदृगनिते देख्यो मुरिमुरिकै। तादिनतेपीरदीनद्याल किमिधरोंधीर विरहागिदहेअंगरहेचुरिचुरिकै॥ अरी भट गड़ीहैकटीली वहदीठिमोहिं सुपने लखाति फेरि जाति दुरिदुरिकै। वाकेनैन ठगन ठगोरीडारिभोरी करि मेरोचित्तवित्त लूटिलीनो जुरिजुरिकै ३४॥

तथा। आजराधे रावरेको आननबिलोक्यो घन-

श्यामतुमप्रेमकी घुमारीसी धराधरै। रतिकीरमाकी उर-वशीकी तिलोतमाकी दीपति दमाकी धामराखीहै धरा धरै॥ दीपको दबायकै सरोज सकुचायकै सो आरसी निकाई ताकी बाँधिहै बराबरै। छाई रत्नाकर छपाय कै प्रभाकरको छूटिके छपाकरके ऊपर छरापरै ३५॥

तथा। मुखौ रुख फेरदेति घूंघुटन छोरदेति चूमि-योनभोरदेति बदन मयंककी। लाजतेन चूनरीलपेटाति नगोवै हरे हरे गरेरोवै हिठै हिलाकि नअंककी॥ भनत कबिन्द्र लाल करके परसहोत घरतोमिटैन सरसाईबाल शंककी। जकरिजकरि जंघैं सकरि सकरि परै पकरि पकरिपाणि पाटी पर्य्यंककी ३६॥

तथा। चन्दकी मरीची कानतोरिबिथुराय दीन्हो कैधौं हीरा फोरिकै कनूका धरि धरि गये। कैधौं काम मन्दिरकी भंझरी बनाई बिधि कैधौं सोनजुहीकेपुहुप झरिझरिगये॥ कामिनी मनोरथकेआलबालाशिवनाथ मैनख मतंगमाते बेलिचरि चरिगये। अमलकपोलनपै दागनहीं शीतलाके डीठि गड़ि गाड़ि गई गाड़परि परि गये ३७॥

तथा। कञ्चनके खम्भदोऊ सुरँग रँगायडांड़ी मरुवा पिरोजा लाल पटुलीखरी खरी। सोरहू शिंगार किये झूलातिहै चन्दमुखी पहिरे सरसहार चमकै खरीखरी॥ खनआसमानजाय धरती लगाय पाय फहरात चीर ताहि दाबति घरीघरी। कहै बुधरामको है नायका नवेली ऐसी मानो आसमानते बिवान लैपरीपरी ३८॥

तथा। लाल बनमाल लाल बेंदी भाल लाल लाल यौवनकी ज्योति औ कपोल लाल लाल हैं। अंगलाल रंग लाल संगकीसहेली लाल लालपानबीरी मुख अधर लाल लालहैं॥ लाललालचन्द्र चांदनी प्रकाश लाल लाल, लसैं लाल संग ग्वाल बाल लाल लाल हैं। गोपाललालवाल रहस रच्यो वृन्दावनकुंजलाल येते सबलालमें गोपाल लाल लालहैं ३९ ॥

तथा॥चितैचितैचहुंचमकत चंचलचपलचातुरिचकृत चौंकि चमकि चमकि उठै। औ झकिउझकि झुकिझुकि झझकिझझकिझिल्ली झनकारनसों झमकिझमकि उठै॥ भुवनेशभरतदरारैं दबेदादुरन देखिदुरि दाखिदहि दमकि दमकि उठै। वरही वलाकनि बिलोकि वदलनि वर विधुवदनि बनिता बमकिबमकि उठै ४० ॥

तथा। चोथते चकोरैचितचोरैं चहुंओरैंचेति चकित चितचिंता सों चमकि चमकि जात। झुकि झझकारि झोरिझटितझरोखझांकि झारिझारझोरनसोंझमकि झमकिजात॥भुवनेशलोनेलोने लोचदारलोचननिललितलतानलखिलमकिलमकिजात। तपिततरुनितिय तीपितनतापनिमेंताकिताकितारापातितमकितमकिजात

तथा। कामअरुक्रोधलोभमोहमदमातसजिंजइनकी जँजीरनको जारिहैपै जारिहै। कहै पदमाकर पसारि पुण्यचारओंओरचारयोफलधामनमेंधारिहै पै धारिहै॥ छोभहृतछन्दनको वाढ़ेपापवृन्दनको फिकिरिकुफन्दन को फारिहै पै फारिहै। एकै वार वारिजिन गंगाको पियो

है तिन्हें तारनि तरंगिनीयातारिहै पै तारि है ४२॥

तथा। झिल्ली झनकारैं पिकचातकीपुकारैं बनमोरनगोहारैं उठैं जुगनू चमकि चमकि। घोर घन कारे भारे धुरवाधुरारे धाम धूमन मचावैं नचैं दामिनी दमकि दमकि॥ झूकन बयारि बारिबूकन लगावैं अंग कूकन भभूकनसों औरमों खमकि खमकि। कैसरहैं आप प्राणप्यारे यशवन्तबिन छोटी छोटी बूँदनसों बरसैं झमकि झमकि ४३॥

तथा। नैननि सरोरिनीरनैसुकनिचोरिदन्त अधरन दैरिकै आई फिरि खोरिखोरि। अंग झकझोरिझोरि भृकुटी सिकोरिकोरि मनमन भनति कछूक मुख मोरि मोरि॥ कंचुकी सुछोरिछोरि नीकेकर कंजसों कुंजनि दुवारैदुहुंजंघनको जोरिजोरि। भोरहीकहांधौं भभरिभामिनि भौनबैठीभरति उसासैंभुवनेशतृणतोरितोरि ४४॥

तथा। गोहनतजैगो तबरूसैंमतिमोहनसोंमानिनी गुमानछांडि बरज्योंमैं बेरिबेरि। मानीनाहिं रंचऊबिरंच बस बानीमनजातदहैहियो कियोसोई अबफेरिफेरि॥ तजीहैं गुपाल बाल भईहै बिहालहाल हरीहरीकारिकै मुराछिपरीटेरिटेरि। छकीहैछबीलीछैलछोह मोहछाकनिसों लगीधकधकी थकीकुंजनिमैं हेरिहेरि ४५॥

तथा। करति कलोल गहिचूमति कपोललोलनथ अनमोल बोल बोलतिहैरसकी। त्योंत्योंपीयहीय लपटायके दिवाकरजू दोऊकुचछातीसोंलगायकरमसकी॥ घसकि घसकि मुख फेरिफेरि हेरिहेरि लचकिलचकि

कटि छोड़तिनचसकी । कोककेकलानतेकरतिविपरी
रति सोरहश्रृंगारकिये सोरहवरसकी ४६ ॥

तथा। नीलपटपहिरिअँध्यारीमें सिधारीनारि य
रकरभोर गलमेले बांहरुखते । बैठि परयङ्कअङ्कला
कर कुचगहि मसकि करतकेलि हेलिहेलि सुखते ॥ उ
छरि उछरि फन्दसरस अनन्दकन्द लोटपोटकैकेबोल
मन्दमन्द मुखते । मानो ढिगपरसि रसोईया दिवाक
जू तूरितूरि रोटीभकटखातजातमुखते ४७ ॥

तथा। नीरते निकरि कर तरनी तनजातीरतर
प्रणामकरो दोऊकर जोरिजोरि । भनतदिवाकरसुत
वेपरदवात नेक सतराति मुसकाति मुख मोरि मोरि
प्रीतिकियो गोपीजन गुपुत तिहारोसंग होतना पराय
पति यतन से कोरि कोरि । चढ़े जो न होत कान
कदमकी डारपर करसे मरोरि बंशी चीरलेती छोरि
छोरि ४८ ॥

स०। करिहैं करि चाव कहावैसबै हमश्यामपैचि
दई तो दई । भुवनेश नहीं परवाहकछू बदनामहमैंज
कई तोकई ॥ भयोकाह कहो इनवातनसों कुलकीकुल
कानिगई तो गई । उनको कहा लागतिहै सजनी ह
सों लटीवात भई तो भई ४९ ॥

क०। भादोंभरे सर बहैं नदी नारे धर धर धरा
मेघ झरि झरि झरतिहै । भरि भरि नयननिमैंन मा
हारी वारि वारि अरिअरि बीरवीरबीरमें कहतिहै ॥ धा
धरिदेखो कर हियो होत धरधर थरथरकांपैधरधीर

धरतिहै। हरिहरि जीवजात देखलता हरिहरिहरिहरि हर हर रसना रटतिहै ५० ॥

स०। मधुरी मुसक्यानि मनोहरमें मतिमेरीजुआनि ठगीसो ठगी। अरु एगहवीले गुलाबके पातसे गातन दीठि लगीसोलगी ॥ सजनी वहिनेहमई बतियानितें कामकी ज्योति जगीसो जगी। अबकोऊ कितोऊकहैं सजनी जुहौं श्यामके रङ्ग रँगी सो रँगी ५१ ॥

क०। नैननकी कोरसों मरोरि तन तोरि तोरिजोरि जोरिनेह प्रेम कोर कोर बैगई। नासिका सिकोरिरिस तिनकासाबोरिकर लटकन लटकचटाक चोटकैगई ॥ कहतप्रतापरागरंगकी तरंगनसों जंगनबजायकैअनंग अंग दैगई। कटिमटकायदैदैतालै औ बतायनथभूमि भूमिभुमका भिकोरिमनलैगई ५२ ॥

तथा। बरषै पुनरबसु धराहै उदारा जहँ इन्द्र गोप गोपिकाली फिरैं घूमिघूमिहैं। द्विज हरषावैं पय प्यावैं चहुँ ओरनितें अम्बर सुहावैंसिखिआवैं जूमिजूमिहैं ॥ चपला सहित वसुयाम जामैं घनश्यामगति अभिराम अतिचलैं भूमिझूमिहैं। चहूंघातमालैंहैं कदम्ब तालैं दीनद्याल पावसरसालैके बिशालैं भूमिभूमि हैं ५३ ॥

तथा। रोषकरि पकरि परोसतें लेआईघरैं पीकोप्रा-णप्यारी भुजलतनि भरैं भरैं। कहैपदमाकरये एसीदोष को जो फिर सखिन समीप यों सुनावति खरैं खरैं ॥ प्योछल छिपावैं बात हँसि बहरावैं तिय गदगद कंठ दृग आंसुन झरैंझरैं। ऐसीधनधन्यधनी धन्यहै सोवै-

सो जाहि फूलकी छड़ीसों खरी हनत हरे हरे ५४॥

तथा। दोऊ छबिछाजतीं छबीली मिलि आसन पै जिनहिं बिलोकि रह्यो यातन जितैजितै। कहैपदमाकर पिछोहिं आय आदरसे छलियाछबीलोकत बासरबितै बितै॥ मूंदेतहांएक अलबेलीके अनोखे हगसुहग मिचाउनेक ख्यालन हितैहितै। नेशुक नवाय ग्रीव धन्य धन्यदूसरीकोऔचकऔचूकमुखचूमताचितैचितै५५॥

तथा। मंजुलमलिन्दगुंजें मंजरीन मंजुमंजु मुदित मुरैलीअलबेली डोलैं पात पात। तैसेई समीर शुभ शोभै कविद्विजदेवसरसअसमशर बेधतबियोगीगात॥ चोथती चकोरिनी चहूंघाचारु चांदनीन चाख्यो चाईं चतुरचकोरते चहचहात। धीरना धिरातचित्तचौगुनो पिरात आली कन्तबिनहायदिनऐसेई सिरातजात ५६

तथा। शोचिकै सकोचिआति लाजन सँभारितन आंगनके पासआय आय घूमिघूमि जाति। द्विजदेव तैसेई मलिन्दनकी धुनिसुनि बैठेहू वियोगिनी व्यथासौं झूमिझूमिजाति॥ वाकी ऐसी दशा देखि बार बार घ्याईमीच बीचही बिचारिचवखटचूमिचूमिजाति।लह लही ललित लवँग लतिकासीबाल ख्यालहीते पौनके पै दूमिदूमिजाति ५७॥

तथा। सजिब्रजबाल नँदलाल सों मिलै के लिये लगनिलगालागिमैंलमकिलमाकिउठै। कहैपदमाकराचि राकऐसीचांदनीसी चारोंओरचौकानिमैंचमकिचमकिउठै॥झुकिझुकिझूमिझूमिझिलाझिलझेलझेलझरहरी

झांपनमें झमकिझमकिउठै। दरदरदेखोदरीखाननमें दौरिदौरि दुरिदुरि दामिनीसी दमकिदमकि उठै ५८॥

तथा। सोसनी दुकूलनिदुरायेरूप रोशनीहै बूटेदार घांघरीकी घूमनि घुमायकै। कहैपदमाकर त्यों उन्नत उ-रोजनपै तंगअँगियाहै तनीतनिनतनायकै॥ छज्जनकी छांह छाकि छैलके मिलैकेहेत छाजतीछपामें योंछबीली छबि छायकै। ह्वैरही खरीहै छरी फूलकी छरीसी छपि सांकरी गलीमें शूल पाखुरी बिछायकै ५९॥

तथा। कानसुनिआयसुसुजानप्राणपीतमको आनि सखियान सजे सुन्दरिके आसपास। कहै पदमाकरसु पन्ननको हौजहरे ललितलबालबभरे हैंजलबासबास॥ गुंदि गैंद गुल गंज गौहरन गज गुल गुपत गुलाबी गुल गजरे गुलाब पास। खासे खस बीजन सुखौन पौन खाने खुले खसके खजाने खस खाने खूब खास खास ६०॥

स०। धीरधरे न मलै जमलै तनु ताप दुरैन पुरैन के पातन। त्यों द्विजदेव कपूरकी धूरन जातनवाकी व्यथा जल जातन॥ ऐसिये श्याम सुनी कुशलातहौं छज्जन छज्जनछातन छातन। बूढ़िनकी अरुबारिनकी ब्रजकी युवतीन के बातन बातन ६१॥

क०। जकि जकि जातगात लेखनी लखतनैनथाकि थाकि जात पेखि पंकज के पातरी। भरिभरि आवै देह नेहके झकोरजोर करिकरिआवतनक्योंहू मुखबातरी॥ येरी मेरीबीर पीर बिरह बिथाकी अंग कैसेहून काहूसों

कलङ्क कहिजातरी। कीजेकहा रामकाम बैरीकीअक
मोहिं भूंठेहू सँयोगको न योग दरशातरी ६२ ॥
तथा। ताकिये तितै तितै कुसुंभसों चुवोईपरै प्या
परवीन पांउ धरत जितै जितै। कहै पदमाकर सुपौन
उतालीवनमालीपै चलीयौंबाल बासरबितैबितै॥ भा
हीके डरन उतारि देति आभरन हीरनके हारदेति
लिन हितै हितै। चांदनीके चौसर चहूंग चौक चांद
में चांदनीसी आई चन्द चांदनी चितै चितै ६३ ॥
तथा। सजनलगीहै कहूंकबहूं शृंगारनको तजनल
गीहैकहूंएसब सवाँरीकी। चखनलगीहै कछू चाहप
माकर त्यों लखन लगीहै मंजु मूरति मुरारीकी ॥
न्दरगोबिन्द गुण गननलगीहै कछु सुननलगीहै बा
बांकुरेविहारीकी। पगनलगीहै लगीलगनहियेसों ने
लगन लगीहै कछूपीकी प्राण प्यारीकी ६४॥
तथा। लचकै ललित लंक मचकै उरोज ऊंचेहच
हमेल तिय हियन परै परै। नैननको चापधर मूंदमु
सांसकरै फिरफिर अंकभरे मिलत गरैगरै ॥ श्रीप
सोहात वारिजात सेवदनपररूपसरसातरूरैमुकताल
लरै। मेरेजान कातिकको पूरण मयंकपर चेहुंघा नख
मालगेरत हरैहरै ६५॥
तथा। कविपजनेशकेलिमन्दिरचिराकमाल पन्न
नके परम प्रभासी प्रभाफूटिफूटि। हीरन जटित जे
दार परयंक परदोऊ रहेराते विपरीत सुखलूटि लूटि
हुरद दुरेफन के दुरते ढरत स्वच्छ सुमन गुलाब द

छवियुत छूटिछूटि। प्रफुलित कंजदलदीरघदृगकिेमृदु मुख महताब तेपरीसे परैं टूटिटूटि ६६॥

तथा। मुखौरुखमोरेदेति घूंघरोनछोरेदेति चूमबोन भौरेदेति बदन मयंककी। लाजनते चूनरीलपेटतिनग वैहरै रैरै गरै रोवैहटै हिलकीन अंककी॥ भनत कवि-न्द लालकरको परस होत घरको मिटैनसरसाईबाल शंककी। जकर जकर जांघैं सकर सकर परेपकरपकर पानपाटीपरयंककी ६७॥

तथा। लांबीलांबी लटैं लोनी लटकट लंक लौलों लीकलागीलोचन उड़त झकझोरिझोरि। छूटिगयेस-कलशृँगार हार टूटि गये लूटि गये लपटि भुवंग अंग कोरिकोरि॥ सकुचिसयानी अँगरानी प्राणप्यारी बाल प्यारे यशवन्तके निकटतृण तोरि तोरि। तोरि तोरि चितहित जोरि जोरि लाड़िले सों छोरि छोरि कंचुकी जम्हात मुखमोरि मोरि ६८॥

तथा। वारिधि बिरहबढ़ो गोपिन हिये अभङ्ग दुख केतरङ्ग उठैं अङ्गनि लहकि लहकि। रूपहोमसालसा-सुन शिवनाथ साथबिन छिनै छिन लालसारहीहैंबेल-लकि ललकि॥ लगी टकटकी नैनछकी प्रेम छाकनिसों जकीसी बियोगी बैन बोलहिं बलकिबलकि। बूड़ोबृज चाहत मँझार नन्दके कुमार मीननते घुनीधारधावति ढलकि ढलकि ६९॥

तथा। रावरे वियोग सुनो सांवरे कृपाके ऐन राधा नैनते नदीचली तरंग जोरिजोरि। दापकरि धाईशोक

सिन्धुके मिलापहेतु ऊरध समीर नीररह्यो झकझोरि झोरि॥ तृणके समान गुरुजनके सकोच बहे ढहेहैंनि-मेपतट लाजतरु तोरि तोरि। परीभीर भारी गिरिधारी कीजिये सहाय वासवलों चाहति वहायो ब्रज बोरि बोरि ७०॥

स०। वरशम्भुजटातजि भागीरथीमथिसागरमध्य धसी सो धसी। करिकोटिप्रकार बुझावैबुझैन शिला में कृशानुकसी सो कसी॥ अबहोनी जो होय सोहोय प्रताप मयंकमें लङ्कलसी सो लसी। मृदुमूरतिसुन्दर सांवरे की अबतो उरबीचबसी सो बसी ७१॥

क०। दौरिदौरि देविन मनावति मयङ्कमुखीहोरि होरि आलिनके पांयन परतिहै। घोरि घोरि चन्दनक-रतथार शिवनाथ वोरिबोरि वाती घृतआरती सरति है॥ तोरितोरि गजमणि की माल चौक पूरति है छोरि छोरि भूषण निछावरिधरतिहै। कोरि कोरि अंजन ल-गायो दृगकोरन लौं जोरि जोरि सेज घिरि भावरी भरतिहै ७२॥

स०। मोहन श्यामसरोजनसी इननैनन नोक नई सो नई। वस धोखेइमें अधराधर कंज अली रसचा-टलई सो लई॥ निजकोमल प्राणप्रतापनिरे निर्दयीके हाथदई सोदई। अबमांगति हौं करजोरे यहै घरजाहु लला जो भई सोभई ७३॥

क०। छाय रहे चारों ओर नाद सबयन्त्रनके गाव-तींनवेली ललितादि सब गोरि गोरि। गति सों नई

नई नृत्यत सुढंग आछे लेत त्यों सुरपंचचल तानन्न तोरि तोरि ॥ भनत प्रताप अूहगन नचाय आय मुरि मुसक्याय घूमि जात चित चोरिचोरि। देखिदेखिनूठन अनोखी ऐसी माधो जीको बारबार राधा मुसक्यात मुख मोरिमोरि ७४ ॥

तथा। लोनी लोनी अलकैं बिलोकती कपोलन पै बिन्दुश्रम आवा मुखझलकतहै लोरिलोरि॥ नैनरतनारे नागबेलीके बदन भीने बिगलितगिराश्रेणी प्रेम रस बोरि बोरि ॥ पवित पिवावत मधु झूमत हँसतअरु गावतहै लावत प्रताप अंक जोरिजोरि। देखिदेखि बिकल मदनबश माधोजीको बारबारराधा मुसक्यात मुख मोरि मोरि ७५ ॥

तथा। गोरे गोरे गातन गोराई की झलक झलकत दामिनीदमकवारों अंगप्रतिकोरिकोरि।रोमरोमभीनेरंग मदवोमदनदोऊघूर्णतेचखनअंगलोमझकझोरिझोरि॥ भनत प्रताप यह भूतल मरोरिमोर छोरि छोरि आंगी ज्वंभलोति तनु तोरि तोरि। जोरिजोरि लोनेलोने नैन छ्वैके माधोजीसों बारबार राधा मुसक्यातमुखमोरि मोरि ७६ ॥

क०। एकतो जगे दूजे मधुकी खुमारी छाई तीजे शीतल समीर करे मन्दरस बोरिबोरि। चौथे ये वसंत राजै कुसुमित निकुंज मन्दिर तीरकालिन्दीके लेताचित चोरिचोरि। झूमिझूमिलेटत उठत मन विहँसतघूमत प्रताप राते नैन तनुतोरि तोरि। भोरकी अनोखीऐसी

दशा देखि माधो जीकी वारबार राधा मुसक्यात मुख मोरि मोरि ७७ ॥

तथा। सोरहू शृँगार नोखी घूंघुटकिनारीदार उर वीच व्रीड़ा आतंक कछु थोरिथोरि। अंगथहरातमुख मण्डल प्रस्वेद मंडित नैनन मनाय हाहा खात विधि कोरि कोरि॥ भनत प्रताप केहू काहू को लखातनाहिं हारेहैं अपार प्रेम सिंधु मध पोरिपोरि। देखिदेखि सांवलीसखीरी रूपमाधोजीको वारबारराधामुसक्यात मुख मोरि मोरि ७८ ॥

स०। इन नैननमें वह सांवरि मूरति देखत आनि अरी सो अरी। अबतौ है निबाहिबो याकोभलो हरिचंदजू प्रीति करी सो करी। उनखंजनके मदगंजनसों अँखिया ये हमारी लरीं सो लरीं। अब लोग चवाव करैं तो करैं हम प्रेमके फन्दपरीं सो परीं ७९ ॥

तथा। तुम चाहो सो कोऊ कहो हमको नँदवारे के संग ठई सो ठई। तुमहीं कुल वीनें प्रवीनें सबै हमहीं कुलछांड़िगई सोगई॥ रसखानिये प्रीतिकी रीतिनईसो कलंककी मोटें लईसो लई। यहि गांव के बासी हँसौ सो हँसौ हमश्यामकिदासीभई सोभई ८० ॥

क०। रूपकी अपार राधाठाढ़ी निज सद्वार जाकी छविपरि रति वारिये सो कोरि कोरि। मोहिं देखि नेक वहलजायके हटायभौंहबाजीचितवनिमांझि लीनी चित चोरिचोरि॥ मोरिमतरे मोह जमुहान अंग रानी पुनिआलसबलित नैन बटुरारे ढोरिढोरि। नीठि

नीठि गई भौन भीतर सरोज मुखी डीठि सों मिलाय डीठि नीकै नहु जोरिजोरि ८१॥

तथा। नैन नवनागरके तलसे तुरंग अंग छबिकी तरंग यह रंगन धरैंधरैं। मदन प्रवीन तिन्हैं फेरिबो सधावतहैं घूंघुट की ओट ऐसे कौतुक करैं करैं॥ कीने चाह आंबगी सों चूकिके चपल तिषरोई उड़ोहैतेउमंग सों भरैं भरैं। लाजबागबसतरफततताई भरे करतखुदी सीपग धरत हरैं हरैं ८२॥

तथा। अति अभिराम श्याम रतिमंदिरमें बिहरत उमंग अनंग रंग भरि भरि। नखदान रददान चुंबन अधरपान आलिंगन करत अनेक भायभरिभरि॥सु रतिके आरंभही लजावती सखी निपटलजायाजियगई कहूं ढरिढरि। ढाढ़सहियेमें गाहि निधड़क ह्वै लजके आय ठाढ़ीभई निपट ढिठाई ढीठ ढरिढरि ८३॥

तथा। केलिकलाकुशल कुरंगनैनी पिकबैनी जाकी छबिपर सौतिवारियेंकेकोरिकोरि। सैननसोंपागीअनु-रागीपतिसंग जाकी मैनके बिलासनसोंलेत चितचोरि चोरि॥ सरकी सकुचमनमोहनके निकट कछुक मुलकी अंगरानी तनु तोरि तोरि। शोभा वहमोपै कहूजातन बखानीकरअंचलकीओटजमुहानीमुंहमोरिमोरि ८४॥

तथा। रूपकीउजारी वृषभानुकी दुलारीराधे तेरी ये निकाई हेरिसौतिसब हारिहारि। तेरेगुण गायबे को तेरेहीरिझायबेकोतेरीप्रीतिहीकोपनुगह्योगिरिधारि धारि॥ तेरोनाम तेरो ध्यान तेरेही हियेमेंधरे तेरोरस

यशउनगायवहबिसारि बिसारि। तूही उरबसी कैकैउर बसी मोहनकेतेरीछबिऊपरकोउरवसीवारिवारि ८५ ॥

तथा। कृष्ण प्राणप्यारे प्रात प्रीतिकैपधारेमेरे देखे मैंन मूरतिविरहगयो भागिभागि। मरगजेबागेरसपागे लटपटी पागें आसरमगन अंगरहे अंक लागिलागि॥ रावरेलसत अतिलोचनललितभयेकोकनद अरुणबरुणनिशि जागिजागि। मेरेजानप्राणपतिवाहीप्राणप्यारे केपरम अनुरागमें रहेहैं अनुरागि रागि ८६ ॥

तथा। हरि हरि रटत बढ़त बिथा छिन छिन बरि बरि उठत वाके नेरे जात जरि जरि। करिकरि थकी है उपाय सब आली अबकछुन बिसायउर शोचभारभरि भरि ॥येहो बलिवैद अब रावरे सरसहीबचैतौबचैबाल बलिवाकी पीर हरि हरि। तीखा ताप टारियेधरम उर धारियेनिवारिये गहरु करुणाके ढारढरिढरि ८७॥

तथा। जरीहै विषम ज्वर गिरीहै अचेत वहघिरो हे चहूंघा व्याधि वृन्दनमें खरिखरि। कंचनसेतनुको अतन वृथाबारतहै रतननवारिये यतनहरि करिकरि ॥ ऐसीगति देखी होती मरत परेखें अब कछु ना बिसात छिन छिन जात बरि बरि। लीजिये जगतयशकीजिये धरम यह दीजिये सुदरशनवाकी तापहरिहरि ८८॥

तथा। आजब्रजदेख्योंहोरी खेलकोसमाजवहशोभा मेरे नैननमें रहीहै बिहरि बिहरि। राधाबनमाली को विलास लखिआलीसच मघवाके कोरिक गुमान जात गरिगरि ॥ ज्योंज्यों प्यारीझुकि झुकि झांपत बदन

विहसतसतरात रसिकोसों रुखकारिकरि। त्योंत्यों छवि देखिछक्यो कृष्ण प्राणप्यारे लाल भिझकावतगुलाल मूठीभूंठी भरि भरि ८९ ॥

तथा। नीभ्ररतड़ाग जल यन्त्रनके बिमलसलिल परसतऐसे ढारसों ढरे ढरे। कृष्ण कहैंजहांतहां सीरी छांह देखि देखि विरमिरहत तरु तरु के तरे तरे॥ सुमन परागरजपागि रह्यो अंग अंग स्वेद कण बूंद मकरंदकेधरे धरे। सुरभिसमूह छाक्यो दक्षिण दिशाते वायु थाक्यो सो बटोही चल्यो आवत हरे हरे ९० ॥

तथा। वेरबेरढांके बड़ेडरडर झांकेतऊकड़ कड़ दांते बाजजुरिजुरि जात। नेकहोतन्यारे तोपै थरथर कांप प्यारेओढ़ि ओढ़िशालभालहूते लुरिलुरिजात॥शोभन भनतभाग भाग आग आगेजातलखि छारभार पुनि पुनि मुरि मुरिजात। शिशिरके शीतमेंअनीतशीतमान भीत सेजके पुनीत नीत दोऊदुरिदुरिजात ९१ ॥

तथा। इन्दीबर नैननपै भृकुटीकमान निजरूपके गुमान मानरतिके पचैपचै। रूपकैसी रासबालिसोहै मणिमन्दिरमेंउन्नतउरोजभार लंकको लचैलचै॥ कहैं नन्दराम जबओचक उघार मुखकंजसे कपोल चित्त चौगुनो सचै सचै। चौंकिपरे चहकिचकोरचारोंओरन ते चंचरीक चारु चमकाहट मचै मचै ९२ ॥

तथा। सुन्दरसुजान घनश्यामअभिरामकोटि काम छविहारकबि हारक विशाल साल। कहैंनन्दरामराग रंगमें प्रवीन मीन पीन बनितान प्रेम सागरकी जाल

जाल ॥ नेहको निधान नटनागर छबीलो छैलछाजत छटानकामिनीलकंठमालमाल ।चन्दतेदु चन्द अरबिन्द ते अनूपअतिआनँदकोकन्दब्रजचंदनंदलालललाल ६३

तथा। प्यारीको सुनायकै कहतश्याम ग्वालन सों आजुमाति आइयो हमारेसंग लायलाय । यन्त्रमन्त्र तन्त्रको विधानतोइकन्तहीमेंबनतदुरायेते विशेष फल दाय दाय ॥ कहैं नन्दराम कामनाको कलपद्रुमहै याको सिद्ध पायेते अशेषसिद्ध पाय पाय। योग यमघटकेअ-टककेविकटबनबंशीबटतटएकमन्त्रकोजगायगाय६४॥

तथा। सम्पाके समीप जायबेको अतिआतुरहै च-म्पाको निहारै फुलवारिन खरेखरे । तालनपै जाय के मरालनसों हेतकरै शावकमृगीनको बोलावत हरेहरे ॥ कहैं नन्दराम चोपिचन्दमें लगावे चख बैठेरहैं सेजपै सरोजन धरे धरे । जादिनते बाल नन्दलालतोहिंदेखो कहूं तादिनते सूरति बिसूरति परे परे ६५ ॥

तथा। कारीकारी कजरारीभारी घुमिघूमि अम्बर में कालिहकैसी घटा आजुघेरिहै न घेरिहै।नागरनवेली मोहिं गागरउठायबेको कालिहीकी भांति आजटेरि है नटेरिहै ॥ कहैं नन्दराम ऐंचिअंचल उरोजन ते आज दुहूंकन्धनपै फेरिहै न फेरिहै । आजधौं मिलैगी ना मिलैगी यमुनाके घाट मिलैगी तो वैसे हँसिहेरिहै न हेरिहै ६६ ॥

स० । सखिदेखतही मनमोहनको कछु औरही डौरन कै रही कैरही। रँग आनन लोचन बैननमें नँद

रामजूनैनन दैरही दैरही ॥ थकि मोरनके मतमें परि चोपिचकोरनकोमत कैरही कैरही । अमिभौंरनकीगति लैकेकुरंगकिशोरनकी गति लैरही लैरही ९७ ॥

क० । ताकियेन लाती योतिपाय तवातोमतनताप तो निवारी मैं पटीर पंक ताय ताय । सीरे उपचारकै कहांलौं गहिराखौंप्राण अबलौं जियाय कंजपातनको छाय छाय ॥ कहैं नन्दराम सुनो येहो घनश्याम निशि बासर बितावततिहारिगुणगाय गाय । वहतौ विचारी बनवारीबनवारी रै तुमको बिहारी दया आवत न हाय हाय ९८ ॥

स० । हरिहेरि हमारे हिये विषबीजनबैगयोबैगयो बैगयोरी । ठनि ठौर कुठौर सनेहकीठाकरदैगयोदैगयो दैगयोरी ॥ नन्दरामजूत्यों बिरहानलतेतनतैगयो तैगयो तैगयोरी । चितमेरोचुरायके चोरअरी मन लैगयो लैगयो लैगयोरी ९९ ॥

क० । जूझो मेघनाद नारि आरतको नादकरिशोचति विषादसों बिनोदनाबितैबितै । कहैंनन्दरामादिगपाल जीतिबाहुबल प्रबल प्रबलवीर विक्रम रितैरितै ॥ येहो प्राणनाथ मोहिं लीन्हों क्योंन साथ आजुकरिकैं अनाथगये लक्षने जितैजितै । नीरभरेनैना बातकाहू कीसुनैनाअतिरोचतिसुनैनाबांहनाहकीचितैचितै १०० ॥

तथा । कोपकरिराम पहुंचेजब लङ्कागढ़ शंकाभई भारिभौनभीतरबसे बसे । बोले यातुधानी यातुधानन सौं बानी जात हांकहू सुखानी भारी भीतमें धसेधसे ॥

नन्दरामकाजरसेकारेकारे भालुकपि सागरकिनारेपिया देखिये लसेलसे । डोलिये न ह्यांते कहूं खोलिये न द्वारपटखोलिये न छाती बैन बोलिये रसे रसे १०१ ॥

एकश्रेणीके कवित्व व सवैया १०॥

क०। झूठोधन झूठोधाम झूठो सुखझूठोकामझूठो देहझूठोनाम धरिकै भुलायो है। झूठोतात झूठी मात झूठे सुतदाराभ्रात झूठो हित मानिभानि झूठी मन लायोहै ॥ झूठोलेन झूठोदेन झूठो मुखबोलै बैन झूठे झूठे करें फैन झूठहीको धायोहै। झूठही मेरो तेरोझूठ हीमेंपचिगयोसुन्दर कहतसांच कबहूंन आयोहै १ ॥

तथा। झूठे हाथी झूठे घोड़ा झूठाआगेझूठादौड़ा झूठा बांधाझूठाछोरा झूठाराजारानीहै । झूठीकाया झूठी माया झूठे झूठे धन्धेलायाझूठा मूआ झूठाजाया झूठी याकी बानीहै ॥ झूठा सोवै झूठाजागै झूठाजूझै झूठाभागै झूठा पीछे झूठा आगे झूठ झूठी मानीहै। झूठा लीया झूठादीया झूठा खाया झूठा पीया झूठा सौदा झूठाकीया ऐसाझूठाप्रानी २॥

तथा। विषहीकीभूमि माहिं विषके अंकूरभयेनारी विष बेलिबढ़ी नखशिख देखिये। विषहीकीजड़ मल विषहीके डार पात विषही के फूलफल लागेजूविशेखिये ॥ विषकेतांतू पसारि उरझाय आंटीमारसबनर वृक्षपर लपटेही लेखिये। सुन्दरकहत कोऊसंततरुबचिगये तिनके तो कहूं लतालगीनहींपेखिये ३॥

तथा। उदरमें नरक नरक अधद्वारनिमें कुचन में

नरक नरकभरी छातीहै । कण्ठमें नरक गालचिबुक नरक बिम्ब मुखमें नरक जीभलारहू चुचातीहै ॥ नाक में नरक आंखिकानमें नरक बहै हाथ पांव नखशिख नरक दिखातीहै । सुंदर कहतनारी नरकको कुण्डयह नरकमें जायपरै सोई नरक पातीहै ४ ॥

तथा। सुखमाने दुखमाने सम्पति बिपतिमाने हर्ष माने शोकमाने मानि रङ्क धनहै। घटि माने बढ़ि माने शुभहू अशुभमाने लाभमाने हानिमानेयाहीते कृपनहै ॥ पापमाने पुण्यमाने उत्तममध्यममाने नीच माने ऊंच माने माने मेरो तनहै । स्वर्ग माने नरकमानेबन्ध माने मोक्षमाने सुन्दर सकलमाने ताते नाम मनहै ५ ॥

तथा। भईहूं अतिबावरी बिरह घेरी बावरी चलत हैं चवावरी परोंगी जाय बावरी । फिरतहूं उतावरील-गतनाहीं तावरी सुनारीको बतावरी चल्योहै जातदांव री ॥ थकेहैं दोऊ पांवरी चढ़त नहीं पावरी पियारानहीं पांवरी जहर बांटि खांवरी । दौरतनाहीं नावरी पुकार के सुनावरी सुन्दरकोऊ नावरी डूबतरारै नावरी ६ ॥

तथा। बांधे द्वारकाकरीचतुरचित्तकाकरी सोउमिरि वृथाकरी न रामकी कथाकरी । पापको पिनाकरी न जानै नाकनाकरी सो हारिल की लाकरी निरन्तरही नाकरी ॥ ऐसी सूमताकरी न कोऊसमताकरी सोबेनी कबिताकरी प्रकाशतासताकरी । देव अरचा करी न ज्ञानचरचाकरी नदीनपै दयाकरीनबापकीगयाकरी ७

तथा। बाजीउठिधाई बाजीदेखिबे को दौड़ी आई

बाजीमुरझाईं सुनितान गिरिधरकी । बाजी न धरत
धीर बाजी न सँभारैंचीर बाजिनकी विरह अनलअ
भरकी ॥ बाजी हँसिबोलैं बाजीकरत किलोलैं बाजे
संगलागी डोलैं सुधिरही नहिं घरकी । बाजीकहैं कह
बाजीबाजी कहैं कहूं बाजी बाजीब्रजबांसुरीतो सांब
सुघरकी ८ ॥

तथा। खगमोहे मृगमोहे नगमोहे नागमोहे पन्न
पतालमोहे धुनिसुनि जासुरी । सुरमोहे नरमोहे सुर
सुरेशमोहेमोहिरहे सुनिकेसुरअरुआसुरी॥भनतगुमा
कहौं मोहिवेकीकहा बाचि चरऔ अचरमोहे उमँ
हुलासरी । गोपिनके वृन्दमोहे आनंदमुनिन्दमोहेचन्
मोहे चन्द्रके कुरँग मोहे बांसुरी ९ ॥

तथा। कुन्दकी कलीसी दन्तपांति कौमुदीसी दीस
बिच बिच मीसी रेख अमीसी गरकि जात। बीरी त्य
रचीसी बिरचीसी लखैं तिरछीसी रीसी अंखियां बै
फरीसी फरकिजात॥ रसकी नदीसी दयानिधिकी नव
सी थाहचकित अरीसी रतिडारीसीसरकिजात। फन्
में फँसीसी भरि भुजमें कसीसी जाकी सीसीकरिबे
सुधासीसीसी ढरकिजात १० ॥

तथा। मदन तुकासी कीधौं राधे कुन्दुकासी मन
कुंजकलिकासी कुचजोरी बिकासीहै । गांसीभरीहांस
मुखभासी मोहफांसी मद जोवनउजासी नेह दियाव
शिखासीहै ॥ जाकी रतिदासी रसरासीहै रमासी कौ
कहैतिलोत्तमासीरूपसदनबिकासीहै । कामकीकलास

चपलासी कबिनाथकिधौं चम्पक लतासीचारु चन्द्रिका प्रकाशीहै ११ ॥

तथा। अटकिचलीहैपग मटकि धरणिलखि पायल कीभनक मुठौनअनवटकी। क्षीनकटि पीन कुचमीनसे नयन सखि सटकि चलीहै सकुचि लगीहै निकटकी ॥ बल्लभरसिक लखिचटक बदन मांभ उलटिबटपारयुग धार मरबटकी। सटकी ललनतऊ नटकी ललनमति लटकी लपटमें लपटिआई अटकी १२ ॥

तथा। लजीले सकुचीले शरसीले सुरमीले से कटीले औ कुटीले चटकीले मटकीले हैं। रूपके लुभीले कजरीले उनमीले बरछीले तिरछीलेसेफँकीले औ गँसीले हैं ॥ ललितकिशोरी भमकीले गरबीले मानों अतिहीरसीले चमकीले औरँगीलेहैं। छबीले बंकीले अरु नीले से नसीलेआली नैना नन्दलालके नचीले औनुकीलेहैं १३ ॥

स०। बसुधा धरमें बसुधाघरमें औसुधाधरमें त्योंसुधामें लसै। अलिवृन्दनमें अलिवृन्दनमें अलिवृन्दन में अतिशयसरसै ॥ हियहारनमेंहरहारनमें हिमिहारन में रघुराज लसै। ब्रज बारन बारन बारन बारन बारन बार बसंतबसै १४ ॥

क०। छाई छबिहीरनकी रबिज्योति जीरनकी राजा राम चीरन की चिलकारी अलकें। अबला अहीरनकी पाली दधिक्षीरनकीसोनेसी शरीरनकीगारीदैदेबलकैं॥ पिचकारी नीरनकी मारसम तीरनकी देवदान चीरन

की मांगवको ललकैं। सौंहैं करैं वीरनकी उडनि अवीरन की मुखलाली वीरप की वीरनकी झलकैं १५ ॥

तथा। सनसन डोलिपौन सनसन सूख्यो सनसन सनअंग दुखसन होत हरिघरी। वनवन वीनिलीन्हीं वनवन व्यौरिव्यौरि वनत न वरणत क्योंहूंउरधरधरी॥ लेखराज ऊंखऊ पियूषसों विशेषशेष राखिनाहिंअनमेख देखिदेखिकरवरी। अवहरवरी सरवरी मिलैकैसे कन्त आरहरी आरहरी आरहरी आरहरी १६ ॥

तथा। सुन्दरसुजानपर मन्दमुसकानपर बांसुरीकी तानपर ठौरन ठगीरहै। मूरतिविशालपर कंचनकीमालपर खंजनसीचालपर खौरनखगीरहै॥ भौंहैंधनुमैनपर लोने युगनैनपर शुद्धरस वैनपर वाहिद पगीरहै। चंचलसे तनपर सांवरे वदनपर नंदकेनंदन पर लगनलगी रहै १७॥

तथा। वारिजात पारिजात पारिजात हारि जात मालती विदारिजात सोंधेनकी झरीसी। माखनसी मैनसी मुरार मखमलसम कोमल सरसतरु फूलनकी छरीसी॥ गहगही गरुई गोराईगोरी गोरेगात श्रीपति तिलौर शीशी ईंगुरसों भरीसी। वीजाथिरधरीसीकनक रेखकरीसी प्रवालद्युतिहरीसीललितलाललरीसी १८॥

तथा। दूरि यदुराई सेनापति सुखदाई देखो आई ऋतु पावस न पाईप्रेमपतियां। धीरजलधरकी सुनत धुनिधरकी सोदरकी सुहागिलकी छोह भरी छतियां॥ आईसुधि वरकी हियेमें आइ खरकीसुमिरि प्राणप्यारी

वहप्रीतमकी बतियां। भूलीओधिआवनकी लालमन भावनकीडगभई बावनकी सावनकीरतियां १६ ॥

स०। वेथिरकी बातियां कहिकै थिरजे थिरकीकहि वेथिरकीहै। वेखिरकीखिरकीनिबतावतकैखिरकीखिर-कीखिरकीहै।येसरदारसुनैसवरीनवरीनवरीनवरीटरकी है। वेघरकीनविचारतयेपरकीपरकीपरकीपरकीहै २०॥

क०। रूसनमेंदूसनमेंलालमनमूसनमें मैनकीमसू-सनमें धीरकैसेरहैरी। कोकिल की कूकनमें पौन मन्द भूकनमें औसरकी चूकनमें फेरि पछितैहैरी॥ बेलिन नबेलिनमें सङ्गकी सहेलिनमें खेलनमें केलनमेंमनसा समैहैरी। वृन्दावन कुंजनमें फूलनकेपुंजनमें भौंरनकी गुंजनमें भूलिमानजैहैरी २१॥

तथा। टेढ़ीटेढ़ी भौहें चढ़ीहैं चितवनि टेढ़ीटेढ़ीही तिलकभाल केसर बिशालकी। टेढ़ी किरीटटेढ़ीकँलगी पषानखोंसे टेढ़ीहीसुहात चारु कुण्डल बिशाल की॥ टेढ़ीही ग्रीवकरि मुरलीधर अधरनमेंटेढ़ीही शाखाठाढ़े तरवर तमालकी। टेढ़ीपरताप सब लागत कुलकानि टेढ़ीमेरे मनबसी टेढ़ी मूरति गोपालकी २२॥

तथा। फूलनकेरस फूलफबे फूलफूलदिखेफूलनके खम्भाफूलभालर सुहातहैं। फूलनकेछत्तरचमरहूसुफू-लनके सुखिसीखिफूलनको बजनडुलातहैं॥ फूलन को मन्दिर रच्योहै शिवनाथ शुभमूलधनुदेख फूलफूलेन समात हैं। फूलकन फूलअङ्ग फूलनलो भूषणहैफूल सेजपर दोऊ सुख सरसातहैं २३॥

तथा। चातकचिहुकमतमुरवाकुहुकमतझींगुरझि-हुकमतभेकीमननायमत। चकवाचिकारमतपपिहापुका-रमत बुन्दझरधारमतधारघहरायमत॥ कृष्णलाल गायमत पीरउपजाय मत बालम बिदेशपाय मैन तन तायमत। पौनफहराय मत चपलाचवायमत धायमत धुरवा औ घन घहरायमत २४॥

तथा। घहरघहर घहरात चहुँघातेघेरि सघनघन घुमड़िबरसतहै। छहर छहर छहरात क्षिति मण्डलपै छूटि छूटि बुन्दमानोछर्रांकोछरतहैं॥ भहरभहरभहरात भौन भीति भारी भीति भारीभारतीके भौनहूं भरत है॥ थहर थहर थहरात मेरो गात आली प्यारो वि-जयानन्दविदेश में बसतहै २५॥

तथा। खातीहरखातीरसजातीमदमातीहियेकाती सी लगाती टेर विरही बिघातीकी। जातीलै किराती मत आती ना दयाती न चुपाती तालगातीन प्रराती उतपातीकी॥ पातीकेहूभांति तौ बिसाती जो पोसाती औधराती सिय राती जो व्यथाती ताती छातीकी। न्हाती क्षतजाती मैं नुचाती रोम पाती काढ़ि बातीलै जलातीजीभ कैलिया कुजातीकी २६॥

तथा। कंचन लतासीखासी आसीमैनकासीभासी बोल रसरासीमैं सुधासी सरसातिहै। तीरसी तिरीछी बरछीसीहै चितवन तेरी सानपरसीसी बखसीसीसी लखातिहै॥ कामकीछरीसी मछरीसीप्रेमसागरकीरूप की भरीसी नँदरामभैं दरसातिहै। सीसीमतिकीजै मैन

दीसी सुधा मीसीईसी सीसी सुनितेरी मैनसीसी परि जातिहै २७॥

तथा। कुंदकी कलीसी दंत पांति कौमुदीसी दीसी बिचबिचमीसीरेखअमीसीगरकिजात। बीरीत्योंरचीसी बिरचीसी तिरछीसी लसै रीसी आँखियांके सफरीसी त्यों फरकि जात॥ रसकीनदीसी थाह दयानिधिकौन दीसी चकितअरीसीरातिदुरीसीसरकिजात। पीयफंद फँसीसी ऐसी होत जो कसीसी ताकीसीसी करिबेमें सुधासी शीशी ढरकि जात २८॥

तथा। सुनतक्षमाकेत्यों छमाकेभूरि भूषणकेसागर छमाके सिद्धि चौंकत छमाके हैं। जातही छिपाकेउठि दौरतछिपाकेअँगआवत छिपाके जेनछाकेछतछाकेहैं॥ कायल क्षुधाकेबसुधाके कीरधाके ओंठचाखत सुधाके ये मजाके बिंब पाकेहैं। नन्दरामताकेदृग ताकेहैंमृगा के कहां काके समताके जोरमाके उपमाके हैं २९॥

तथा। अम्बुजतटानफैलि फूटतफटान जैसे धावत नटान छबिछाईहै छटानकी। चातकरटाननदीनदउप- टान जल जंगलबटान महामारुत कटानकी॥ भीगत पटान बुन्दचुवत लटानपुखी तनलपटान मानों मदन घटानकी। पीवकेतटान उढेकुसुमी पटान अरुठाढी है अटान लहरैं लेतहै घटानकी ३०॥

क०। जाके चखबांके ताके छाके मुनिदेवसबकाके दुनियाके बीचबांके उपमाकेहैं। लाज बरषा के कैघटा के मघवा के ताके पूरण कलाके काहिआनँदपताकेहैं॥

थाके कंजनाके कैचलाके देखि लज्जितमृगाकेविधिना के सुखमाकेहैं। कुंदहैं सुधाके वसुधाके सुखवाके बीच विन सुरमा के नैनश्याम सुरमाके हैं ३१॥

तथा। कामवनितासीचारुचंपकलतासीस्वच्छपन्नग सुतासी कैतो ऐसीमैन ताकीहै। गोविन्द सुरीसीमंजु देखी आसुरी सी सुधा सिन्धु निसरीसी किन्नरी सी प्रभाकीहै॥ कोऊमैनकासी कोऊकहै इन्द्रासीकोऊइन्दु कीकलासी कहै ऐसीमति जाकीहै। रूपमदछाकीचली इतै उतताकी ढूंढ़ि वाकी समता की कविता की मति थाकीहै ३२॥

तथा। दीपक सिखासीखासी मैनका तिलोत्तमासी रतिसी रमासी राधिकासीरूपरासीहै। सत्यासीसाति-भामासीशकुन्तलासी सीतासीशिवस्वाहासुखमासीहै॥ कंजकी कहासीकै कलाहै कलानिधिकी मनसामहासी मुखहांसीसैंप्रकासीहै। शम्भुसालीकासीसुरपालबालि कासीबालखालमालिकासीहरितालिकाउपासीहै ३३॥

तथा। देखि कमलासी जैसी चन्द्रिकाप्रकासीमुख बीरहू उदासीदृगअंजन लागबासी है। परम प्रकासी सो अकासी देखिमलिन भयो पहिरे श्वेतधोतीमुख लटैं छूटीं खासीहै॥ विनावनमाली आली फूलनकोन योगलागै याहीते सोचत मनठाढ़ीउदासीहै। येहोब्रज-बासी सुधारूप की पियासीतुम्हें पूछै एकदासी हरि-तालिका उपासीहै ३४॥

तथा। फूलनकेअनवट औफूलनकेबिछिया औफूलन

की पायजेब बाजत गतिन्यारीहै। फूलनको लहँगा औ संजाफलागी फूलनकी फूलनकीअँगियापर फूलीबेलि कारीहै॥ फूलनकी सारी सोहत अतिकिनारी फूलन को हरवागरबीच डारीहै। कहत कवि केशवदास सुनुरीसखीआजराधाजीकेबदनपैफूलीफुलवारीहै ३५॥

तथा। चन्दन लिपायो चौक चांदनी चँदोवे तामें चांदनी बिछौना फैलीलहर सुगन्धकी। चांदनीकीसाज नीकीचन्दसमचमकत चारोओरचन्दमुखीचन्दज्योति मन्दकी॥ चांदनी सों चार चारु चांदनीसी फैली हठी चांदनीसी हांसीके मिठाई सुधाकन्दकी। चन्दन की चौकीबैठी चन्दन लगाय भाल चन्दसे बदनराधे रानी ब्रजचन्दकी ३६॥

तथा। कामसरसीसी रमाउमा दरसीसी पटफूल अरसीसी घनदामिनिउसीसीहै। प्रेमभ्भरसीसीमोहकसनकसीसीलोकलज्जाउकसीसीकान्हरूपमेंरसीसीहै॥ लरीलरसीसी कटिराजै हरिसीसी हठीउरमें बसीसी द्युतिजगमेंजसीसीहै।सिद्धकरसीसीहिय अंगनससीसीकरैरतिकी हँसीसी दीसीउरमें बसीसीहै ३७॥

तथा। प्रेमकी भ्भरीसीदेखोलालन लरीसीअबचाल मेंकरीसी राजेकटिमें हरीसीहै। भागमें भरीसी वासोहागअगरीसी रासरूपकी धरीसी रमाउमा किन्नरीसी है॥ नीति अगरीसी ब्रजजोन्हिबगरीसी हठी चलिये गोपाललालसोहै सुघरीसीहै। दीपति परीसीहै लसत सुरसरीसीहै हेमकीछरीसीहै सदनकी वरीसीहै ३८॥

तथा। रमासी उमासी इन्दुमासीकी समासी हठी
छबिकी जमासीभाल दीन्हेबिन्दु रोरीके। तारासी
तरंगनासी मैनका तिलोत्तमासी शची मंजुघोखा गिर
गावैं गुनगोरीके॥ बिमलासी नवलासी नलअबलासी
खासी मदन बिलासी चन्द्रकासीतनजोरीके। ओड़मग
रूर जुरिआवती जरूरसबै रहतीं हजूर ठाढ़ी कीरति
किशोरी के ३९॥

तथा। चांदनी के आंगन बिछौना नीके चांदनी के
चांदनी सों देखि अंखियान सुखलह्योहै। चांदनी सो
चीरचारु चांदनीके आभूषण चम्पकके गातनबखान
जाते कह्योहै॥ हठी आसपास बैठी सुघरसुजान सखी
जिन्हैं देखि रतिको गुमान जातबह्योहै। राधेमुखचन्द
की निकाई ब्रजचन्द आज अवनी अकाशलौं प्रकाश
फैलिरह्योहै ४०॥

तथा। कौलतें मुलामैं कौनछबि कमलामैंतुलैफूलन
तुलामैं चढ़ीप्रेमके पलामैं हैं। सबैबसु जामैं छोड़िछोड़ि
निज धामैं सुरपालनकी बामैं करैं पौन अचलामैं हैं।
रूपके झलामैं देखी नन्दके ललामैं हठी रतअबलामैं
कहाशोभा नवलामैं हैं। चन्दकी कलामैं न चमङ्कचप
लामैं ऐसी ललित ललामैं राधेकरतीसलामैं हैं ४१॥

तथा। रम्भाको रमाको इन्दुमाको औतिलोत्तमाको
उमाको रमाको की समाको हठी भावरो। कमला को
विमलाको नवलाको चपलाको सुखमाको उपमा को
भूलोचित्त चावरो॥ मैनकाको मोहनीको शची सत्य

भामाहूंको रतिरुक्मिणिजूको करियेनिछावरो । ताराको तरंगनाकोतरनकलाकोऐसे रूपनको रूपराधेरानीरूप रावरो ४२ ॥

स०। बड़ोई प्रताप बड़ोई सुहाग बड़ोई प्रभाव सुभाविकराखै । बड़ीगुनमान बड़ीईसुजान सरूपनिधान पुराननभाखै । बड़ेबड़ेदेव देवतनकी घरनीमुखदेखन को अभिलाखै । बड़ीदिलदार बड़ेबड़ेहार बड़ेबड़ेवार बड़ीबड़ीआंखै ४३ ॥

क०।सुररखवारी सुरराज रखवारी सुखशम्भु रखवारी रविचन्द रखवारी है। ऋषिरखवारी बिधि बेद रखवारी गिरिजाने करीकीरति की कीरति सुभारी है। दिग रखवारी दिगपाल रखवारी लोक थोक रखवारी गावैं घराघर घारीहै। ब्रजरखवारी ब्रजराज रखवारी हठीजन रखवारी वृषभानुकी दुलारीहै ४४ ॥

तथा। रुक्मिणीसी रतिसी शचीसी सत्यभामासी तूभीषमकीभासी जमनासी जगनासी गोतमासी है। रम्भासी रमासी औसुकेशी मंजुघोषा कीसी नवलासी उमासी प्रमासीको समासी है। तारासी तरंगनासीमेंनकातिलोत्तमासी राधा महरानी हठीछविकी जमासी है । कमलासी कमलासी नवला नवीनराजै छाजत छमापैइन्दुमासी चन्द्रमासी है ४५ ॥

तथा। रमाकोकहाहै रतिरम्भाको कहाहै जेबखानै बिधिचारो मुखचारो देवनौगुनो। शचीको कहाहैसत्यभामाको कहाहै अरु चन्दको कहाहै जामें राजतहैऔ-

गुनो। चम्पाको कहाहै चामीकरको कहाहै चारुकरकै विचार निरधार हठीजोगुनो। राधेमहरानी जूकोरूप सब रूपनते दुगुनोहै तिगुनोहै चौगुनोहै सौगुनो ४६॥

स०। कटिके तटसें पटपीतलसै बिलसैबनमालहियेटटकी। चटकीली ललाके लिलाटलसी वह केसरि जासुकला छटकी। घटकी सुधिभूलिगई सटकी उकुलाजलखे छवि वा नटकी। अटकी बटमें मति देखि भटू सुभईरी लटून हटैहटकी ४७॥

क०। प्रताप हेतहालकी कहीनजात बालकी लसे दुकूल चालकी इतैनिरेखनै गई। त्रिलोकि सुन्दरीहँसी हियेसुवक्रमाधसी मयंकसी कलाकसी कलाप्रयोगकै गई। गती गयन्द राट सी लचक्क लङ्क साटसी सुआय लाय टाटसी हियो लपेटि लैगई॥ सनेह सिन्धु बोरिकै कटाक्षकोर झोरिकै चटाक चित्त चोरिकै कपाट पट्ट दै गई ४८॥

तथा। बन्दन शशी सी उरमें बसीसी शुचरचीसी पीयबसीसी छवि देखदुखसरकि जात। कंचुकी कसीसीचारु उपमा लसीसी किधौंकन्दकी कलीसी पर्य्यंक पैथिरकि जात॥ कविचुन्नी लाल विधिकारीगर रचीसी विम्बरदनरचीसी कंजसीखरकि जात। प्रेमफंद में फँसीसी करनेक सीसी किधौंसीसी करबेमें सुधा शीशी सी ढरकि जात ४९॥

तथा। खंजन से कंजसे तुरंगम से सफरीसे कलेर रसालसेकुरंगनके शावकसे। अंजनसे रंजनसे चंचलसे

माहुरसे आरसी अनङ्गकैसे शावककेनावकसे ॥ वारन सेआरनसे पानिपसे उथलेसे शालिग्राम मूरतिसेडोरे रंग जावकसे । ताकोनि तिरीछी प्यारीभाषतादिवाकर जूहगन दराजसे झपेट बाजलावकसे ५० ॥

॥ तथा । जाकी खूब खूबी खूब खूबनमें खूबी खूब ताकीखूबखूबी खूब खूबी अवगाहना । जाकीबदज़ाती बदजाती यहां पंचनमें ताकी बदजाती बदजाती क्यां उराहना ॥ ग्वालकबि यही परसिद्ध सिद्धरहैं परसिद्ध वहै जाकीयहां वहांकी सराहना । जाकीयहां चाहनाहै ताकी वहांचाहना है जाकी यहांचाहनाहै ताकी वहां चाहना ५१ ॥

तथा । चन्दन चपेटी जातसुखमासमेटीजात पीछे चलीचेटीजात भेटीजातकानकी । चाल अटपेटीजात सखिलखि लेटीजातसकुचिसुमेटीजात बेटीजातसान की ॥ जाकेसुखपेटीजात चन्द्रछबिमेटीजातछबिहूंधुरे-टीजातटेटीजात मानकी । मदन दपेटीजात लाजनस-सेटीजात अतर लपेटी जात बेटी वृषभानकी ५२ ॥

तथा । चीरफहरावन झुलावनसयोगिन को हियो हुलसावन रिझावनसोहायोहै । सुधि बिसरावन तर-सावन सतावन जगावन अतन शोरमोरनमचायोहै ॥ धीरजगवावन बिझकावन झकावन तावन तड़ित रसालघनधायोहै । बिनमनभावन बढ़ावनविरहप्राण सावनबितावन बियोगिनको आयोहै ५३ ॥

तथा । मतलबके राजाओ परजासबमतलबकेमत

लबकीनगरीऔमतलबसरदारहै। मतलबकीपूजाऔ सेवासब मतलबकी मतलबकी बन्दगीऔमतलबकर तारहै॥ मतलबके माताऔपितासबमतलबकेमतलब केभाईऔ मतलब बरनारहै। कहतहौं बारबार सुनो मेरीएकबारकलियुगकेमंत्रीसब मतलबकेयारहै ५४॥

तथा। जागीहैतमाशे में कि पागी रोष रासेमें कि लागी मित्रवासे चित्तचाहचित्तचाहेते। भनतकबीन्द्र शशिवाहनके गर्ब कैधौं गाहनके दौरीहैउमाहन उमा-हेते॥ जावकजपान अरुनावकके बामपेखिपावकप्रमा-नउपमानअवगाहते। लालहूतेलालऔगुलालहूते लालआजुलाललालआंखेंईभई हैं लालकाहेते ५५॥

तथा। बादल पटान कारे साटित सटानजनुधावत नटानज्यों बिज्जु सटकानकी। अम्बर भुमटान ज्यों लपटतसुभटान देव बिजय निशान वुन्द उदितकटान की॥ भनेजगेश्वरऋतु पावस भट जानियोचातकरटा-नकूक कोयल हटानकी। नदके तटान ओढ़े कुसुमी पटानठाढ़ी देखत अटानचढ़ी लहरैं घटानकी ५६॥

तथा। अधखुली कंचुकीउरोजअधआधेखुलेअध-खुलेवेपनखरेखनके भलकैं। कहैपदमाकरनवीनअध-नीवीखुली अधखुले छहरिछराके छोर छलकैं॥ भोर जगिप्यारी अधऊरधइतैकि ओरभापीझिपझिरफिउ-चारि अध पलकैं। आंखें अधखुली अधखुलीखिरकी हैंखुलीअधखुलीआनन पै अधखुली अलकैं ५७॥

तथा। हौंहूंगई जानातित आयगोकहूंतेकान्हआनि

बनितानहूको झपकि झलोगयो। कहैपदमाकरअनंग की उमंगनि सों अंग अंग मेरे भरि नेहको छलोगयो॥ ठानि ब्रजठाकुर ठगोरिनिकी ठलाठेल मेलाके मँझार हित हेलाकै भलोगयो। छाहकैछला छ्वै छौगुनी छ्वै छरा छोरन छ्वै छलिया छबीलो छैल छाती छ्वै चलो गयो ५८॥

तथा। घरना सोहात नासोहात बन बाहिरहू बाग ना सोहात जो खुशालखुशबोही सों। कहै पदमाकर घनेरेघनबामत्योंही चन्दनासोहातचांदनीहूं योगजोही सों॥ साँझहूसोहात ना सोहात दिनमांझ कछू ब्यापी यह बात सो बखानतहौं तूही सों। रातिहू सोहातना सोहात परभात आली जबमनलागि जात काहू निर-मोहीसों ५९॥

तथा। बदनसुधाकरै उघारत सुधाकरै प्रकाश बसु-धाकरै सुधाकरै सुधाकरै। चरणधराधरै मृणालऊधरा-धरै सुऐसे अधराधरै ये बिम्बअधराधरै॥ पैनेदृगहाकरै निहारत कहाकरै सुबेनीकविताकरै त्रिबेणी समताकरै। सुरतिमें सीकरै सुमोहनै बशीकरै बिरंचिहू यशी करै सु सौतिनमसीकरै ६०॥

तथा। मदनतुकासी किधौं राधे कुन्दकासी मनो कंजकलिकासीकुचजोड़ी हाबिकासीहै। गांसीभरीहांसी मुखभासी मोहफांसी मद यौवन उजासी नेह दीयाकी शिखासीहै॥ जाकीरति दासी रसराशिहै रमासी कौन तिलोत्तमाऐसी रूपसदन बिकासीहै। कामकीकलासी

चपलासी कविनाथ किधौं चम्पकलतासीचारुचन्द्रिक
प्रकासीहै ६१॥
तथा। बांकीचारु चन्द्रिका विराजैभाल बांकीखौ
बांकीभौंह चंचलचितौन चख बांकीहै। बांकीनकबेसी
मधुर मुसक्यानि बांकीकहै हनुमान बांकी अधरलल
कीहै। मुखराशि भूषणशृँगारचन्द्रकलाकीन्हे बांकीप
पंकबैठी मूरिभूरनाकीहै। झुकिझुकि झूमिझूमि झांव
करैं देववधूकहैं अनुपमशिरीराधिकाकी झांकीहै ६२
तथा। नथकी चलन कलकिंकिणी कलन हिय हा
की हलन छवि ऊरजउतङ्गकी। लंककी लचक परयं
की मचक इत उतकी हचकरंगकी रचकसुसंगकी। स्वे
की झलक भरि नेहकी छलककवि रामजू ललक को
मदन बिहंगकी। जोमकी जमक बिपरीत की गमक
तहां तियकी हुमक अरु कुमकअनंगकी ६३॥
तथा। कविपजनेश केलिमधुप निकेत नवदरसुर
दिव्य बरीघटिका लटीकीहै। बिधुपरवेषचक्र चक्री
रथ चक्र गोमतीके चक्र चक्रताकृतघटीकीहै॥नीबीत
त्रिवलीवलीपै द्युतिकोशतुण्डकुण्डलीकलितलोमलति
का वुटीकीहै। उपटीकिटीकीप्रभा टीकी बधूटीकीनाि
टीकी धूर्ज्यटीकी वो कुटीकी सपुटीकीहै ६४॥
तथा। श्याम घनघोर श्यामसदनमें मोर श्या
चली श्यामओर श्यामबसनबनायकै। द्विजबलदेवक
कारीनिशिकारीदिशि कारीकंचुकीको कसि कारे कं
लायकै। कामदसे कारे केश कचारिफणेश कारे का

हितकारी वै कलिन्दीतट आयकै। तन कृष्ण मनकृष्ण धनकृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण हरेकृष्ण कृष्णरट लायकै ६५ ॥

तथा। श्याम द्रुम श्यामतनु श्याम निशिश्यामबन श्याम नभश्याम श्याम श्यामघनश्याम हैं। श्यामनैनी श्यामबैनी गूंदी श्याम माणिकसों दीन्हींश्यामखौरकरै चली श्याम कामहैं। मंसाराम श्यामचोली भुजानिक-सीहैबाम धरेश्याम चीरधाई औंर भीरश्यामहैं। श्याम कुंजधाम सराजाम श्याम कैकैगई श्यामा श्यामजहां श्याम जहां श्यामा श्यामहैं ६६ ॥

तथा। कारी सारी सोहत किनारी कोर काननलौं ककनाकनककारीकारीकरमैठई। कारीलोनीरातिकासी उरज भुजंगी कारीठोढ़ी ठकुराइन कि कारी कारीसो भई। कारीअभिलाषब्रजपासकारीत्योंहींउतरीअटासे कारीकारी मगकोलई। कारीदिशि कारी निशिकारेनैन काननलोंकारी कंचुकीको पैंधिकारे कान्हपैगई ६७ ॥

तथा। कारीकारीरैनि तैसीकारीकारी बादरीमेंकारी कारी सारी कारी कारी कचबेली त्यों। कारेकारेकाजर सों कोरकरि डारनैन कारी कारीकंचुकी उरोजनपैमेली त्यों। कहैनन्दरामकारोकारोअंग राग अंगकारीकारी बाल या निकारी पै पछेली त्यों। कारी कारी कुंजवै तमालतरु कारेकारे कारे कारे कान्हपैजातहैअकेली त्यों ६८

तथा। केकी कारिकारी मनहारी होतप्यारी प्यारी

चातकी कुमारी सुखकारी कलकारीहै । नरदेवकारी कारी मण्डित डेरारी घटा भूमिपै सुरंग इन्दुमारी की पत्यारीहै । वल्लरी पत्यारी पतियारी डारी भूमि डारी तैसई तमाल डारी न्यारीछवि धारीहै । कारीमुदकारी निशि वायुशीत कारी तामें यारीहरियारी मोहिंभावती तिहारीहै ६९ ॥

तथा । निशि अँधियारी यारी कारी घनश्यामघटा निरखी सुखकारी औ अटारी सुकुमारीहै । अंजनदृगन साजि सुखमा सरोजश्याम हारी मनहारी तनमनवारि डारीहै । वरजरतारी की कनारी श्याम सारी धारी हेतु वनवारी भुवनेश छवि न्यारीहै । क्षणभाछहरारीसुघन घहरारी घटा तामेंछबिसारीहिमकारीउजियारीहै ७० ॥

तथा । कारे घन कारे वनकारे नाग फणन के पांवरे पसारे पग देत न सकातिहै । बेनीसटकारी कारी मृग मद खौरिकारी कारीये पहिरिसारीकारी भारीराति हैं । भनत कविन्द्र कारे कान्हर के मिलिवेको आजही तो सिगरी कराई ही दिखातिहै । कारी अँधियारी तासों अधिक अँध्यारी साजि प्यारी चली जातकी कहूंकी करामातिहै ७१ ॥

स० । सांवरी सारी सखी सँग सांवरी सांवरे धाहि विभूषणध्वैकै । त्योंपदमाकरसांवरेईअँगरागितआंगी रची कुचद्वैकै । सांवरी रैनिमें सांवरीपै घहरैं घनघोर घटाक्षिति छ्वैकै । सांवरी पांवरीकी देखुहीवालिसांवरे पै चलीसांवरी ह्वैकै ७२ ॥

क०। लाललाल अम्बर अनोखे नैन लाल लाल लाललाल अधर ललाईहै दशनमें। लाल लालरेशम के फूलरा सुकेशनमें छायरहे छातीपर छाजत कुचनमें॥ लाललालकरणाबिराजैं कंजलाललाललाललालचरण चमक मुकतनमें। कहै नन्दराम बाम रूपकी रसाला आला हेमकैसी माला ब्रजबाला चली बनमें ७४॥

तथा। रंगलाल रूपलाल अधर अधिकलाल दृगन के डोरेलाल कोरैंलाल पलकैं। चीरलाल चोली लाल लालडोरे गुहेबाल बेसरकी बेंदीलालहियेमांझ झलकैं॥ कहै मृगलोचनी सोहागभागतेरे आज सोहैलालभाल बेंदी और सोहैंअलकैं। पानलाल पीकलाल पीकहूकि लीकलाल एते पायप्यारीलाललालहूकोललकैं ७५॥

तथा। लाल लखिलाल रविमण्डल अभात भात लालही बसनि लखि लाल ललकतुहै। लालअधरान की सुलाली लसी लोचनमें आली पान लालीसी कपोल बिलसतुहै॥ भनै भुवनेश वेश बिन्न गुणमाल उरधारिकैबिशाल बनमाल निदरतुहै। पगलालपाग लाल एते लाल पाय अब मेरे लाल मोहिंलालनाहक करतु है ७६॥

तथा। नैन लाल बैनलाल अधर औ बीरी लाल लाल लाल दशन सनेह की लगनमें। चीरलालपाग लाल जरीको इजारलाल कलँगीशिरपेंचलाल माणिक नगनमें॥ सेजलाल कुंजलाल छत्रचौंर व्यंज लाल सुखमा प्रताप लाल बसीहै दृगनमें। बाली औ बुलाक

लाल केसरिकी खौरलाल लाललाल मेहँदी रचीलाल के पगनमें ७७॥

तथा। हरे वेलि हरीभूमि हरे द्रुमरहेभूमि हरी हरी कुंज हरी बागन सघनमें। हरी हरी बूंद हरे बादर बरषावे हरे हरीहरी यमुना लहराय रही तनमें॥ हरे छत्र हरे चौंर हरीहरी सखियां सब हरी हरी झलकै प्रताप हरे मनमें। हरे हरे फूलके शृँगार किये प्यारी पिय झूलत हिंडोले हरे हरे हरे बनमें ७८॥

तथा। हरी हरीभूमिजहां हरी हरी लोनीलता हरे हरेपात हरे हरे अनुरागमें। कहैं नन्दराम हरे हरे यमुनाके कूल हरित दुकूल हरेहरे मोती मांगमें॥ हरेहरे हारनमें हरित बहारनमें हरीहरीडारनमें हरेहरे भागमें। हरे हरे हरिको मिलन जात हरे हरे हरी हरी कुंजनमें हरे हरे बागमें ७९॥

तथा। पीले पीले गोलन कपोलन विराजिरहे पीले पीले कुण्डल दुचन्द द्युति दरसै। पीले पीले हारउर गेंदा गुलदावरी के पीले पीले कुसुम सुकेशनविसरसै॥ पीले पीलेकेसरिके अंगराग अंगनमें पीले पीले पौन ते पराग पुंज परसै। नन्दराम पीले पीले किंशुक झरत जात मानो प्यारी अंगनते पीलोरंग बरसै ८०॥

सिंहावलोकन छन्द ३१॥

स०। लालहैं भालसेंदूर भरे मुख सिंदुर चारुरवाहैं विशालहैं। शालहैं शत्रुनको कविदेव अतिसिद्धितसोम कला धरेभालहैं॥ भालहैं देवजू सूरजकोटि सो काटतु

कोटि कुसंकटजालहै। जालहैबुद्धिविवेकनकोयहपार-
बती को लड़ायतो लालहै १॥

तथा। नामहिंके सुमिरेसुखपायहौऔर न कामगिनौ
जगकामहिं। कामहिं कोई न आयहैं येसुत मातुपिता
प्रियबन्धु औबामहिं॥ बामहिंहैंसिगरे भवके सुखहोत
नहीं क्षणहू बिसरामहिं। रामहिं राम ररौ रे ररौ सब
वेदपुराण कोहै परिनामहिं २॥

तथा। डरिहौं नहि नेकयशोमतिसोंगहिमोहनको
बशमेंकरिहौं।करिहौंसबखेलगोपालसोंआज भलेसुख
साजि हिये धरिहौं॥धरिहौं फगुवा मिसही मिससों
पटपीत उठाय हिये भरिहौं। भरिहौं पिचकारिन रंग
सुरंग उमंग सों लालनपै डरिहौं ३॥

तथा। धायेहैंआजघनेघनघोरसो बोलतमोर वि-
योगजनाये। जनायकेमोहिंबियोगसोंयौबनमारतकाम
के बाण चढ़ाये॥ चढ़ायके लायेहैं श्यामघटाबदराचहुं
ओर महा झरिलाये। लायकें मोहिंकहांबिलमे अजहूं
नहिं पीउ विदेश सों धाये ४॥

तथा। मोरी बिथासेअजानहैफागुन आयोअबीर
अबीकनझोरी। झोरी गुलालकी कालडसीहोरीकैसेखे
लौं मैं पिया चितचोरी॥ चोरीकहाकरीसांचीकहोअब
फागुनहीं कोउ लाख कहोरी। होरी न होरी अहोरी
सखी हियोदाहन को यह बैरिन होरी ५॥

तथा।सावँरीमूरतिमोहिलियोमनगेहसोहातसोहात
न गावँरी। गावँरी कैधौंनकुंजनमें हरिहाय कितैअब

हूँदन नावँरी ॥ जावँरी तो कुलकानि मिटै सब लोग लोगा-इधरँ मिलि नावँरी। नावँरी तो अपनो करिले मोहिं आनि मिलायदे मूरति सांवरी ६ ॥

तथा। फागरी आयो सखी हमको विन प्रीतम मैं नकी आगसी लागरी। लागरी मेरी गोहारि सखी कर वेगि उपाय सवेरही जागरी ॥ जागरी होतहै राग चहूंदिशि मेरेहिये विरहा दियो दागरी। दागतो मेरो जबै मिटिहै मिलि मोहन के संग खेलिहौं फागरी ७ ॥

तथा। करकी पसुरी जब लागिलई जबते ऋतु पावस कीवरकी। वरकी सुधि आयगई जबहीं बरषै बरषा वो धरा धरकी ॥ धरके नभ बुन्द महादुरकै सजनी न लखै द्युति चादर की। दरकी छतियां सुमिरे बतियां पतियां न लिखैं अपने करकी ८ ॥

तथा। बालरी आई चहूंदिशि तेतिन घेरि लियो नँदनन्दको लालरी। लालरी भोरी अवीर भरे मुसुक्याय रँग्यो सखी श्याम को भालरी ॥ भालरी बेंदी भली झलकै उर सोहत मोतिनकी अतिमालरी। मालरी लोनीन कोऊ लखै अवलोकि रहीं वसुदेव को बालरी ६ ॥

तथा। बालरी आई लिये रँग केसरि खेलत मोहनके सँग फागरी। फागरी खूब मचो ब्रजमें अवलोकि बसन्त सोहावनो लागरी ॥ लागरी नेह नयो हरि सों निरखैं निज पूरव को कृतभागरी। भागरी लोनी नकोऊ लखै अव-लोकि रहीं नँदनन्द को बालरी १० ॥

तथा। अरजी लिखि मोहन को सजनी ऋतु आई वसंत

सबैलरजी। लरजी डरियां जो पलाशन की पगपायल कोकिल की मरजी॥ मरजी सुनि कामचढ़ो साजिकै शशि युवतिन की परजी परजी। परजी परजी अबदेह सबैलिखुशीमनमोहन को अरजी ११॥

तथा। फागरीआयो सोहायोचहूँदिशि गावतसुंदरि सुन्दर रागरी। रागरी मेरोगयो हरिलै अबकासोंकहों अपनो ये अभागरी॥ भागरी हूसेछुटै न शरीर रहो इनबातन को उरदागरी। दाग री मेरो तबैमिटिहै जब मोहनकेसँग खेलिहौं फागरी १२॥

तथा। हारिगई मगहेरि चहूंदिशि दादुर शोर करैं अतिभारी। भारीहै दुःख मेरे जियमों नहिंआये पिया सोरीसुद्धि बिसारी॥ सारीसवाँरतगावतगीत बिनापिउ लागत मोहिं कटारी। टारिसकै विधिरेख न कोउ मन शोधिकहो यहविप्र बिहारी १३॥

आवतगाढ़ अषाढ़केबादरमोतनुमेंअति आगिलगावत। गावतचावचढ़ेपपिहाजिनमोसोंअनङ्गसोंबैरबढ़ावत॥ धावतबारिभरेबदराकविश्रीपतिजूहियराडरपावत। पावतमोहिंनजीवतप्रीतमजोनाहिंपावसमेंघरआवत१४

तथा। नई नोखी भईहौ कहा तुमहीं उमहीं रहती मतिदीन्ही दई। दईकाहूकीबीरी न लेतभटू तुम्हैंयेबतियांकहा को सिखई॥ खईमो न बड़ोभयो काऊकहूं क्षणही अतिही रिस पूरिगई। गईभार में नाहीं न नाहींकरो लखोकैसी घनेरीघटा उनई १५॥

तथा। गायहैं लोगलुगाई सबैजब आनँद कोटिहिये

उपजायहैं । जायहैं खेलनफाग सुहागन भागभरी अ-
नुरागन छायहैं ॥ छायहैंवीर अबीर गुलालन दम्पति
अंगतरङ्गननायहैं । नायहैं कान्ह जो बेनी प्रबीण तौजा
तन प्राण विलम्ब लगायहैं १६ ॥

तथा । लागरी ना इनबातन मों हरि आयहैं जान
बड़े निजभागरी । भागरी बैरिनकी चरचाते तजैं गुरु
मान पियारसपागरी ॥ पागरीसोहै न पांयनमें कविपा
रसहै तुतोबुद्धिकी आगरी । आगरी लागै तिहारे हठै
मनमोहनकेउठि कंठसोंलागरी १७ ॥

तथा । बावरी तूतौबकै बहुतेरो लग्योनाहिं नेककहूं
यह घावरी । घावरी घायल जानतहैं जिनके निशिबा-
सर प्रेमस्वभावरी ॥ भावरी भोजन भौनन नींद हिये
उरझी वहमूरतिसांवरी। सांवरे रंग में हौंमैंरँगी न चढ़ै
अब दूसरोरङ्गरी बावरी १८ ॥

तथा । कोहै अरीवह गैल चलोगयो बेणुबजावत
सांवरोसोहै । सोहैसदा अँगअङ्ग बिभूषण बीरसुधा
सबको मनमोहै ॥ मोहिं बतावहि यो हितकै बलिगा
वँ औठावँजहांअब जोहै । जोहै सोहै सुनुमेरी भटू ज-
निझांक झरोखको जानियेकोहै १९ ॥

तथा । गायहौं देवी गणेश महेश दिनेशहि पूजतही
फलपायहौं । पायहौं पावन तीरथ नीरसों नेकुजभीह
रिको चितलायहौं ॥ लायहौं आछे द्विजातिनको अरु
गोधनदानकरौं चरचायहौं । चायअनेकनसों सजनी
घनआनँद मीतहि कण्ठलगायहौं २० ॥

तथा। सूझैनमोबनबागतड़ाग सबैत्रिविधिफूलपलाशन सूझै। सूझैनमोघरकाजसखीनाहिंसासुजेठानीकिबातन बूझै॥ बूझैनमंगदबेणुनये नयसैननैननमें नाहिंसूझै। सूझैवहीबनमालगरेसिगराजगसांवरोसांवरोसूझै २१

तथा। कान्हकी बांसुरी ऐसीबजी मनमेरो हरो सुधि नारही प्रानकी॥ प्रानकी कौन गुमान करै अनुमान बिचारकियोसुरतानकी॥ तानकीतेग लगीजियमें हिय में अतिशोचकरैवृषभानकी। भानकीभौनकोभूलीफिरै जबतेपरी कानमें बांसुरी कान्हकी २२॥

तथा। लालहि घेरिरही ललना मनोहेमलता लप टानी तमालहि। मालहि टूटत जातन जानत लूटतहै रसरास रसालहि॥ शालहि सौतिनकेउरमें चलरीउठि बेगिदैतालउतालहि। तालहिदेतउठीततकालजगायो गोपाल के गाल गुलालहि २३॥

तथा। तालरी बाजत भूरिमृदंग छुटैबहुरंग भयो नभ लालरी। लालरी गुंजनकीउरमालअबीरभरेभरि झोरिन शालरी॥ शालरी होतबिलोकेबिनानँदनन्दन आजु रच्यो ब्रज ख्यालरी। ख्यालरी लोनेकहांवरणे मनमोहन नाचतदैकर तालरी २४॥

तथा। हरीहै सबैसुधि बुद्धिहरी तिल सेजपरी तनु चेतनरीहै। नरीहैकहां रतिरूप रलोकन सोने के सांच ढरी पुतरीहै॥ तरीहैमनोजमहानदकी नृपशंकरशोभि-त लोलडरीहै। डरीहै खरी यहिपावसमें पिकशोरसुने लखे भूमिहरीहै २५॥

तथा। गायहौं मंगलचारुघने सखि आवतही तनु तापबुझायहौं। झायहौंपांयगुलाबनसोंकमखाबकेपांवरे पुंजबिछायहौं॥ छायहौं मन्दिर बादले सों शशिनाथजू फूलनकी झरिलायहौं। लायहौं सौतिनके उरशालजबै हँसि लालको कण्ठ लगायहौं २६॥

तथा। धावनभेजसखी वहिदेश बसैज्यहिदेशपिया मनभावन। भावनभोरयालूकलगीतनुबीचलगीजियरा झरसावन॥ सावनमें नभयो हनुमन्त दोऊमिलिझूलि मलारहि गावन। गावन मोहिं सोहात नहीं बदरा बदराह लगेजुरि धावन २७॥

तथा। हरजीवन नेहभरी नरहै धरजी मनमोहनके गरजी। गरजी सुनिकै उनकी मुरली ततकालहियेमें लग्यो शरजी॥ शरजीवनदेहन ऐसीपरी सोमनो धन प्राण गये धरजी। धर जीभ गई लठराय तऊ मुखसे निकसे हरिजी हरिजी २८॥

तथा। लैगईमोहिंकालिन्दीकेकूलनुकूल देखायठगोरसी कैगई। कैगईआजबिथातनुमेंमनहीमनमैनमरोरनदैग ई॥दैगईदागदगाकरिकेऔधेशकहैतनुतापनतैगई।तैग ईनेकनलाईकछुसुधि गोरीगुवालिनिमोमनलैगई२९॥

तथा। धनिवै जिहितातऔ मातजनो जिहिदेहधरी सोघरी धनिहै। धनिहै कवि ठाकुर धामवहीजहां डोलै लली सोगली धनिहै॥ धनिहै उनको जो तुम्हैदरशै करसोंपरसै सो महाधनिहै। धनिमैं धनितूधनितेराहि तू अरु जाकीधना सो धनी धनिहै ३०॥

तथा। छायके प्रेम गये जबते तबते मैंबची सखी कोटि उपायकै। पायकैपावसकी ऋतुसोंअबकोबचिहै उठी कोकिलागायकै॥ गायकैसो नँदलालकहैंचपला चमकैचहुंओरसोंआयकै। आयकैहायमिलेनहिंमोहन मेरीअटापैघटारहीछायकै ३१॥

तथा। कोरनलौं दृगदेतीहौकाजरकारीघटाउमड़ी घनघोरन। घोरनते जोचलीआलि सुन्दरि बोलतज्यों सखीबागकेमोरन॥ मोरनकीगतिनाचतहै नहिंमानत है हटको बरजोरन। जोरन अंजन देहु सखी अँगुरी कढ़िजैहैं कटाक्षकी कोरन ३२॥

तथा। आजुरी देखु घटाघन सुन्दरसावन कीन्हों सोहावन साजुरी। साजुरी भूषण भोग शृँगारसोंतेरो है आजु बनोसबकाजुरी॥ काजुरीआजुघरीविहनेहकी तेरे अधीन खड़े ब्रजराजुरी। राजुरी वारों तिहूंपुरको मुरलीधर आये मयाकरि आजुरी ३३॥

तथा। गहुरे हरिकेपदपंकज तू परिपूरोसिखावनहै यहुरे। यहुरे जगझूठाहैदेखुचितै हरिनामहैसांचोसोई कहुरे॥ कहुरेनकहूंपरद्रोहकीबातसबैशककैकोऊसोसहुरे। सहुरेमनतोसोंकरोंबिनतीरघुनाथनिरन्तरकोगहुरे३४॥

तथा। गरजी पुनि घोर घटा सजनी रजनीदिन ऊबत भीतरजी। तरजी तड़िता नभशोर सुनेसुनेर कानभयोमरजी॥ मरजीहित हाहाकरी कितनी अरजी न कबूलकियो बरजी। बरजी नहिंमानत मेरीभटूभयो चातक मौजियको गरजी ३५॥

क०। आईहै बहार बनबेलिन न बेलिन में बहुधा चमेलिनमें भौंरभीरछाईहै। छाईहैछपाकरकी मरीचिका दरीचनमें तिनहूं लख तनको तनुतापताईहै ॥ ताईहै सकलसुधिबुधियशवन्तमेरीजबतेप्राणप्यारेप्राणप्यारी बिसराईहै। राईहै न नेककहूं नवमेंकलेवरमें कहियोहो कन्तसों बसन्तऋतु आईहै ३६ ॥

स०। लटकी छबि देखि वहां तरुणी तनुछांह परी पियरे पटकी। पटकीकहु प्रीति बिलोकनपै नहिंमानत नेककही हटकी ॥ हटकी हटसौं हटजाय उते कबनंदन चालचलैनटकी। नटकी कहुंप्रीति बिलोकनपै लठछूटिकपोलन पै लटकी ३७॥

तथा। आयहौ ना ऐसो सावनमें मनभावन पावस कैसे बितायहौ। तायहौ कातन तापन तें मन आपन होयसो लेख भेजायहौ ॥ जायहौ जलद चले पुनि पाछहिरामचरित्तरदेर ना लायहौ। लायहौ और कछूना हमैंजो बनै तो तुहीं चटसों चलेआयहौ ३८ ॥

क०। गायगोरी मोहनी सुराग बांसुरीके बीच कानन सुहाय मारमंत्र को सुनायगो। नायगोरी नेहडोरी मेरेमरमें फँसाय हृदयथलबीचचाय बेलिकोबँधायगो॥ धायगोरी रूपवाको अतिही अनूप हियदीनद्यालआय आमचितको चलायगो। लायगोरीरोरी बरजोरीमति भोरीकरि तबहीते हायलाय बिरहलगायगो ३९ ॥

स०। मासो असाढ़सुनो सजनी रजनी दिनघोरघटा घनछायो। छायो विदेशहि रामचरित्र अँदेश लग्योहै

सँदेशनपायो॥पायो मते अपनेवशकैधौंकहूंकोऊसौतिन सेज लुभायो। भायो कहा उनके मनमाहिं कि पावस आयो पियानाहिं आयो ४० ॥

तथा। सावनशोकनशावनहै नहिंरामचरित्र मेरेमन भावन। भावनमोहिं घटाघनकी बनकीहरियाली लगी लुकलावन॥ लावनकोउकहैउनको उनकोकरजोरिकहौं गुणगावन। गावनमें सबको सुख है हमको दुखही दुखहै दरशावन ४१ ॥

तथा। नईहैतुम्हें अवलोकतलाल ललीयहचंचल तानमईहै। मईहै बिचारिकहौं बलदेव नेवारन धीरज सैनदईहै॥ दईहैवचैमन ना सुनते तनमैन महीपतिकी कलईहै। लईहै उरोजन श्री फलई यहनारि नईन की रीतिनई है ४२ ॥

क०। दनकेदशौदिशा दुनालीद्योढ़दामिनीघनकेन- गारेभारेउरउलझनके। झनकेझनाकझुंडझींगुरबिगुर बाजैंसनकेसमीरतीरशक्र शरासनकै॥ सनके समरमद मेचक झिलमधारेठनकेनकीबदर्पदादुरदमनकै। मनके नदनकेबिनकामिनि कदनकेय आयेबीर बादरबहादर मदन के ४३ ॥

स०। गईहरिनींदपियासक्षुधाजबते बनकोयलकूक दईहै। दईहै हुआं बिरहीबन पल्लवफूलेगुलाब बहार भईहै॥भईहै दशौदिशिभौंरनगुंज सुशीतलमन्दसुगंध लईहै। लईहै नहींसुधि पीतमजी शिरपैऋतुआयबसंत गईहै ४४ ॥

तथा। पीरहैदूरि पपीहावके मतजैयेवहांजहां सौति कोतीरहै। तीरहै वैरी न ब्रोलोयहांकखरौरनगुंजत भौंर की भीरहै॥ भीरहै धीरज राखिवेको प्रह्लाद वसन्त मनोज की वीरहै। वीरहै कोऊनहीं यहिगाउँमों बूझत कोऊ न काहूकी पीरहै ४५॥

उपमाके कवित्त व सवैया॥

क०। हाथी कैसोकान कीधौं पीपरको पान कीधौं ध्वजाको उड़ान कहूं थिरन रहतहै। पानीको सो घर कीधौंपौन उरझेर कीधौं चक्र कोसोफेर कोऊ कैसेकै गहतहै॥ अरहटकी मालकीधौं चरखाको ख्यालकीधौं फेरिखात बाल कछू सुधिन लहत है। धूमकोसो धाव ताको राखिबेको चाव ऐसो मनकोस्वभाव सोतोसुन्दर कहत है १॥

तथा। अश्वविन दौरनहीं हुकमबिनतौरनहींब्याह विनमौर नहीं जेव पाई। दयाविन दाननहीं द्रव्य बिन सानन हीं तालविन ताननहीं जातगाई॥ योगाबिनयुक्ति नहीं गुरुविन उक्तिनहींरामविनमुक्तिनहींवेदगाई। डोर विनचंग नहीं तेग विन जंग नहीं अंगविन रंग नहीं होतभाई २॥

तथा। भोजन ज्यों घृतविनपन्थजैसेसाथीविनहाथी विनदल जैसे दारुविनवानहै। रावरंग रानी विन कूप जैसे पानीविन कवि जैसे वानीविन सुघर बिन तानहै॥ रसरास रीत विन मित्र ज्यों प्रतीत विन व्याह काज गीतविन आदर विन दानहै। रंग जैसे केसरविनमुख

जैसे बेसरबिन प्यारीबिन रैनज्यों सुपारीबिनपानहै ३॥

तथा। विद्या बिन द्विज औ बगीचाबिन आंबनको पानी बिन सावन सोहावन न जानीहै। राजाबिनराज काजराजनीति शोचे बिन पुण्यकी बसीठीकहो कैसेधौं बखानीहै॥ कहै जैदेव बिनहितको हितूहै जैसेसाधुबिन संगति कलंककी निशानीहै। पानी बिन सर जैसे दान बिन करजैसे शीलबिन नर जैसे मोतीबिन पानीहै ४॥

तथा। गुन बिन कमान जैसे गुरु बिन ज्ञान जैसे मान बिन दान जैसेजलबिनसरहै। कंठबिन गीत जैसे हेत बिन प्रीतिजैसे बेश्याबिनरीतिजैसे फलबिनतरुहै॥ तार बिन यंत्र जैसे स्याने बिनमंत्रजैसे पुरुषबिन नारि जैसे पुत्र बिनघरहै। वाणीबिन कविजैसे मनमें बिचारि देखो धर्मबिन धनजैसे पक्षी बिनपरहै ५॥

तथा। चन्द्राबिन रजनी सरोजबिनसरवर तेजबिन तुरंग मतंगबिना मदको। बिनासुत सदन नितम्बिनी सुपतिबिन बिनधन धरमन्नृपति बिन पदको॥ बिनहरि भजन जगतसोहै जनकौन नोनबिन भोजन बिटपबिना छदको। प्राणनाथ सरस सभा न सोहै कविबिन विद्या बिन बातन नगर बिनानदको ६॥

तथा। नैन जैसे सलिल चाहै सलिल जैसे बिमल चाहै बिमल जैसे कमल चाहै सीताज्यों रामको। पावसज्यों पपीहा चाहै बहिन ज्यों भैया चाहै राधाज्यों कन्हैया चाहै परदेशी धामको॥ गरजैसे मोर चाहैचन्द्र ज्यों चकोर चाहै चकईज्यों भोरचाहै कामिनीज्योंकाम

कोसुखजैसे तनचाहै शूर जैसे रनचाहै वैसाहीमेरामन चाहै प्यारी तेरेनामको ७ ॥

तथा। हीराकी झलक जैसे जुगुनूकी दमक जैसे दामिनीकी चमकजैसे मोती झलकानहै । सुधाकोसीर जैसेनावकको तीरजैसे जादूको वीरजैसे करतपयानहै ॥ शोभाको मूलजैसे फुलझरीको फूलजैसे तेजक त्रिशूल जैसे राखो धरीसानहै। पुहुप बिकसान जैसे ज्योति शशि भानजैसेकंचनकीखानजैसे तेरीमुसक्यानहै ८ ॥

तथा। अस्त्र बिन वीरभोंड़ो गांसी बिन तीर भोंड़ो स्वादबिन क्षीरभोंड़ोनीरभोंड़ोझीलको।श्रीपतिसुजान कहै राहबाटरेत भोंड़ो भूपति अचेतभोंड़ो खेत भोंड़ो लीलको ॥ पूरबकोपौन भोंड़ोऊंट चढ़िगौनभोंड़ोविद्या-धरमौनभोंड़ो भौनभोंड़ो भीलको । सांझभोर शैनभोंड़ो श्वाननकोचैनभोंड़ोशीलविननैन अरुवदनवखीलको ९

तथा। शीलवाननरनीको बालकको घरनीको दान युतकरनीको उजियारो चन्दको । विद्याको विवादनीको रामगुण नादनीको कोमल मधुर स्वादनीको होतकन्द को ॥ गऊकोनवनीतनीकोजेठमासशीतनीकोश्रीपतिजू मीतनीको विनछलछन्दको । कारनीको झटपट श्याम रङ्गनीकोलटवटनीकोवंशीवटनटनीकोनन्दको १० ॥

तथा। तेलनीकोतिलकोअजमेरको फुलेलनीकोसा-हिवदलेलनीकोसैलनीकोचन्दको॥विद्याकोबिवादनीको रामगुण नादनीको कोमलमधुरसदा स्वादनीको कन्द को ॥ गऊनवनीत नीको जेठहूको शीतनीको श्रीपतिजू

मीत नीको बिना परफन्दको। जालरूपघटनीको रेशम को पटनीकोबंशीबट तटनीको नटनीको नन्दको ११॥

तथा। चोरिनीकी चोरकी सुकविकी लवारीनीकी गोरी नीकी लागति श्वशुरपुर धामकी। नाहीं नीकी मानकी सयानकी जवानननीकी ताननीकी तिरछीकमान नीकीकामकी॥ तातहूकी जीतिनीकीनिगम प्रतीति नीकी श्रीपति जू प्रीतिनीकीलागैहारिनामकी। रवानीकीबान खेत मुदरी सुठैवानीकी मवानीकी काबुल की सेवानीकी खमकी १२॥

तथा। ताल फीको अजल कमल बिन जलफीको कहतसकल कबिहाबि फीकोरूपको। बिनगुणरूपफीको ऊसरकोकूपफीको परमअनूप भूपफीकोबिनभूमिको॥ श्रीपति सुकबि महा बेगाबित तुरीफीको जानत जहान सदाजोह फीको धूमको। मेहफीकोफागुनअबालकको गेह फीको नेहफीकोतियको सनेह फीकोसूमको१३॥

तथा। फूलबिनबागजैसे बाणीबिन रागजैसे पानी बिनतड़ागअरुरूपबिनअंगहै। धनबिनसाजजैसे शोचेबिन काजजैसे राजाबिनराज्यजैसे नदीबिनतरंगहै॥ एकअंगी प्रीतिजैसे बेश्याबिन रीतिजैसे प्रेम बिन मीत जैसे शोभा बिन रंगहै। प्यारी बिन रैन जैसे हाफ़िज़ बिचारिदेखो शीलबिन नैन अरु साधुबिनसंगहै १४॥

तथा। नरनीको शीलवान घर नीको धनवानकर नीको युतदान कहत जहान है। रूपवाननारिनीकी द्वारेचारगारिनीकी शीतल बयारिनीकी तेजजवभानहै॥



श्रीकृष्णचन्द्रजी का गोपियों के संग में होरी खेलना व गोपियों का श्रीकृष्णचन्द्रजी के ऊपर पिचकारियों से रंग छिड़कना अरु श्रीकृष्णचन्द्रजी का एक गोपी को आलिंगन करना-



कपूतको रूसा॥ रङ्ककीरीभऔ मौजीकी खीझअजान की प्रीति जुवारको चूसा। राज को दूसरो छेरी को तीसरो रेंडको मूसरो खामर खूसा १६॥

तथा। सांपसुशील दयायुत नाहर काकपवित्र औ सांचो जुवांरी। पावकशीतल पाहन कोमल रैनिअमावसकी उजियारी॥ कायर धीर सतीगणिका मलवारो कहा मतवारो अनारी। मोतियराम विचारिकहैं नहिं देखी सुनी नरनाहकी यारी २०॥

क०। सम्पतिसुमति नीकी बिपति सुधीर नीकी गङ्गातीर मुक्तिनीकी नीकी टेकरामकी। पतिव्रतानारि नीकी परहित बात नीकी चांदनी कि राति नीकी नीकी जीतकामकी॥ बालकृष्ण वेदविद उग्रनीकी भूसुर कि भक्तिनीकी नीकीहै रहनिहरि धाम की। अगन की हानिनीकी तातकी मिलन नीकी स्वरमिली तान नीकी प्रीति नीकी रामकी २१॥

फाग व होरी समयकेकबित्त व सवैया १२॥

क०। बाजैडफढोलबाजै फागके समाज साजैग्वालनके झुण्डलै गोबिन्दफौजजोरीहै। बांधे शिरचीराहीरा झलकै कलँगिनमैं अंगनि तरंग रंग भूषणकरारी है॥ केशरिया बागे अनुरागे प्रेम पागे मन माखन सभागे फहरातपट छोरीहै। लीन्हेभरिझोरी पिचकारी रंगवोरी आजुहोरी आजुहोरी बरसाने आजुहोरीहै १॥

तथा। फागुखेलि श्यामसंग सदन सिधारी प्यारी

देखो तसबीर नम्बर १८॥

राचै द्युति दामिनि सों भामिनि भरी अनंग । कविराव
राना बैठि रतन सिंहासन पै दर्पभरी दर्पणलै भूषण
सँभारै अंग॥ चन्दमुखचन्दनते चन्दकी कलासीखासी
कंचनकी झारिनमें जलभरिल्याईगंग। कोमलकपोलन
मंधोवती गुलाल लालीत्योंत्योंहोति आली अतिगहब
गुलाबीरंग २॥
तथा। उतते कन्हाई लरिकाई के सखन लीन्हेकरि
चतुराई केलिहोरी की मचाईहै। इत बृषभानकीकुमारी
सुकुमारीप्यारी आलीगण आलीमें रसालीसी सोहाई
है॥ लालनगुलालनकी लालनपै डारैं मूठि चलै पिच-
कारी सुखकारी दुहुंघाईहै। केसर रँगसाने सुरंग नेह
सरसाने डारैंमानो बरसाने बरसाने झरिलाईहै ३॥
तथा। होरीहोरीकरत अबीर भरिझोरी लीन्हेखोरी
खोरीफिरैं ग्वालबाल समुदाईहै। तामें नँदलाल लाल
चीराजरी धरेगरे भावत विशाल बनमालकीसोहाईहै॥
कीरति किशोरीसंगगोरी यूथयूथ मिलि भरी अनुराग
फागश्याम सों मचाईहै। केसर रँगसाने सुरंग नेहसर-
सानेडारैं मानोबरसाने बरसाने झरिलाईहै ४॥
तथा। आजुनन्दजूके है अनन्दभरे खेलैं फागकोटि
चन्दते दुचन्द भालद्युतिलालकी। आभरणहीरनके
माणिक ललाई आईतैसी छबिछाईहै विशालबनमाल
की॥ अबिर उड़ावैं मूठिमूठिसी चलावैं सखी देखिये
लुनाई नटनागर गोपालकी। सजै पीत पटपर मुरली
लकुटपरमोरके मुकुटपर गरद गुलालकी ५॥

तथा। कीरति किशोरी संग इयामैं लखि भई मोरी होरीदेखिआई आजप्यारेबलबीरकी। सारीउरतारीकी किनारीमें गुलाल राजै तैसी छबि छाजै उत काश्मीर चीरकी॥ हरैहरैआवैं मन्द मन्द स्वरगावैं दोऊमिलि मुसकावैं द्युति धावैंरी शरीरकी। नैनकोर ओरपर बरुनीकीछोर पर भौंहन मरोर परओप है अबीरकी ६॥

स०। नन्दके मन्दिर जाउ सबै दुलही घर राखि मिलै फगुवाके। होरीबढ़ावनको घरके गये आयेहैं भोर भये रतियाके॥ भीतरभौनके लायधरो ये केवांरउठाय नजायँ यहांके। सासुके ये सुनि बैन बिशाल सों फूलि गये सब अंग तियाके ७॥

तथा। उद्धमऐसो मचो ब्रजमों सबरंग तरंगउमंगनसींचैं। दै पिचकारिन छंजन जातिन क्वै छवि छाजत केसरी कीचैं॥ त्यों पदमाकर हौंहुंगई हुतिपीछेगोपाल गुलाल उलीचैं। यकसंगहिं जो फिरिमें रपटीतो वैभये ऊपर मैं भईनीचैं ८॥

तथा। नाहक दो दिन माह रहो अब फागुनतेसब रंगमचै हैं। गोपनमें मिलिकै बलदेवइतै नँदनन्दनहू चलिऐ हैं॥ त्यागकिये गृह तौन बनी बलबीर अबीर जरूर लगै हैं। ना कहिबो हौंपाक कछू फिरि आपनिं खोरि सबै अजरैहैं ९॥

तथा। फागकी रैनि अँधेरी गलीनमें मेलभयो सखिसांवरे जीको। हौं धरलीन अचानक दौड़ि लगावनकाज गुलालकोटीको॥ वानेगुलाल लगायोअली

जब लीन्हो मूठीमें अबीर सो नीको। वक्षहुंछांड़ि कन्है-या गयो नभयो सखिहाय मनोरथ जीको १० ॥

तथा। खेलनफागसवै निकसीं अरुरंग गुलाल लि-येभरिझोरी। मूठि चलावत ग्वालिनपै अरु श्यामलके मुखआवनरोरी ॥ जबहींहँसिहेरि गह्योअँचरा परसा-दसी प्रीति गुलालसीजोरी। मोसे दुरैहौ कहा सजनी निहुरे निहुरे कहुं ऊंटकी चोरी ११ ॥

तथा। खेलियफाग निशंकह्वैआज मयंकमुखी बड़-भाग हमारो। लेहु गुलाल दोऊ करमें पिचकारिनरंग हियेमहँ मारो ॥ भावै तुम्हैंसो करो मोहिं लालन पांव परोंजनि घूंघट टारो। वीरकी सोंहम देखिहैं कैसे अ-वीरतो आंखें बचायके डारो १२ ॥

तथा। फागकेभीर अभीरनत्यों गहि गोविंद लैगई भीतर गोरी। भायकरी मनकीपदमाकर ऊपरनाय अबीरकीझोरी ॥ छीनिपिताम्बरकम्मर ते सोबिदादई मींजि कपोलनरोरी। नैननचाय कहीमुसुक्याय लला फिरि आइयो खेलनहोरी १३ ॥

क०। खेलै लगीं फागसंग रम्भासी रसीली नारि नागरी गुलाल मुख मेले नन्द वेटेमें। कोऊ पिचकारी रंग वसन उघारि मारि झपटि उतारि रंग वोरी कोऊ फेटेमें ॥ होरीहोरीबोलीगोरी वैससब थोरीथोरी श्याम श्यामारोरी लैलपेटे श्यामपेटेमें। तौलौंमुसुक्याय कुच पकड़ेदिवाकरजू धरेबाजकोकमानो एकहीझपेटेमें १४॥

तथा। नटकेबटासे कलधौतकेघटासेखासे बीजुरी

छटासे रति राजजूके गट्टासे। दाड़िम नरंगी बेलकंज शैल शिखरसे सीव से दिवाकर जू आनक उलट्टासे॥ साहुलसे गोलसे सिंधौरा बटमार ऐसे अतिहीकठिन पीन सीन पनबट्टासे। चक्रवाक शावकसे लालरंगजावकसे बालाके उरोज धरे बाजकेझपट्टासे १५॥

तथा। लैलैकर झोरीजुरि आईइतैगोरीउतैहोरीखेलिबेको ग्वालजालहूबनाया कीच। छायगोछिनैमेंयों गुलालमेघमालऐसो द्विजदेवजासों नजनायोपरैऊंचनीच॥ ऐसीभईधूंधर धमारकी सुताही समयपावसके भोरेमोरशोरकैउठैंअपीच। घनकेसमानज्योंज्योंदौरैंघन श्यामत्योंत्योंसंपासीदुरतआलीचम्पाचनबीचबीच १६

तथा। आलीहौंगईहौंआजभूलीबरसाने कहूं तापै तू परैहै पदमाकर तनैनीक्यों। ब्रजबनिता वैबानितान पै रचैहैं फागतिनमें जू ऊधमिनि राधामृगनैनीयों॥ घोरिडारीकेसरि सुबेसरिबिलोरिडारीबोरिडारी चूनरि चुचातिरङ्ग नैनी ज्यों। मोहिं झकझोरिडारी कंचुकी मरोरिडारीतोरि डारीकसनबिथोरिडारीबेनीत्यों १७॥

तथा। मधुर मधुर मुख मुरली बजाई धुनिधमकि धमारनकी धाम धाम कैगयो। कहैपदमाकरत्यों अगर अबीरनकी करिकै घलाघलीछलाछलीचितैगयो॥ को है वहग्वालिनिगुवालिनिके संगमें अंगछबि वारोंरसरंगमें भिजैगयो। बैगयो सनेह फिर छ्वैगयो छराको छोर फगुवान देगयो हमारो मनलैगयो १८॥

तथा। अवधि बिताई येतीकरीनिठुराई पियापाती

नपठाईगुणराजनजरूरीमैं। ऋतुपतिआईपातीअति-
ही सोहाई फिरी कामकी दुहाई दुखदारुणदरोरी मैं॥
फूलेहैंपलाश अरु हुलास सबबाधनकेअंगअंगअतर
अबीर भरे ओरीमैं। मदन बढ़ोरीप्राणचाहत कढ़ोरी
सखी और खेलें होरी हम होरी होतहोरीमैं १९॥

स०। फागसचो सिगरे ब्रजमें नभआदर लालगु-
लाबसे छाये। नागरीओ मनमोहननागर सामनेहोत
चितैमुसुकाये॥ मानगयो छुटिमोद भयोमनदोउसनेह
भरे बतलाये। मूठी अबीर चलाय सुगन्धलगावत के
मिसिसोंलपिटाये २०॥

स्वप्नदर्शन विषयके कवित्तव सवैया १४॥

स०। सोवतआजसखीअपने द्विजदेवजूआयमि-
ले बनमाली। जौलौं उठी मिलिबेकहँ धायसोहायभु
जानभुजानपै घाली॥ बोलिउठेयेपपीगन तौलगिपीव
कहां कहिकूरकुचाली। सम्पातिसीसपनेकी भईमिलि-
बोब्रजराजको आजकोआली १॥

तथा। आवतमें सपने हरिको लखिनेसुकबाट स-
कोचनछोड़ी। आगेकै आड़भये मतिराम महूंचितयो
चित लालच ओढ़ी॥ ओंठनको रसलेनकोआलिरी
मेरीगहीकर कांपत ठोढ़ी। और भईन सखीकछुबात
गई इतनेहीमें नींद निगोड़ी २॥

तथा। व्याकुलकाम सतावत मोहिं पियाबिननींक
न लागतकोई। प्रीतमसे सपने भईभेंट भलीविधिसों

देखो तसवीर नम्बर १९॥

श्रीराधिकाजीको शयनमेंश्रीकृष्णचन्द्रको स्वप्नमें देखना और [illegible] नाम सखी से कहना ॥



लपटायकै सोई ॥ नैन उघारि पसारिकै देखौं चौंकिपरी कितहूं नाहिं कोई। एरीसखी दुखकासोंकहौं मुसुक्याय हँसी हँसिकै फिरिरोई ३ ॥

तथा। पौढ़ी हती पलँगा पर मैं निशि ज्ञानरुध्यान पियामनलाये। लागिगईपलकैंपलसोंपललागतहीपल में पियआये ॥ ज्योंहि उठी उनके मिलिबेको जागि परी पिय पास न पाये। मीरन और तो सोयकै खोवत हौं सखि प्रीतम जागि गँवाये ४ ॥

तथा। लै अपने सपने मनकी दुलहीउलहीछबिभागभरीसी। अंकनिशंकसोंलैपरयंक ललामुखचूमिसुचारु धरीसी ॥ यों लपिटी चपिटी हिय सों यशवंत विशाल प्रसून छरीसी। नैननके खुलतै वहमूरति पासपरीउड़ि जात परीसी ५ ॥

क०। आये कान्ह द्वार आली बेगि उठि देखौ धाय काहू यह बात कही आनँद सुधामई। केलिकी दिनाकी हिय तलफ बुझायबेको हौंहूंपरसाद प्यारे देखन तहां गई ॥ झूठोसुखसपनेमें करननपायोकोऊ एहोनिरदई ऐसी तुरतदगादई। जौलौं भरिनैन वहमूरति निहारि देखौं तौलौं नैन छोड़िनींद बैरिनि बिदाभई ६ ॥

तथा। ओढ़े पटपीत शिरसजनी सपनबीच सांवरो सलोनो एक देख्योआज रैनको। जानोनहिं कौन हो कहांतेआयो मेरेढिगलैगयो छबीलोछलि घेरेचित्त चैन को ॥ कंजनसेकरे मन रंजन करतआली अंजनलगायो मेरे खंजन से नैनको। कहौं करजोरि तोसों आनिरी

मिलायमोसों मोहिं अफ़सोसै दैभरोसैनिजबैनको ७॥

तथा। काहूकाहू भांतिराति लागीतीपलक़तहांसपने में आयकेलि रीतिउनठानीरी। आयदुरेजाय ममनैनन मुंदायकछु हौंहूं बजमारी ढूंढ़िबेको अकुलानीरी॥ एरी मेरी आली या निराली करताकी गति द्विजदेव नेकहूं न परत पिछानीरी। जौलौं उठि आपनो पथिक पिय ढूंढ़ौंतौलौं हायइन आंखिनते नींदई हिरानीरी ८॥

तथा। प्यारेकेवियोगवश व्याकुलनिहारि अनुहारि पीकी लखी शोभासरसनकी। भूषण बसनतन दीपति की सरसाई दरशाई बालकोविनोद बरसनकी॥ अवधि को विताय तुम आयसु कवीन्द्र प्यारे परवीन बेदना हमारे तरसनकी। दैगई वरहनो गई न करीभई वाके अक्षन प्रतीति प्रतिक्षण दरशनकी ९॥

तथा। सोवातिउचकिपरीलालाहिं बिलोकिबालस्वपन कहानी कहिसानी मृदुवानीसों। सांवरो सो ढावरी लकुट पट पीतवारो मेरोपट पकरि लपटिउरआनीसों॥ सकुचि सकुचि आली लाजन मरतकछु काजन सरत एरीविना दधिदानीसों। शोचिशोचि मोरिदृग बावरी फिरतज्योंसफ़री सी तलफत प्यारी विनपानीसों १०॥

तथा। तड़ितकलासीरतिकासीअमलासीहासतारा सी दिपतितेरी मेरेउरपारिगई। कमलाकनकज्योतिति-लनतिलोतमासीघृताचीसीछरि छविनेकचितगड़िगई॥ उरमें न आवै उरबासी यक्ष किन्नरीसी नरीरूप क्यों लगैताकेमनहारिगई। मृदुलमृणालिकासीमल्लिकासी

॥ [illegible] ॥

[illegible]

स्नातस्नीरः२० मुतअल्लिके सफ़ा ४६५

कलियुग का स्वरूप जो आजकल वर्तमान है ॥



मालिकासी बालिकामरोरि मनसेहरसो करिगई ११॥
स०। आजअली बहुधोसानिमें मनमोहनजूसपनेमें निहारे। बातैंकरी अनुरागभरी अरुकेलि कलानिकेपुंज उधारे॥जातकह्यो न लह्योसुख सौतिनसों मनसोंसबही दुखटारे। जागिपरी अकुलानि भई जब देखनहीं ढिग प्राणपियारे १२॥
तथा। सुनिबातसखी सपनेकीजबै हरिकेढिगकोअकुलायचली। मनमाहिं बिचारत आरतसी उरबालकी आयकरौं गिरली॥ मनमोहनकुंजमें जाय लखे जहां सोहैं कदम्बन की अवली। नवनागरि बेदनि भेदनिको सबकीने निवेदन भांतिभली १३॥
कलियुग व कालगति वर्णन के कवित्व व सवैया १५॥
क०। कालसों न बलवन्तकोई नहीं देखियत सबको करत अन्तकाल महाजोरहै। कालहीको डर सुनि भाज्यो मूसा पैगम्बर जहां जहांजाय तहांतहां वाको घोरहै॥ कालहै भयानक भैभीत सबकिय लोकस्वर्ग मृत्यु पातालमें कालही को शोरहै। कालही को काल एक सुन्दर अखण्ड ब्रह्म वासों काल डरै जोई चल्यो यहि ओरहै १॥
तथा। भूठसों बँध्योहै जालताहीते ग्रसत कालकाल विकराल व्यालसबहीको खातहै। नदीको प्रवाहचल्यो जातहै समुद्रमाहिं तैसे जग कालहीके मुखमेंसमातहै॥ देहसों ममत्वताते कालको भयमानतहै ज्ञानउपजेतवह

देखो तसवीर नम्बर २०॥

कालहूविलातहै। सुन्दर कहत परब्रह्महै सदा अखण्ड आदिअंत मध्य एकसोहीं रहातहै २॥

स०। कालउपावतकालखपावतकालमिलावतहै गहि माटी। काल हलावत काल चलावत काल सिखावतहै सबआटी॥कालवुलावत कालभुलावत कालडुलावतहै घनघाटी। सुन्दर कालमिटै तबहीं पुनि ब्रह्म बिचारि पढ़ै जबपाटी ३॥

क०। मायतो पुकारि छाती कूटिकूटिरोवतहै बापहू कहत मेरो नन्दन कहांगयो। भाईयाहू कहतमेरीबांह आज दूरिभई बहिनिकहत मेरा बीरदुःखदैगयो॥ कामिनी कहत मेरो शीश शिरताजकहां उनतत्कालहाथ मीसि धोयहै लयो। सुन्दर कहतताहिकोऊनहींजानि सकै बोलत हतोसुयह क्षणमें कहांगयो ४॥

तथा। राजनकीनीतिगई मित्रनकीप्रीतिगई नारीकी प्रतीति गई यारमन भायोहै। शिष्यन को भाव गयो पञ्चनको न्यावगयो सांचको प्रभावगयो झूठहीसुहायोहै॥ मेघनकी वृष्टिगई भूमिशुद्धनष्टभई सकलसृष्टि ही में विपरीति दरशायोहै। कीजिये सहायजूकृपाल श्रीगोबिंदलालकठिनकरालकलिकालचढ़िआयोहै५॥

तथा। गृहीजे दरिद्रीभयेसंग्रहीसंन्यासीभये योगी संयोगीमन मायामें मिलायोहै। तपी रोजगारी व्यभिचारी ब्रह्मचारीभये कपटको स्वांग बहुलोगनबनायो है॥ ज्ञानीजन मानीभये दानीभये दम्भी पुनिआरम्भी विरक्त राग दोषउपजायोहै। कीजियेसहायजूकृपाल

श्रीगोबिंदलाल कठिनकरालकलिकालचढ़िआयोहै६॥

तथा। छमीभयेछोभीकबिजनभयेलोभीहरीरसछांड़ियश मानसको गायोहै। सूमभये स्वामी पुनि सेवकजो हरामीभये कामीभये पण्डित जिनमान ठहरायो है॥ हीनभयेधर्म्मी अधर्म्मी जतीनभये चाकर सुलीनअकुलीन धन पायोहै। कीजिये ० ७॥

तथा। प्रभूचरणामृत प्रसादको कहूं न नेम भांग और अफीमआफूसमीने खायोहै। ब्यासबालमीकिसूर तुलसीकी बानीतजी आल्हा पृथ्वीराज को सुनतसुख पायोहै॥ गादी बैठ शूद्र उपदेशकरत बिप्रनको बिप्र हरदेव छांड़ और देवधायोहै। कीजिये ०८॥

तथा। ब्राह्मणन पढ़ेवेद गायत्री तर्पणसंध्याचाकरी मजूरी हलजोतिबेकोधायोहै। क्षत्री जमींदार अन्ध निजपुत्रीको मारडारें कुलबधूबिसारें चितचेरीसों लगायो है॥ बिप्रनसों बन्दगी करावें कहींबैश्यशूद्र ब्राह्मणबने। निनसोंकरें मनचाह्योहै। कीजिये ० ९॥

तथा। एककी सगाई करें ताको पुनि दोषधरें धन लेके मौर शिर औरके बँधायोहै। सबलकी सबकहैंनिबलको दूनोंदहै बिना अपराधहीगरीबको सतायोहै॥ ऊंटनीसों नातो वहांतौ हांतौहू नकरैं कौड़ीके काजनीचसों नातो भांति भांतिकरबनायोहै। कीजिये ०१०॥

तथा। भानजी भतीजी चेला चेलीसोंलगावेलाग औरको विवेकभांतिभांति समझायोहै। बहिनिभतीजी भानजी कोन खावें प्यावें कुटनी कुराही दाम देतन

आयायोहै ॥ ईश्वरके हेत न कवीश्वरकोदेतकछू कंच-
नीके काज़उधारजो मँगायो है । कीजिये ० ११ ॥

तथा । भाईकीये न्यारे जवाईकिये प्यारेसारे घररख-
वारे किये कछुना दुरायोहै । मायसों लड़त पायँसासुके
पड़त निज नारीके कहेमें फिरतअनुसायो है ॥ पिता ते
लजावें बोल गुरुनते पलट जावें ऐसेजन देखउर महा
अकुलायोहै । कीजिये० १२ ॥

तथा । भाईजे बटोहीहैं पुरोहितजेलम्पटहैं तातमात
बेटाबेटी बेंच धनखायोहै । कुलवधू भूखमरैं कुलटा शृं-
गारकरैं कन्या कुवांरिन पै मन ललचायो ॥ पानी भरैं
ननंद जिठानीसासुपीसैंपवैं बहूबैठिआपनोई हुकुम च-
लायोहै । कीजिये० १३ ॥

तथा । हारीभये भूपति सभा सब अनारीभई प्रजा
हीके लूटनेको मंत्रलै उपायोहै । बहुराभिखारी ब्योपारी
लबारीभये मारे जमाले औरको दिवालो लैदिखायोहै॥
ज्वारीभये जौंहरी इज़ारदार हाकिमजे चोर चौकीदार
जमींदार देत दायोहै । कीजिये० १४ ॥

तथा । कानूगोय चौधरी गुमाश्ता मुसद्दीकोऊमाल
सारखांय कोरोकाग़ज़ही दिखायोहै । फ़ौज़दार नायब
सुसाहब अकोरलैके झूठाकरैंसांचो पुनिसांचको झुठा-
योहै ॥ आठौयाम धावैजाके उलटाले लगावैं दोष भड़ु-
वा औमसखरेको नीके अपनायोहै । कीजिये० १५ ॥

तथा । सुघरनकी नासँभार सूरखडेदूर द्वार हीजड़े
अधिकारभीतरजाबँधायोहै।शाहनतेदण्डलेतचोरनको

छोड़देत चुगुलको एतबार अधिकसवायोहै॥ दंभिनको पूजैं साधको न पूछैं कोऊ भली बुरीनाहिं सूझै ऐसो अन्धकार छायो है। कीजिये० १६ ॥

तथा। पितापुत्र बैर घनो गैरसे सनेह घनो गुनीके दरिद्र द्रव्यमूढ़को दिखायो है। माताकी भार पतनी को पतासापान पिता पौरिपातरीकोबंगली छवायो है॥ साधुगुरु बिप्र छोड़कोलियनके पांय पड़ैं पूजैं भूत प्रेत भगवन्त बिसरायोहै। कीजिये० १७ ॥

तथा। गुरुकरैं लंघन गुरन्दे खांयखीरखांड़राज करैं नटनाच नृपको नचायोहै। भांड़नको बुलावैं कबि कोई बिधिनाजाने पावैं भली कथानाहिं भावै बिरहीगँवायो है॥ प्रमाणीको पांच नहीं प्रपञ्चीको पचास देत पंडित पियादे पिधूपालकी चढ़ायोहै। कीजिये० १८ ॥

तथा। सुघर सिपाहीशूरबीर रणधीर केते चाकरी को छोड़बैठे मनकोघटायोहै। धुनाजुलाहादिकफेंटबांध फूलटांके चौहटमें रोहटाफिरैंगरबजनायोहै॥ जंगजुरेडरैं उलटे फिरैंमरैं नाहिं घनी कहें लरैं नाहिं पिता कुलको लजायोहै। कीजिये० १९ ॥

तथा। सूरताई आंधेरे में दृढ़ताई पाहनमें नासिका नचानिमध्य नोन रही हाटमें। धर्मरहो पोथिन बड़ाई रही वृक्षनि बन्धेज परा पांतिनमें पानी रह्यो घाटमें॥ याहि कलिकालने बिहाल कियो सबजगनायक सुकबि कैसी बनीहै कुठाटमें। रजरहीपंथ निरजाई रही शीत-काल राई रही राइते रमाई रही भाटमें २० ॥

तथा। पृथुनल जनकययाति मानधाताऐसेएते भूप भये यश क्षितिपर छाइगे। कालचक्र परे शक्र सैकरन होतजात कहांलौं गनावौं विधिबासर बिताइगे॥ बेनी साज सम्पति समाज साजिसेना कहां पांयनपसारिहाथ खोलेमुँहवाइगे। छुद्रक्षितिपालनकी गिनतीगनावेकौन रावणासे वलीतेऊ बुल्लासे बिलाइगे २१॥

तथा। क्षोहिणीअठारहदल बाजेबाजेरावणके पूत भूत नाती केते भूतनको खाइगे। नवलाख गाइब्याइ तासों कहै एकनन्द ऐसे नव नंद उपनंदहू हेराइगे॥ श्रीपति भनतमाया गिरिधरलालजूकी लेतदेत बारना वजार ऐसी लाइगे। सौभये तिमिर के सहस साठि सगरके छप्पनकरोरि यादौ छिनमें सिराइगे २२॥

स०। कोऊबनावतऊँचेअटा घनघोर घटालगे तंबू कनातैं। तामसके इतमामरचेबहु भूषण भौनजमाकी समातैं॥ बंदि मृषाभवको यह ख्याल महाभ्रमजाल घने उतपातैं। एकरकारमकारबिना धिरकारसबै दुनि-आयँकी बातैं २३॥

क०। कालकीनखबर कहांधौंहोय मेरेमनख्याल की है काया सबपौनभरीखालकी। पालकीमें बैठि मतभूलै मढ़िनालकीमेंकाढ़िकरि तीरथसुमतिलैसुचालकी॥ माल की जनावै जिनमालन पै ग्वालकविकरि सतसंग बेड़ी काटि माया जालकी। बालकी विलोकनिबिसारिहला-हलकी तू छविदीनदयालकी विलोकिनन्दलालकी २४॥

तथा। तात मात बहिन सुता औ सुतबनिताहू भानजे भतीजे साथ चलिहैं नखेवापै। हाथी हथियार हय ग्राम धाम धौरे धौरे भूषणबसन छूटिजैहैंएकठेवा पै॥ ग्वाल सतसंगहीते करिशुद्ध अंतरंग राखि निज ब्रतएक सांवरेकी सेवापै। कोऊ हैन हित्त नित्त बित्तके लिवैया सबैभूलै मतिचित्त इहिकालके कलेवापै २५॥

तथा। चोवा चारुचन्दन कपूरचूर चाहि लैलै अतर गुलाबका लगावै तन घाटीमें। खासा तनजेबकेबसन वेस धारि धारि भूषण सँवारि कहा सोवै सेजपाटीमें॥ कोहेतू कहांते आयो कहां फेरिजानोतोहिंभूलिकेसरूप धरयोमायाकी सुटाटीमें। मोहमईममताकीपरीमजबूत बेरी मेरीमेरीकरत मिलैगी अंत माटीमें २६॥

तथा। कूरभये कुंवर मजूर भये मालकार सूरभये गुपत असुरभये जबरे। दाता भये कृपण अदाताकहैं दाता हम धनीभये निधननिधनभयेगबरे॥ सांचनकी बातना पतात कोऊ जगमांझराजदरबारनबुलैयेलोग लबरे। भनतप्रवीनअबछीनभई हिम्मतिसो कलियुग अदलिबदलिडारे सिगरे २७॥

स०। बन्धु बिरोध करो सिगरो झगरोनित होत सुधारस चाटत। मित्रकरै करनी रिपुकीघरनीघरदेखि नन्याउ निपाटत॥ रामकहैं विषहोत सुधा घर नारि सती पतिसों चितफाटत। भाबिबिधिना प्रतिकूलजबैतब ऊंट चढ़े पर कूकर काटत २८॥

क०। मेघा होत फूहर कलपतरु थूहर परमहंस

चूहरकी होत परिपाटीको। भूपतिमँगैयाहोतठाढ़काम गैयाहोत गैवर चुअत मदचेरोहोतचाटीको॥ कहैशि-वनाथकविपुण्यकीन्हे पापहोत वैरी निज बापहोतसांप होत सांटीको। स्यार सुत शेर होतानिधन कुवेर होत दिननको फेरहोत मेरुहोत माटीको २९॥

स०। बैठि समुद्रकी ओटकेकोटमे कंचनकेघरजाइ भुलाना। बीसभुजाबलवन्तहुलो तब इन्द्रगयन्दहुसे हमताना॥ लाखकरोरिसुता सुत बन्धवसो गृह रावण जात न जाना। धराकी प्रमाण यहीतुलसीजो फरासो झरा जो बरासो बुताना ३०॥

तथा। बलिविक्रमवेणु दधीचिगये औगये पारथ जिनभारतठाना। बालिगये बलरूपगयेजिनकीकखरी दशकंठदबाना॥ गयेदुर्य्योधन जङ्गजुरे जिन चौंसाठि कोशमें छत्रविताना। धराको प्रमाण यहीतुलसी जो फरासो झराजो बरासो बुताना ३१॥

क०। केतेभयेयादवसगरसुत केतेभयेजातहूनजाने ज्यों तरैया परभातकी। बलिवेणु अम्बरीष मानधाता प्रहलादकहांलों गनावों कथा रावण ययातिकी॥ तेऊ न बचनपाये काल कौतुकीके हाथभांतिभांतिसैनारची घने दुखघातकी। चारिचारिदिनाकोचवाउचाहैसोकरै अंतलूटिजैहैं जैसे पूतरी वरातकी ३२॥

तथा। कासों करौं मोहमोहिं मोहीको परीहैदेवमोहन से मोही महामायामें बिलायगये। मीनसे मुनीशमहा मनसे मनुज मानधाता सममानी महामद सोंसिराय

गये॥ बामनसेरावनसेरामजूसे खेलिखेलिखलनकीखो परीखिलौनासीखिलायगये। काटेमहाकालव्यालबली बलिभद्रऐसेबालिऐसेबालिऐसेबुल्लासेबिलायगये ३३

दुष्टजन व सज्जनाविषयके कवित्व व सवैया १६॥

सुराजा वर्णन

क०। न्यावसमहेतसदाराखेरहैंचेतसुधिसांकरेमेंले-तदेत दानकृतकाजाहैं। पापनसोंन्यारे प्रजाप्राण सम प्यारे बलदेवहितधारे द्विजसत्त शिरताजाहैं॥ शत्रुको नलेश यशछायो देशदेश बीरता मैंअतिवेश जेसदाही सुख साजाहैं। छलसों न काजा शब्द सांचोछत्रसाजा लखिशोभ और लाजा एकऐसे महाराजाहैं १॥

कुराजा वर्णन॥

तथा। न्यावनाहिंपोतेलेतजोतेकहैंकाहद्वथसोतेदिन रातप्रजारोते बिननाजाहैं। कोहमठियारनको लोहल-ठियारनको भांड़भठियारनको सैनहोतआजाहैं॥ कवि सों न हेतरीझि दानदांत काढ़िदेत अयश निकेतबधि कीहै केहिकाजाहैं। पापकी नलाजाकहैंयांचकसोंजाजा इहांतेरो काहकाजाघेल ऐसेएकराजाहैं २॥

सुमंत्री वर्णन॥

तथा। सुबुधिबतातेबलदेव सुखछातेसतसीधेकरि जातेशङ्कआतेहीन देरीते। भूपमनभावैं कुलशीलदर-शावैं यशजागो जगपावैं जोरजीतेरहैं जेरीते॥ मंत्रीमं-त्रपूरेलोभ लोलुपसों दूरे हीनताई तरुतेरहैं विचारपरे

मेरीते। नीतिके निकेत ज्वाबदेत हेतचेतकरिराजकाज नेत सुधिलेतसबकेरीते ३ ॥

कुमंत्री वर्णन ॥

तथा। काहूको नदीजै कछुलीजै सीखमेरी मानि पीजै मद कीजैकाज आनसुखचाखैंना। हीन कूलहीके परनीकेमंत्र भाषतहैं फीकेपरे जीकेरहिजायअभिलाखैं ना॥ भूपसों बखानैं और लूटिबेनजानैं हमऐसे ब्योंत ठानैं जामें रैयतिको राखैंना। वाकेएकदारासो निकारा चहैं काहूभांति करत इशाराआपकेतौकछुआंखैंना ४॥

सुचाकरवर्णन ॥

तथा। आयसु न फेरेकबौंरुचिरुखहेरे औरकाजते सवेरेनेरेआयरहैं ताकरे। नृपसुखहेत ज्वाबदेव जौन पूछौकछुपरम सचेतनेतानिमकअदाकरे॥ नीकेनोकदा-रखलदेव कृतकारयार सबल करारररारसांकरेमें आंकरे। चौकस चपलचाहुचौगुनी चमक चिहूं चतुर चलाक चारुओपधर चाकरे ५॥

कुचाकर वर्णन ॥

स०। जोसहजें सबकाजकरैं सहमैं त्यहिहेरि हिये कहलाकर। नातो जबानकी नोकेंबसैं निरखेपरेऔगुनके अतिआकर॥ लागेंनहीं सँगजागे न नौकरी भागे कहूंनृपकोलखिसांकर। चोर चमारसे चूल्हे परे यहि भांति चण्डालजे चूतिया चाकर ६॥

श्रेष्ठद्विज वर्णन ॥

क०। सुन्दर सन्तोष दूरि करतहैं दोष सब नेकहू

न रोष वेदशास्त्र पारगामीहैं । सुमगबनाते बलदेवयश छातेजग बोले परश्राते हरिध्याते हितनामी हैं ॥ पूरण प्रतापमानमाण्डितमहीपनमें मंजुलबदतबैनऐनअभि-रामीहैं । रचत बिधान गति दयाके निधान अति ऐसे द्विजराजनको धन्यतेनमामीहैं ७ ॥

दुष्टद्विजवर्णन ॥

तथा । दानहठठानें दोष औरके बखानें रीति भांति नहींजानें औनमानें खांड़पूरीसे । विद्याको न लेश त्यों नवेषरूपरेख कछुहुज्जातिहमेशबाजआवैंनाहिं कूरीसे ॥ खीझिके सराखे बिषखैंहैं इमिभाखें चट टेढ़ीकरिआंखें चीरिडारैं तन छूरीसे । कलियुग काजनको साजैं तजि लाजनको ऐसे द्विजराजनको दण्डवत दूरीसे ८ ॥

शूरक्षत्रीवर्णन ॥

तथा । गो द्विजकोपालें सन्तमारगमें चालैंनिज शत्रु दलघालैं रणसेंते मनमोरैंना । सुखद सजीले बीरतामें गरबीले कुलएकहन ढीले हीनताईके निहोरैंना ॥ जाको सँगधारैं ताको पार निरवारैं दान दायाको सचारैं धर्म्म धारैं तौन छोरैंना । युद्धनकी पत्री सुनि मोदलहैं अत्री अति ऐसेशूरक्षत्री समतामें और जोरैंना ९ ॥

कूरक्षत्रीवर्णन ॥

तथा । गावैंगीत गैतलसे भेद दरशावैंकवों करचट-कावैं मटकावैं मुखफेरते । विप्रको न मानैं पांवलागिबो नजानैं कहा शास्त्रकी प्रमानैं सुनि वा दिशि न हेरते ॥ लम्पट लवारीमें लखात सब लायकहैं लोहे के लपेट

सुनि लूकिरहैं देरते। ऐसेक्षुद्रक्षत्री कूरकाहे करतारकिये कुंजरनकी ज्यों शिर मूलीधरि टरते १० ॥

शूद्रवर्णन ॥

तथा। आलस विहीने चैनबोलत अधीनदीनेश्रममें नखीने छोंडिदीन्हेंछलक्षुद्रजे। पारकाज खेवाकरैंद्विजन की सेवाकरैं तिनहीं को धेवा करैं जानि जिय रुद्रजे ॥ रोप उरआनैं नहीं निजहठठानैं नहीं बढ़िके बखानैंनहीं लघुतामें गुद्रजे। सांचेकाजराचेरहैं खांचरीतिरेख सब यांचे विनलहत सहजसुख शुद्रजे ११ ॥

दुष्टशूद्र वर्णन ॥

तथा। ऐंठेऐंठेवोलैं अधिकारनिजखोलैं कहेकामको नडोलैं समुझायजब हारिये। द्विजकौनहोते कुलचीकने नमोते इहि भांति भाषि सोते में मशाल एक बारिये ॥ तुरतजगाय ताके मुखमें लगायदीजे जनन भगायक्षण एकलौं न टारिये। जानो महाखोटा चटपकरिके झोटा ताको ऐसोशूद्र सोंटा जोहि जूतनसुधारिये १२ ॥

प्रसन्नवदनवर्णन ॥

तथा। दायाकोद्रवत नैनफूलसेझरतबैन सांचेसुख-माके रोन सौनशीलसाजेहैं। बिहँसतबोलैं बलदेवगुण खोलैं प्रेमपथ सो न डोलैं मनमोलैं कृतकाजे हैं ॥ भौन सुखभारी उपकारी धीरधारीसुख स्वच्छतासचारीरीति रोचकसें छाजेहैं। सिद्धिके सदन उरकाहूसों कदनयहि भांति जगवदन प्रसन्नते बिराजेहैं १३ ॥

रोवनीसूरतिवर्णन ॥

स०। दूरिदशा करतारकरैं त्यहि जो गुण छांड़िकै औगुण जोवनी। नीचेकियेदृग बैठियकान्तमें हेरतओर को होतक रोवनी ॥ कोईकहूंको विवादकरै अपनीसमुझैहैं सदामुख धोवनी। खीझमें जैसी खुशीहूमें तैसही शोकभरीरहै सूरति रोवनी १४ ॥

श्रेष्ठपंचवर्णन ॥

क०। न्यावनित सांचे बलदेव रँगराचे मांबिलाको खूबजांचे हालबांचेतेबिशेखामैं। रुचत न रारी उपकारी श्रुतिभारी भाव बंशधन धारी कृतिकारी रीतिरेखामैं॥ जागो यशबेशत्यों बढ़ाई देशदेश काहू पक्षकोन पेशऔ नलेश लोभ लेखामैं। समरंक भूपभगरेको करैंकूपतेई ईश्वरके रूपहैं अनूप पंच देखामैं १५ ॥

दुष्टपंचवर्णन ॥

तथा। भांड़नकोभेंटेतिमिमेटे मरयाद दुष्ट लोभके लपेटेबेटेकाकेबनेकाजीहैं। न्यावमुख देखाकियोरोषन कीरेखाकियो लुच्चन में लेखाकियोकैसे मूढ़ माजीहैं॥ लोकमें न माल परलोक त्योंनपाल कछुपूछते न हाल टयेचाल जालसाजीहैं। देतो ताहिराजीकरैं केतोकहों नाजीकरैं चेतो दगाबाजीकरैं येतो पंचपाजीहैं १६ ॥

श्रेष्ठवैद्य वर्णन ॥

तथा। सुंदर शुभगतन सुखदमुदितमन आनँदके धन धन क्षणहितसाजहैं। दाया दानधारीबलदेवउपकारी जग भारी भीर टारी शुचि शीलके समाजहैं ॥

देशकालजानैं तिमि औषध विधानैं सबहीको सनमानै ठानैं गुण शिरताजहैं। विसद विचारैं त्यों अचारैं श्री-सचारैं चारु सेईसिद्धि भेई लघुतेई वैद्यराजहैं १७॥

दुष्टवैद्य वर्णन॥

तथा। नारी नाहिंजानत अनारीकहे गारीदेत तारी देहँसतहैं हजारनको मारामैं। झोली वीच गोली तौन गोलीसी लगतयह तोलीगई वारगई प्रोढ़नकोपारामैं॥ करणी यहीहै घर घरनी रिझैवेयोग वसु वैतरणी मिलै गियो विचारामैं। वैठेहैं वधिकसे बिसारे बकरूप वानि ऐसे वैद्यराजको वहावै वारिधारामैं १८॥

दातावर्णन॥

तथा। दायाके निधान विधिजानत विधानकैहैंद्विज बलदेव दान मानमें नदेरकी। देतेदिनरात हित दीन दरशात वसुवेस वरसातवातवदतन फेरकी॥ वेदयश जांचेरहैं सिद्धिकर सांचेरहैं रीतिरस राचेरहैं हरषित हेरकी। टेरकी जो ताकी विपताको गहिजेरकीहैंवेरसी लुटावैं वीर सम्पति कुवेरकी १९॥

सूम वर्णन॥

तथा। दरशनदीजि औदीजियेअशीश आयसुजब नायोताहि पुनिपढ़िदीजिये। द्विजबलदेव कछुलीवेजो चहत इत तौ तौ दगावाजीजालसाजी सुनिलीजिये॥ खानेकी वदतवैठिरैहैं तहखानेजाय खैहैंना खवैहैंसांच चित्तमेंयतीजिये। फरचाकहतजांचमरचासीलागतहै खरचाकी वात इतचरचा न कीजिये २०॥

सन्मित्र वर्णन ॥

तथा। आठौयामरटत रहत नाम गुणग्राम अति अभिराम रूपदृगनसों पीबेको। द्विजबलदेव बातदूसरी बखानैनहीं बदतबुराई बीरतासोंबैरकीबेको॥ प्राणनते प्यारोमित्रपरखोपरोक्षहमैं कपटविहीनेदुखताको हरिलीबेको। समयामैं सौगुणो सनेह सरसावैं शोभ सांचेते तयार तनधनमन दीबेको २१॥

कपटी मित्र वर्णन॥

स०। बातबदैं दृगदाबि जितैतित झूठही नेहजनायकरैंबस। पातरी पाछेकहैं सबकी नितवेषधरेरहैं सन्तनकोयस॥ आपने कामको सोहैंधरे बहु काढ़त भीरपरे सगरी गस। धर्मतजे तिनकर्मनसों किनजानि परैइन केपितरों अस २२॥

रोटी करा वर्णन॥

तथा। उज्ज्वल उत्तम हैकुलके सब लायक नेकहू लोभकोखोजन। बीरतामें कठिनो गनिये बलदेव भरे दृगशील सरोजन॥ पाचक मिष्ठनितैं रुचिरोचकसिद्धि समयकरैं चाहत योजन। स्वाद सुधामैं सराहिबे योगहैं षोड़श भांति बनावत भोजन २३॥

नष्ट रोटी करा वर्णन॥

तथा। भातमें लोन पहीतिमें पाथर डारि करैं सब छूतिही छूकर। मांगेहूं सौं परसै नकछू खल मैले महा मलको मानों सूकर॥ब्यंजन याविधिकेहैं रचे मुखसौंह

कियेमन आवत थूकर। येकवहू नहींदूवर होत रसोई केविप्र कसाईके कूकर २४ ॥

श्रेष्ठ वकील वर्णन

क० । न्याय रसराचे अति अन्तगति जांचेअपने सों सदा सांचे अंकवांचे वरकारमैं । द्विजबलदेवसुख सिद्धिनको सेवछुवो क्षोभको न वेष औनलोभ दरका- रमें ॥ रूपगुण फावफैलि राखतहैं आवआति हाज़िर जवाव हैं नतावत रकारमैं । अमित विचार अधिकार हेत मालिककेकरैं कारपारते वकील सरकारमैं २५ ॥

नष्ट वकील वर्णन ॥

तथा । पूछी भूलिजावैं समैकैसे को वुझावैं तिन्हैं आपुकोन आवैंकछू येतीकहैंऐठेहैं । मांविलेको बेरभई देरकोऊठेर करैं वन्दरसे वोलेआवैं अन्दरमेंपैठेहैं ॥ जीतेहारिमानी कवौंजीते जेनआज लगतीते गनिली- जै और कीजैकहा ठैंठेहैं।ढीलढील गातबात नीलमुख कीन्हे लखौभीलकी सकलके वकील वनि बैठेहैं २६ ॥

पण्डित वर्णन ॥

स० । जानतभेदसतासतको अभिमानलजेगुणज्ञा- नसों मण्डित । वेदविधानवदै वलदेव विनोद भरेभुवि भाव अखण्डित ॥ निन्दत औरनको न कवौंत्यों कहैं गुणदोष विहाय प्रचण्डित । राज सभा में उदण्डित बुद्धिकेतेई कहावतहैं वर पण्डित २७ ॥

मूर्ख वर्णन॥

तथा । गर्वभरेहठ ठानतहैं दुरवाद कहैं सवसोंरहैं

कूरुख। प्रोजनहीन कीबातैं अनेककरैं न कवौं तिन सों मनतूरुख॥ जानैं कछू नहिं पूंछे लरैं रहि जात तिन्हैं लखिकै सतपूरुख। प्रीति बिना सतसंग तजे लजेतेई कहावतहैं जनमूरुख २८॥

सत् परोसी वर्णन॥

तथा। काजबनैसो भनै बलदेवसदाबलदायकश्री बरकोसको। सांकरमें सबलेत सुधारि सराहत सज्जन पालन पोसको॥ शीलभरे सतल्यों कुलसंयुतसम्पति सिद्धि संभारत होसको। कोई सरोष ह्वैकाहकरै जिनके उरभारी भरोस परोस को २९॥

असत्परोसी वर्णन॥

तथा। उत्तमसों उपहासबढ़ावत गैतलज्ञानगवांर गसेहैं। ब्यंगबतातबदो कपटी सतरीति बिलोकिठठा-यहँसेहैं॥ प्रीति विहीन तजे सतसंग निलज्जमहामद मोहफँसेहैं। पातकी बातकी कानिकरैनहीं पातरेपाजी परोस बसेहैं ३०॥

॥ सपूत वर्णन॥

तथा। कोस उदार प्रभूहितल्योंसतरीति सदाबल-देवलहावत। नामप्रसिद्धसभाअतिचातुर आतुरआ-नंदआनि गहावत॥ क्योंनकरैं कुलकोअधिकारस्वरू-पभरे दुख दूरि बहावत। धूतनको मत कूततहैं नितते मजबूत सपूत कहावत ३१॥

कपूत वर्णन॥

तथा। आयसु मात पिताकोनमानतनीतितजेकुल

रीति कहावत । नामत्यौं रूपलजावनोहै सतसंगिनहूं को नरूरगहावत ॥ एकहु काम सरोन कवौं निरलाज अधीलघु लोभलहावत । कायरकाग कुमारगके कलि-काल ठयेते कपूत कहावत ३२ ॥

सत् स्त्री वर्णन ॥

तथा । शील सुरूप सुलक्षणलाजमैं शुद्धसुधावचहैं मन भायक । प्रेम पतिव्रतसों परि पूरण सम्पति साज सजै सब लायक ॥ चातुरीचंचलताको तजे गतिमन्द निरालस श्री गुणगायक । भागभरे पतिभाव सराहत तेयुवती जगमें सुखदायक ३३ ॥

दुष्टस्त्री वर्णन ॥

तथा । रोष अहारको रूपवनी परमन्दिरमांझसदा सुतियाहै । मन्द मलीनअलाज अलायकक्षोभतजेत्यों छली छुतियाहै ॥ देतसबै धिगजा सतसंगसोंधायरही चहुंधा च्युतियाहै । दूरि करौभुतिया को मयानक ऐसी तियाते भली कुतियाहै ३४ ॥

सत् मुसल्मान वर्णन ॥

तथा । रोज़नको व्रतव्याजतजेनहिंजानतहै जगमें फिरि जल्लम । ध्यानधरै दृगमूंदि पुकारत है निज़ईश विचारिकै पल्लम ॥ वातरिझावनीआपनीरीतिसिखाय सचोप मिलावत गल्लम । खानऔपानमें आननहींकछु मानवड़े तेईमान मुसल्लम ३५ ॥

असत मुसल्मान वर्णन ॥

तथा । वातन बीचबड़ीहै झलाझल पात्रकरैं घरघूर

केकल्ला। भौंहपै टोपीधरे तिमि बारन तेल लगाय कै डारत छल्ला॥ लाजविचार नहीं तिनकेकछु पूरितपात-ककेमनोगल्ला। मूरुख मालन मानै कोऊ अतिमूसरसे मतिमन्द मुसल्ला ३६॥

भड़ौवा व हँसी आदिके कवित्त व सवैया १७॥

क०। पेटसों नबेली जाके आगे सब हारिचलेराव और रङ्क एकपेटजीतिलियेहैं। कोऊबाघमारत विडार-तहै कुंजरको ऐसे शूरबीर पेटकाज प्राणदियेहैं॥ यंत्र मंत्रसाधत अराधत मशान जाय पेटआगे दुरतानिडर ऐसेहिये हैं। देवता असुर भूत प्रेत तीनोंलोक सुनि सुंदर कहत प्रभु पेट जेर किये हैं १॥

तथा। प्रातहीउठत जब पेटही को चिन्ता तब सब कोऊ जात आय आपके अहारको। कोउ अन्नखात पुनि अमिष भखत कोऊ कोऊघास चरत चरतकोऊ दारको॥ कोऊमोतीफल कोऊ बासरस पयपान कोऊ पौन पीवत भरत पेटभारको। सुन्दर कहत प्रभुपेटही बनाये सब पेट तुमदियेहै जगत होन ख्वारको २॥

तथा। दामहीसों आठोयाम बुद्धि को प्रकाशहोत दामहीसों सबैठौर होत बड़ो नामहै। दामही सों भैया बन्धुआय सब रुजूहोत दामही सों बनहू में होत सबै कामहै॥ दामहीसों सभामांझ आदरकोपावतहै दाम-हीसों गृहमांझहोत बिसरामहै। कहैकविहेम यहनीकेकै बिचारि देख्यो मेरेभाय बीसोंबिस्वादामही मेरामहै३॥

तथा। दामही सों पितापर पुत्रहूको प्रेमहोत दाम-

हीसों पुत्रपर हेत खामो खामहै। दामहीसों गयोकाम हाथ फिरिआवतहै दामहीसों सुयशपसार्यो धामोधामहै॥ दामहीसों साहिब को सेवकहू आयमिलै दामहीसों रोग दोष मिटत जुखाम है। कहैकविहेमयहनीकेकै विचारि देखो मेरेभायेबीसोंबिस्वा दामहीमें रामहै ४॥

तथा। दामहीसों देवता बिमान बैठे सोहतहैं दामहीसों लोकपाल करैं घनेकाम हैं। दामहीसों पांडुसेतु यज्ञ और दीनेदान दामहीसों धर्मअर्थ काममोक्षधाम हैं॥ दामहीसों करत मनोरथको नानाभांति दामहीसों चित्र औ विचित्र बनेधामहैं। कहैकवि हेमयहनीकेकै विचारि देख्यो मेरेभायेबीसोंबिस्वा दामहीमेंरामहै५॥

तथा। दामहीते अश्व अरु हाथीपर बैठतहैं दामहीसों हियेसोहैं मोतिनके दामहैं। दामहीसों भूषण अमोल नानाभांतिनके निशिदिन मांगिबेको चाहत सवामहैं॥ दामहीसों दानदेत याचक औविप्रनको दामहीसोंदीयश बोलैंठामोठामहैं। कहैकविहेम यह नीकेकै विचारिदेख्यो मेरेभाये बीसों बिस्वा दामहीमेंरामहै६॥

तथा। दामहीसों बने रङ्ग शीश और हवा महल दाम हीसों ठौर ठौर मोतिनकी झामहै। दामहीसोंनृप होय बैठतहैं सभाबीच दामहीसों तेजबाढ्यो मानो जैसे कामहै॥ दामहीसोंनटुवा नृत्यकरतनानाभांति दामहीसोंगणिकाहू करतिसलामहै। कहैं कविहेम यहनीकेकै विचारि देख्यो मेरेभाये बीसोंबिस्वा दामहीमेंरामहै७॥

तथा। दामहीसों दलसाजि चढ़तलड़ाइनको दाम-

हीसों शत्रुगण डरततमामहैं। दामही सों शूरवीर करैं पुरुषारथको दामहीकी हिम्मतसोंकरैं कतलामहैं॥दाम-हीसों जीतको नगारादेतरणमांझ दामहीसों बकसीस करे बहुगामहैं। कहै कविहेम यह नीकेकै विचारिदेख्यो मेरे भाय बीसों विस्वा दामहीमें रामहैं ८॥

तथा। दामहीसों दखिनमें मन्दिरहू खूबबने किला चितौड़ रतनभोर एक ठामहैं। आगरा प्रयाग मंदराज कलकत्ता कोटाबूंदी औरजूनागढ़ चरनाटगामहैं॥ जल में बनीहै चारुसंगत अँबरसर जैपुर बड़ोदा जावो ग्वा-लियरनामहैं। कहै रससिन्धुयह नीकेकै विचारि देख्यो मेरे भाये बीसोंबिस्वा दामहीमेंरामहैं ९॥

तथा। दामही सों दिल्लीमांझ लाट एकु ऊंचीबनी दामही सिकंदरा इमामदौला ठामहैं। जलबीचबनेजग मन्दिर जग निवास काशीमें धुरेरादोय कालिजमेंकाम हैं॥ जाओ लखनऊचारु बंबई सोडीगभौन रौजाताज-बीबीको जूदेखो सरनामहैं। कहै रससिंधु यह नीके कै बिचारिदेखो मेरेभाये बीसोंबिस्वा दामहीमेंरामहैं १०॥

तथा। पैसेहीके तातमात पैसेहीसेबाहिनभ्रात पैसेहीके हितू जात पैसेकीलुगइयाहैं। पैसेसे आदरसनमानहोत पंचनमें पैसेसेचलीजाति पटपरमें नैयाहैं॥ पैसेहीसे जं-गलमें मन्दिर तय्यार होत पैसे बिन मुख काहू बात न पुछैयाहैं। सन्तकहैं साधो तुम मनमें विचार देखो दैया नें बनायो जैसो जगमें रुपैयाहैं ११॥

तथा। लावत्त अफीम कोई घोय बैठ मांगछाने गा-

लचा चुवावे कोई पियेजल चम्बूहै। कहै रससिंधु कोई सुरती औ चनामलै कोई जो धतूराबीज बांधे वहां तम्बू है॥ कोई पीवे मदक बीड़ी कोई चर्स गांजाहू कोई खड़ोपीवे हुक्का ताड़ीपेड़ लम्बूहै। कोईबछनागखायकोई हाथ सोमतले पीवतशराब कोई चहुंओरचम्बूहै १२॥

तथा। काको यह घोराहै जाके हमचाकरहैं चाकर तूकाके कह्यो जाको यहघोराहै। नाम क्यों न लेतकह्यो तुही क्यों न लेतअरेलिखदिखराव लिखेसूजजात पोरा है॥ एकदिना ना नाम लियो आधीरातरोटीमिलीसोऊ तो उद्धारभई देह भई शोराहै। लालाजूको नाम तो दिनाई ते सरस भैया चले क्यों न जाउ तुम्हैं और काम थोराहै १३॥

तथा। दैन कह्यो घोरा ताहि अबहीं तूमांगतहै अबहीं तो घोरा जब घोरीसों लगाइये। तबजायजनि है महीनादशबारहहमें यतन अनेकजगदीशजीजिवाइये॥ पाछे दूधप्यायपालि पोसिके खवायचाय मूहदै लगाम असवारीकोसिखाइये। आपुचढ़ि बेटाचढ़िातिनहूकेनाती चढ़ि तब जाय तोहिं कहूं धाइये तौ धाइये १४॥

तथा। दमरीमें सेहराबनायो मियांशीशहूपै दमरीमें फौजसजी नौबत निशानाकी। दमरीमें तेललैके चौंसठ चिराग जोरे दमरीमें आतश छोड़ाई आसमानाकी॥ दमरी दिवाय बहिनभानजी निहाल कीनी आकरे चथेला मांझ सौंजसजी खानाकी। खरचका कहर है

खोदाराखै लाज तेरो कोटराके सैयदकी शादी आध-आनाकी १५॥
तथा। आजुजो कहैं तो आठमास लोंनलागैठीक कालिजोकहैं तो माससोरह चलावहीं। पांचदिन कहैं पांचवरषबितायदेहिं पांच जो कहैं तोल पाचास पहुँचावहीं॥ भाषत प्रधानजोवै ताहूपैनत्यागैद्वारआपना लजात फेरवाहूकालजावहीं। ऐसेसत्यभाषीसरदार हैं देवैयाजहांकाहेको पवैया तहांजीवतलों पावहीं १६॥
स०। दामकीदालछेदामके चाउर घिउअंगुरीनलै दूरिदिखायो। टोनोसो नोनधरयो कछुआनि सबै तरकारीको नाम गनायो॥ बिप्र बुलाय परोहित को अपनी बिपती बहुभांति सुनायो। साहसी आज सराद्ध क्रियो सो भली बिधिसों पुरुखा फुसलायो १७॥
क०। कारीगर कोईकरामाततें बनाय ल्यायोलीनी दामथोरी जानि नई सुघरईहै। रायजू को रायजूरज़ाईदीन्हीराज़ी ह्वै कै शहर में ठौर ठौर शोहरत भईहै॥ बेनीकबि पायके अबाय रहे घरी दोय कहतबनै नकछू ऐसीगति ठईहै। सांसलेतउड़िगो उपरलाऔर भितरला दिनादूकी बातीहेतु रुई रहिगईहै १८॥
स०। सालभरेपर पथ्यालियो षटमास उपासाकियो फेरऐंठ्यो। माधोकहेंनितमइल छुड़ावतदांत तुरायदिये धोकैऐठ्यो॥ कोऊकहूंक जो देइखवाइतो कैकरडारत शोचमें पैठ्यो। मूड़ घुटाय औमूछमुड़ाय त्योंफस्त खुलायतुलाचढ़ि बैठ्यो १९॥

तथा। सूमके सुखौने में चिरैयानेचलाईचोंच आप उड़िगई प्रानवाहूको उड़ायके। करै हाय हाय फिरै गिरयो मुरझायवासे कछूना बिसाय वहनाका दाब्यो आयके॥ वाकेघर पर्यो शोरबालसबउठरोयोचिरीमार आयदोयचिरीलयायधायके।धानागिनलीनेऔमकईगि निलीनीसबमसूरगिनिलीनी तब प्रानपैठेआयके २०॥

तथा। भांड़नको भोज औकलावतन कोकरनजैसे बिखनको बेनुसे उरोजरस लेवेको। बेड़िनिके बिक्रम रामजनिन को जयचन्दचुगुलनको चतुर्भुजभारीमौज करिबे को॥ कहै औसेरी मसखरन को मगजैसे चलैं विपरीत धिक्कार ऐसेजीवेको। सूमनके रहतदुइबातन की तङ्गीएक ईश्वरके निमित्तऔकबीश्वरकेदेवेको २१॥

स०। साल छसातकी दालदरायके साहकह्यो यह लेहु नईहै। फूंकिदई लकरी बहुतेरिक सांझतेआधिक रातलईहै॥ खायलयो अकुलायकेकाचिहीचाकरचूल्ह निहार गईहै। खोय दियो मुजरा दरबार को दाल दधीच की हाड़भईहै २२॥

तथा। चीटि न चाटत मूसे न सूंघत बासते माछी न आवततेरे। आनिधरे जबतें घरमें तबतेरहै हैजापरोसिन घेरे॥ माटिहि में कछूस्वादमिलै इन्हें खायसो ढूँढ़त हर्रबहेरे। चौंकिपर्यो पितुलोकमें बापसो आपके देखि सराध केपेरे २३॥

तथा। आदिहीधोबीनधोबेकोलेत कि पानीतेबूड़ेमें पाऊं नपाऊं। जोररहे खुलिठौरही ठौर औ तापरखोपैं

चली हैं अगाऊं॥ लौकीकहैंहमजाच्यो दिवानजू और मैं जायके काहिसंताऊं। जोपै मयाकरि दीन्हींझगा तो सूचीतगा दोउ साथही पाऊं २४॥

क०। चूकसोंलगतचाखे लूकसोंलगावैकएठ ताप सरसावैहैं अपूरबअराम के। रसको न लेशचोपरेशाहै हमेशछांड़िदीनेसबदेश पकुसाने परेघामके॥ बुरेबद-सूरत बिलाने बदबोयदार बेनीकहैबकला बनायमानो चामके। कौड़ी के न कामके सुआयेबिनादामकेहैं नि-पटनिकामके ये आम दयारामके २५॥

तथा। छेदहैं हजारन हजारनलगीहैंपातीमैलेगंधे चीकटे सुचीथरा लपेटे हैं। कारीकारी हांड़ीफूटे पुरुवा पत्तौवा दोना आपनेसिराने बड़े यतन समेटे हैं॥ कहै अम्बादत्तकबि इनसों बचावै ईश बाढ़े बारभालू ऐसे धूरसो धुरेटेहैं। गाड़्योधन जमीमें बिछाय राखी तापै खाट तापै रहैलटे ऐसे सूमनके बेटेहैं २६॥

तथा। निमक को लोन कहैं छरीहू को लाठीकहैं लालाकहैं मुनशी जो मन हुलसाईतें। जगतको लोक कहैं कटिहू को लङ्ककहैं कबि अम्बादत्त लालीसुतकी लुगाईतें॥ अंकनकालम्बरत्यों सुन्दरललामभाषैलाल यशुदाकेकहैं कुंवर कन्हाईतें। लेइबेके लोभन ते बेटन को ललाकहैं देइबेके डरते ददा न कहैंभाईतें २७॥

स०। लोहेकि तेहर लोहेकि जेहर लोहेकिपायल हैं पगभारी। कौड़िनहार औ कौड़िन वेसर कौड़िनके गजरा अतिभारी॥ रूपकिबातकही न परैमनोलीलके

कुहसींचकै काढ़ी। ईटलिये पियकोमगदेखत भामि-
निभौननमें भूतसी ठाढ़ी २८॥

क०। सासुकेविलोके सिंहिनीसीजमुहाईलेइ ससुर
केदेखे बाघिनीसीमुंहबावती। ननँदके देखेनागिनीसी
फुफकारेबैठि देवरकेदेखे डाकिनीसीडरपावती॥ भनत
प्रभानमोंछैंजारतीपरोसिनकी खसमकेदेखे खांवखांव
करधावती। करकशा कसाइन कुबुद्धिनी कुलच्छनी ये
करमके फूटेघर ऐसीनारि आवती २९॥

तथा। दानबिन दरबि निदान ठहरान कौन ज्ञान
बिनयश अपयश करिकरिगे। कबिरायसन्तनि सुभाय
सुने सूमनिके धरम बिहूनेधन धराधरि धरिगे॥ काम
आयेकाहूकेनदामदुहू दीननके धामगाड़े गाड़सबगथ
गरिगरिगे। बोरिबोरि बिरद बड़ाई बेसहूर केते जोरि
जोरिकृपिन करोरि मरिमरिगे ३०॥

तथा। तेरीनारकाटूंतोयखोदिहीकै गाड़िआऊंतेरी
पिण्डतोरूं तोय अबहूं न चेतहै। भोरहीकोगयो अब
आयोहै कपूतभूततेरेकरों कतलातैंलगायोकहांहेतहै॥
तेरीपकोरी तोरूंखाऊं खाऊं करत आयो खायगीकहा
मोहिंपै बोयोकहां खेतहै। तेरीदिनकरूं तू सुनरेखुदाई
खुवार ऐसीकरनारगार बालकको देतहै ३१॥

तथा। एरीदारी रांड़तूगारी बिनबोलतनाहिंबड़ीही
खुवार तैंने कहापन लीनोहै। सुनरीखखाई औबेहाई
बेशरम लुच्ची आयगये पाहुने को पानीहून दीनोहै॥
बड़ीही चांडालीतूचुगली में चतुर बहुब्याहकाजबीच

तैंनेकस्योकाम हीनोहै। हौंतोअबहास्यो औ निहास्यो
तेरो नीचकर्म एरीसुनरांड़तैंने भांड़घरकीनोहै ३२॥
स०। बोक सों बोलत तेली सों डोलत कूर कभी
कपड़ा न धुवावै। कारी और पियरी कुछधोरीत्योंभू-
रीबुरी खोगीरसीडाढ़ीहलावै॥ लीखगिंडारजुवांमकड़ी
खटमल्ल अटल्लपड़े जुखुजावै। हैयमदूतसोंऊतकपूत
या भूतकेसंग सो रामछुड़ावै ३३॥
तथा। भातको मांड़करैं नहिंरांड़ औ सौगुनीसांभर
सागमेंडारै। भूलकै खांड़लै डारतदारमें हींगफुलायकै
खीरबघारै॥ चाकतें रोटीहू मोटीकरै और काचीहीराखै
के जारहींडारै। भूतसीभौनमें ठाढ़ीरहै परमेश्वर ऐसी
सों पालो न पारै ३४॥
क०। मोड़ो तो देख अपनोजूतिनसों पिट्यो आयो
वृथाभयो रिष्टपुष्ट होतकागरमहै। रांड़नके पास जाय
नितआय लड्यो करै छोटीबड़ी देखैनहींकरै ये करमहै॥
आवतहै घरमांझ देखै सबठौरनीच छिप्योकहाबापतेरो
भस्यो अधरम है। बोलैगो बोहोतआय मारूंगी मैंदो-
यलट्ठ नोचिलई दाढ़ीदौरिऐसी बेशरम है ३५॥
तथा। दौस्योएक लट्ठलेइ चल्योवहमारनको पकरैं
क्वांजाय कोई हांहां जो करतहै। छीनलई लाठी आय
भीरजुरीदेखनको मच्योवहांशोर खूब दोऊ भगरतहै॥
दोनोईउठाय जूतामारैं फटाफट्ट माथे मूंछ जो उखाड़ी
नारटारेना टरतहै। चोटी गहि लीनीहाथ बार तबनो-
चिलीने गाल काटखायो रांड़ लाजनमरत है ३६॥

स० । पांय विहीन के पांयपलोट्यो अकेले ह्वै जाइ घने वनरोयो । आरसी अंधके आगे धस्यो बहिरेसों मतोकरि उत्तरजोयो ॥ ऊसरमें बरस्योबहुबारि पषानके ऊपर पंकजवोयो । दासबृथा जिनसाहिबसूमकीसेवनि में अपने दिन खोयो ३७ ॥

क० । जैसे फलभरेगो विहङ्ग छांड़ि देत रूख सुवा देखि सुवाछोड़ै सेमरकीडारको । सुमनसुगंधबिनजैसे अलिछांड़िदेत मोतीनर छांड़िदेत जैसे आवदारको ॥ जैसेसूखेतालको कुरंगछांड़िदेतमग शिवदास चित्तफाटे छांड़िदेत यारको । जैसेचक्रवाक देशछांड़िदेत पावस में तैसे कवि छांड़िदेत ठाकुर लवारको ३८ ॥

स० । खायकेपान विदोरत ओठहैं बैठि सभामें बने अलबेला । धोतीकिनारीकीसारीसि ओढ़त पेटबढ़ाय कियेजसथैला ॥ वंशगुपाल बखानिकहैं सुनोभूपकहाये बनेफिरि छैला । सानकरैंवड़िसाहिबीकी अरुदानमेंदेत नाएकऊधेला ३९ ॥

क० । बारी औ खँगार नाऊ धीमर कुम्हार काछी खटिक दसौंधीये हजूरको सुहातहैं । कोल गोंड़ गूजर अहीरतेली नीचसबैपासके रहेते महाऊंचेभयेजातहैं ॥ बुधसेन राजनके निकट हमेशबसैं कूकर बिलार कहा गुण अधिकात हैं । दूरही गयन्द बांधे दूरिगुणवान ठाढ़े गजऔगुणीको कहामोल घटिजात हैं ४० ॥

तथा । गुनकी न पूछैकोऊ औगुनकीबातपूछैं कहा भयोदई कलियुगयों खरानोहै । पोथी औ पुरान ज्ञान

ठट्ठन में डारदेत चुगुल चवाइनको मान ठहरानो है ॥ कादर कहतजासों कछु कहिबेकि नाहिं जगतकी रीति देखि चुपमनमानोहै। खोलिदेखो हियो सबभांतिन सों भांति भाय गुणना हेरानो गुणगाहक हेरानो है ४१ ॥

तथा। देखत के नीके परिनाम बहुआदर के देखत भलाईसदा जीवमें जरेरहैं। भेद भेद पूछें मूछें टेवतन आवेलाज पापके समूहसिन्धु आंखिन अरेरहैं ॥ कादर कहतजे नटीनके तलाशबे को हाटबाटहू में दरबारमें खड़ेरहैं। निन्दाको जुनेमाजिन्हें चुगली अधार परस्वारथ मिटाइबेको खोजही परेरहैं ४२ ॥

तथा। सूरताई आंधरे में दृढ़ताई पाहन में नासिका चनानि मध्य नैनरही हाटमें। धर्मरहो पोथिनबड़ाईरही वृक्षन बंधेगपरा पातिन में पानीरह्यो घाटमें। यहकलिकालने बिहालकियो सबजगनायक सुकबि कैसीबनीहै कुठाटमें। रजरही पंथन रजाईरही शीतकाल राईरही राईते रनाईरही भाटमें ४३ ॥

तथा। भोजभनै एतेहोत हलके हरामजादे होसही नहींजनक हर्गिज हितैयेना। कलही कलंकीपीर कृपिन कुनामी काककपटी कुकर्मी क्रोधीकिंचित हितैयेना ॥ चूतिया चवाई चोर चंचल चलाक चित्त चोप चोपचख तिनतरफ चितैयेना।बदी बदराहीबदनामीबदकौलबद बेदरद बेदिल सों बातहू बतैयेना ४४ ॥

तथा। राजाराववराज बादशाह जेजहानजाने हुकुम नमान हुकुमनतरआनेहैं। शूरवीरसंगनमें सुघरप्रसंग-

नमें रीतिरस रङ्गनमें अतिही बखानेहैं ॥ श्यामलाल सुकवि जहानमें न तोसेभूपखोजिहारे पातपातआजके जमाने हैं। हममरदाने जानविरद बखाने परद्वारे चोपदार कहैं साहिब जनाने हैं ४५ ॥

तथा। माया के निशान जे निशान अपकीरति के जानत जहान कहूं कहूं उसरनसों। कुंजसीकुएही अंग ऐबीगुमराही गुनीदेखि अनखाय पगे पापके कुरनसों॥ हरजू सुकवि कहै बचन अमोलन के जाति कुरवातन बसाति असुरन सों। मांगत इनाम करतारपै पुकारि कहौं परैजनि काम ऐसे सूमससुरनसों ४६ ॥

तथा। शामिल में पीरमें शरीर में न भेदराखैं हिम्मति कपटको उघारे तौ उघरिजाय। ऐसो ठानठाने तो विनाहू यंत्रमंत्रकिये सांपकेजहरको उतारेतो उतरि जाय॥ ठाकुर कहत कछु कठिन न जानों अब हिम्मति कियेते कहौ कहा ना सुधरिजाय। चारिजने चारिहू दिशाते चारो कोन गहि मेरुको हलाय कै उखारैं तौ उखरि जाय ४७ ॥

तथा। वैरप्रीति करिवे की मनमें न राखैं शंकराजा एक देखिकै न छाती धक धाकरी। आपनी उमङ्ग की निवाहिवेकी चाहजिन्हैं एकसो दिखाततिन्हैंबाघ और बाकरी॥ ठाकुर कहत मैं विचार कै विचार देख्यो यहै मरदानन की टेकबात आकरी। गही तौन गही जौन छोड़ी तौन छोड़ि दई करी तौन करी बात नाकरी सो नाकरी ४८ ॥

स०। भूलिन दानकरैदमरी रणमें न कबूं किरबान चलाइस। पोतगिनायधरैं घरमें करैझूठी सो पांचनमें फ़ुरमाइस। बातैं बनायकैनोनीनई जिन याचककोजियरा भरमाइस। राम कहैं न रहै चिर चौकस चीकने ठाकुरकी ठकुराइस ४९॥

तथा। पीनसवारो प्रवीन मिलै तौ कहांलौंसुगन्धी सुगन्धसुंघावै। कायर कोपि चढ़ै रणमें तौ कहांलगि चारन चावचढ़ावै॥ जैसे गुणीकोमिलै निगुणीतोपुखी कहै क्यों करताहि रिझावै। जैसे नपुंसक नाहमिलैतो कहांलगिनारि शृंगार बनावै ५०॥

क०। कुपढ़न देतहैंकवित्तबाजेभांड़नको बाजेचुपचापसुनि नीबिसीअंचैरहैं। बाजेदसबीसगूढ़पूछिदशकूटनकोमूढ़सतसाखिन कोचरचामचैरहैं॥ बाजेअफसोसकरैं बाजेएहि रोषधरैं बाजे देभरोस दरबारमेंनचैरहैं। बाजेसूमसूका देतपाथरलगायछातावाजेसुमुसाहिब सुपारीसी अंचै रहैं ५१॥

तथा। ह्वैकैमहाराज हय हाथीपै चढ़ैतोकहाजोपै बाहुबल निज प्रजानि रखायोना। पढ़िपढ़ि पण्डित प्रवीणहुँ भयेतो कहा बिनयबिवेकयुत जोपै ज्ञानगायोना॥ अम्बुज कहत धनधनिक भयोतो कहा दानकरि जोपैनिजहाथ यशछायोना। गराजिगराजि घनघोरानि कियोतोकहा चातककेचोंचमेंजुरंचुनीर नायोना५२॥

तथा। सारसके नादनको बादना सुनतकहूंनाहकही बकबाद दादुरमहाकरै। श्रीपति सुकवि जहांओज

न्ा सरोजनकी फूलना फजूल जाहि चित्तदै चहाकरै ॥ चकनकी बानीकीविराजातिहै राजधानी काईसो कलित पानी हेरत हहाकरै। घोंघनके जालजामें नरईसेवार व्याल ऐसे पापी तालको मरालले कहाकरै ५३॥

तथा। खातहैं हराम दाम करत हराम काम धाम धाम तिनहींके अपयशछावैंगे। दोज़खमेंजैहैंतबकाटि काटि कीरा खैहैं खोपरीकोगूद कागटोंटनि उड़ावैंगे॥ कहैं करनेश अबघुरुसनितेबाजतजे रोज़ाओौ निवाज अन्तयम काढ़ि लावैंगे। कविनके मामिले में करैजौन खामीतौन निमक हरामी मरे कफ़न न पावैंगे ५४॥

तथा। चूकिजात जौहरी जवाहिरपरखजाने चूकि जात पण्डित पढ़ैया वेदचारीके। चूकिजात घोड़ेको चढ़ैया असवारपूरो चूकिजात बाजेरोजगार रेजगारी के॥ चूकिजात मेघमेघ राजनकी बातहूमें लेखोचूकि जात यालिखैयालेखधारीके। बानकिरबानको घलैया पूरोचूकिजात एकनहींचूकेहैं चुगुलचूतिमारीके५५॥

तथा। बावूदेतसैकरोंकरोरोंबादशाहदेत लाखौंदेत राजा राव हाथीघोड़ा सांड़िया। शाहूदेतसत्तरपचास जमींदारदेततीसदेतफ़ौजदारबीसदेतबांड़िया॥ चौदह देत चौधरीसवाईसातसूमदेत पांचदेतकानोगोयचारि देत डंड़िया। तीनदेततेलीसुतमोलीहमैंएकदेतअधम अधेलीदेत मूकादेतगँड़िया ५६॥

तथा। जामें दुअधेली चारपावलीदुअन्नीआठतामें पुनि आनसखी सोरहसमातहैं। बत्तिस अधन्नी जामें

चौंसठ पैसाहोत एकसौ अठाइस सुधेला गुनमानहैं॥ युग शतछप्पन छदाम तामें देखियत दमरी सुपांचशत बारह लखातहैं। कठिनसमैया कलिकालको कुटिल दैया सलग रुपैया भैयाकापै दियोजातहै ५७॥

तथा। पण्डितकाजेसीखे भागवतज्ञानगीताश्रोता हेतसीखेसारबेदनकोबांचिबो।कविनकेकाजेसीखेपिंगल पुराण छन्द दोहागाह चौपाई कवित्तन को सांचिबो॥ कलांवत काजे रागमांझी सबसीखलीने आपमुखगावैं रागरागिनी रांचिबो। देबेकाज महासूम इतने कसब जाने कसर रहीहै इकताताथेई नाचिबो ५८॥

तथा। दोहरा कवित्तबैतगज़ल सुनावैकोय छन्दहू सुनावै ताहिदेतनापसमहै। पाहुनोजोश्रावैताहिपानी-हून देत सब जानत जहान यह कुलकीरसमहै॥ मो-हर रुपैया कहो कौड़ीको चलावैकौन बाहरनजानपावै भौनकी भसमहै। लेइबे को होयतो हज़ारोंपरहाथउड़ें बाज़ेबाजे लोगनको देबेकी कसमहै ५९॥

तथा। कबिकोनमाने औन ज्ञानगुरुलोगनको हरि कीन भक्तिहै नदाननभिखारीमें। मानेअहमेवहमआय नरदेवमेरीकरें सबसेव ऐसेभूलेडोलें भारीमें॥ कहैयुग-राजमहाधर्मकौन काजकछू बैठके समाज बातकहै ऐंड़-दारीमें। राजी न सिपाह औरजंगकीउमाहजहां यशकी न चाह ऐसी थूकसरदारीमें ६०॥

तथा। चन्द्रमा पै दावा जिमि करत चकोरगण घनन्तपै दावाकै मयूर हरषात हैं। भान पर दावाकर

विकसतकंजपुंज स्वातीबुन्ददावाकरचातकचचातहै ॥ सुकविनिहाल जैसे करीके कपोलनपै अलिन अवलि करिनितमड़रात है । ऐसेमहाराजनपैदावा कबिराजन को धूतनके द्वारे कहूं मूतन न जातहैं ६१ ॥

तथा । शाहभये सूमड़ा सुबादशाह हीनहद खग्गे खगरेटन दुशाला बेंचखाईहै । भोले भये भूपतिकनौड़े धनीवन्त सब मूरख महन्य अन्ध देत ना दिखाईहै ॥ कायथ कपूत भये कूर रजपूत धूतबनियां बरूथपेखि पुंज पछिताईहै । काकेढिग जाई काहि कबित सुनाई भाई अब कविताई रहीफजिहतिताई है ६२ ॥

तथा । ऐसे ऐसेदानी पूरे अकटभे कलिबीच देवेंना दिवावें आपपायाकरें नोसहें । सुनेनासुनावें दुखदीन-ताकी बात कछू निपटअजानकैके बैठलखमोसहें ॥ क-हत न चीज चीजसेतसेतएकसार देखेंनादिखावेंआप आंखें नाहिं गोसहें । सैलनको चलें तबगदहीते शोर होत बचो बचो हटो हटो फोकी पोस पोस हैं ६३ ॥

तथा । पण्डितकबिन्दनकीबूझहै नकूरनके काथिक कलांवत फिरततान गानेको । कहत उदेश देखिसमर सपूतनको घोड़ेकेचढैयनको चनानाचबानेको ॥ आदर सों लेत ताहि जौन वाहियातबकै छोड़िकै पुराण वेद धरमके बानेको । जुरिकेगवांरगट्टा बैठचवहट्टा देतआ-ल्हाके गवैयाको रुपैया रोज़ खानेको ६४ ॥

स० । चरचाकुटनीनकीनीकीलगैभँडुआनकीखातिर ताजी रहैं । रँडियानकी लागैं भली बतियां गँडिया-

नकीत्यों शिरताजी रहैं ॥ नहिंजातहै बातगुनीकी सुनी कविकोविदते इतराजीरहैं । निशिवासरपास जोपाजी रहैं तौ महीप या कालके राज़ीरहैं ६५ ॥

क०। दानीकोउनाहिंनेगुलाबदानी पीकदानी गोंद-दानी घनी शोभा इनहींमेंलहे हैं । मानतगुणीकोगुणही में प्रकटत देखोयातेगुणीजनमनसावधानीगहेहैं ॥ हय-दान हेमदानगजदानभूमिदानसुकविसुनाये औपुराण-नमेंकहेहैं। अबतो क़लमदान जुजदान जामदान खान-दान पानदान कहिबेको रहे हैं ६६ ॥

तथा। पौरके किवांर देत घरे सबै गारिदेत साधुन को दोष देत प्रीति ना चहतहैं । मांगने को ज्वाब देत बात कहेरोयदेत लेत देत भाज देत ऐसे निबहत हैं ॥ बागेहूके बंददेत बारनकी गांठदेत परदनकीकाछदेत काममें रहतहैं । एते पै सबैईकहैं लाला कछूदेतनाहीं लालाजू तो आठोयाम देतई रहत हैं ६७ ॥

तथा। माने सनमाने तेई माने सनमाने सनमाने सनमाने सनमान पाइयतुहै । कहैं कबि दूलह अजाने अपमाने अपमान सों सदन तिनहीं को छाइयतु है ॥ जानतहैं जेऊतेऊ जातहैं बिरानेद्वार जानबूझ भूलेतिन को सुनाइयतुहै । काम बशपरे कोऊगहत गरूरतोवा आपनी जरूर जाजरूर जाइयतुहै ६८ ॥

तथा। स्यारनके शादी बकवादी श्वान सिकरनगी धनकी गादीबैठि देखकोकटतहैं । होड़ाहोड़ी हारबोटी बोटी बांटलेहैं हम ऐसेकहे चीलहनके मण्डफ़ मढ़तहैं ॥

गाड़ेते परत शोक साड़ापरे पांयनमें सभामें धसत दु-र्गन्धसों मढ़त हैं । जीवजन्तु जोर जहांतहांकरें शोर सब साहिबके घोड़ा आज बाहिर कढ़त हैं ६९ ॥

तथा । काकनको भाग अनुराग सबगीधनके चाहि अंग अंगनमेंस्यारनसतायोहै । पूरोक्रमपुंजसोंकलेवर कलित जाको जुरि दश पांचयोधा जोमसोंउठायोहै ॥ कहैं सिथिलेशलागे अनुजभुशुंडिकैसो लोहूको न लेश वेश विधिना बनायोहै । दीरघ दिननको सुज़ाहिर दि-शान मांझ ऐसो बर बाज कबिराजको बतायोहै ७० ॥

तथा । महामिहीं जामापाय पायजामा गुलबदनका चीरा चारु बांधे तुर्रजरीके निसारेहैं । तकिया लगाये बैठे हुक्का पेंचवानापियैं खिदमतगुजारिनते करतइशारे हैं ॥ बेनीकबि कहैंआहिऊहिमें प्रवीणबड़ेधरमनचीन्हें लाजसरसाविसारेहैं । खायबेसखाने आयबैठेखसखाने ऐसे लाखहूं जनाने लखनऊमें निहारे हैं ७१ ॥

तथा । दातावरहोती तौक़दरतेरीजानीजाती आई है भलेघर बधाई बजवावरी । खानेतहखाननमें आनिके बसेरोलेहु होहु न उदास चितचौगुनो बढ़ावरी ॥ खैहों ना खवैहों सरिजैहों तौ सिखायजैहों यहिपूतनातिनको आपनों सुभावरी । दमरी न देहों कवौंजानेमें भिखारि-नको सूम कहैं सम्पति सों बैठी गीतगावरी ७२ ॥

तथा । अगन बचाये शुभचारो गणनाये अरुउक्त उपजायकै बिसारो नाम हरिका । लोभके अजानमें स-चान सबमूलिगये कीवे पर ऐसइ अधम ऐसेअरिका ॥

कहैं कवि लोग हमदानकी कहांलौं कहौं मांगेसेनदियो जाय जासों छेक खरिका। सूमके कवित्वकरि मनमेंग-लानि होत परे पछिताय ओछिनारिकैसोलरिका ७३॥

तथा। दम्भीदगाबाजनकीबाढ़ीहैअधिकथापज्ञान ध्यानधारिनकी बातबेप्रमानाहै। पूंछत नकोऊ कबिको-विदप्रबीणनको नकलीहरामिनको हाज़िरखज़ानाहै॥ ठाकुर कहत कलिकालकोप्रभावदेखो झूंठी बातकहि कहि जनम सिरानाहै। बड़ेबड़े सूबा तेऊ जात पाप डूबायह देखि जिये ऊबाकीअजूबा कारखानाहै ७४॥

तथा। राजनकी नीतिगई मीतनकीप्रीतिगई नारि नप्रतीतिगई जार जिय भायोहै। शिष्यनकोभावगयो पंचनकोन्यावगयो सांचकोप्रभावगयो झूंठहि सोहायो है॥ मेघनकीवृष्टिगई भूमिसोतौनष्टभई सृष्टिपैसकल बिपरीत दरशायोहै। कीजियेसहाय हे कृपाकर गो-बिन्दलाल कठिनकराल कलिकालबनिआयोहै ७५॥

स०। सूरजके रथलागेरहो याके आगेभयोकईबेर कन्हैया। लोमशके लरिकाईकेखेलकोभूलिगयोजगको उपजैया॥ ऐसो तुरंग मँगायके भूपति दानकोकादोद-रिद्रको छैया। झुण्डन काकलगे फिरैं संग मनोयहका-कभुशुंडि के भैया ७६॥

क०। वेदकेपढ़ैयाको अढ़ैयाकोनयोगलागै आल्हा के गवैयाको रुपैया रोज खानो है। होती क्यों न होती गरे पोथी कुल नारिन को हारवार नारिन को बसन खजानोहै॥ माखनकहतगुरुपैसाकोपसेरीभर पैसहीको

पैसाभर माहुर विकानोहै । यारो गुणमानो और गुण कोनदोष देहु गुणन हेरानो गुणगाहकहेरानोहै ७७॥

तथा । धर्मकेन कर्मके कुकर्मिनके मूलमूढ़महामति मन्दरहैं विषमसमीरके । हेमकहैंहितुकेनपितुके नमित्र के चित्तकेमलीनहैं अधीरदलगीरके ॥ वानीवेदवानके न कलमा कुरानके न रामरहिमानके न अयशोगँभीर के । विप्रके न ईशके न पण्डितकवीशके सो बाजेबाजे वेसहूर गुरूके न पीरके ७८ ॥

तथा । कृपणकंजूस वड़े गुणके मंजूसजेर देहै कन नूस राखे नियत भिखारीमें । दानको न जाने सनमान कोनआनेगुणवानको नमानेरहैंशिष्णवरदारीमें॥ ठाकुरकहत भलीवुरी कोनशोचेनेकरातदिन सदाचितराखे मारामारीमें। राजीना सिपाह औनजंगकीउमाहाजिन्हें यशकी न चाह ऐसीथूकसरदारीमें ७९ ॥

तथा । शौकशेरमारिवेको सभामें सुनावैंसदा स्यारहू न मार्यो कहूं झारोकीझरीन को । हाथमें न जाके जोरसेरके उठायवेको जिह्वाते उठायो करें पुंज सिखरीन को ॥ ग्वाल कवि कहैं श्री युधिष्ठिर सोसांचोवैन देतसबहीको दमयाम औ घरीनको । वाजेवाजे भूप ऐसे वेशरम होय जात राखलेत हाथी चारो डारत चिरीनको ८० ॥

तथा । पन्नाके पंडोरगढ़ झन्नाके झवैयाझारि झारूदार झांसीके भवैया भानपुरके । कहैंकविकुन्दनकमाऊंके कुम्हार भांड़ दाउदके दरजी दमामी दानीपुरके ॥

तेली तिलगानकेतँबोली तेजगढ़वाले भावजकेभांगड़ सोनार सानपुरके। येते मिलि मारैंजूती चुगुलचवाई शीश कालपी के कूंजड़े कसाई कानपुरके ८१ ॥

बिबिधभांतिके कवित्व व सवैया १८ ॥

यह कवित्वयादि फ़ारसीकी तरहदूसरीतरफ़ सेभीपढ़ाजाये तो भी एक कवित्वहोगा ॥

स० । नचमों दुखके नवदेव दयाल वसौनतयाम जहौनकलौ। नचरोष सुचेतनतो बिछुरेकबहूंकलवाहि परैन पलौ॥ नचमों बिनमानित बानितिहींनितसोबस चार बिचार भलौ । नचलौ चितचैन नहींचिरुचोप रसारसगैल लला न हलौ १ ॥

क० । बातनके ब्योंतमें नकीजियेकतरब्योंत दरज मिलायके मिटाय देहौंबिरहैं । सुधीहौसुधेवञ्चौरेवयूकी नजानूं कछू तैसेही बचन मोसोंकहोकिनभारिहैं ॥ अब कीन जानों रीति नई ब्रजचलीकैसे नैननकीसैननसों फारिडारो जिरहै। अरज हमारीमान हरि सों विचार कहा मिलो मनमोहन सों खोलि दिल गिर है २॥

गूढ़अर्थवाले कवित्व व सवैया १९ ॥

क० । ऊंचीसतखनीपै अटारी राधारानीजूकी तामें ठौरठौर सीसेजरेहैं खरेनये । सांझकी समयमें सूर पश्चिम दिशामें लुग्यो प्राची मुंहचूम्योचन्दचाहिचित कोदये॥ दुहूंओर दोउनकोपस्योप्रतिबिम्बकांच भीति

में त्रिलोकें सब अचरजसो लये। देखहु बिचित्र या
चरित्रकैसोदीखपरैवीसरविदशशशिसंगहीउदैभये१ ॥
तथा। मोरके मुकुटकीहू तैसे पीतपटकीहूछूटी भई
लटलीहू छविनै सवैजये । याते राज राजही शृंगार
मेंसराह्योजाय आजकीविचित्रता सुदेखोचितकोदये॥
पांचरंग मणिको पचास दानेहारगुह्यो कंठलह्योहरिके
हजारन चितैगये । सातगुरुआठबुध पांचराहू जाने
परैं वीसरवि दशशशिसङ्गही उदैभये २॥
तथा। मानवती मन्दोदरी ओढ़ेपट सूतीहुती रैनि
माहिंरावण मनाइवे तहांगये। सकलभुजामें रत्नबाजू
को बनाये सब शीशपै किरीट चमकाये मुकुतामये॥
चादर को खैंचत चमकि चपलासी उठी पतिकेशृंगार
माहिं दोऊ नैन को दये। बोली सेजके समीप कैसेकै
घटा में यह वीसरवि दशशशि सङ्गहीउदैभये ३॥
तथा। आजुहौंगईही वृषभानजूकेभौनमाहिं राधा
पलिकापैबैठी करआरसीलये । दत्तकविसोहैं कंठमो-
तिनकीमाल जुगकुंडन बेंदीभाल छविसों छये॥ पांच
पांच हीरनते लसी दुहूं ओर पाटी ताते दूने रतनन
वेनी छोरलौंदिये। शीश सारीटरैं दीसै भूषण निशामें
मानो वीसरविदशशशि संगहीउदैभये ४॥
तथा। आरसी सोहाई आजु सुखमा अँगारसी या
राधिका के करके अँगूठेमेंसखीअये। बीचमाहिंशीशी
छविशीशो शुभदीसो परै पांचते सूदनेरत्नघेरिचहुँघा
दये॥ चोखी चटकीली चितचोरनीचमकदारदेखतही

मोहिजैहैं मोहन तहांगये। ऐसी दीसपरै जगदीश की सों मानो बिस्वेबीस रवि दशशशि संगहींउदैभये ५॥

तथा। बैठ्यो यज्ञ करिबेको रावणनिकुम्भिला में अभिचार अग्निमाहिं होमेपशुहूहये। जानिकैविभीषणतें वानर पठायेराम हनूमान अंगदादि किलाकि तहां गये॥ दशशीशको सुअवरोध अवराध्यो तिन शत्रुहिं विलोकि चहुँओर घेरिकेठये। तिनहींकी संख्याको बतैबोयह जानोकीश बीसरबिदशशशि संगहीं उदैभये ६॥

तथा। भक्तहे गणेशकेते भूखरहे चौथितिथि कछुरो न गयेक्षुधापीड़ामें जबैछये। सिद्धिबुद्धिके समेत निज नाथ झांकीचही इन्द्रको उदय चह्योयाहीरंग मेंरहे॥ दासन झुण्डको बिलोकि बक्रतुण्ड दुखीतिन्हें सुखदेनहेतु उभयप्रियालये। ताहिसमयकूपालदत्त जासु चन्द्रभाल बीसरबि दशशशि संगही उदैभये ७॥

स०। क्यों लग्योचन्द बिधुन्तुद आयके क्यों अरबिन्दनभृङ्ग छिपायो। क्योंभये श्वेत अश्वेत मरालावियोगिनी क्योंघिसि चन्दन लायो॥ क्योंमृगराज मृगीन कियो बश क्यों गजराज गजी शिरनायो। सांची कहौ पियभेद लहौ रजनीपतिके गृह क्यों रबि आयो ८॥

तथा। बाघ बछानको गाय ज्यवांवतबाघिनपै सुरभीसुत चोखैं। न्योरनको सहरावत सांप अहारन देव उन्हैंप्रतिपोखैं॥ व्याधिकथानहिंमैनमुनी अवलोकवसे जहँ कुंडल ओखैं। नैननरागमयी पिककेमरु बिरहीबैन शरीरके घोखैं ९॥

तथा। गंग नहीं मुक्ता भरी मांगहै चन्द्र नहीं यह उद्योत भालहै। नीलनहीं मखतूल की पुञ्जहै शेषनहीं शिरवेनीविशालहै॥ विभूति नहीं मलयागिरि शोभित विजयाहैं नहीं हरि विरह वेहालहै। येरेमनोज सँभारि के मारियो ईशनहीं यहकोमल बालहै १०॥

तथा। सरितापतिकी तनयापतिबोलत सात औ-पांच कछूनहिं कीजे। पंकज पीतम को ऋतु बीतत मा-ननी शैल सुता सुत कीजै॥ हेहरहार अहार सुतबन्धन तारन केर ससावत जीजे। तारनईश बिमान थके नंद-रामकहैं उठवाम चलीजे ११॥

तथा। चन्द्र नहीं विषकन्दहै केशव राहु यही गुण लीलि न लीन्हों। कुम्भज पावन जानि अपावन भारि पियो पचि जान न दीन्हों॥ यासोंसुधाधर शेष बिषा-धर नामधर्योविधिहै बुधिहीनो। शूरसुभायकहाकहिये जेहिपापीलै पाप वराबर कीन्हो १२॥

तथा। जोत्रयमूरतिकेसुतकोसुत तासुतकोसुतलेहुबिचा री। तासुनेवासकेनामकोजोसुततासुत वाहनकोभवका री॥ताअरिपुरकेद्वारवसैयकभूसुर तेजप्रतापहैभारी। ता सुअहारबराबरदःखभयोमोहिंउद्धवबिनगिरिधारी १३

तथा। जीवहैंद्वै रसना मुखएकहै तीनहैं नैनते रूप विशेखैं। तीनितिया विधिकैरति एकहै ताकेसपूतहैंशेष विशेखैं॥ होय न कूटकहैं कविभञ्जन चातुर होय हिये महँलेखैं। बांझको पूतहै आनिकि आंखि अमावसके दिन पूर्णिमा देखैं १४॥

क०। प्रथम पचीसहूके बैरको न्यवारति हौं छठयें अठारह और पन्द्रहच्चढ़ायकै। चौबिस बतीसऔ सताइससतावतिहैं तातेक्षितिसुतसों उठतअकुलायकै॥ भनै रामलाल प्यारी प्यारोको सँदेशो लिखि प्यारे मुखबैन कह्यो पथिक बुझायकै। जीवत जो चाहैंकान्ह तुरतमों मिलैंआनि नातोनाक जातीहौं भुवनऋतुखायकै १५॥

तथा। अजब पखेरू एक हाड़है न चाम जाके आप उड़ि जाय परपंखन देखातहैं। ताके बार बीनिबीनिबसन बनावैं लोग ओढ़ितनुमेलैं दिव्यरोजहीदेखातहैं॥ जपतप योगवारे षटरस भोगवारेलालचन्द्र ओढ़ि ओढ़ि हिये हरषातहैं। सुरमुनि ईशनको पण्डित कवीशनको मत सबकोहै यहैवाको मांसखातहैं १६॥

स०। मंगलहोत कहूं शिवराज कहोक्यहिके दुख होत बिशेखो। कौन सभामहँ बैठि न सोहत को नहिं जानत चित्तपरेखो॥ कौननिशा शशिकीनउदोतभो का लखिकै बिरहीदुखपेखो। बांझको पूत बिना अँखियान कुहू निशिमेंशशि पूरण देखो १७॥

तथा। सिंहके सिंहके अंशमें जोगुरुहोहिं तो भूल्यहु व्याह न कीजै। मेषके सूरज होहिं तो कीजिये भाषत पण्डित सो सुनिलीजै॥ गोदावरी अरु गंगके बीच में मेषहूके रबिमें न कहीजै। पंडित एककहै गुण मंडितजी में बिचारिजनो मतिदीजै १८॥

तथा। चन्द्रते श्यामकलंकते उज्ज्वलहैनिशि चन्द्रपै चन्द्रनहोई। वर्षिसुधा सबको सुखदेतरहै जो महेश के

मस्तक सोई ॥ है विपरीत नहीं विपरीत सो वेदपुराण कहैसबकोई। मासके मध्यमें हेमगोपाल बन्दोनर ताहि कहै कविजोई १९ ॥

तथा। कञ्जमरै रविके दरशे कबहूं न मरै वहचन्द्र दिखाये।मीनमरैजलकेपरशेकबहूंनमरैवहपावकपाये॥ नारिमरै पियके दरशे कबहू न मरै परदेशसुनाये। संत जो पापकरैं तोतरैं कबहू न तरैं हरिके गुणगाये २० ॥

क०। सासुमेरी राधिका कि सौति सोनजानै कछू पांचे ज्ञानइन्द्रिन सों ज्ञानना बताई है । देवकीनँदन कहै सुनौहो विहारीलाल पथिक तिहारे भागहीतेरैनि आईहै॥तीनिमेरे दूतीते प्रवीनी परमेश्वरते रचीविधि एकैकरि हमैं आठिनाईहै। एक सूरदासदासी एक जगन्नाथदासी एक भृगुदासदासी ताकी एक आईहै २१॥

तथा। पौढ़ी परयंकपर कोमल कनकलता लगाके कनकगिरि वनक विशालहै। कहैकवि दूलह सुअंगन सहिततामें तरुण तमालछवि छलकत जालहै॥ कमल के नालपर राजत युगल रंभारंभापै कमलयुग शोभित सनालहै। कमलपै कुरविन्द कुरविन्दपर चन्द्र चन्द्रपर चढेचारु बोलत मरालहै २२ ॥

दोअर्थी कवित्व व सवैया २० ॥

जेवर ॥

क०। लाई वीर तो हित विशेषि वरबाक जौनद्विज बलदेव लेलै हरष हमेलेहैं। छले मन भावैंतौ लखावौं सब सोन साज शोभितसमाज मोपै कानफूलझेलहैं॥

बेसरि छनी औ पायजेब सुखदेती अति जानत बनै बिशद जोसनकी रेलेहैं। लटकनलेरीफिर बाकी पहुंचीनकस बाला बेस बारी जानि मुंदरी पछेलेहैं १॥

भोजन॥

क०। केती बीरहागे औटि लखिये कढ़ी ललित करत बराबरी सो शशि छबि धोईमें। द्विज बलदेवतो बिलोक्यो कहिबेकी कहा भांते भावसानी जगजानी सो कहोईमें॥ पूरी तोरईते कछु शक्कर रहत ताहिखोवे काज राख्यो करि नीकी भांति लोईमें। चलिये चतुर लाल परस समय बिचारि जोई जोई चाहौ सोई सोई है रसोई में २॥

पक्षी॥

क०। कस नईकीरति बिशेष द्विजबलदेव श्यामा चटकीली कुही काबिधि जकतहै। मैनाकरबोलैहै कबूतरी अटासोबानि गीधि मैनजानीकससिकरै सकतहै॥ लालतोचकोरै मोरमानत्त कहोना कछू कैसी करबानक तिलोरीतें तकतहै। कालीमातिसरस पपीहा करिजात बेसराकी बाज आवै तूतियाका बकतहै ३॥

तथा। तूतीहै अमोल और कोकिला सोहाय बैन लखत तबीर करि श्यामहि सिखाईमें। होतही तयार आई मन्दिर तिहारे आज मैना फिरिजानौं अतिहित सों पठाई मैं॥ आछे पर पक्षी है अनूप रूप पेखियत भनत अनन्द शोभा दृगन बसाईमें। देखिये देवानी

गति लालकी न जानीअस वखत भुलानी तौ चकोरहै
चेताईमें ४॥

तथा। मांगसेंतिलोरी तू बटेर मुनिआतौ लालती
तरके जायवेको अति अकुलातहै। मोर कहा मानते
कबूतरको दीन्हो बाल क्षेमकरीराम तूतिया भाग सर
सातहै॥ कहैं नन्दराम मैना बकत पतैना रहै अबले
कुहीहै बाजआइनालखातहै। आपही चकोरहैसोवाके
हाल सारसहै सावनसों गीधहै महोका दरशातहै५।

ग्राम॥

क०। कानपुर कौन राति मोर गति छोड़ि पाल
मालवाकी वर उरवासी नर धारोहै। काबिल दिलीमें
गुण आगरे विचारि देखो सूरति बिलोको मैनपुरीसु
भारोहै॥ सौर कहि ध्वाई शक्तिपुरमें न कीजे धामरू
यशवन्त सोम धन्य धारोहै। सामकेतरानि करो पटन
उदयपुर जो विजयपुर कीन्हो भाग नगर हमारोहै६

तथा। तोहींसों बनारस विहार करा जौनपुर ते
रोई सोहाग पुर पुरवा बखानिये। अवधि तिहारीको
विजयपुर आवत है तेरोपरनामैंजोतिपुरअनुमानिये
आवै विजनौर वातैंभावैतो दिलीकेबीच आगरेगुणि
धनसिंह जवाजानिये। काशमीर डोलैवर उरपटना
खोलैमानिये सलोनो मतिमैनपुर ठानिये ७॥

वस्त्र॥

क०। नीकीजोन लागै तौ लखाऊं अतलसआ
तूळ तजि मौन मारकीन इम गायोहै। खासेचारखा

चमलेट डोरिया सो लाय बलदेव बिशद बिचार ठहरायोहै ॥ गाढ़ाहैतराखो तौ गवनहू दरेस होत चिकन को टारि सुखजारी मन भायोहै । नैनसुखलीजैतनुजेब लखिसारीलाल बिशदकिनारीगुलबदनसोहायोहै ८॥

वृक्ष ॥

क० । पीउपर रिझायबेको सहज न जानै बाल अमलीन जानैतैं अनारनरसालहै । बेलमातिकीजेशिर साबित तिहारे चूक बिसमैन पैहैं अवररातिसे बिहाल है ॥ कहैं नन्दराम तूतौ सनकी रहत वासों मोसन बकैना नींबी कसत न हालहै । रूस रूस तूनकै साखू व कमरखबेर दूबतिन कासनीय चन्दन तमालहै ९ ॥

तथा । अमिली रहति काहे बरसों हमेश आली पीपर द्वारगहे जीत नेम तेरोरी । साजनो बताऊंसाख जाकी आमनामा घनी यतेपरकरत करारजोघनेरोरी ॥ चोखेकहैं बार बार जामुनि नपावैपार महुवासोंरिसात आली ऊमर तरुहेरोरी । येरीकचनार तूतौ बार बार कहरकरै माहुली लगाय जात आवरी बहेरोरी १० ॥

तथा । चतुर बिहारीपै मिलन आई बाला साथ मांगतहै आजु कछूहमपैदेवाइये । गोदलेहुफूलदेहुनीके पहिराइमोती पाननकी पातरीहुताशनलैआइये ॥ ऊंचे से अवासकै झरोखे चढ़ि बैठिये जु सेज श्यामचलिये सुरति पति धाइये । ग्वाल समुझायबेको उत्तरजोदीन्हेंएक उकति विशेष भांति चारीनहीं पाइये ११ ॥

तथा । बासीबर उरके उदासी भये मोरगते पाली

नति अन्तहींप्रीतमपियारमें। परमाण लीजेमोसुहाग-पुरदेचीदासकाबिलकेदिल्लीहोगुणागरेबिचारमें॥बिजै-पुरकीन्हे भाग नागर हमारेआज कशमीर तिलकदै ललित लिलारमें। असनीके लागे लाल आँधिमेंमिले हैं मोहिं पटना समात उरउमँगि बिहारमें १२॥

समस्याके कवित्व व सवैया २१॥

आंगने खेलतनन्दको लाला॥

स०। चौतनी सूहा सजी शिरपै सखिपीरो झगा उर मोतिनमाला। लाल लटू चकई चटकीली लियेकर बोलत बोलरसाला॥ धावत गावतमोदबढ़ावतदत्तजू घेरिरहींब्रजबाला। होंअबहीं लखिआवतहों नँद आंगने खेलतनन्दको लाला १॥

तथा। माखन चोरिबे कृष्णगये घरमें लखिलीनो गुवालकीबाला। आपत्यों बाहर ह्वै चुपचाप लगाय चली सुदुवारमें ताला॥ आजु यशोदहिल्यायदिखाय हों दाउँभलो परिगो यहिकाला। योंकहिकै तहँ जाय लख्यो नँद आंगने खेलत नंदको लाला २॥

तथा। प्राणचढ़ायकै योगकरो कहा काहे करो ब्रत पुंज बिशाला। देह तपाय तपाय पचागिन काहे सहो घनबैठिकसाला॥ ब्रह्मबिचारत जो हियमें सोइ रूप धरे नरको यहि काला। जाय लखो किनवा नँदरायके आंगने खेलत नंदको लाला ३॥

तथा। लिखिकै शुभचित्रहिल्यायोचितेरोबिलोकि

रहींत्यहिको ब्रजबाला। निज आंगुरी दैदै बतावतहैं नँदभवनके भीतरको सबहाला॥ यहबैठीमथै दधिको यशुदा यहगाय दुहावतहै ब्रजबाला। यहदत्तअहैबल बीर खड़े यह आंगने खेलत नन्दकोलाला ४॥

तथा। जाहिंजितै तित प्यारोलखैं हमैंनाहींवियोग अहैकिहुँकाला। ऊधवकृष्णबसैंचितमें नितनैननआगे रहैं सबकाला॥ भाषहिंकृष्णसखा बनमाहिं बिलोकहिं बेनु बजावैं गोपाला। नन्दके धाममेंजाहिं जबै लखैं आंगने खेलत नन्दको लाला ५॥

तथा। भाषती हैं यशुदा की सखी सह्यो जाय न कृष्ण वियोग कसाला। ऊधोजू कैसी समय यह आय भयेब्रजब्याकुल गोप गुवाला॥ द्योस भले कितधौं वै गये करिकै हमश्यामशृँगार रसाला। लेतही नैननके सुखको लखि आंगने खेलत नन्दको लाला ६॥

तथा। छायव मण्डल को दिग मण्डल धूरितेपूरि दई त्यहि काला। लैगो अकाशमें ज्यों हरिको त्योंतृ-णावरतै पटक्यो है गोपाला॥ खोजमच्यो इतकान्हर को सबै ढूँढैं गलीन गलीन गुवाला। देखोअबैयागयो कितधौं हुताआंगने खेलत नन्द को लाला ७॥

तथा। धूरि रमैं बिलसैं सब अंग मचावत जंगरहैं तिहुँ काला। छीनतहैं लटवा करते झकझोरिकै काहू कि तोरत्त माला॥ फेंट गहैं विरुझाने रहैं घर जाने न देतहैं एको गुवाला। दत्तजू यों बहुभायन ते नँद आं-गने खेलत नन्द को लाला ८॥

छपै चन्द्रमा करै प्रकास ॥

क०। कानन में मोतिनके झूमकासु झूमैंजामेंनथ में अकथ मुकतानकी बन्यो बिकास। बनीमाहिं हीरा जग मग करि रहे ऐसी रानी राधिका को रह्यो आनन किये उजास ॥ तापै नीली सारीको सुघूंघुट फरफरात वायुते यों दत्तदीख्यो तासमयमेंरूपखास। मेघमण्डलीते जैसे तारामण्डलीसमेत अम्बर के माहिं छपैच-न्द्रमा करैप्रकास ९ ॥

तथा। कोयलियाकूकिकै सुकरति करेजेघाउ काम पर्यो पीछे बाधा देतुअहे ज्यों पिचास। दक्षिणकीपौन डाढ़े देहको ततक्षणही हूलसीकरति हिये फूलनहूंकी सुबास ॥ दत्तपीयबिनादिनरैनिअकुलाईरहों औधिलौं सखीरीकैसे बचिबेकीकरोंआस। मेरेप्राणलेइबेकोबिष कीकिरनिलियेएरीयाहुनाहिंछपैचन्द्रमाकरैप्रकास १०॥

तथा। कालिन्दी के कूलपै तमालन की कुंजमाहिं कदमके वृक्षमें हिंडोरा को बन्योअवास। दत्तजुदुहूंघा वेसरेशमकीडोरैंलगीं रतन जराऊ चौकीझालरैंबनीहैं तासु ॥ गादीमखमलकीपै सादी श्यामसारीपैन्हिबैठी मध्यराधाोगें सखीजुगें आसपास। झूलतमैंप्यारीद्रुम माहिंदुरैदीसैमानोघनमाहिंछपैचन्द्रमाकरैप्रकास ११॥

आजविपरीत समय सबै विपरीतहै ॥

क०। शीशलै मुकुट धर्यो कुण्डल करन कर्यो तैसेही उतारि ओढ्यो उपरैना पीतहै। वेषधारि पीको नीको राधिका रहीहैराजि राधा रौंनत्योंहीलई राधिका

कीरीतहै ॥ रूप विपरीत रचिराति विपरीतरचि दोउन दुहूँनलखिबाढ़ीदत्त प्रीतहै। आलीजायजालीरन्ध्रराह तैं विलोकिआजु आजुविपरीतसमयसबैविपरीतहै १२

तथा। श्यामने निहोर्यो तोहिंतैंने मुखमोर्योताते तिनकरी प्रीततैं बिनाशी प्रीतरीतहै। तोहिं अंकमाहिं लेततैंने झिझकारद्यो सोऊगयोरूठिलखितेरी याअनीतहै॥कलहविरचि पछितातक्यों बिरहभये तोहिंचन्द चांदनीके करत सभीतहै। कामहू जरावै बनबायुतोहि तावैजानि आजु विपरीत समयसबै विपरीतहै १३ ॥

तथा। मेरेप्राणप्यारे बारे बनको सिधारेसीय लषण समेतधारि मुनिन की रीतहै। दत्तकवि खानपान राग रंगभावैनाहिं भावै नाहिंसेज औ सिंहासन अजीतहै॥ प्रेतके निवाससो अवास यहलागे मोहिं भोजन सुधा सों लगैसुधातैं अतीतहै। आनँद के कन्द रघुनन्दन बिनारीआली आजु विपरीतसमय सबैबिपरीतहै १४॥

पेटसो और नहीं कोई पापी॥

स०। पेट के कारण जीवहते बहुपेटही मांस भखै औसुरापी। पेटही लैकरचोरी करावत पेटहीको गठरी गहिकापी॥ पेटहीफांसिगलेमेंडारत पेटहिडारत कूपहि बापी। सुन्दर काहे को पेटादियो प्रभु पेटसों और नहीं कोईपापी १५ ॥

पेटही के बशप्रभु सकल जहानहै॥

क०। पेटहीके बशरंक पेटहीके बशराव पेटहीकेबश और खान सुलतानहै। पेटही के बश योगी जंगम स

न्यासीशेष पेटहीकेवश वनवासीखातपानहै ॥ पेटहीके वश ऋषिमुनि तपधारी सब पेटहीके वश सिद्धसाधक सुजानहै । सुन्दर कहतनाहिं काहूको गुमानरहै पेटहीके वशप्रभु सकल जहानहै १६ ॥

मुरिमुसुकान की कक्काकी सौंहखानकी ॥

क० । भूलैनाहिं भौंहवैकटीली खमदारखासी कीरतिनशाई जिनकामके कमानकी । हँसतमैंदीसीसोन भूलत बतीसीदंत भूलतननैनसैन दैनदधि दानकी ॥ अन्तरंग सखातैं कहनहरिहीकी बात भूलीनाहिं जाति वारिमोरन गुमानकी । भूलतन गूजरीकी ऊजरीगहत भुजा छबिमुसुकानकी कक्काकी सौंह खानकी १७ ॥

तथा । जादिन गईहोन्योतेनन्दके विनयबानीहरिनै बखानीभटू तैंहूताकी कानकी । अंकमालिका कीसमय लीन्होतैं शपथमोरसिलिहों किशोरसमय कुकुटकेगान की ॥ दत्तगई नाहिं यादि करैं मनमाहीं सोई भूलिगे सकलगति मुरलीके तानकी । चूभिसीगई है छबिकान्ह के करेजे तेरी मुरिमुसुकानकीकक्काकीसौंहखानकी १८॥

तथा । छूटी लरिकाई आईसबै चतुराई अंग अंग में निकाई कामदेव प्रकटानकी । नैन मे लुनाईसुघराई सरसाई ताकी कोक की कलासी खासी मूरति बखान की ॥ जोबन जवाहिर सो चमक्यो सकल देह नेहकी लगन हियेमाहिं हुलसान की । थोरेसे दिनातभौंह को मरोरिलईबानि मुरि मुसुकान की कक्काकी सौंह खान की १६ ॥

तथा। माखन चोरावै मेरो दही ढरकावै कान्हगारी मोहिंगावैकरैनिजमनमानकी। अंगमाहिंलपटिकैअंगियाकोनोचिलेत यशुदाजी सांचीकहौंबातमैंप्रमानकी॥ यामैं झूठीहै न सौंककाकिहै दत्तमोहिं सुनि नँदरानी कह्योयारी वृषभानकी। मैंनहीं प्रतीतकरौं तेरीहै सहज बानि मुरि मुसुकानकी कक्काकी सौंह खानकी २० ॥

तथा। दक्खिनकी गनिकाकेगनेजात गाढ़ेकुच गुरुवे नितम्ब बानिरखैं तानगान की। बंगाली बरंगनाके केशभले बेशहोत नैनऊबिशाल बानिघने पानखानकी॥ जैपुर की वेश्या भली भेषरचि जानैदत्त बरनीहै बानि कांईकांई के बखान की। बारबधू ब्रजकी देखियत बानि यहै मुरि मुसुकान की कक्काकी सौंहखानकी २१ ॥

तथा। रतिरस रैनिमाहिं करिऔर ठौरश्याम भोर समय आयराधा कीरति बखानकी। सुनिउठि कीरति किशोर त्योंलिवायल्याई क्रोध ना दिखायो कछू पूजा मैं सुजानकी॥ कान्हकरि सौगन्द कह्यो जूमैं घरैहीहुती देखि मुसकात तिन्हैंबोली वृषभानकी। पूछेबिनबोलत सुबानि येपरीहै कहा मुरि मुसुकान की कक्का की सौंह खानकी २२ ॥

तथा। घूंघुट उठाय सतराय नैनको चलाय कुंजके मिलान मेंते शपथ प्रमान की। तादिनते जाउ जाउ ल्याउल्याउ ताकी यहीबात तजिश्याम दूजीबातना बखानकी॥ चलैमतिचलैयहखुशीहैतिहारीसीखदेतिहौंमैं दत्तकाबिसुनिलैसयानकी। भले बापकीहै तोसु आजुहीते

छोड़िबानिमुरि मुसुकानकी ककाकी सौंहखानकी २३॥
तथा। औचक निकुञ्जमाहिं मिली आजुगोपिका या कालिहही में जाकी अति कीरति बखान की। भुज भरि चाह मैं चहीहे मनमानी कोवै तौलौंताने काहुकी पगाहटको कानकी ॥ छपकिचलीहे छूटिदत्तजू छबीली गहिकह्यो मैं शपथ बोली फेरहू मिलानकी। बोलिछबि आपनी हिये मैं धरिगई मेरे मुरिमुसुकान की ककाकी सौंह खानकी २४॥

पायोभलो सेवती सुहागफलपूरोहै ॥

क०। गुंजत रहत वसुयाम मुखनाम तेरो देखत छबीलो जाको श्यामरंगरूरोहै। चम्पादिक आपने शृ-ङ्गारको दिखावैंघनी दत्तसदातिनतैं रहत अतिदूरोहै॥ सदाकेसंगाती जे कमल मकरन्द बारे मन्दकै तिनहूं तेरो ह्वैरह्यो मजूरोहै। चंचल भवँर को सुबश कीन्हो ताते तैंनपायो भलो सेवती सुहाग फल पूरोहै २५॥

तथा। शीशपै जटाहै भालचन्दकीछटाहै जाकेफूलन में जाके प्रिय आक औ धतूरोहै। गङ्गऊ रहति सङ्ग भसम रमाये अङ्ग कण्ठमाहिं विषपैन कहैंबैन पूरोहै॥ जाके तीनि नैन दत्त कविहूके चैनदैन नन्दी गण जाके नितरहत हजूरोहै। तिनशिवके पदारविन्दनको गिरि-जा तैं पायो भलो सेवती सोहाग फल पूरोहै २६॥

कैसी अद्भुत वरपाकी ऋतुआईजोसंयोगिनि
दुखद विरहिनि सुखदाई है॥

क०। पावसके आवत इत सरवर माहिं हंस जल

माहिं होति देखीनित कलुषाई है। मानसर चलिबेकी सुरति लगाई निज हंसिनीसुबंशिहू हिये यादि आई है॥ तहांके निवासीपक्षी पक्षिणी कहन लागेप्रीतिपर-देशीकी न हमाहिं सुहाईहै। कैसी अद्भुत बरषाकीऋतु आई जो संयोगिनि दुखद बिरहिनि सुखदाईहै २७॥

तथा। माताकी औ सासकी कछुक ईरषाई बश एक तियगेहएक नैहर बुलाईहै। पतिनै दुहूंतेप्रेमनेम निरबाहिबेको सासुरेकेगांवमाहिं नौकरीलगाईहै॥ चार मास चौमासेकी छुट्टीलेई ऐबै लग्यो तहांकी तियासों शिरधुनिपछिताईहै। कैसी अद्भुतबरषाकी ऋतु आई जो संयोगिनि दुखद बिरहिनि सुखदाई है २८॥

तरवार बही तरवाके तरेलौ॥

स०। भोरते सांझलौं सूर्य्य चलैं अरुशूर चलै हैं कबन्ध परेलौ। यही शिरताज गनीमन को प्रणतौन टरै दुहूंलोक टरेलौ॥ ऐसीबही अरबीगरबी शिवशंकर हू यमलोकडरेलौ। सो शिरकाटि गनीमनके तरवार बही तरवाके तरेलौ २६॥

तथा। लैप्रभुको वसुदेव चलेसो बिचार कियो तब नन्दगृहेलौ। जाय कलिन्दीमेंठाढ़भयो वसुदेवडरेजल आयो गरेलौ॥ चरननको यमुनाउमहीं जलबाढ़ोजबै वसुदेव गरेलौ। हूंकतही यदुनन्दनके यमुनाजी बहीं तरवाके तरेलौ ३०॥

सांवरी सांपिनि सोइ रही॥

सं०। मृगनैनीकी पीठपै बेणीलसै सुखसाजसनेह

समोइरही। सुचिचीकनीचारचुभीचितमेंभरिभौनभरी सुख वोइ रही॥ कविगंग जू याउपमा जो कियोलखि सूरति ता श्रुति गोइ रही। मानोकंचनकेकदलीदलपै अति सांवरी सांपिनि सोइरही ३१॥

पांचरवि दश शशि संगही उदय भये॥

क०। सारीश्वेत प्यारी पैन्हि मोतिन किनारीदार बड़े स्वच्छमोतीनाकनथ गुथिकोदये। बीचबीचबेंदी भाल केसरके बेसदेइ बन्दीछोर हीराअसदातसातको लये॥शीशफूलशीशचौवुन्दाचरईगुरकेहारदशदानेदेव नागमणिको धये। अमिततरैयन ऋषीशसातकबिगुरु पांचरवि दशशशिसंगही उदय भये ३२॥

तथा। शीश फूल शीश छुटि मोतीलर मांगछुटि भालसे उचटि टीकावारवारफरकी। अंचलउड़तअंग घूंघुट खुलत संग कुचन उतंग आँगीबंदगयोतरकी॥ आयआय कागअनुरागबोलेआंगनमेंहाथन उड़ावती भुमेल मधुकरकी। भनतादिवाकर पियाकेआगमन जानिनीवी कटिबन्धन समेतप्यारी सरकी ३३॥

भमी निकरयो वहिपूंछकी ओरन॥

स०। एक समय वृषभानसुता सो प्रातगई सरितान की खोरन। अंजनधोय अँगोछतदेह अरुबाहर बैठिकै बार निचोरन॥ वल्लभनै त्यहिकीउपमा जलके कणका वहैं केशके छोरन। मानहु चन्दको चूसतनाग अमी निकस्यो वहि पूंछकी ओरन ३४॥

हमारी ओर हेरिये ॥

क०। तापनको तिमिरि मिटायहित आपनदै थापन कोथापि पुंज पापनको पेरिये। द्विजबलदेव कहैं द्रौपदीपै दीन्हों डीठ दीनसुखदायक गयन्द गति गेरिये ॥ प्रीतिघन आपने पगनको बसाय मनतन बचहूंसोघन आनँदको घेरिये। एहो गिरिधारी बनवारी श्री बिहारी लालवारीको बिचारिकै हमारे ओर हेरिये ३५ ॥

कान्हके कलाकी कठिनाईहै ॥

तथा। कौतुक बिलोकन कलिन्दजाके कूल कलि कालिहही कढ़ीथीगतिकैसीकरि लाईहै। कबिबलदेवकहैं कलना परतनेककौन दृग कानन कहाधौंछबिछाईहै ॥ भृकुटी मटक पर अलक लटक पर नैनकी नटक पर चटक सोहाई है। कांटासी करेजे में कसक करिदीन्हो कह कुञ्जनमें कान्हके कलाकी कठिनाईहै ३६ ॥

चुचुवाती लटैं अरु मूड़मुड़ाये ॥

स०। शङ्करश्री गिरिजा अरधंगके मज्जन तीरथ राजमेंआये। त्यागकियो शिरकेश वृषध्वजमुण्डनवार उमानहिं भाये ॥ बीच सितासित द्वैनिकसे अवलोकि प्रभा बलदेव बताये। छातीछटाछबिकी छितपै चुचुवाती लटैं अरु मूड़ मुड़ाये ३७ ॥

नजरि सँभारे लाल ढारियो ॥

क०। उरज उतंगन पै जोर युग जंघनपै त्रिवली तरंगनपै भरि भरि ढारियो। लटकी चटकपर भृकुटी मटक पर आनन चटक पर पलकनपारियो ॥ औरगोरे

गान परमनरुचिघातपरबलदेव बातपरनेकहूनटारियो। शंकमानि प्यारी जूकी लंक लचकीलीपर ढीली ढीली नजरि संभारे लाल डारियो ३८॥

क्यहिहेत सखी मुरझानी पड़ी॥

स०। जब ते मनमोहन मौन सुन्यो तबते बिरहागि हिये में पड़ी। चहुंघा मुख हेरत दूतिनको भरि ऊरधश्वास अनङ्ग जड़ी॥ अतिनीर प्रबाह चलै चख सों मनों सूखीलता गति हेमछड़ी। कछुचेत नहींमुख श्वेतभयो क्यहिहेत सखी मुरझानी पड़ी ३९॥

लाजको जहाज आज डूबन चहतहै॥

क०। कैसोठानि बैठीहठ मेरीमन वाक्षण सों कोऊ समझावै तासोंबैर कै रहतहै। कैहै कहा एहो बलदेव दशा देखो नीरको प्रबाह दृगदूनों उमहतहै॥ कछु तनधनके सँभारकी गिनावौं कहा प्राणतो निछावरि करनको कहत है। तजिसब काज संग कीन्हो सुख साज अब लाजको जहाज आज डूबन चहत है ४०॥

यहिलाजनिगोड़ी पै गाजपरै॥

स०। बनशीरी समीरलगै तन तीरसों पीरमें क्यों मनधीर धरै। अति वोज जनावत रोज सरोज मनोज बिथाउर आनि अरै॥ हठि होयगो हालजो भाललिखोगुरुलोगनको शिषजाल जरै। मिलिहौंब्रजराजको आज अली यहिलाजनिगोड़ी पै गाज परै ४१॥

मछरी जल छोड़ि चली बनको॥

तथा। हटितून फँसैब्रजचन्द्रके फन्द बिनय करिहौं

बरजों मनको। अबबीन बजै लगी कानसोंसुनिपरि करैतन बेतनको ॥ अँखियां दुखियां किमि धीरधरैं ढरैं नीर भरैं सिगरे तन को। मृग छौननकी छबि छीनी मनो मछरी जल छोड़िचली बनको ४२ ॥

लोटिलोटि जातजैसे लोटन कबूतरी ॥

क० । सम्पुट सरोजसेउरोज खोज चोजनको रोज रुचिरूरी श्रीमनोज कैसीपूतरी। कैधौं रूप राशि रति रम्भासी सराहै सब रतनजटितमानो अम्बरसे ऊत-री ॥ प्रथम समागम नवोढ़ा त्यों नवल पति पानिप प्रकाशी करैबातें मुखतूतरी । नखतनखोंटिखोंटि पटी पटजोटिजोटि लोटिलोटिजातजैसेलोटनकबूतरी ४३॥

दन्तदाबि आंगुरी हथेली दाबि छतियां ॥

तथा। प्यारी के मिलन काज सांकरीगलीके वीच ठाढ़े नँदनन्दलसिजानि निज घातियां । अतिहीसमी-पपाय फूलो गात आनँदसों भरिबेको अंक चहो दाँव भलीभतियां ॥ सिसकिसलोनिबाल भृकुटी नचायवर कछुक पछेलि कह्यो शंकित सी बातियां। उतहीरहौजू पीछे आवति यशोमति है दन्तदाबि आंगुरी हथेली दाबि छतियां ४४ ॥

तथा। प्रेमबश धीरजकोधारतन कौनौभांतिउदित मयंक ऋतु राज रसरातियां। आतुरह्वै सांकरीगलीमें नँदनन्द ठाढ़े प्यारीके मिलैकीसबभांति गनिघातियां॥ आवतसमीपासिसकीसोसौंहहेरिहँसीभृकुटीनचायकहो चौचँदकीबातियां। अंतकोचलीसोतन्तकन्तकोबिचारि

बाल दन्त दावि आंगुरी हथेली दावि छातियां ४५ ॥
भांगकेकवित्त व सवैया २२ ॥
क०। बैठेहैं अमली सब पीसतहैं भांगकोईछानत हैं कोई तहांपीवेंमनपूर पूर। कहैं रससिंधु फेरखात हैं अफीमकोई गालवां चुवावैंकोई ठाढ़े भये दूरदूर॥ मलत तमाखू कोईपीवत हैं हुक्का ऐंठि चाटैंमुखश्वान आयभयेवह सूरसूर। कोइनकेचेहरापर भिनकैंहैंमाखी आय भये सब नशों में जुदेखो यहचूरचूर १॥
तथा। आयोफेर मूसाभांग साफीलेई भागचल्यो मारतहैं तीर कोई अंगुलीदेखावैंहैं। काढ़ैंतलवार कोई हाथ लिये बरछीहू काढ़िकाढ़ि जूताकोई हाथनबतावैं हैं॥ कमरकटारीखैंचिपिनिकले झूमि झूमि कोई लेय लाठी कूदि मारनकोधावैंहैं। कोईले बंदूक तहां देखि के निशानाखूब कोई दौरिढेलालेइ तापैयोंचलावैंहैं२॥
तथा। अरबकेदेशते जु आई यहहिन्दमांझखात सब कोई याहि मनमें उमंगी है। देख मन चले फेर वाहि समय भांगलेत बांधतहैं फेंट याकीउपमासुढंगी है॥ तुलसीके पत्रहूते बाढ्योहै प्रतापयाको फैलीदेशदे-शनमेंभांगकीउमंगीहै। लागीजबअंगी गतचलतात्रि-भङ्गी खूब तमाखूबहुरङ्गी गुणमेंहू यहजङ्गीहै ३॥
तथा। जरकीहै सासु दुष्ट दुलही हलाहलकी बीछी की बहिन परपंचरूपसाजीहै। नानीकरियारेकी धतूरे की ममानीपितियानीबच्छनागकीजहानमोंबिराजीहै॥

टकी तसवीर नम्बर २१॥



भागघोटनेवाले पुरुष की मूर्त्ति ॥

कहैं गंगादत्त वह पचावै धंनप्रानी औ अफीमकी जेठानी बिषखोपरे कि आजीहै। माहुरकी मौसी महतारी सिंगियाकी यह तमाखू दइमारीको किन्नेउपराजीहै ४ ॥

तथा। बुद्धिको गणेश बलदेवकी बिधाताजैसेचातुरी को वाक बानीथम्भन अफीमसी। योगजैसे रुद्र औ वियोगजैसे रामचन्द्र भोगको कन्हैया और रोगनकोनीम सी ॥ जागिबेको गोरख ध्यान धरिबे को ध्रुव त्योंदइबे को चालि सब काजको अतीमसी। निपट निरंजनसो बिजया विचित्र जानि सोवे को कुम्भकर्ण भोजन को भीमसी ५ ॥

स०। भीजतही सबरीझत हैं अब धोय धरी शिव के मन मानी। मिर्च मसालो मिलाय दियो तब घोटि करी वाकी रसघानी ॥ साफीसुरपतिरायबनी यहि ब्रह्म कमण्डलके जलछानी। गंगते दूनी तरङ्ग उठैं जबअंग में आवत भंग भवानी ६ ॥

क०। छूटी दुरवासना सुवासना चहूंघाघूंटीऐसोगुण सुनिसो सुकूटी योगज्ञानकी। इंद्रकीबधूटी रङ्गनैनछवि छूटी लूटी सम्पतिकुवेर कूटीकलिमल कानकी ॥ जूटी जस बेलि भूटी मायाको निकासफूटी फिकिर फरासटूटी अमलअपानकी। कूटीकामदेवकी अनूठीउक्तदानऐसी बूटी देख टूटीहै बधूटी देवतानकी ७ ॥

स०। खायेते ज्ञानकी खान खुलै बिन खाये खुशी नहिं होतहै बानी। चाहतहैं सबयोगीयती अरु देवनमें महदेवहुमानी ॥ याके समान न आनकछू हमैंजानपरी

यह मुक्ति निशानी। कोटिनरंग दिखावतहै जबअंग में आवत भंग भवानी ८॥

तथा। विजया जो लई ऋषितापसने सनकादिलई जिनहै व्रत धारयो। नारद शारद दत्तादिगम्बर व्यास लई जिन वेदविचारयो॥अंगदआपसुग्रीवलई हनुमान लई जिन लंकसुजारयो। बिजया सिद्ध अहै सबकारज रामलई जब रावण मारयो ६॥

क०।खाय देखे बीजबन्द असगन्ध आदिसबऔर खाय देख्यो मैंने सेमरको मूसरा। दिल्ली के हकीमवैद सब देखिडारे मैंने ताहूते उखरयोनाहिं खिष्टक कीलफू-सरा॥ दूधऔवताशे बहुपियेबंगडारडार ताहूतेसरयाहै नाहिं कारजको खूसरा। कहत मस्तान चौदह विद्याके निधान भैया भांगके भरोसे मैंने व्याहुकियादूसरा१०॥

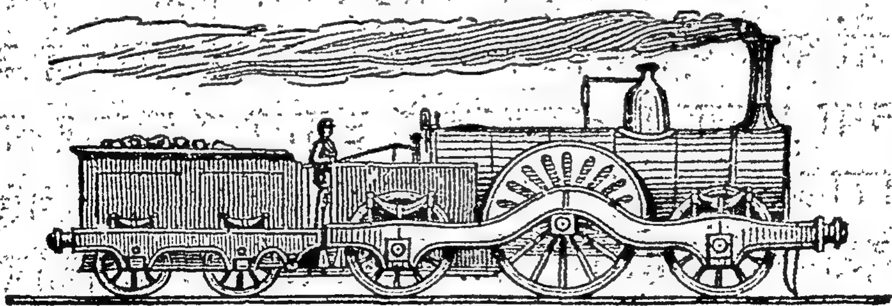
तथा। देखत हरीहै गुण अमित भरीहै सिद्धसाधन धरीहै ज्ञान भरी समशेशकी। ध्यानकीपुरीहै कवितान ईश्वरीहै मतिदेतहरवरीहै बुद्धिकरत गणेशकी॥ जिन्होंने गहीहै तापै प्रभुताकरीहै कविलालवरणीहै ये निकाई यहदेशकी। सुर ईश्वरीहै नरनागधीश्वरीहै जलथलमें भरीहै यहलाड़िली महेशकी ११॥

तथा। जबलों न आवै रंग भंगको शरीर माहिं तब लों बजाय शंख कान नासुनातहै। लायघोटछानिकेल-गाय भोग दाऊजूको तबै दुख द्वन्द्व सबदूरतेपरातहै॥ औरई विचित्र गुणदेखो एक याको जोईसिद्धकियो चाहै बात सोई बनजातहै। जानै गुणीजनपै मूरख न जानै

भेव बूटी बिन छाने दुनिया लूटीसी दिखातहै १२॥

तथा। चाहै चित्रकूटमें बिचित्रतेसुचित्रह्वैकैनित्यही प्रवीन पढ़ै वेदऔपुरानको। चाहै यंत्र मंत्र औअघोर घोर सिद्ध करै चाहै करै कानन गोविन्द गुणगानको॥ चाहै शिवराम गिरिनारके गुफामें बैठि करैयोगजपतप कोटिन बिधानको। ज्ञानको गणेश मन करिबेकोप्रमा निधान बिना भांग भजन न भावै भगवानको १३॥

तथा। मिरचमसाला सौंफकासनी मिलायभंगखा-येते अनेकरंग अंगको उबारती। जारतीजलोदरकठो-दर भगंदरको सन्निपात बवासीर बावन त्रिदारती॥ सोकबि शिवरामदाद खर्राकोखराबकरै छईछीकछंजन नसूरको निकारती। पीनस प्रमेह बीसबावन तरहकी पीर कमर दरदको गरद करि डारती १४॥



रेलके कवित्त व सवैया २३॥

क०। भकभक भभकभभक ज्वालाझकझकधकध-कधुवांहोत बमकलदानमें। आसमान छाये जात हवा

छिनरावे जात सन्मुखहो ताके वाके परे अँखियानमें॥ वचनभनत इकदरशितमाशेदेखि खुशीहोतजात अप-ने मुसाफिरानमें। तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़होतजा-तबात सुनिपरत न दूसरे कि कानमें १॥

तथा। हाथीहै न घोड़ाहै न बैल गैलजोड़ाहै न हांकिबेको कोड़ाहै फकत एककलहै। चारि चारि अं-गुरीकेलोहनकीपटरीपै चारिचारि अँगुरीके पहियाप्रब-लहै॥ हलचलचलिजाततनिकन विचलिजात सीधी सीधीगलि जातअजब अकलहै। बेगमें प्रबलहैसवा-रीकी सकलहै वेवानकी नकलहैसोपालकीसकलहै २॥

तथा। भारीकारीगरनकीगातिमातिमारिगई किसने बनायो अरु काको यह ख्याल है। आगे आगे फर फर फूटत फुहारे जात मानो मतवारो गज कारो यह हालहै॥ वचनभनतएकरेलके अजबखेलकाहूपै मुसा-फिरान काहूपर मालहै। कोटिमनबोझको न समझै कहांलों कहों एकबिकटोरियाको सिर्फ अकबालहै ३॥

तथा। घनसों घहरातऔ उड़ात हाहाकार करि खातकाठपानी धुवां आसमानछायोहै। बैठक बहार देशदेशनकीभेंटहोत ऐसीफहरातमानो अर्जुनकोबान है॥ माधवकविकहै ऐसोपाइके बखानकरै लाखन मन लादि लेत जानत जहानहै। धावे जोससान बातदूस-री नआनयार रेलमेरीजानतौकुबेरको बिमानहै ४॥

तथा। पीनस मतंग गजसांड़िनी तुरङ्ग और बा-हन नरिन्द तामझाम औररत्थहै।बग्घी औ किरांची

सुखपाल टमटमगाड़ी यक्काडाककाटमें लियेतेतौ गरद्द है॥ नाव मोरपंखी और बनी सब खूब खूब चलैं दरि-यावबीच अग्निबोटजलदहै। सोकविगजराजकहै हृदय में विचारि देखो रेलकी सवारी से सवारी सबरद्द है॥

तथा। फफकतफहरात औउड़ातधुन्धकारकरि बाजु ऐसी धावत प्रचण्ड की प्रमानहै। ऐशकी सवारी महसूल आधआनाकोश सतनके करत काम माधव कवि बखानहै॥ देखो तौ अजूबा चीनवालेकी मन्सूबा पेंच के इसारे से चलतप्राणकी प्रमान है। धावे ज्यों शशानबाज दूसरीनआनयाररेलमेरीजान तौ कुबेरको बिमानहै ६॥

तथा। रथकी सवारी गज रथकी सवारी तांगेकी सवारी देखी गाड़ी तक मद्दहै। पालकी सवारी और नालकी सवारी सुखपालकी सवारी देखी पीनसमें गद्द है॥ बग्घीकी सवारी सेजगाड़ीकी सवारी बानगाड़ीकी सवारी देखी टमटम तकहद्दहै। किश्तीकीसवारी धूवांकसकीसवारीभाई रेलकीसवारीसे सवारीसबरद्दहै ७॥

भाषा व फ़ारसी मिले हुये कवित्व व सवैया २४॥

क०। श्यामतनुजाकारचाहाथमेंहिनाकारंग औरलबों कीलाली गुल्लालीसेदुचन्दहै। काननकीबाली औघुंघराली जुल्फजालीदेखपरीहै जी आलीचनमालीइसफंद है॥ सोहनीसीसूरतहै मोहनीसीमूरतहै खासाखूबसूरत है पूनोकासा चंदहै। हसती पेशानी कात्रिवाल इमसानी यारो आनँद का कन्ददेखा नन्दफ़रज़न्द है १॥

तथा। इश्क़ दरियायबीच पैरते फिरैहैं हमगरम न होतुहाथ अपनादियाकरो। जिगर औजान दिलकीभी सब आनडूबी दामनसेलगातिसे किश्तीमें लियाकरो॥ बेशक बिहारीकीकोशिश हरबारीहुईबालकवि प्यारेतुम युगयुग जिया करो। डालदो भरमजार नरम गरीबों पर छोड़के शरमटुकू करम कियाकरो २॥

तथा। बनेदल्लान जिनके पड़दे बुलंद जामें शहन कीशानके फरसबंद रासमें। लालोंकेखरंजेरंगा मेजरंग रंगेजेहीरा फटिकके खंभे छज्जेछाजेछबिकेकासमें। बादलोंके सायबान डोरी मखतूलों की कलाबत्तूनकाम के हैं पर- देपरकाशमें। जहांकोटिकाम ऐसी अतिअभिरामिश्याम बैठेररे आसघनश्याम आमखास में ३॥

स०। सांझसमय घरसे निकसी सबसखियनसाथ वहसांवरी मूरत। रुख्ज़ोनाज़ नमूदसनम बेताब शुदम् अफ़जूदकदूरत॥ मुसक्यायकैमोतनदेखिदियो तिरछी अंखियां चितवनकीमरोरत। होशमूरफ़्तनमुन्दबदस्त शुदह दिल मस्त जिर्दादने सूरत ४॥

तथा। कौन घड़ी करिहैं बिधना जब रूये आदिल- दार बुबीनम्। आनँदहोयतबैसजनी दरसोहबत यारे निगार नशीनम्॥ प्राणप्रियारी मिलै जबहीं दर बागे वस्ल गुलेश बिचीनम्। सूरत मित्रकी चित्रबसी कवि गंग कहैं चूनकशनगीनम् ५॥

तथा। चेहरे नूर बयान करूं महताब नलावततावे सफ़ा है। अब्रू खूबबनी महेनौबकारूरजवानीका ज़ोरो

जे फ़ाहे ॥ कद की हद्द कहां लौं कहों कवि राज कहैं सब देखि खफ़ा है। हुस्न की यार बहार यही बसदीद नयारे दिदार न फ़ाहे ६॥

तथा। तान सुनाय बजायके बांसुरी दिल की त्रिथा इस हरि तु मायम्। चाहै अत्यंत लहदे मिलि वो क्यहि भांति नज़ारे यार तु मायम्॥ लोग चवाइ बसैं यहि मांझ सो हाफ़िज़ मन नक़रीर तु मायम्। चन्द्रमुखी मुख घूंघट खोल कि ता अज़दूर दीदार नु मायम् ७॥

तथा। जा दिन ते यमुना तट तो हिं बजावत बांसुरी नेक निहारो। होश मरफ़्त न मुन्द बदुरुस्त उर ध्यान रहै दिन रैन तिहारो॥ हाफ़िज़ा फ़िक्र कुदाम नुमायम कोई उपाय चलै नहि मारो॥ कौन सों कैहें सखी री घड़ी कि जो सहि अंक मिलै गो पियारो ८॥

तथा। कासों कहौं यह बिथा सजनी चुं बुर्द दिलम् अज़ ज़ोर सितम्। दर्श सुधा रस प्याइये जु जे जुदा हये सो मन ज़ी बलन्नम्॥ ताप बुझाओ हिये कि मेरे तुम गाह बगाह नमूद करम्। चैन नहीं दिन रैन परै अब हाफ़िज हाल बेहाल जे गम् ९॥

तथा। वंसी बजी बलवे यमुना चलो चालिये सखी संग मिलके बहम्॥ तान वंसी चुंनक शोनगी अब चैन नहीं क्षण पल अ दिलम्॥ शर्मो हया कुल की तजिके करलो दर्शन चालि निज़ दे सनम्। हाफ़िज़ हाथ सों हाथ मिलायके शीतकरें हिंदै हम तुम १०॥

तथा। क्यों इतनो बतरावत हो मन शर्म हया राव

मै मैदानम्। ऐसो उपाय करो मिलिकैकि क़रार बिगी रद ईदिलेज़ारम्॥ हाफ़िज़ यामें नलाभकछू अज़ गुफ्ताशुनूनें मतलब दारम्। कासमुझावतको समुझै दिलमारा बुबुर्दकि आं महेयारम् ११॥

तथा। कासोंकहौं मनकी यह बिथा अपनो तनु आय जरानो परो। खेशो बुज़ुर्ग अकारिब राहमें देखि अत्यन्तलजानोपरो॥ तेरीमुहब्बती उल्फ़तमेंहमें हाफ़िज हायबिकानोपरो। दिलरफ्त ज़ेदस्त नमुन्द बदस्त अफसोस महापछितानो परो १२॥

तथा। बदनामशुदम्दरकुवों जवार अबकौन सीबातको शोचरहाहै। हाफ़िजखेशो बुज़ुर्गों अज़ीज़ अब मानो बुरो हमसोऊ सहाहै॥ होनी हुतीसोतो होयगई इनबातनमों अबलाभ कहाहै। मतलबेमन नबर आमदहैफ यहभागकी लाग हमारे महाहै १३॥

तथा। हरगिज़ लाग किसी कि नहींसब हाफ़िज़ हैतकसीर हमारी। वक्ते विदा न किसी नेकहाहमसाथ चलैं कि रहैं बनवारी॥ सो कहते नबनी कछुहाय करैं अबका ब्रज नारी गँवारी। देखि चले सो सबै कहियो अबऊधव जी तुह्मरे बलिहारी १४॥

तथा। जोवत राहथकी अँखियां अरुआये नहींऊधव गिरिधारी। जाहिर मेंतोखता हमसे नहींकोई हुई गाहेजुल्कारी॥ हाफ़िज़जातकही नबिथाकि भईहैकहा गतिहाय हमारी। सो मरिहैं बिषखाय सबैऐहैं जोनहीं यहां कुंज बिहारी १५॥

फुठकर कवित्त व सवैया २५॥

स०।सुन्दररूप त्रिया मन जानकी लोक औवेदकी मेड़त मेटी। अवधपुरी सुखसम्पति सों रजधानी सं-दलिछ तासों लपेटी॥ कहैं सूर किशोर बनाय बिरंचि सनेह कि बात न जातहैमेटी। कोटिक जो सुखहै ससुरारि तौ बापको भौन न भूलत बेटी १॥

क०। प्रेमकीदुकानमें बिचारिमैन पैठियतु कामकीदु-कान सों सयान सब हारा है। क्रोध कोतवाल जिन प्यादेको पकरि पायादाया कोदिवान जिन मायाफांस डाराहै॥ मोह के गुमाशता जे मिले भले आदरसोंसोह छबिगाहक जो बचिकैबिचाराहै।ऐसेऐसेबनिजको लादि है गोपाल लाल कंचन शहर परपंचन बिगाराहै २॥

॥ तथा। चन्द अरबिन्द बिम्ब बिद्रुम फनिन्द सुककुन्द न गयंद कुन्द कली निदरातिहै। चम्पा सम्पासम्पुट कदलि घनश्याम कहां कुङ्कम को अङ्गराग अङ्गना कर तिहै॥ केहरी कपोत पिकपल्लव कलिन्दी घन दर के निरखि दासी छतियांबराति है। मेरेइनअङ्गनकीनकल बनाई बिधि नकल बिलोके मोंहि नकल परातिहै ३॥

॥ तथा। बैरीप्रीतिकरिबेकी मनमेंनशङ्कराखैराजारंक देखिकै न छाती धकधकरी। आपनी उमंगकी निबाहि कीहै चाहजिन्हैं एकसो दिखात तिन्हैंबाघ औरबकरी॥ ठाकुर कहत मैं विचारिकैबिचारिदेख्यो यहै मरदानन की टेकबात अकरी। गही तौन गही फेरि छोड़ि तो नछोड़ि दई करी तौन करी जौननकरीसो नाकरी ४॥

तथा। जानतहौं ज्योतिषपुराण औरवैद्यकको जोरि जोरि अक्षर कवित्तन कोउचरौं। बैठि जानों सभा मांझ राजा को रिझाय जानों अस्त्रबांधि खेत मांझ शत्रुनसों हौं लरौं॥ राग धरि गाऊं औ कुदाऊं घोड़े बागधारि कूप ताल बावरी नवारन्नमें हौं तरौं। दीनबन्धु दीनानाथ येते गुण लिये फिरौं करमन यारी देत ताको मैं कहा करौं ५॥

तथा। दोऊ तिरभंगी दोऊ मुरलीअधर धरे दूनोलखु एक सोनिरंजन निरंजनी। दोऊ बनमाली दोऊ मोरके मुकुट दीन्हे दोनों दृगअंजित तरीनो खंजन औरंजनी॥ दोऊ प्रेम रंग दोऊ मनहीं के सांचे गढ़े दोऊ कामरति मद गंजन औ गंजनी। भने दलसिंह दोऊ वृन्दाबनके बिनोदी दुहून के दोऊ मन रंजन औ रंजनी ६॥

तथा। एरगुणी गुणपाइ चातुरी निपुणपाइ कीजिये न मैं लोमन काहू जो कछू करी। बीरन बिराजे द्वारे खेको यही रच भांच रूत अकमाल काहूरो करी कि जू करी॥ कूर और कवि चले जातहैं सभाके मध्य तीसातो हटाके देवी दास पलट करी। दरवाजा गज ठाढ़े कूकरी सभाके मध्य कूकरीसों कूकरी औ तूकरी सों तूकरी ७॥

कं०॥ यशको सवाद जोपै सुनो कवि आनन सों रनको सवाद जोपै औरको पियाइये। जीभ को सवाद चतुरो बोलिये न काहू काहू देहको सवाद जो निरोग देह पाइये॥ घरको सवाद घरनी मन लियरहे धनको सवाद शीश नीचे को नवाइये। कहै हरिजराम नर जानिकै

जान होत खैबेको सवाद जोपै औरको खवाइये ८ ॥

॥ स० । द्वारिका छापलगे भुजमूल कह्यो फल वेदपुराणन सौनहै । कामदऊपरछाप सुनी जिहको सिगरे जग जाहिर गौनहै ॥ आपु लगाई जो कुम्भकोसोसुहाई लगै छवि सोउर भौनहै । औतीके छापकोप्यारे पिया कहिये हँसियाको महातम कौनहै ६ ॥

तथा । पीनसीबारोप्रवीनामिले तौ कहालौंसुगन्धी सुगन्ध सुघावे । कायरकोपि चढ़े रणमें तौ कहां लगि चारन चाव बढ़ावै ॥ जोपै गुणी को मिले निगुणी तौ पुरवीकहु कथांकिस्तोहिरि आवै । जैसेनपुंसक नाहमिले तौ कहौं लगि नारिश्रृंगार बनावै १० ॥

क० । एकैलियेचोरीकरछतुरीलियएकैहाथएकैलिये छांहगीर एकैदाघन सकेलती । एकैलियेपानदानपीक दान सीसासीसीएकैलेगुलाबनकी सीसीशीशमेलती । बोधाकविकोऊवीनबांसुरीसितार लियेलाड़िलीलड़ावै फूल गेंदनकेभेलती । छोटेब्रजराज छोटीरावटी रंगीन तामें छोटी छोटी छोहरी अहीरनकीखेलती ११ ॥

तथा । दुवन दुशासन दुकूल गह्यो दीनबन्धुदीन ह्वैकै दुपददुलारी यों पुकारीहै । छांड़े पुरुषारथकोठाढ़े प्रिय पारथसे भीम महाभीम ग्रीव नीचेको निहारीहै ॥ अम्बरतौ अम्बर अमराकियोवंसीधरभीषमकरणद्रोण शोभायों निहारीहै । सारी मध्य नारीहै किनारी मध्य सारीहैकिसारिहीकिनारीहै किसारीहैकिनारीहै १२ ॥

तथा । चाहकेहैचाकर गुलाम गोरे गातनकेसेवक

हैं सांचे सुघराई सुखदानके। खाने जादखासे खूब मूरतिके भाजभनै जोराबरदार तेरे कदम कलाम के॥ छोरा छांह छबिके पिछौरा पाय पोछनके भौरा खस बोई मुख मधुरबतानके। मोहकेमुसाहिब मुसद्दीदग फेरनके हेरनके हुकुमी हजूरी हांसे जानके १३॥

तथा। बंशी वारे प्यारे तेरी वाणीके प्रवाह बीच तरल सभाकी सभा प्रेमनीर छाकीहै। बेणुकी अदाकी तान बांकी बेसुकबिलाल चर थिरताकी थिरचरताहू थाकीहै॥ अकथकथाकीकथाकहांलौंबखानौतथा भवकी व्यथाकोनेक सुनतवृथाकीहै। पण्डितप्रथाकीमतिथा कीहैलथापथहै नझहिव्यथाकीयाकीकहनकथाकीहै १४

स०। कोऊडरानी परानीकोऊडरपै नहिंमेरोहियो मज़बूतहै। बावरी येघर बाहर की सबजाहिर मोहिं तिहारो अकूतहै॥ लावों दिखावों मिटावों कलंकयहां ब्रजएक बड़ो अबधूतहै। तोहिंतौ भावभवानी कोआवत गांवकेलोग लगावत भूतहै १५॥

क०। जोरपरे जोर जात भारपरे भूमि जातभूमि ज़ातयोबनअनंग रंगरसहै। कहैहेमनाथ सुखसम्पति बिपतिजात जातदुःखदारिद्रसमूहरसबसहै॥ गढ़गिरि जातगरुआई औगरभजात जात सुख साहिबीसमूह सरबसहै। चागकटिजात कुंवाताल पाटिजात नद्दीनद घटिजात पैनजात जगयसहै १६॥

स०। पण्डित पाखडत सौखल मण्डित सायरसा गरसो सुखमाने। संतहि संतभनंत भले गुनवंतहिको

गुणवंत बखाने ॥ जाकहँ जापर हेतनहीं कहिये सुकहा तिनकी गतिजाने। सूरको सूर सतीको सती अरुदास यतीको यती पहिंचाने १७ ॥

क०। आईतुम कैसे हमें बांसुरी बुलाई श्याम कहो कौनकाम छबिधाम तो शरनको। तात मात भ्राततुम्हें हैंसनेही किधौं नाहिं सांवरेसुना तो हमैंरावरे चरनको ॥ पति के तजेते गतिहोय न बड़ो है दोष श्रीपति भरोस अफसोस न तरनको। लोकवेद मरयादतजी क्योंप्रमाद परि जानैं न विवादगह्यो प्रेमके परनको १८ ॥

पद्मिनी लक्षण ॥

तथा। कमलकेफूल कैसीबास अंगसुकुमार कमलसी योनितहां जलतो न लहिये। चन्द्रसों बदन तनचम्पक सों कुन्दन सो बनी ठनी सबठौर जैसी जहां चहिये ॥ भावै देवपूजा श्वेतबसन सो रुचि हिय लिये लाजमान गति हंसकोसी गहिये। थोरोखात पिकबैनी बिचक्षण मृगनैनी जामेंगुण सुन्दर ये पद्मिनी सो कहिये १९ ॥

चित्रिणी लक्षण ॥

तथा। खीनकटि पीनकुच मीनसे चपलनैन गज- गौन कारेबार मोर कीसी बानीहै। मधुकैसो गन्धजाके सुरतके जलकोहै लांबीहै न ठेंगनी न पातरी मोटानीहै॥ सुन्दरसलोन सुकुमारयोनि सजैतासु जैसेफूल बटुरारो जामें भरयो पानीहै। रति सोनरति उपभो गहीसोरति चित्र संगीत सो भावलिय चित्रिणी बखानीहै २० ॥

शंखिनी लक्षण ॥

तथा। मोटीलांबीराजैदेह तैसीऊंची मोटीकटिटेढ़ी चितवनकुच छोटछोटीमनुहै। योनिमें विगन्धकामजल घन घनेवार उत्ताइलि चलेचालि गाजत त्यों घनुहै ॥ शतोपटभावै नखसुरतिमें लावैचारु तातेगात दयाहीन रोसहीं सो पनुहै। दीरघहैं दांत हाथपानत्यों बहुतखाइ ऐसेजाको चिह्नसोई शंखिनी को तनुहै २१ ॥

हस्तिनी लक्षण ॥

तथा। मोटोदेह मोटेओठ भूरेबार गोरीआप थोरे लाज पेटभरि खातिहै अघायकै। टेढ़ेपांयपांयनकी आं-गुरीहैंटेढ़ीसब ठेंगिनीसीकूरपुनिबोलै घहरायकै ॥ काम जलकीहैं गन्ध मदके गयन्दकीसी सुरतन कियो जाय जासों सुखपायकै। चलै मन्दगति यहै कांधे जाके नये रहैं हस्तिनीके लक्षण ये दियेहैं दिखायकै २२ ॥

तथा। हौरे हौरे डोलती सुगन्ध सनी डारनते औरे औरे फूलनपै दुगुन फबोहै फाव ॥ चोथते चकोरन सों भूलेभयेभौंरन सों चारोंओर सम्पन पै चौगुनो चढ़ोहै आब ॥ द्विजदेवकीसोंद्युति देखनभुलानोचित्तदशगुणी दीपतिसों गहबगहेगुलाब। सौगुनोसमीरकै सहसगुने तीरभये लाखगुणीचांदनी करोरगुनो माहताब २३ ॥

तथा। सिद्धिश्री सकल गुणगणके निधान शुभ ज्ञान धन बुद्धिमान जाहिर जहानहै। विद्याके अपार जगपावत नपार कोई सरिता समूह सहासिन्धुके समा-नहै ॥ शीलवान धर्मवान दृढ़व्रत नेमवान जगमतइस

लाम साहब सुजान है। बन्नापुर शालाकरपाठक सों रघुनाथ नामश्री मोहम्मद हफ़ीज़ुल्लाहख़ानहै २४॥

तथा। सांडीशहरगर्रातट सुभगमहल्लासोहै ऊंचा टीला नाम जाको जानत जहानहै। ताही को निवासी सब जनन चरणसेव्य कृपा अभिलाषी नामहफ़ीज़ुल्ला ख़ानहै॥ अफ़सरमुदर्रिसी करत ग्राम बन्नापुर तहसीलि ज़िलाहरदोई विद्यमानहै। निजशुभचिन्तक चरणअनुगामीजानि क्षमोअपराध ममजाहि कुछन ज्ञानहै २५॥

तथा। मोहिं लखि सोवत बिथरिगो सुबेनी बनी तोरिगो हियेको हार छोरिगो सुगैया को। कहै पदमाकरत्यों घोरिगो घनेरोदुःख बोरिगो बिसासी आजलाजहीकिनैयाको॥ अहितअनैसो ऐसोकौन उपहासयहै शोचत खरीमैं परी जोवत जुन्हैयाको। बूझैंगे चवैयातव कैहौ कहा दैया इत पारिगो को मैया मेरी सेज पै कन्हैयाको २६॥

स०। लोकहि हेत परो जल में कोऊ पावक पारि तपैतन तैसो। कोऊ मयाधरै त्यागि दया कोऊभोगत ताकहँ छीनिकै जैसो॥ वोदर कोऊ बड़ोकै टँगोरहैराति दिना चिमगोदर ऐसो। नाचसबै जगकी जगदीश नचावतहै कठपूतरी कैसो २७॥

इति

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई,) के छापेख़ाने में छपा॥
मार्च सन१८८२ ई० ॥

हज़ाराके चित्रों का सूचीपत्र ॥

४ महिपालसिंहसरोज ॥

यहभी अपने दोविद्यार्थियोंके नामसे ३०१ कवित्व का बड़ामजेदार संग्रह छपवायाहै ॥ वहींसेमिलेगा ॥

५ प्रेमतरंगिणी ॥

यह भी छोटा चटपटा लहरदार संग्रह है यह मोलवी इब्राहीमहुसेन साहब थर्डमास्टर नार्मल स्कूल लखनऊ के द्वारा छपाहै ॥

६ रसिकसजीवनि ॥

यह सबसे बढ़करउत्तम और मनहरण २१६ कवित्तों का ऐसामनभावन रसीला संग्रह है कि जिसके देखनेहीसे भूखप्यास जातीहै भारत जीवन प्रेसबनारस में छपा है ॥

७ तालीमुल्मसाहतबेहल ॥

उर्दूमें पैमायशकी बड़ीउत्तम पुस्तकहै जोअवधके सरकारी मदर्सों के मेडिल व दूसरे तीसरे क्लासमें पढ़ाईजातीहै ॥ वह मुन्शी रामप्रसाद साहब डिपुटी इन्स्पेक्टरमदारिस ज़िलाहरदोई के नामसे मैंने छपवाईहै आदिसेअन्ततक सब मेरीही बनाईहै ॥ मुन्शी नवलकिशोर साहब के मतबेमें छपीहै ॥

८ तालीमुल्मसाहतमैहल ॥

जिसमें कुछ सवालात व कायदे ज्यादाकरकेमयतसवीरात निहायत उम्दा तरहसे मोलवी इब्राहीमहुसेन साहबकेद्वारा छपवाई है जिसमें केवल हमारेही बनाये हुये १७५० बड़े उम्दा २ सवालात हैं ॥

९ गुलदस्तै हफ़ीज़ुल्लाहखां ॥

उर्दू में है ॥ इस मेंदोभाग हैं पहिले में गाने वाली उर्दू, फ़ारसीकीग़ज़लैं, शेरें, मोख़म्मस, रुबाई और दूसरे में सबतरहके राग दोहे, कवित्व आदि हैं हमारे कृपा-निधान श्रीमुन्शीनवलकिशोर साहबके यहां छपाहै ॥

१० अरिथम्याटिक हफ़ीज़ुल्लाहखां ॥

यह हिसाबमें महाउत्तम पुस्तक तीन भागकरके बनाई गई है जो कि बहुत शीघ्र छपनेवाली है ॥

वहीभवदीयकृपाकांक्षी { स्वर्गवासी हफ़ीज़ुल्लाहख़ां मुदर्रिसमदर्सा बन्नापुरडाकख़ानाबघौली ज़िलाहरदोई मुल्कअवध—